CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

71

संगीत कला प्रवीण

भाग - 1

ालय
राणसी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ: 3/67
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

संगीत कला प्रवीण

भाग प्रथम

बहिन, कु० डॉ० प्रेमलता शर्मा जी. पी.एच.डी. को सम्मान पूर्वक भेंट. सद्भाव ... 13/11/61

ग्रंथ कर्ता
पं० श्रुतिरत्न प्रभाकर
संगीत कला प्रवीण
संगीत विशारद, संगीत ज्योति ।
प्रिंसीपल
करवीर गांधर्व महाविद्यालय
ढाब खटीकां लोह गढ़, अमृतसर ।

SPECIMEN COPY

धनपतराय ऐण्ड सन्ज़
जालन्धर — दिल्ली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-मठ... भरतनिधि, करौंदी वाराणसी-5

सर्वाधिकार सुरक्षित

आगामी प्रकाशन

(१) संगीत कला प्रवीण भाग दूसरा
(२) जीवनी गायनाचार्य
कै० पं० वामन राव पाध्ये जी, कोल्हापुर।

प्रथम संस्करण १९६६—११०० प्रतियाँ

मूल्य ६।)

मुद्रक :
जसपाल प्रिंटिंग प्रेस,
अमृतसर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

सुस्नेह स्मृति

संगीत उद्धारक

संगीत जगत् गुरु-गायन-महर्षि

कै० पं०—विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रावेदन

आर्य संगीत का मुख्य शिवमत नं० १

"सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा" पश्यदेवस्य काव्यं न ममार न र्शीयति" आदि सृष्टि में प्रभु ने सामवेद के परिधान में संगीत को मानव कल्याण के लिये प्लावित किया। जिस दिन ऋषियों की आत्मा ने वेद का साक्षात्कार किया, उसी दिन उनकी वाणी संगीत के रूप में प्रवाहित होने लगी।

संगीत का सम्बन्ध भावना के साथ और भावना का बुद्धि के साथ तथा बुद्धि का आत्मा के साथ पारस्परिक सम्बन्ध है। हर मनुष्य, चाहे वह इस पावनी कला से अपरिचित ही क्यों न हो, इसके स्वरों में अपना स्वर साधता है, गुनगुनाता है। इतना ही नहीं अन्य प्राणी भी अपने २ ढंग से संगीत-गंगा में निमग्न रहते हैं।

यह वाणी का सर्वोत्तम तप है, शब्द-ब्रह्म की उपासना द्वारा स्वर ब्रह्म की प्राप्ति का साधन है। "स्वयं राजते प्रकाशते" इति स्वरः के अनुसार एक मात्र परमात्मा ही मूल स्वर है। शेष समस्त स्वर सापेक्ष है। साधक व्यञ्जन रूपी प्रवृत्ति का परित्याग कर स्वरात्मा के साथ आनन्द निमज्जित रहता है। भक्तिरस का प्राणभूत यह शास्त्र स्वर भेद से अनन्त माना जाता है। अतः इस आनन्त्य का साधक भी अनन्त है, उसे कभी अपनी इस साधना से उपरम नहीं होना चाहिये।

श्री पं० श्रुति रत्न प्रभाकर शर्मा जी ने अनादि अनन्त संगीत-सागर को अगस्त मुनि बनकर ग्रन्थ में संगृहीत करने का सफल प्रयास किया है। निष्पक्ष न्यायाधीश बनकर निर्णय भी दिया है। कवि प्रतिभा सम्पन्न लेखक ने संगीत के नाम पर जहां जहां भी अश्लील रचनायें रागों से सम्बन्धित थीं उन सब को जौहरी बन कर पृथक किया तथा उनके स्थान पर स्वरचित पद्य रखे हैं। ग्रन्थ को एक तिहाई रचनायें इनकी अपनी हैं। यह अपूर्व परिवर्तन लेखक की सत्विक निष्ठा का प्रतीक है। वस्तुतः पंडित जी साम-श्रुति के रत्न हैं।

अमृतसर स्थित करवीर गान्धर्व महाविद्यालय के प्रधानाचार्य श्री पं० श्रुति रत्न शर्मा प्रभाकर जी को मैंने निकट से देखा है, समझा है। आप में अपने गुरु विश्व प्रसिद्ध संगीत सम्राट कोल्हापुर (करवीर पुरम्) गान्धर्व महाविद्यालय के आचार्य श्री पं० वामनराव पाध्ये जी के प्रति तथा अन्य संगीत आचार्यों के प्रति अगाध श्रद्धा है। प्रस्तुत ग्रन्थ का कर्ता वे अपने गुरुजनों को ही मानते हैं स्वयं इसमें निमित्त मात्र बन कर "निमित्त मात्रो—भव सव्य साचिन" गीता के इस सिद्धान्त का प्रचार कर रहे हैं। आपने अमृतसर में अपने विद्यालय का नाम भी गुरु महाराज के निवास स्थान कोल्हापुर के नाम पर हो रखा है। संस्कृत में इस नगर का प्राचीन नाम करवीर पुरम् था। पं० श्रुति रत्न प्रभाकर जी की संगीत-शिक्षण पद्धति भी प्रशंसनीय है।

संसार के समस्त ऐश्वर्यो को लात मार, मन, वचन, कर्म से सरस्वती की अराधना में जीवन लगा देने वाले ऐसे व्यक्ति आपको विरले ही मिलेंगे। आकाशवाणी केन्द्र से भी आप का संगीत गंगा प्रवाहित होती रहती है। होम्योपैथिक चिकित्सा के आप विशेषज्ञ हैं, पर उसको आजीविका का साधन नहीं बनाते।

यह त्याग परोपकार को भावना आपको अपने स्वर्गीय पूज्य पिता श्री पं० हरिश्चन्द्र जी प्रभाकर शर्मा ज्योतिषाचार्य से मिली है। आपके पिता जी भी स्वयं संगीत में परम रुचि रखते थे निरभिमानता, सरलता, पाण्डित्य आपकी पैतृक सम्पत्ति है। संगीत कला के प्रति स्वभिमानता आप की विशेषता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठकों को कुछ मुद्रण की अशुद्धियां भी मिलेंगी, इनको दूर करना आवश्यक था परन्तु पाठकों के ही प्रत्याग्रह से यह ग्रन्थ इसी रूप में प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित हो रहा है। यदि पाठकों का आग्रह इतनी शीघ्रता से ग्रन्थ को पूर्ण करने का न होता तो अवश्य लेखक का विचार सर्वाङ्ग शुद्ध रुप में ग्रन्थ को कुछ समय बाद प्रकाशित करने का था, पर उनको ऐसा करना पड़ा। आशा है कि पाठक शुद्धि पत्र को मिलाकर परमोयोगी इस ग्रन्थ रत्न से लाभ उठायेंगे।

२-१२-६५ पं० रमेश चन्द्र शास्त्री व्याकरण-सांख्य-योगाचार्य रिसर्च स्कालर महोपदेशक अतरौली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आशीष

राष्ट्रपति द्वारा विभूषित—पद्म श्री संगीत मार्तण्ड डा० पं० ओम्कार नाथ 'ठाकुर' D.LITT.

करवीर गान्धर्व महाविद्यालय अमृतसर के आचार्य पं० श्री श्रुतिरत्न प्रभाकर शर्मा द्वारा संकलित लिखित तथा प्रकाशन के लिए प्रस्तुत 'संगीत कला प्रवीण' नामक पुस्तक का संगीत-जगत् में मंगल स्वागत हो, ऐसी मैं शुभ कामना करता हूं। यह ग्रन्थ अनेक भागों में होगा।

इस ग्रन्थ में प्रारम्भिक कक्षा से लेकर उच्च कक्षा तक के शिक्षण के लिये सामग्री बड़े परिश्रम से संकिलत की गई है। इस में प्रचलित तथा अप्रचलित रागों एवं तालों में परम्परागत तथा नवीन बन्दिशें पर्याप्त संख्या में संग्रहीत हैं। ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, चतुरंग, त्रिवट, तराना, राग सागर, ताल सागर आदि सभी शैलियों की चाज़ें इस में प्रकाशित हो रही हैं। रागों के परिचय के साथ साथ आलाप तान भी दिये गये हैं। जो ग्रन्थ की उपयोगिता में वृद्धि करेंगे।

जिन जिन गुणियों, कलाकारों, शिक्षकों और प्रचारकों के पास जो जो परम्परागत, प्रचलित और अप्रचलित रागों की रचनायें उपलब्ध हों, उन सब की ओर से यदि इस प्रकार के प्रकाशन हों तो संगीत शिक्षण के क्षेत्र में और अनुसन्धान कार्य में इस से बड़ा ही लाभ पहुंचेगा।

मैं पं० श्रुतिरत्न प्रभाकर शर्मा के इस सराहनीय प्रयास की सम्पूर्ण सफलता चाहता हूं।

पं० ओम्कार नाथ ठाकुर वाराणसी

५-५-६५

श्री प० विनायक राव ना. पटवर्धन महामहोपाध्याय प्रि० विष्णु दिगम्बर संगीत विद्यालय पूना

पं० श्रुति रत्न प्रभाकर शर्मा जी ने 'संगीत कला प्रवीण' नाम की प्रथम पुस्तक छपी हुई दिखलाई, देख कर मुझे बहुत आनन्द हुआ। आप के गुरु स्वर्गीय गायनाचार्य पं० वामनराव पाध्ये जी से जो आप को ज्ञान मिला वह इन पुस्तकों के और भागों में भी छपवाने वाले हैं। स्वर्गीय पं० वामन राव पाध्ये मेरे गुरु बन्धू होने से उनकी बनी हुई पुरानी और नई (स्वरलिपियों) को पं० श्रुति रत्न प्रभाकर जी छपवा रहे हैं इससे स्वर्गीय पं० वामनराव पाध्ये जी की स्मृति रूप में यह पुस्तकें होंगी।

मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तकें छपवाना जल्दी से पूर्ण हो कर स्वर्गीय पं० वामनराव पाध्ये जी की स्मृति जाज्वल्य रूप में प्रत्यक्ष सामने रहने से गुरु का ऋण अंश रूप में कुछ कम होकर पं० श्रुति रत्न प्रभाकर शर्मा जी अपने गुरु का नाम इन पुस्तकों से जागृत रखने का कार्य आप के हाथ से हो यही मैं श्री राम प्रभु के चरणों में प्रार्थना करता हूं।

१०-१०-६४ पं० विनायक राव पटवर्धन पूना

तान कप्तान संगीत महामहोपाध्याय पं० नारायण राव व्यास गायनाचार्य

श्री पं० श्रुति रत्न प्रभाकर शर्मा का संगीत कला प्रवीण नाम का विस्तृत ग्रन्थ पढ़ कर अतीव हर्ष हो रहा है। इस प्रथम पाठय क्रम के प्रचलित अप्रचलित रागों, और प्रचलित अप्रचलित तालों में ध्रुपद, धमार, बड़े ख्याल, छोटे ख्याल, टप्पे, तराने, ठुमरी चतुरंग भजन आदि का यह अनूठा संग्रह है जिस में प्रथम वर्ष से ले कर M. Mus. से भी उच्च प्रशिक्षण की चीज़ों का संग्रह पर्याप्त मात्रा में दिया है।

पं० श्रुति रत्न प्रभाकर शर्मा, स्व० पं० वामनराव पाध्ये गायनाचार्य, कोल्हापुर मेरे ज्येष्ट गुरु बन्धु के प्रमुख शिष्य हैं और करवीर गान्धर्व महाविद्यालय अमृतसर के प्रिंसीपल हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आप एक स्वर रचना कार और साथ में कवि भी हैं। आप की स्वरचित. स्वर और शब्द रचनायें इस संगीत कला प्रवीण प्रथम भाग में भी अनेक छपी हैं। जोकि राग रसानुकल कवितायें आकर्षक सिद्ध होंगी।

आप ने शव्द रचनाओं में उचित स्थान समझ कर ही अपने उपनामों, उज्वल रंग, श्रुतिरंग और शुभ रंग का प्रयोग किया है अनेक रचनायें विना उपनाम के भी हैं। स्वर रचना करते समय, जहां राग शुद्धि तथा राग नियम का पूर्ण परिपालन किया है वहां अश्लील शृङ्गार को स्थान न दे कर गुरुवर्य स्व० पं० विष्णुदिगम्बर जी के पद चिन्हों का अनुकरण का भव्य प्रमाण भी दिया है। मेरा विश्वास है कि पं० श्रुति रत्न शर्मा की यह कृति संगीत संसार को लाभप्रद होगी। और प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि इस ग्रन्थ के दस भागों में कम से कम पांच सौ रागों की चार हज़ार चीज़ें, जो कि सौ से अधिक तालों में निवद्ध होंगी, छपवाने की इनको धारणा पूर्ण हो। जिस से अपने गुरु ऋण को अंश मात्र में चुकाने में सफल सार्थक होने की अनेक शुभ कामनाएं करता हूं।

१०-१०-१९६४ पं० नारायण गणेश व्यास दादर बम्बई

राष्ट्रपति द्वारा विभूषित :–

डा० कृष्णराव शंकर पण्डित संगीत रत्नालंकार ग्वालियर

मुझे लिखने में हर्ष होता है कि पं० श्रुति रत्न जी शर्मा प्रभाकर जी की 'संगीत कला प्रवीण' यह पुस्तक वड़े विद्यार्थियों के लिये लाभदायक होगी ऐसा मुझे विश्वास है।

आप स्वर्गीय पं० वामनराव पाध्ये जी के पास कोल्हापुर में अभ्यास कर के करवीर गान्धर्व महाविद्यालय अमृतसर में चला रहे हैं। यह भी एक वड़ी अच्छी और प्रसन्नता की बात है।

८-२-१९६४ पं० कृष्ण राव शंकर पंडित ग्वालियर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग वंगीय काफ़ी (ताल दीप चन्दी ठाय मात्रा १४,) तालो १, ४, ११ खाली ८ पर

वंदे मातरम्—सुजलां सुफलां मलयजशीतलां, शस्यश्यामलां मातरम् शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं, फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् सुहासिनीं. सुमधुरभाषिणीं, सुखदां वरदां मातरम् ।। वंदे० ।।
कोटि कोटि कंठ कलकल-निनाद-कराले कोटि कोटि भुजैर्धृत-खर-करवाले के बोले मा तुमि अबले ?

बहुवल धारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदलवारिणीं मातरम् ।। वंदे० ।।
तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म, त्वं हि प्राणा: शरीरे,
बाहुते तुमि मा शक्ति हृदये तुमि मा भक्ति,तोमारई प्रतिमा गडि मंदिरे मंदिरे ।। वंदे० ।।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी कमला कमल दल विहारिणीं बाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्
नमामि कमलां, अमलां, अतुलां, सुजलां, मातरम् ।। वंदे० ।।
श्यामलां सरलां, सुस्मितां, भूषितां, धरणीं, भरणीं मातरम् । वंदे मातरम्

प ऽ ऽ म ऽ नि॒ प ग॒ रि ग॒ ऽ म प ध॒ | प ऽ ऽ ऽ ऽ म म प ऽ ऽ ऽ ऽ ध प |
व • • • • • : दे • • • मा • त | रम् • • • • सु ज लाम् • • • • सु फ |
१ ४ + ११ | १ ४ + ११ |

म ऽ ऽ ऽ ऽ प म ग॒ रि ऽ सा रि सा रि सा रि ग॒ रि सा रि | सा ऽ ऽ ऽ सा ऽ
लाम् • • • म ल य ज • सी • • • • • • • • • त | लाम् • • • श •
१ ४ + ११ | १ ४

रि म ऽ प ध ऽ ऽ ऽ | ध नि॒ रिं सां ऽ ऽ ऽ नि॒ सां नि॒ ध प म प ऽ ऽ ऽ |
स्य शा • म लाम् • • • | मा • त रम् • : • • • • • • • • • • • |
+ ११ | १ ४ + ११ |

प ऽ ऽ म ऽ नि॒ प ग॒ रि ग॒ ऽ म प ध॒ | प ऽ ऽ ऽ ऽ ||
व • • • • • • दे • • • मा • त | रम् • • • • ||
१ ४ + ११ | १ ४ ||

म ऽ ध ध ऽ नि॒ ऽ ऽ ऽ | ऽ ध नि॒ रिं सां ध ऽ नि॒ ध प ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ | प ऽ सां नि नि
शु • भ्र ज्यो • त्स्ना • • : | • पु ल कि त या • • मि णीं • • • • | फु • ल्ल कु सु
+ ११ | १ ४ + ११ | १ ४

नि सां ऽ ऽ ऽ नि॒ ध सां ऽ ऽ | ऽ नि॒ ध नि॒ ध प ध प ध प ध सां नि॒ ध प ध प ऽ ऽ ऽ ऽ |
मि त • • • • • • • • • | • द्रु म द ल शो • • • • • • • • • भि णीम् • • • • |
+ ११ | १ ४ + ११ |

म प ऽ म ऽ नि॒ प म ग॒ रि ऽ ऽ ऽ रि रिं | रि ग॒ सा रि सा रि सा रि म ग॒ ऽ रि सा रि सा
सु हा • • • सि • निम् • • • • सु म | धु र भा • • • • • • • • : • • षि णींम्
१ ४ + ११ | १ ४ +

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ सा रि | म ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ म प ध ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ | ध नि॒ रिं सां ऽ ऽ ऽ नि॒
• • • • • सु ख | दां • • • • म् व र दां • • • • म् | मा • त र • • म् •
११ | १ ४ + ११ | १ ४ +

सां नि॒ ध प म प ऽ ऽ ऽ |||
• • • • • • • • • • |||
,,

नोट—जय ताल दूसरा प्रकार मात्रा १३ ताली १,३,१०, खाली ६,१२ पर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिन्ह परिचय

शुद्ध स्वर और मध्य सप्तक चिन्ह रहित यथा सा रि ग म प ध नि।
कोमल तीव्र (विकृत) स्वरों के नीचे (‿) यह चिन्ह है यथा रि‿ ग‿ म‿ ध‿ नि‿। इन में रि‿ ग‿ ध‿ नि‿ कोमल होंगे, और म‿ को तीव्र करना होगा।

मध्य सप्तक के स्वर चिन्ह रहित होंगे। मन्द्र सप्तक के स्वरों पर बिन्दु यथा (˙) निं धं पं मं गं रिं सां। तार सप्तक के स्वरों के ऊपर (।) ऐसा चिन्ह है यथा सा॑ रि॑ ग॑ म॑ प॑ ध॑ नि॑।

मात्राओं के चिन्ह स्वरों के नीचे हैं।

एक मात्रा (—) सा रि ग म | दो मात्रा स रि ग म अथवा सा ऽ रि ऽ ग ऽ म ऽ |

स्वर के नीचे दी गई मात्रा के अतिरिक्त और जितनी मात्रा उस स्वर पर ठहरना होगा (तो स्वर के दायें अवग्रह (ऽ) देकर इस के नीचे मात्रा होंगी। यथा सा ' रि ऽ इत्यादि।

—oo—

आधी मात्रा $\frac{1}{2}$ (o) सा रि ग म | चौथाई मात्रा चतुर्थांश $\frac{1}{4}$ सा रि ग म | अष्टमांश $\frac{1}{8}$ मात्रा यथा सा रि ग म प ध नि सां | $\frac{1}{16}$ मात्रा सा रि ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रि सा |

अतिरिक्त इन के स्वरों को जितना २ समय देना है वह अंकों द्वारा बटों में लिखा है यथा मात्रा का $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{5}$, $\frac{1}{6}$, $\frac{1}{7}$, $\frac{1}{9}$, $\frac{1}{10}$, $\frac{1}{12}$, $\frac{1}{14}$ इत्यादि।

कण स्वर, मूल स्वरों के ऊपर दिये हैं रि^{ग} म^{प}। मींड से स्वरोचार के लिये स्वरों के ऊपर (⌒) चिन्ह सां ध | ग रि सा इत्यादि

ताल चिन्ह : ताल में सम‿, ताली, खाली, जितनी होती हैं उतने ही विभाग ताल के माने जाते हैं। और सम, ताली, खाली के आरम्भ से ही विभाग आरम्भ होते हैं।

सम‿, ताल की पहिली मात्रा पर होता है इसलिए ताल संकेत में सम‿ के लिये १ अंक लिखा है। तालियां जिस २ मात्राओं पर हैं उसको उसी मात्रा के अंक से लिखा है। खाली अर्थात् काल के लिये (+) यह चिन्ह दिया है।

स्वर लेखन (नोटेशन में) ऊपर स्वर नीचे उन की मात्रा, इस के नीचे शब्द या उनके आकार इकार को बढ़ाने के लिये (˙) ऐसे चिन्ह और सब से नीचे सम‿, ताली, खाली के चिन्ह दिये गये हैं।

आडीलय कारी एक प्रकार अर्थात् प्रत्येक मात्रा के तीन भाग करके उसका $\frac{1}{3}$ समय प्रत्येक स्वर पर ठहरना, आड कहलाता है।

सा ऽ रि ऽ ग ऽ म ऽ प ऽ ध ऽ नि ऽ सां ऽ नि ऽ ध ऽ प ऽ म ऽ ग ऽ रि ऽ सा ऽ | इन स्वरों को

$\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यूं भी लिखा जा सकता है सा रि ग आड, अर्थात दो मात्रा में तीन स्वर या अंक बराबर (सा रि ग के नीचे २/३ २/३ २/३) समय तीनों को=चार मात्रा में छः (इसी से दादरा ताल की उत्पत्ति होती है)। आठ मात्रा में बारह स्वर या यू समझें कि बारह मात्राओं को आठ मात्रा में गाना बजाना अथवा लिखना यह तिस्र जाति की लय आड़ कहलाती है चतुस्र जाति की लय तो सब लय कारियों का मूल आधार होने से वह तो प्रारम्भ से अन्त तक साथ २ रहेगी ही। अर्थात् एक मात्रा में एक स्वर, एक मात्रा में दो स्वर। एक मात्रा में चार, एक मात्रा में आठ, एक मात्रा में १६ अर्थात दो पर भाग देने पर पूरा तकसीम हो जाए बाकी (०) रहे।

खण्ड जाति एक मात्रा में (५) मिस्र जाति एक मात्रा में सात। (मिश्र जाति और खण्ड जाति के लिए मतभेद पाया जाता है। कोई तो एक मात्रा में पांच को मिश्र जाति तथा एक मात्रा में सात को खण्ड जाति मानते हैं। संकीर्ण जाति एक मात्रा में ९।

तीनताल मात्रा ८, ताली १, ३, ७ पर खाली ५ पर।

धा धिं धिं धा धा धिं धिं धा धा तिं तिं ता ता धिं धिं धा

० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

१ ३ + ७

ताल कहरवा मात्रा ४ ताली १, खाली ३

धा गी न ती न क धि न

० ० ० ० ० ० ० ०

१ +

ताल घुमाली मात्रा ४ ताली १

ता धा धा ती

— — — —

१ +

ताल घुमाली मात्रा ४ ताली १, २, ४ खाली ३

धिं धा धिं ऽ धिं धा धिं धा तिं ऽ ति न क

० ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿

१ ३ + ४

ताल दादरा मात्रा ६ ताली १ पर खाली ४

धा धि ना धा ति ना

— — — — — —

१ +

ताल तेवरा मात्रा ७ ताली १, ४, ६

धा दिं ता कि ट त क ग दि गि न

— — — ० ० ० ० ० ० ०

१ ४ ६

ताल रूपक मात्रा सात सम् पर खाली ताली ४, ६ पर

तिं तिं ना धि ना धि ना या धा ति ना धी ना धी ना

— — — — — — — — — — — — — —

१ ४ ६ + ४ ६

नोट

ता या ति पर सम आना शास्त्र आज्ञा नहीं। रूपक और धमार का सम् धा या धिं होना चाहिए।

साढ़ तीन ताल, मात्रा ८½, ताली १, ३, ७ पर

धा धि धि धा धा धि धि धा धा ति ति ता ता धि धि धि न न क

० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿

१ ३ + ७

ताल दीप चन्दी (चंचल) मात्रा ७ ताली १, १½ खाली ३½ पर। मत्त ताल मात्रा ९, ताली १,३,४,६,७,८

धा धिं ' धा गि तिं ऽ ता तिं धा गीधिं

० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० —

१ १½ + ६

धा धि न न क धि न न क ति ट क त ग दि गि न

— ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

१ ३ ४ ६ ७ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठेका तबला, मत्तताल ताली १,३,४ ६,७,८
खाली २,५,९ पर

धिं ति रि कि ट तिं ना क त्ता ति रि कि ट घिं ना
— ⌣⌣⌣⌣ — — — — ⌣⌣⌣⌣⌣ — —
१ + ३ ४ + ६ ७ ८ +

झपताल मात्रा १०, ताली १,३,८ खाली ६ पर

धी ना धी धी ना ती ना धी धी ना
— — — — — — — — — —
१ ३ + ८

सूल ताल, मात्रा १० ताली १,५,७ खाली ३, ९

धा धा दिं ता कि ट धा कि ट त क ग दि गि न
— — — — ० ० — ० ००० ०० ० ०
१ + ५ ७ +

द्रुत एकताल यक्का मात्रा६ ताली १,३,५,६ खाली४

धी धी ना ता तू ना क त्ता धी ना धी ना
०० ००००० ० ००० ०
१ ३ + ५ ६

सूल ताल ठेका तबला

धिं धिं ना त्र क तिं त क धिं धिं धा गी त्र क
— — — ०० — ०० — — ० ० ० ०
१ + ५ ७ +

रुद्र ताल मात्रा ११, ताली १,२,४,५,६,८,९,१०

धी ना धी ना ता ती ना क त्ता धी ना
— — — — — — — — — — —
१ २ ४ ५ ६ ८ ९ १०

दूसरा ठेका, रुद्र ताल, मात्रा ११, ताली १,२,४,५,६,८,९,१० खाली ३,७, ११

धिं धा ना धा ति रि कि ट तिं ता ति रि कि ट धी ना धी ना
— — ० ० ⌣⌣⌣⌣ — — ⌣⌣⌣⌣ — — — —
१ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० +

चौताल मात्रा १२, ताली १. ५, ९, ११ खाली ३, ७ पर

धा धा दिं ता कि ट धा दिं ता कि ट त क ग दि गि न
— — — — ० ० — — — ० ० ० ० ० ० ० ०
१ + ५ + ९ ११

एक ताल मात्रा १२. ताली १, ५, ९, ११, खाली ३, ७ पर

धिं धिं धा गी ति रि कि ट तू ना क ता धा गी ति रि कि ट धिं ना
— — ० ० ⌣⌣⌣⌣ — — — — ० ० ⌣⌣⌣⌣ — —
१ + ५ + ९ ११

जय ताल मात्रा १३, ताली १, ३, ५, ७, ९, १०, १२, १३, खाली २,४,६,८,११

धिं ति रि कि ट धिं धा धा तिं ता तू ना क त्ता ता धा गे न धा ति रि किं ट
— ⌣⌣⌣⌣ — — — — — — — — — — ० ⌣⌣⌣⌣⌣⌣⌣
१ + ३ + ५ + ७ + ९ १० + १२ १३

धमार ताल मात्रा १४ ताली १, ६, ११ खाली ४, ८, १३

धा धि ट धि ट धा ऽ ग ति ट ति ट ता ऽ
— — — — — — — — — — — — — —
१ + ६ + ११ +

ताल जात (दीप चन्दी गंभीर)ताली१,३,७

धा धिं धा गी तिं ता तिं धा गी धिं
— — ० ० — — — ० ० —
१ ३ + ७

झूमरा ताल मात्रा १४ ताली १, ४, ११ खाली ८ पर

धिं ऽ धा ति रि कि ट धिं धिं धा गी ति रि कि ट तिं ऽ ता ति रि कि ट धिं धिं धा गी ति रि कि टि
— ० ० ⌣⌣⌣⌣ — — ० ० ⌣⌣⌣⌣ — ० ० ⌣⌣⌣⌣ — — ० ० ⌣⌣⌣⌣
१ ४ + ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार ताल (ठेका ख्याल अंग तबला) मात्रा १४, ताली १, ६, ११ पर खाली ४, ८, १३ पर

धा धिं ऽ क ड़ धिं धिं धा गी ति रि कि ट तीं ऽ क ड़ तिं ता ति रि कि ट ता ति रि कि ट

— — o ◡ ◡ — - o o ◡ ◡ ◡ ◡ — o ◡ ◡ — — ◡ ◡ ◡ ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡

१ + ६ + ११ +

ताल फिरोदस्त (एक प्रकार) मात्रा १४, ताली १,३,५,७,९,११ खाली १३ पर ठेका तबला

धा ति टि कि ट धि ना ति रि कि ट कत् ति रि कि ट धि ना धि धि ना धा गे धी ना ति रि कि ट

— ◡ ◡ ◡ ◡ o o ◡ ◡ ◡ ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡ — — — — — o o o o ◡ ◡ ◡ ◡

१ ३ ५ ७ ९ ११ +

ताल झूमरा मात्रा १४ ताली १, ४, ११ खाली ८ पर

धिं ऽ धा ति रि कि ट धिं धिं धा गी ति रि कि ट तिं ऽ ता ति रि कि ट धिं धिं धा गी ति रि कि ट

— o o ◡ ◡ ◡ ◡ — — o o ◡ ◡ ◡ ◡ — o o ◡ ◡ ◡ ◡ — — o o ◡ ◡ ◡ ◡

१ ४ + ११

(एक प्रकार) ब्रह्म ताल मात्रा १४, ताली १, ३, ४, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, ठेका तबला

धा धि ति रि कि ट धि ना ता तिं ति रि कि ट तू ना क त्ता ति रि कि ट धि ना

— — ◡ ◡ ◡ ◡ — — — — ◡ ◡ ◡ ◡ — — — — ◡ ◡ ◡ ◡ o o

१ + ३ ४ + ६ ७ ८ +१० ११ १२ १३ +

आड़ा चौताल (वक्र चार ताल) मात्रा १४, ताली १,३,७,११ पर खाली ५,९,१३ पर

धि ति रि कि ट धि ना तू ना क त्ता ति रि कि ट धि ना धि धि ना

— ◡ ◡ ◡ ◡ — — — — — — ◡ ◡ ◡ ◡ — — — — —

१ ३ + ७ + ११ +

(एक प्रकार) तास स्वारी मात्रा १५ ताली १, ४, ८, १२ खाली ६, १०, १४ पर

धि ऽ ता ऽ क धि ऽ ता ऽ क धि ऽ क ड़ धि धि धा गे धा गे तिं ऽ क ड़ तिं तिं ता के तू ना क त्ता ति

o ◡ ◡ ◡ ◡ o ◡ ◡ ◡ ◡ o ◡ ◡ ◡ o o o o o o o ◡ ◡ ◡ o o o o o o o o ◡

१ ४ + ८ + १२

रि कि ट धि ता धा गे ना धा ति रि कि ट

◡ ◡ ◡ o o ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡

+

ताल स्वारी। पंचम स्वारी भी कहते हैं मात्रा १५ ताली १, ४, ८, १२ खाली ६, १०, १४ पर।

धा ति रि कि ट धी ना कत् धी धी ना धी धी ना ती ना ती ना त्र क तू ना कि ड़ न ग क त्ता धी धि

— ◡ ◡ ◡ ◡ o o — o o o o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ o o o o

१ ४ ८ १२

ना धी धी ना

o o o o

+

ताल अध्दा मात्रा ८, ताली १, ३, ७ खाली ५ पर

धा धिं ऽ धा धा धिं ऽ धा धा तिं ऽ ता ता धिं ऽ धा

o o o o o o o o o o o o o o o o

१ ३ + ७

ताल गज झंप्पा मात्रा १५ ताली १, ५, १३, खाली ९ पर, ठेका तबला

धा धि ना त क धा त्र क धिं न ग तिं न क धि त्र क धा गे धी ना गि न

— — o o — o o — o o — o o — o o o o o o o o o

१ ५ + १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धोमा तीन ताल मात्रा १६, ताली १, ५, १३, खाली ९ पर, इसी प्रकार तिलवाड़ा और पंजाबी ताल की मात्रा ताली खाली सब एक समान हैं

धा धिं धिं धा धा धिं धिं धा धा तिं तिं ता त क धिं धिं धा
— —— —— — —— —— — — ०० — ——
१ ५ + १३

ताल तिलवाड़ा

धा ति रि कि ट धिं धिं धा धा तिं तिं ता ति रि कि ट धिं धिं धा धा धिं धिं
— ◡◡ ◡◡— — —— —— —◡ ◡ ◡◡— —— ——
१ ५ + १३

पंजाबी तीन ताल

धा ग धी ऽ ग धा धा ग धी ऽ ग धा धा ग ती ऽ ग ता धा गी न धी ऽ ग धा
— ० ० ० ० —— ० ० ० ० —— ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० —
१ ५ + १३

शेखर ताल मात्रा १७ ताली १, १३, १५ पर खाली ७ पर, ठेका तबला

धिं ति रि कि ट धिं ना तू ना क त्ता तिं ति रि कि ट धिं ना ध गि ति रि कि ट धिं धिं ना
— ◡ ◡◡◡— —— —— — ◡◡ ◡◡— — ० ० ◡ ◡◡◡— ——
१ + १३ १५

ठेका पखावज शेखर ताल

धा त्र क धि न क थुं गा धि न क धु म कि ट क त धेत् धा ति ट क त ग दि गि न
— ० ० — ० ० —— ० ० ० ० ० ० ० ० — — ० ० ० ० ० ० ० ०
१ + १३ १५

करुण ताल, मात्रा १८ ताली १, ५, ९, ११, १५, १७ खाली ३, ७, १३ पर; ठेका पखावज

धा धि न न क धे धि न न क धि न न क धे धे धि न न क धि न न क कि ट त क गा दि गि न
— ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ० ० —— ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
१ + ५ + ९ ११ + १५ १७

ठेका तबला करुण ताल

धा धिं ना धिं धिं ति रि कि ट धिं ना धा ति ना ति रि कि ट ता क त् धिं धा गी न धा ति रि कि ट
— —— —— ◡ ◡◡◡ — — — — — — ◡◡ ◡◡— ०० — ० ० ० ० ◡ ◡ ◡◡
१ + ५ + ९ ११ + १५ १७

शेष ताल मात्रा १९, ताली १, ५ ९, ११, १३, १७, १८, खाली ३, ७, १५, ठेका तबला

धिं ऽ क ड धिं ता धिं धिं धा गे तिं ति रि कि ट धा धिं कत् ति रि कि ट धिं धा गी धाधागीनाधिंऽना
— ०◡◡— — — — ० ० — ◡◡ ◡◡— — — ◡◡ ◡◡— ० ० — ० ० ० ० ० ०
१ + ५ + ९ ११ १३ + १७ १८

ठेका पखावज शेष ताल

धा ता दिं ता धे धं दिं ता ता धे धे ता धि ट धि ट धा गी ति ट धा कि ट धा ऽ न
—— ——— — — — — — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
१ + ५ + ९ ११ १३ + १७ १८

सभी अलंकारों को लय ताल बद्ध स्वरोचार और आकार से कंठ में बिठावें, तत्पश्चात् इन को इकार, उकार, एकार, ओकार से भी तैय्यार करें। एक ही सांस में अलंकार बोलने का अभ्यास करें। अलंकारों का अभ्यास मध्य लय में कर के, दुगुन, चौगुन में भी अभ्यास करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(घ)

ताल बद्ध अलंकार तीन ताल में निबद्ध प्रत्येक स्वर एक मात्रा

सा रि ग म प ध नि सां | सां नि ध प म ग रि स |
आ . . . . | आ . . . . |
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ |

प्रत्येक स्वर दो मात्रा तीन ताल में निबद्ध

सा ऽ रि ऽ ग ऽ म ऽ | प ऽ ध ऽ नि ऽ सां ऽ | सां ऽ नि ऽ ध ऽ प ऽ
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ | १ ३ + ७

म ऽ ग ऽ रि ऽ सा ऽ |
१ ३ + ७

प्रत्येक स्वर तीन मात्रा (दादरा ताल में)

सा ऽ ऽ रि ऽ ऽ | ग ऽ ऽ म ऽ ऽ | प ऽ ऽ ध ऽ ऽ | नि ऽ ऽ सां ऽ ऽ |
१ + | १ + | १ + | १ + |

सां ऽ ऽ नि ऽ ऽ | ध ऽ ऽ प ऽ ऽ | म ऽ ऽ ग ऽ ऽ | रि ऽ ऽ सा ऽ ऽ
१ + | १ + | १ + | १ +

प्रत्येक स्वर चार मात्रा (कहरवा ताल)

सा ऽ ऽ ऽ | रि ऽ ऽ ऽ | ग ऽ ऽ ऽ | म ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ | ध ऽ
आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ .
१ + | १ + | १ + | १ + | १ + | १

ऽ ऽ | नि ऽ ऽ ऽ | सां ऽ ऽ ऽ | सां ऽ ऽ ऽ | नि ऽ ऽ ऽ | ध ऽ ऽ ऽ |
. . | आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ . . . |
+ | १ + | १ + | १ + | १ + | १ + |

प ऽ ऽ ऽ | म ऽ ऽ ऽ | ग ऽ ऽ ऽ | रि ऽ ऽ ऽ | सा ऽ ऽ ऽ |
आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ . . . | आ . . . |
१ + | १ + | १ + | १ + | १ + |

प्रत्येक मात्रा में दो स्वर, तीन ताल में

सा रि ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रि सा |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
आ . . . . |
१ ३ + ७ |

प्रत्येक मात्रा में चार स्वर तीन ताल में

सा रि ग म, प ध नि सां, सां नि ध प, म ग रि सा, सा रि ग म, प ध नि सां, सां नि ध प, म ग रि सा
आ . . . .
१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्येक मात्रा में आठ स्वर, तीन ताल में

सा रि ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रि सा सा रि ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रि सा |
आ
१ ३

सा रि ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रि सा सा रि ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रि सा |
\+ ७

एक ताल में, एक मात्रा की, तीन प्रकार से, तीन स्वरों की बांट (प्रकार १)

सा रि ग रि ग म ग म प म प ध प ध नि ध नि सां सां नि ध नि ध प ध प म प म ग म ग रि
‿ ‿ o, ‿‿o, ‿‿o, ‿‿o, ‿‿ o, ‿‿ o, ‿ ‿ o, ‿‿o, ‿‿o, ‿‿o, ‿‿ o,
१ + ५ + ९ ११

ग रि सा |
‿ ‿ o |

सभी अलंकारों की बराबर ठाय दुगुण, चौगुण, आठ गुण, तिगुण, छः गुण बारह गुण, सोलह गुण इत्यादि करें।

प्रकार २

सा रि ग रि ग म ग म प म प ध प ध नि ध नि सां सां नि ध नि ध प ध प म प म ग
‿ o ‿, ‿ o ‿, ‿o ‿, ‿o‿, ‿ o ‿, ‿o ‿, ‿ o ‿, ‿ o ‿, ‿ o ‿, ‿ o ‿,
१ + ५ + ९

म ग रि ग रि सा |
‿o ‿, ‿ o ‿ |
११

प्रकार ३

सा रि ग रि ग म ग म प म प ध प ध नि ध नि सां सां नि ध नि ध प ध प म प म ग
o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿, o ‿‿,
१ + ५ + ९

म ग रि ग रि सा |
o ‿‿, o ‿‿ |
११

झपताल में अलंकार १ला

सा रि सा रि ग रि ग रि ग म | ग म ग म प म प म प ध | प ध प ध नि
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १ ३

ध नि ध नि सां | सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प | ध प ध प म, प म प म ग |
\+ ८ | १ ३ + ८ | १ ३ + ८ |

म ग म ग रि, ग रि ग रि सा |
१ ३ + ८ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल में अलंकार २रा

रि सा ग रि सा ग रि म ग रि | म ग प म ग प म ध प म | ध प नि ध प
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १ ३

नि ध सां नि ध | ध नि सां नि ध, प ध नि ध प | म प ध प म ग म प म ग
+ ८ | १ ३ + ८ | १ ३ + ८

रि ग म ग रि सा रि ग रि सा |
१ ३ + ८

झपताल में अलंकार ३रा

सा रि ग रि सा रि ग म ग रि | ग म प म ग म प ध प म | प ध नि ध प
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १ ३

ध नि सां नि ध | ध नि सां नि ध, प ध नि ध प | म प ध प म, ग म प म ग
+ ८ | १ ३ + ८ | १ ३ + ८

रि ग म ग रि, सा रि ग रि सा |
१ ३ + ८

चार ताल में

सा ग रि सा रि म ग रि ग प म ग | म ध प म प नि ध प ध सां नि ध |
१ + ५ + ९ ११ | १ + ५ + ९ ११

ध नि सां ध प ध नि प म प ध म | ग म प ग रि ग म रि सा रि ग सा |
१ + ५ + ९ ११ | १ + ५ + ९ ११

द्रुत एक ताल में

सा ग रि म ग प म ध प नि ध सां | सां ध नि प ध म प ग म रि ग सा |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

द्रुत एक ताल में दुपट स्वर

सा सा ग ग रि रि म म ग ग प प म म ध ध प प नि नि ध ध सां सां |
१ + ३ + ५ ६

सां सां ध ध नि नि प प ध ध म म प प ग ग म म रि रि ग ग सा सा |
१ + ३ + ५ ६

तीव्रा ताल में

सा रि ग सा रि ग म | रि ग म रि ग म प | ग म प ग म प ध | म प ध
१ ४ ६ | १ ४ ६ | १ ४ ६ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प ध नि | प ध नि प ध नि सां | सां नि ध प नि ध प | नि ध प म ध
४ ६ | १ ४ ६ | १ ४ ६ | १ ४

प म | ध प म ग प म ग | प म ग रि म ग रि | म ग रि सा ग रि सा |
६ | १ ४ ६ | १ ४ ६ | १ ४ ६ |

रूपक ताल में सम् पर खाली की प्रथा है।

सा सा सा रि ग म प | रि रि रि ग म प ध | ग ग ग म प ध नि | म म
१ ४ ६ | १ ४ ६ | १ ४ ६ | १

म प ध नि सां | सां सां सां नि ध प म | नि नि नि ध प म ग | ध ध ध प म
४ ६ | १ ४ ६ | १ ४ ६ | १ ४

ग रि | प प प म ग रि सा |
६ | १ ४ ६ |

आडा चौताल (चक्र चार ताल)

सा रि रि ग ग म म प प ध ध नि नि सां | सां नि नि ध ध प प म म ग ग रि रि सा
—, —, —, —, —, —, —, | —, —, —, —, —, —, —,
१ ३ + ७ + ११ + | १ ३ + ७ + ११ +

दुगण आडा चौताल

सा रि रि ग ग म म प प ध ध नि नि सां सां नि नि ध ध प प म म ग ग रि रि सा
०० , ००, ००, ००, ००, ०० , ०० , ०० , ०० , ०० , ००, ००, ००, ००,
१ ३ + ७ + ११ +

चौगुण आडा चौताल

सा रि रि ग ग म म प प ध ध नि नि सां सां नि नि ध ध प प म म ग ग रि रि सा
⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣
१ ३ + ७

सा रि रि ग ग म म प प ध ध नि, नि सां सां नि नि ध ध प प म म ग ग रि रि स
⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣, ⌣
+ ११ +

मात्रा बद्ध तान जिस से, एक साथ अनेक लयकारियों पर प्रभुत्व प्राप्त किया जा सकता है।

सा सा रि सा रि ग सा रि ग म प म ग रि सा सा रि ग म प ध प म ग रि सा :
—, ०० , ३ ३ ३ , ⌣ ⌣ , ५ ५ ५ ५ ५ , ६ ६ ६ ६ ६ ६ , ५ ५ ५ ५ ५ ,

सा रि ग म प ध नि प ध प म ग रि सा सा रि ग म प ध नि सां रिं सां नि ध प म ग रि
७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ , ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ , ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

ग रि ग प ध नि सां रिं गं, रिं सां नि ध प म ग रि सा, प म ग रि सा ग म प ध नि
९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९०९०९०९०९०९०९०९०९०९०

सां रिं गं रिं सां नि ध प म ग रि सा म ग रि स गं रिं सां नि ध प म ग रि सा
११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ , १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ ,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प म ग रि सा, गं रिं सां नि ध प म ग रि सा

एक से दूसरी मात्रा में गांठ

सा रि, ऽ ग, ऽ म, ऽ प, ऽ ध, ऽ नि, ऽ सां, ऽ नि, ऽ ध, ऽ प, ऽ म, ऽ ग, ऽ रि, ऽ सा
o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o o

सा रि, सा रि सा, सा रि सा | रि ग, रि ग रि, रि ग रि | ग म, ग म ग, ग म ग | म
प, म प म, म प म | प ध, प ध प, प ध प | ध नि, ध नि ध, ध नि ध | नि सां, नि
सां नि, नि सां नि | सां रिं, सां रिं सां, सां रिं सां | रिं गं, रिं गं रिं, रिं गं रिं | गं
मं, गं मं गं; गं मं गं | गं मं गं, गं मं गं, गं मं | रिं गं रिं, रिं गं रिं, रिं गं | सां रिं सां,
सां रिं सां, सां रिं | नि सां नि, नि सां नि, नि सां | ध नि ध, ध नि ध, ध नि | प ध प, प ध
प, प ध | म प म, म प म, म प | ग म ग, ग म ग, ग म | रि ग रि, रि ग रि, रि
ग | सा रि सा, सा रि सा, सा रि | निं सा निं, निं सा निं, निं सा | धं निं धं, धं निं धं, धं
निं | पं धं पं, पं धं पं, पं धं | मं पं मं, मं पं मं, मं पं | पं धं, पं धं पं, पं धं पं | धं
निं, धं निं धं, धं निं धं | निं सा, निं सा निं, निं सा निं |

सा रि, सा रि सा निं, रि ग | रि ग रि सा, ग म ग म | ग रि, म प म प म ग | प ध
प ध प म, ध नि | ध नि ध प, नि सां नि सां | नि ध, सां रिं सां रिं सां नि | रिं गं रिं गं रिं
सां गं मं | गं मं गं रिं, रिं गं म ग | मं गं, सां रिं गं रिं गं रिं | नि सां रिं सां रिं सां; ध
नि | सां नि सां नि, प ध नि ध | नि ध, म प ध प ध प | ग म प म प म; रि ग | म
ग म ग, सा रि ग रि | ग रि, निं सा रि सा रि सा | धं निं सा निं सा निं, पं धं | निं धं निं
धं, मं पं धं पं | धं पं, पं धं निं धं निं धं | धं निं सा निं सा निं, निं सा | रि सा रि सा ऽ
o

नोट—(१) पृष्ट १०७ पर बागेश्वरी (सखा तुम बोलो) इस का शेष अन्तरा, पृष्ट ११२ पर देखें।
(२) राग शंकरा पृष्ट १२१ पर (झूलना झुलावोरी) अपूर्ण है इसकी पूरी बन्दिश २२५ पर छपी है
(३) जिन छात्रों ने इस ग्रंथ की हस्तलिपि तैय्यार की उन केलिए इस के आगे की अनेक भागों का बहुत सा कार्य शेष है वह भी उनको ही करना होगा अतिरिक्त इसके उन सब को भी धन्यवाद देता हूं जिन्हों ने किसी प्रकार का भी सहयोग दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
१. राग भूपाली (भूप)	
बड़ा ख्याल परसत चरण, (जय ताल) गुरु वन्दना	
शास्त्रीय विवरण, लयवब्द आलाप, तान	१ से ३
बड़ा ख्याल—ए जो अब तो (वि.तिलवाड़ा)	३
ध्रुपद नाना रूप [ताल सवारी १५ मात्रा]	४
बड़ा ख्याल - जब मैं जानी (आड़ा चौताल)	५
चीज़—झांझ मंदिलरा मोरा (त्रिताल)	६
चीज़ -जब से तुमिसन लागली (त्रिताल)	६
चीज़ —जय जय जय रघुवंश (त्रिताल)	७
चीज़—अब देखो राम ध्वजा (त्रिताल)	८
चीज़—ना मैं योग ध्यान (त्रिताल)	९
चीज़—कौशल्या मैया (त्रिताल)	१०
२. कल्याण और जैमिनी कल्याण (यमन कल्याण)	
शास्त्रीय विवरण	११
लयवब्द आलाप, तान	११ से १२
बड़ा ख्याल—मोसो बात सुनो (वि. एकताल)	१३
ख्याल—मोको डगर चलत धीमात्रिताल)	१४
चीज़ मोहे दरस दीजे (द्रुत तीन ताल)	१५
चीज़—लंगर तोरेकजिन (,,)	१६
चीज़—जाके दरस को जग (,,)	१६
चीज़—बिन देखे मन (,,)	१७
चीज़—अवगुण न कीजिए (,,)	१७
चीज़—पीयरवा तिहारी नेक (,,)	१९
ध्रुपद—पारब्रह्म परमेश्वर (चौताल)	२०
३. राग सारग (वृन्दावनी सारंग)	
शास्त्रीय विवरण	२१
लयवद्ध आलाप, तान	२२
बड़ा ख्याल—झांझ मंदिलरा(वि.आड़ा चौताल)	२३
चीज़—सुन्दर मुख वारे मोरे (द्रुत एक ताल)	२४
चीज़—कर मन नंद नंदन (द्रुत त्रिताल)	२५
चीज़—रघुवर आज रहो (झपताल)	२६
तराना - दीम तननतन दीम (द्रुत एक ताल और तीन ताल में भी)	२७
चीज़—तोरी सुरतियां (त्रिताल)	२८
४. राग दुर्गा	
शास्त्रीय विवरण	२९
लयवद्ध आलाप, तान	२९-३०
बड़ा ख्याल—बिसर न जायो (वि. झूमरा)	३१
बड़ा ख्याल—देवी भजो दुर्गा (वि. तिलवाड़ा)	३२
बड़ा ख्याल—दूध पिये सिध (वि. तिलवाड़ा)	३३
चीज़ - सखी मोरी रुम झूम (झपताल)	३४
चीज़—हो रसिया मैं तो (मध्यलय त्रिताल)	३४
चीज़—बन बोले बन बोले (द्रुत एकताल)	२२८
चीज़—परदेसवा सैंया (तीनताल)	२२९
५. राग तिलंग	
शास्त्रीय विवरण	३६
लयवद्ध आलाप, तान	३६
वि. ख्याल—साहिब को मिहि (धीमा तीन ताल पंजाबी)	३७
चीज़—तूं गोबिंद है (तीन ताल)	३८
चीज़—शाम शाम शाम रटत (द्रुत एक ताल)	३९
चीज़ अब मोरी खेलन (तीन ताल)	४०
ठुमरी—छतियां लेहूं लगाय (तीन ताल)	४१
६. राग बिहाग	
शास्त्रीय विवरण	४२
लयबद्ध आलाप, तान	४३-४४
बड़ा ख्याल—कैसे सुख सोवें (वि.तिलवाड़ा)	४५
चीज़—देखो सखी कन्हैया (धीमा त्रिताल)	४६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
चीज़—बालम रे मोरे (त्रिताल)	४७
चीज़—जाके दरश को (त्रिताल) पाठान्तर	४८
चीज़—चल रे योगी (तीन ताल)	४९
चीज़—सखी आज नंद (झपताल)	५०
७. राग खमाज	
शास्त्रीय विवरण	५१
लय बद्ध आलाप, तान	५१,५२
भजन—माधव मो समान [तीन ताल]	५२
भजन—है नीको मेरो देवता [तीन ताल]	५३
चीज़ - आली री तूं क्यों [तीन ताल]	५४
ठुमरी - सुरतिया रे [पंजाबी ठेका तीन ताल]	५५
दादरा—बंसी वारे तूं मेरी [दादरा]	५६
ठुमरी – सगरा विगारा [पंजाबी तीन ताल]	५७
होरी—पिया प्यारी [दीप चंदी]	५८
ठुमरी—सांवरे क्यों [पंजाबी तीन ताल]	५९
ठुमरी —पियाविन [पंजावी तीन ताल]	६०
ठुमरी—लाग गई तब [झपताल]	६१
८. राग काफी	
लयवद्ध आलाप—तान	६३, ६४
चीज़—हरि के संग मैं क्यों [त्रिताल]	६४
होरी—मत मारो शाम पिचकारी [दीपचंदी]	६६
चीज़—जे जन शरण [तीन ताल]	६७
होरी—गोरी कूंजन में [दीपचंदी]	६८
९. राग देश	
शास्त्रीय विवरण	६९
लयवद्ध आलाप-तान	६९, ७०
ठुमरी -सुरतिया रे [झपताल]	७०
ठुमरी—या सांवरे सों [झपताल]	७१
ठमरी—मों सम कौन [तीन ताल]	७२
ख्याल - अब हों कांसो [वि. तीनताल]	७३
चीज़—मेरे जिया ऐसी [तीनताल]	७४
१०. राग भैरवी	
शास्त्रीय विवरण	७५
लयबद्ध आलाप - तान	७६, ७७
होरी - तनमन रंग [दीप चंदी]	७८
ठुमरी—तो से न मैं बोलूंगी [दीप चंदी]	७९
ठुमरी—मोसे भोर ही [दीप चंदी]	८०
चीज़—सांझ परी [तीन ताल]	८०
चीज़—सरस्वती शारदा [तीन ताल]	८१
चीज़—सखी मेरे मन [तीन ताल]	८२
ठुमरी—ओ सजन घर [तीन ताल]	८३
चीज़—नंद भुवन [तीन ताल]	८३
११. राग हमीर	
शास्त्रीय विवरण	८४
लयबद्ध आलाप, तान	८५, ८६
ख्याल—ये पिया हम [वि. तिलवाड़ा]	८७
ख्याल—आली री उनि सों [रूद्र ताल]	८८
चीज़—सजनी आज [रूपक ताल]	८९
टप्पा—तेंडरे कारण [द्रुत एक ताल]	९०
चीज़—मन रे कौन [द्रुत एक ताल]	९०
चीज़ – जा कोउ वृन्दावन [तीन ताल]	९१
१२. राग भीमपलासी	
शास्त्रीय विवरण	९२
लयबद्ध आलाप, तान	९३, ९५
सारिगम [झपताल]	९६
ख्याल–गरीब निवाज़ [वि. एक ताल]	९६
ख्याल—आवो आवो घर [झपताल]	९७
ख्याल—बांसुरी बजाई [रूद्र ताल]	९८
चीज़—जोगन प्रेम वरण [द्रुत एक ताल]	९९
चीज़ –मेरे तो तुम [तीन ताल]	१००
चीज़—तुम सुनो राधिका [झपताल]	१०१
चीज़—सांचि कहो कै प्यारी [त्रिताल]	१०१
चीज़—झूलत शाम हिन्डोरा [तीनताल]	१०२
१३. राग बागेश्वरी	
शास्त्रीय विवरण	१०३
लयबद्ध आलाप, तान	१०४, १०५
ख्याल—परदेसवा काहे को [वि. एक ताल]	१०६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
चीज़—सखा तुम बोलो [झपताल]	१०७
चीज़—विनती सुनो मेरी [झपताल]	१०८
चीज़—लागी रे लगनिया [झपताल]	१०९
चीज़—कहत शाम शामाजू [तीनताल]	११०
चीज़—कान्ह गिरधारी [तीनताल]	१११
ख्याल—भनक परी हरि [करुण ताल]	११२
१४. राग शंकरा	
शास्त्रीय विवरण	११३
लयबद्ध आलाप-तान	११३-११४
धमार—खेलत शिव शंकर [ताल धमार]	११५
ख्याल—आद महादेव [ताल झूमरा]	११५
ख्याल—शंकर पंच वदन [वि. एकताल]	११७
चीज़—राम सखा तव [तीन ताल]	११८
चीज़—सूनी रे सेजरिया [झपताल]	११८
चीज़—ये रंगीला मनुवा [तीनताल]	११९
चीज़—राधा प्यारी बात [तीनताल]	१२०
चीज़—झूलना झुलावो [द्रुत एकताल]	१२१
२रा प्रकार—झूलना झुलावो ,,	२२५
ख्याल—डमरू वजायो [सवारी ताल]	१२२
१५. राग तिलक कामोद	
शास्त्रीय विवरण	१२२
लयबद्ध आलाप-तान	१२३-१२४
ध्रुपद—गुण की चरचा [सूलताल]	२२७
सारिगम गीत [ताल गज झंपा]	१२४
ख्याल—राम कहो रहिमान [वि. तीनताल]	१२५
चीज़—मुकट पर वारी [झपताल]	१२६
चीज़—मो मन वसो [झपताल]	१२७
चीज़—कैसे तुम गणिका [झपताल]	१२८
चीज़—लाल तुम कहां से [तीनताल]	१२९
चीज़—नहि ऐसो जन्म [तीनताल]	१३०
चीज़ कोयलिया बोले [तीनताल]	१३१
चीज —हे गोविन्द हे गोपाल [द्रुत एकताल]	१३२
१६. राग अल्हैया बिलावल और बिलावल	
शास्त्रीय विवरण	१३३
लयबद्ध आलाप-तान	१३४
ध्रुपद—तू ही आद नाद (चौताल)	१३५
ख्याल—ये मन कहां करूं (शिखर ताल)	१३६
ख्याल—दैया कहां गये (वि. एकताल)	१३७
चीज़—वट तर सांवरो (झपताल)	१३८
चीज़—काहू जोगिया की (तीनताल)	१३९
चीज़—पथ देखत नयना (तीनताल)	१३९
राग विलावल—दे पूतना विष (तीनताल)	१४०
टप्पा—तेंडी याद आवे (द्रुत एकताल)	१४१
१७. राग केदार	
शास्त्रीय विवरण	१४२
लयबद्ध आलाप-तान	१४३-१४४
ख्याल—दरस कैसे पाऊं (शेषताल)	१४४
ख्याल—जोगी रावला (तिलवाड़ा)	१४५
चीज़—कंचन सों पाइये (झपताल)	१४७
चीज़—कान्ह नित नए (तीन ताल)	१४७
चीज़—नजरिया लागी (तीन ताल)	१४८
चीज़—ज्यों ज्यों बूंद (तीनताल)	१४९
चीज़—तुम सुघर चतुर बैयां (द्रुत एकताल)	१५०
चीज़—विन गोपाल बैरन (तीनताल)	१५१
चीज़—अब कूक कूक बोले (फिरोदस्त)	१५२
१८. राग भैरव	
शास्त्रीय विवरण	१५३
लयबद्ध आलाप, तान	१५३-१५४
धमार—होत प्रभात सखी आये (धमार)	१५४
ख्याल तोरी वारी फूल रही (झूमरा)	१५५
चीज़—जोगो ब्रिज राज (द्रुत एकताल)	१५६
टप्पा—आ मन्दिर मोरे (,,)	१५७
चीज़ - राम सुमर राम (,,)	१५८
चीज़—मेरो मन हरिजू (तीनताल)	१५९
चीज़—प्यारे मैका लागली (तीनताल)	१६०
चीज़—जाग जाग जगा जगा (तीनताल)	१६०
१९. राग मालकौंस (मालव कौशिक)	
शास्त्री विवरण	१६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
लयबद्ध आलाप, तान	१६२-१६३
ख्याल—हो गये श्याम (तिलवाड़ा)	१६४
ख्याल—बीन बजाई (धमार)	१६५
ख्याल—सखी शाम सुन्दर (झपताल)	१६७
चीज़ पांडे जी मोहे (झपताल)	१६८
चतुरंग—साध सुरन चतुरंग (तीनताल)	१६९
चीज़—उलट पग कैसे (तीन ताल)	१७१
चीज़—चले गये दिल (तीनताल)	१७१
चीज़—प्रभु जी तू मेरे (तीनताल)	१७२
चीज़—बिनती सुनो मोरी (तीनताल)	१७३
चीज़—आये आये मोरे (द्रुत एकताल)	१७४
२०. राग आसावरी	
शास्त्रीय विवरण	१७५
लयबद्ध आलाप, तान	१७५-१७६
ख्याल—नेवरिया झांजरी आन (वि. झूमरा)	१७७
ख्याल—ये री सखी आये (वि.झपताल)	१७८
चीज़—फूली फूली डार [द्रुत एकताल]	१७९
चीज़—सैंया तोरे बाग [रूपक ताल]	१७९
चीज़—भुवन ते निकसे [तीनताल]	१८०
चीज़—मोरे कान भनकवा [तीनताल]	१८१
तराना—ता दिर दिर दानी [तीनताल]	१८२
२१. राग जौनपुरो (जीवनपुरी)	
शास्त्रीय विवरण	१८४
लयबद्ध आलाप, तान	१८३-१८४
ख्याल—ये बाजे झननन [वि. झूमरा]	१८५
चाज़—छों छननन छों [तीनताल]	१८६
चीज़—कौन रिझावन [तीनताल]	१८६
चतुरंग—चतुरंग रस सन गाईये [तीनताल]	१८७
ख्याल—भोर भई अजहुं नहीं आये [आडा चौताल]	१८८
२२. राग पटदीप	
शास्त्रीय विवरण	१८९
लयबद्ध आलाप, तान	१८९-१९०
ख्याल—जा जा रे भंवरा [झूमर ताल]	१९१

विषय	पृष्ठ
ख्याल—मधुबन शाम (झूमरा ताल)	१९२
चीज़—नाद को भेद (झपताल)	१९३
चीज़—दूर खेलन जिन (झपताल)	१९३
चीज़—बता दे सखी (तीनताल)	१९४
चीज़—कल नाहि आये (तीनताल)	१९५
चीज़—छांडो छांडो गैल (द्रुत एक ताल)	१९६
तराना—तन देरे ना देरे ना (तीनताल)	१९६
२३. राग भिन्न षड़ज	
शास्त्रीय विवरण	१९७
लयबद्ध आलाप—तान	१९७,१९८
ख्याल—कहत विचार (वि. एकताल)	१९९
ख्याल—सुधर बलमो (वि. तिलवाड़ा)	२००
चीज़—मैं तो जागिली (तीनताल)	२०१
चीज़—चांदनी चकोर जैसी (द्रुत एकताल)	२०१
तराना—ताना देर न ताना देरे ना[झपताल]	२०२
२४. राग हन्सध्वनि	
शास्त्रीय विवरण	२०३
लयबद्ध आलाप, तान	२०३
ख्याल—सब सुख पायो [झूमरा ताल]	२०४
चीज़—रैन बिहानी सजनी [तीनताल]	२०५
चीज़—मंद मंद पवन [द्रुत एकताल]	२०५
चीज़—सुमिर मन रे निश दिन [झपताल]	२०६
तराना—ताना देरे ना तारे दानी [रुद्रताल]	२०७
२५. राग पोलू	
शास्त्रीय विवरण	२०७
लयबद्ध आलाप	२०८
ठुमरी—गयो री माधो [पंजाबी तीनताल]	२०९
ठुमरी—मन की मन ही (तीनताल)	२०९
ठुमरी—प्रीतम जान लेहू (तोनताल)	२१०
ठुमरी—बिलग जिन मानो (तीनताल)	२११
भजन—रघुवर तुमको (तीनताल)	२१२
उपरोक्त रागों के तराने	
राग भूपाली—तदानी दानी तोम (त्रिताल)	२१३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
राग कल्याण—तानोम् तनन दिरना (त्रिताल)	२१४
राग बागेश्वरी—तनन देरेना तदानी (त्रिताल)	२१४
राग भैरवी—दिर दिर तनन तन (तीनताल)	२१५
राग हमीर—उदतन ननन दिर (तीनताल)	२१६
राग बिहाग—नादिर दिर दानी (तीनताल)	२१७
राग भैरव—दानी तोंतन नितन्नि (त्रिताल)	२१८
राग खमाज—दानी दानी ओदानी (मतताल)	२१९
राग भीम पलासी—तन तुंद्रेना तनन (त्रिताल)	२२०
राग मालकौंस—तों तननन ननन (तीनताल)	२२०
राग केदार—नादिर दिर दानी (त्रिताल)	२२१
राग देश—तनन तन देरेना तानत (त्रिताल)	२२२
राग तिलंग—तदिया नारे, (द्रुत एकताल)	२२३
राग अल्हैया विलावल-तोम् तननन (ब्रह्मताल)	२२३
राग काफी—तोम् तननन नन (तीनताल)	२२४
राग शंकरा—तननन नन (द्रुत एकताल)	२२५
राग तिलक कामोद—धृतन तदारे दानी तोम् (साढ तीनताल)	२२६
राग जौनपुरी-तारे दानी तन तुंद्रे (तीनताल)	२२७
तराना राग दुर्गा—तन देरेना देरे देरे तदानी	२२८
तराना राग पीलू—द्रे तान तन द्रे (तीनताल)	२३०
राग मिश्र पहाड़ी—शाम का सन्देश (ताल कहरवा)	२३१
राग मिश्र पहाड़ी—हम से नाही बोले (तीनताल या कहरवा)	२३२

अकारादि क्रम से गीतों की सूची

क्र० संख्या	पृष्ठ संख्या
१ अब देखो राम ध्वजा	८
२ अवगुण न कीजिए	२८
३ अब मोरी खेलन	४०
४ अब हों कासों	७३
५ अब कूक कूक बोले	१५२
६ आली री तूं क्यों	५४
७ आली री उनि सों	८८
८ आवो आवो आवो घर	९७
९ आद महादेव बीन	११५
१० आ मन्दिर मोरे सैंया	१५७
११ आये आये मोरे	१७४
१२ उलट पग कैसे दीने	१७२
१३ उदतन तननन दिर दिर	२१६
१४ एजी अब तो जाने	३
१५ ओ सजन घर आजा	८३
१६ कौशल्या मैया चिर जीवो	१०
१७ कर मन नंद नंदन	२५
१८ कैसे सुख सोवे नींदरियां	४५
१९ कहत शाम शामाजू	११०
२० कान्ह गिरधारी	१११
२१ कैसे तुम गणिका	१२७
२२ कोयलिया बोले	१३१
२३ काहू जोगिया की	२३९
२४ कंचन सों पाईये	१४७
२५ कान्ह नित नये	१४७
२६ कौन रिझावन	१८६
२७ कल नाहि आये	१९५
२८ कहत विचार	१९९
२९ खेलत शिव शंकर	१५५
३० गोरी कूंजन में	६८
३१ गरीब निवाज	९६
३२ गुण की चरचा	२२७
३३ गयो री माधो	२०९
३४ चल रे योगी	४९
३५ चले गये दिल के	१७१
३६ चतुरंग रस सन गाइये	१८७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र: संख्या	पृष्ठ
३७ चांदनी चकोर जैसी	२०१
३८ छों छननन छों	१८६
३९ छतियां लेहूं लगाय	४१
४० छांडो छांडो गैल	१९६
४१ जब मैं जानी	५
४२ जब से तुमिसन लागली	६
४३ जय जय जय रघुवंश	७
४४ जाके दरस को जग	१७
४५ जाके दरश को	४८
४६ जे जन शरण	६७
४७ जाकोउ बृन्दावन	९१
४८ जोगन प्रेम वरण	९९
४९ जोगी रावला	१४५
५० ज्यों ज्यों बून्द	१४९
५१ जागो बृज राज	१५६
५२ जाग जाग जगा जगा	१६०
५३ जा जा रे भंवरा	१९१
५४ झांझ मंदिलरा मोरा (द्रुत)	६
५५ झांझ मंदिलरा मोरा (वि०)	२३
५६ झूलत शाम हिन्डोरा	१०२
५७ झूलना झुलावो	१२१
५८ झूलना झुलावो री (दूसरा प्रकार)	२२५
५९ डमरू बजायो	१२२
६० तोरी सुरतिया	२८
६१ तू गोबिन्द है	३८
६२ तन मन रंग	७८
६३ तो से न मैं बोलूंगी	७९
६४ तेंडेरे कारण	९०
६५ तुम सुनो राधिका	१०१
६६ तू ही आद नाद	१३५
६७ तेंडी याद आवे	१४१
६८ तुम सुघर चतुर बैयां	१५०
६९ तोरी बारी फूल रही	१५५
७० तन दिर ना दिर ना	१९६
७१ तन दिर ना तन दिरना	२०२

क्र: संख्या	पृष्ठ
७२ ताना दिरना तारे दानी	२०७
७३ तादानी दानी तोम्	२१३
७४ तानोम् तानाना दिर ना	२१४
७५ तानाना दिरना तादानी	२१४
७६ ताना तुमद्रे नाता नाना	२२०
७७ तोम ताना नाना	२२०
७८ तानाना ताना दिर ना	२२२
७९ तदिया नारे तदिया नारे	२२३
८० तोम ताना नाना तादारे	२२३
८१ तोम ताना नाना नाना	२२४
८२ ताना नाना नाना दिर दिर	२२५
८३ तारे दानी तारे दानी तुंद्रे	२२७
८४ ताना देरेना देरे देरे तादानी	२२८
८५ दीम् तानाना नाना दीम	२७
८६ देवी भजो दुर्गा	३२
८७ दूध पिये सिद्ध साध	३३
८८ देखो सखी कन्हैया	४६
८९ दैया कहां गए	१३७
९० दिर दिर तन नत नन	२१५
९१ द्रे तान तन द्रे द्रे	२३०
९२ दानी तोम तन नित नित	२१८
९३ दानी दानी ओदानी दीम्	२१९
९४ धृतन धृतन तदारे दानी तोम	२२६
९५ नाना रूप नाना रंग	४
९६ ना मैं योग ध्यान	९
९७ नन्द भुवन को	८३
९८ नहीं ऐसो जन्म	१३०
९९ नजरिया लागी	१४८
१०० ना दिर दिर दानी तदानी	१८२
१०१ नाद को भेद	१९३
१०२ नादिर दिर दानी	२१७
१०३ नादिर दिर दानी तदानी	२२१
१०४ परसत चरण कमल	गुरू वन्दना
१०५ पियरवा तिहारी नेक नज़र	१९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रः संख्या	पृष्ठ
१०६ पार ब्रह्म परमेश्वर	२०
१०७ पिया बिन नागिन	६०
१०८ पिया प्यारी आज	५८
१०९ परदेसवा सैयां	२२९
११० परदेसवा काहे को	१०६
१११ पथ देखत नयना	१३९
११२ प्यारे मैंका लागली	१६०
११३ पांडे जी मोहे	१६८
११४ प्रभु जी तू मेरे	१७२
११५ प्रीतम जान लेहू	२१०
११६ फूली फूली डार डार	२७९
११७ बिन देखे मन	१७
११८ बन बोले बन बोले	२२९
११९ बालम रे मोरे	४७
१२० बन्सी वाले तू मेरी गली	५६
१२१ बांसुरी बजाई प्यारे	९८
१२२ बिनती सुनो मोरी	१०८
१२३ बिन गोपाल बैरन	१५१
१२४ बिनती सुनो	१७३
१२५ बता दे सखि	१९४
१२६ बिलग जी ना मानो	२११
१२७ बिसर ना जाइयो	३१
१२८ भनक परी हरि	११२
१२९ मोसी बात सुनो	१३
१३० मोको डगर चलत	१४
१३१ मोहे दरस दीजे	१५
१३२ माधव मो समान	५२
१३३ मत मारो शाम पिचकारी	६६
१३४ मो सम कौन	७२
१३५ मेरे जिया ऐसी	७४
१३६ मोसे भोर ही	८०
१३७ मन रे कौन	९०
१३८ मेरे तो तुम	१००
१३९ मुकट पर वारी	१२६
१४० मो मन बसो	१२७
१४१ मन्म मन्द पवन	२९५
१४२ मन की मन ही	२०९
१४३ या सांवरे सों	७१
१४४ ये पिया हम जानो	८७
१४५ य रंगीला मनुवा	११९
१४६ य मन कहा करू	१३६

क्रः संख्या	पृष्ठ
१४७ ये री सखि आये	१७८
१४८ रघुवर आज रहो	२६
१४९ राम सखा तब नाव	११८
१५० राधा प्यारी वात	१२०
१५१ राम कहो रहमान	१२५
१५२ राम सुमिर राम	१५८
१५३ रैन बिहानी सजनी	२०५
१५४ रघुवर तुम को	२११
१५५ लंगर तोरे क जिन	१६
१५६ लाग गई तब	६१
१५७ लाल तुम कहां से	१२९
१५८ वट तर सांवरो	१३८
१५९ शाम शाम शाम रटत	३९
१६० शंकर पंच वदन	११७
१६१ शाम का सन्देशा	२३१
१६२ सुन्दर मुख वाले मीरे	२४
१६३ सखि मोरी रूम झूम	३४
१६४ साहिव को मिहि होवे	३७
१६५ सखि आज नन्द	५०
१६६ सुरतिया रे (एक प्रकार)	५५
१६७ सगरा बिगारा	५७
१६८ सांवरे क्यों	५७
१६९ सुरतिया रे (दूसरा प्रकार)	७०
१७० सरस्वती शारदा	८१
१७१ सखि मेरे मन की	८२
१७२ सजनी आज	८९
१७३ सांची कहो कै	१०१
१७४ सखा तुम बोलो	१०७
१७५ सूनी रे सेजरिया	११८
१७६ सा रि ग म (गीत)	१३४
१७७ सखि शाम सुन्दर	१६७
१७८ साध सुरन चतुरंग	१६९
१७९ सैयां तोरे बाग	१७९
१८० सुघर बलमां	२००
१८१ सब सुख पायो	२०४
१८२ सुमिर मन रे निश दिन	२०६
१८३ है नीकी मेरो देवता	५३
१८४ हरि के संग मैं	६४
१८५ होत प्रभात सखि	१५४
१८६ हो गए शाम	१६४
१८७ हम से नाहीं बोले	२३२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि पत्र

१. पृष्ट ४ और ५ पर राग भूपाली की स्वारी ताल मात्रा १५ में बन्दिश (नाना रुप नाना रंग) के स्थाई और अन्तरे में ११वीं मात्रा के बदल में सब जगह १२वीं मात्रा पर ताली समझें। स्वारी ताल में १, ४, ८, १२ पर ताली और ६, १०, १४ पर खाली होती है।

२. मन्द्र सप्तक का चिन्ह (ं) स्वरों के ऊपर कहीं कहीं बहुत बारीक टाईप में छपा है। विशेष कर मन्द्र (निं) पर। उसे मन्द्र स्वरों पर (ं) बड़ा कर लेवें।।

३. पृष्ट १८, १९, २० पर राग जयमिनी कल्याण को जैमिनी कल्याण पढ़ें।

पृष्ट	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
४	१५	प ग ग रि सा — — — — — जा·के ना · ना ८ +११	प ऽ ग ग रि सा — — — — — — जा · के ना · ना ८ + १२
५	९ और १०	मैं मैं ७ ७	मैं मैं
६	२	मोरा बाजे हिलोरे	बाजे हि लो रे
७	१५	। प ग रि सा ।।।	। प ग रि सा ।।
८	१	। प्यारे जनक	। हारे जनक
८	२२	हुलकत दाल	हुलकत ढाल
९	१२	सां ध प ग ऽ ग — ० ० ० ० ० मैं यो ग ध्या · न + ७	सां ऽ ध प ग ऽ ग ० ००० ००० मैं · यो ग ध्या · न + ७
९	१२	रि सा धं प ◡ ◡ ० ० · · शो ·	रि सा धं पं ◡ ◡ ० ० · · शे ·
९	१३	रा · ग न ७	रा · ग न ७
९	१७	न हो · य +	न हो · य +
१३	१६	नि रि ग — — ० च ल त	निं रि ग — — ० च ल त
१३	१७	ध म् रि सा ० ० ० ० · · · री	ध म् रि सा ० ० ० ० · · · री ११
१५	१३	रग तोरे	रंग तोसे
१५	१४	म ध प म् ◡◡◡	म् ध प म् ◡ ◡ ◡

पृष्ट	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१८	११	जयमिनी कल्याण	जैमिनी कल्याण
१९	३	रि सा निं धं पं पं + ० ०० — ०	रि सा निं धं पं पं ० ० ०० — ०
२६	१५	प नि प म रि ◡◡◡ ०	प नि प म रि ◡◡◡◡ ०
२७	२	प म रि सा ।।। ◡ ० ०	प म रि सा ।। ◡◡ ० ०
२८	१०	म प नि प ० ० — —	म प नि प ० ० — —
२८	११	र'न जियरवा	रैन जियरवा
२८	११	३ ३ ३	३ ३ ३
३५	५	ध सा रि प	धं सा रि प
३५	७	ध म रि सां	ध म रि सा
३९	२	सा म ग ग	सां मं गं गं
३९	७	नि प म ग म	नि प म ग म
३९	१९	नि म प।	नि म प।
४०	२	प नि प म ।।	प नि प म ।।
४०	६	। नि सां रि ० ० ० १	। ऽ नि सां रिं ० ० ० ० १
४०	९	खेल न जातब लैया।	खेलन जात बलैया
४०	१६	सा ग म प नि	सा ग म प नि
४१	३	वसुदेव +	वसुदेव +
४१	५	सां गं ऽ ।। ◡◡ ०	सां गं ऽ सां नि प म ग सा ।। ◡◡ ० ◡ ◡◡ ० ० +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
४३	२३	ध म_प म	ध म_प म_
४५	८	म प म | म	म प म | म
४५	१०	म_ग म प ध	म_ग म प ध
४६	९	सा - ग सा · · खी	सा ऽ ग सा स · खी
४८	४	धुनि सुर मोहे, तता	धुनि सुन मोहे ता
५३	८	ध प म ग ० — ० ० · ली गी ·	ध प म ग ० — ० ० न ला गी ·
५४	८	| प गं नि नि_	| प ग नि नि_
५४	१५	वैध मगाओ	वैद मंगायो
५६	८	खमाजी जी	खमाजो मांड
५७	१८	प ऽ म ग प ~०— —	प ऽ म ग प ~०———
५९	४	ग प नि नि	ग प । नि नि
५९	६	|—०	|—० · · १
६५	८	ध प म ग_| ० ०	ध प म ग_| ००
६८	३	होरी	होरी ताल दीपचन्दी
६८	६	१३	१३
६८	६	ग रि सा सा रि ग	ग_रि सा सा रि ग_
६८	१४	नि_ध प	नि_ध प ०
७२	१४	निं । सा ऽ नि	निं सा ऽ निं
७४	३	निं सा रि म प	निं सा रि म प
७४	४	प ध म प ध म · · · · · ·	प ध म प ध म · · · · · ·
७४	५	७ रि नि सा ऽ	७ रि निं सा ऽ
७५	२	रा · · । ·	रा · ए । ·

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
७५	१६	कोई मध्य या	कोई मध्यम या
७६	२१	म ग_रि सा	म ग_रि_सा
७७	४	प ऽ म ग रि_	प ऽ म ग_रि
७७	१८	प म ग_रि	प म ग_रि
७८	३	करुं जी तबूरा	करुं जी तंबूरा
७८	७	पिया ···· । सग	पिया ···· । संग +
७९	११	ग_ग_ग_	ग_ग_म
८१	७	राग भैरवा तीनताल	राग भैरवी तीनताल
८२	३	म ग_ग_सा ० ०	म ग_ग_सा ०
८२	१६	ग_प प ० ०—	ग_प म ० ०—
८२	१६	जो बा · त	जो बी · त
८३	१०	। · र · न	। · रै · न
८५	१६	म_प ध प	म_प ध प
८६	५	| रि सा	| सा रि सा
८६	७	ध म प	ध म_प
८८	१	म ध म	म_ध म
८८	६	प ध म_प	प ध म_प
९१	६	नि ध म प	नि ध म_प
९७	१	म_ ग_सा रि निं_	म ग_सा रि नि
९७	४	म_सा सा ग_म ग रि	म_सा सा ग_म ग_रि
९७	५	म_स म_म_ ग_म ग_ग_	म सा म म ग_म ग_ग_
९७	६	गाप सखा	गोप सखा
९८	५	ग_ सा निं_सा	ग_रि सा निं_सा
१०१	६	नि सा ग_।	निं_सा ग_।
१०६	१०	सां	सां
१०६	१२	म ग_रि सा शुभ · ग	म ग_रि सा शुभ रिं ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१०७	२	सां नि ध म	सां नि_ध म
१११	६	निं_ ध निं |	निं_ धं निं_ |
१११	१२	ग_म ग_रि 0‿‿—	ग_म ग_रि 0‿‿—
१११	१३	म·ग· रोत	म·ग· रोक
११३	१३	सवाद कहते	संवादी कहते
११४	६	प ध प प ‿ ‿‿	प ध प प ‿‿‿
११७	५	रा। प च	र। पंच
११७	९	रिं गं_रिं सां सां सां ‿0‿— 0 0 जू · · · · ट ६	रिं गं रिं सां सां सां ‿0‿ — 0 0 जू · · · · ट ६
११८	३	प्रभु आयुष	प्रभु आयसु
१२६	१४	ग गा चं। द्र	गं गा चं। द्र १
१२७	७	व्रति भी ने	प्रेम भी ने
१२७	६	सा रि सा रि मा · · ·	सा रि सा रि मो · · म
१२७	११	मालकी	मालकी १
१२८	२	प्रम-याम	प्रेम-श्याम
१२८	३	म प ग सा ‿ ‿0	म प ग सा ‿‿‿0
१३०	१३	प नि_ध म म — 0 · · · पुण्ट	प नि_ध म म ‿—0 · · · पुण्य
१३५	१९	ध नि प — — 0 ना · द	ध नि_प — —0 ना · द
१३५	२१	नि रि ऽ ऽ 0‿ ‿	नि रिं ऽ ऽ — 0‿‿
१३६	१	नि ध प	नि_ध प
१३६	१-२	नि प ऽ नि ‿‿‿—	नि_प ऽ नि_ ‿‿‿—
१३६	४	खाली ६ पर	खाली ७ पर

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१३९	१२	| ता · र त	| ता · र त १
१४१	१०	ाली गली	गली गली
१४५	१	सा रि निं सा	सा रि निं सा
१४५	२	सां नि ध प म ‿ ‿‿‿ 0	सां नि ध प ध ‿‿‿‿ 0
१४५	६	ध प ध नि सां |	ध प ध नि सां
१४८	४	म_म_प प —0 0—	ध_म_प प —0 0—
१४८	१०	ध प _प म 0 0‿‿‿	ध प म_प म 0 0‿‿‿
१५१	१०	ध प म प ‿‿ ‿‿	ध प म_प ‿‿‿
१५३	२०	ग ग सा रि रि_ ~ ~ ~	ग ग सा रि_रि ~ ~ ~
१५३	२२	निं साग रि ऽ 0 0‿‿—	निं सा ग रि_ऽ 0 0‿‿—
१५५	१	नि ध ऽ ——	नि ध_ऽ ——
१५५	२	रिं सां	रिं सां
१५६	३	सा रि_निं सां	सा रि_निं सा
१५९	१३	नि ध_ऽ ‿0‿ · · · ३	नि ध_ऽ ‿0‿ · · · ३
१६०	७	निं नि निं ध_ध_ध_	निं नि निं धं_धं_धं_

नोटः—१६१, १६२, १६३ इत्यादि पृष्ठों पर राग मालकौंस में या किसी भी राग की स्वर लिपि में (ध) छपा हो तो उसे (ध) समझें।

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१६३	६	ग_ ध_ ऽ म_ 0‿ ‿	ग ध_ ऽ म 0‿‿

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१६३	७	मं गं ऽ मं o ‿ ‿	मं गं ऽ मं o ‿ ‿
१६८	१	धनु मुख	धेनु मुख
१६९	१६	ग ग म o o o	ग ग म o o o
१७७	७	| सां रिं गं ‿ ‿ ‿	सां रिं गं ‿ ‿ ‿
१८०	१४	म प ध o — का नों म	म प ध o — — का नों में
१८१	८	| नि ध ऽ ‿ o ‿	| नि ध ऽ ‿ o ‿
१८२	९	| स सा सा o o o अ द न	| सा सा सा o o o उ द न
१८२	९	नि ध o o	नि ध o o
१८७	१३	म प —	म प — —
१८८	३	| सां ऽ o	| सां ऽ — o
१८९	२	है	है
१९०	१६	नि सा ग म	निं सा ग म
१९०	२०	सा रिं सां	सां रिं सां
१९१	४	मं मं गं रिं रिं मं सां	मं मं गं रिं रिं मं सां
१९१	१८	सां गं रिं	सां गं रिं
१९२	७	म ग सा रि ऽ o o ‿ o ‿	म ग सा रि ऽ o o ‿ o ‿
१९४	२	| प सां प नि ध प नि — — —	| प सां प नि ध प नि — — — —
१९४	२	सा ग म ग रि o o — — —	सा ग म ग रि o o — —
१९४	५ का अशुद्ध	सां ऽ रिं नि ऽ सां ध ऽ प ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ हो · · · · · · · ·	

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१९४	५	का शुद्ध	नि ऽ सां ध ऽ प ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ हो · · · · ·
१९५	१२	ध म प ऽ म ग ऽ o ‿ ‿ o ‿ o ‿	ध म प ऽ म ग ऽ o ‿ ‿ o ‿ ‿
१९६	६	रि नि ऽ सा म ग ।	रि निं ऽ सा म ग
१९८	८	ग म म ग ध म म ‿ ‿ ‿ ‿ — ,	| ग म ग ध म म ‿ ‿ ‿ ‿ — , ‿
२००		नोट २, ६, ७ में सब जगह (सुधर) को सुघर समझें।	
२००	६	सा ध सा ‿ ‿	सा धं सा ‿ ‿
२००	१०	म ध म म ध ‿ — ‿ ‿ ‿ रैं · न यां ·	म ध म म ध ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ रै · नि यां ·
२००	१०	ध नि सां | ‿ ‿ |	ध नि सां | ‿ ‿ o |
२००	१०	ध नि ध — ‿ ‿	ध नि ध — ‿ o +
२००		११, १२ पर छपे हुए के बदल में निम्न पढ़ें।	| ध नि ध सां नि सां ध ऽ नि ध ध ग ऽ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿ ‿ ब · ति यां · · · · · · · · · · १ म सा धं निं सा ध म म ध म म ध म — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ , ‿ ‿ , · मो · · रे · · मी · · त · · ५ म ध नि सां ऽ ‿ ‿ ‿ o ‿ वा · · · · ·
२०१	६	निं धं नि सा धं नि | o o — o o |	निं धं निं सा धं निं o o — o o
२०१	६	पा · · व ने · · ३ +	पा · · व ते · · ३ +
२०२	१५	धिर धिर किट / ८ /	धिर धिर किट | ८ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	१८	रि सा नि रि रे	रि सा निं रि ० रे +
२०४	१८	नि प ग ऽ प ० · · · दा ११	नि प ग ऽ प ० · · · · दा ११
२०४	१९	रि ‖ रि ‖ ० ० · ·	प ग रि सा ‖ रि स ब सु ख ‖ पा १
२०५	१	सा नि प निं रे ऽ ० ०	सा निं पं निं रि ऽ ० ०
२०५	११	सां नि प नि रिं ०	सां नि प नि रिं ०
२०६	१४	ग ऽ पं रि ‖	ग ऽ पं रि ‖
२०६	१६	सा नि रि पं रि ऽ ०	सा निं रि पं रि ऽ ०
२०७	११	गं रि सां नि प ।	गं रिं सां नि प ।
२०९	५	सा ग ऽ ग	सा ग ऽ ग
२०९	५	नि ऽ सा ० ० ० १३	निं ऽ सा ० ० ० १३

२०९ ८ का अशुध्द तथा शुध्द निम्न है

अशुद्ध	शुद्ध
नि सा ग म प ध प ऽ ऽ ० ० ० ० ० ०—— ० लि ख लिख प ति या १३	निं सा ग म प ध प ऽ ऽ ० ० ० ० ० ०— —० लि ख लि ख प तिया · · १३

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
८३	१४	वीर हलघर	वीर हलधर
८४	३	वीर हलघर	वोर हलधर
१३०	१६	ब ड़ त पल	ब ढ़ त प ल
१३१	१०	हल | सावत	हुल | सावत

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
२०९	१६	नि ऽ प म	निं ऽ प म
२१२	९	सा ऽ सा — ० ०	सा सा — ०
२१२	११	रि म ध प ० ० तु म् · को	रि म ध प ० ० तु म् · को
२१२	११	। मा ऽ सा नि सा	। सा ऽ सा निं सा
२१२	१२	तुम् को·तुम को १ ३	तुम् को · तुम ·को १ ३
२१२	१३	धं पं धं नि ऽ ० ० ० ० — स दा स दा · ३ +	धं पं धं निं ऽ ० ० ० ० — म दा स दा · ३ +
२१२	१३	ग ऽ रि नि प ऽ ० ० हा · र · ·	ग ऽ रि निं सा ऽ ० ० हा · री · ·
२१२	१६	नि सा ग म	निं सा ग म
२१३	१४	सां सां ब प ० ० ०	सां सां ध प ० ० ०—
२१३	१५	ध प प ग रि ० ० ० —	ध प प ग रि ० ० ० — —
२१३	१५	सां सां सां सां ० ० ० न	सां सां सां सां ० ० ० ०
२१८	१५	ऽ ऽ रि सा ०— —	ऽ ऽ रि सा ० — — —
२२०	२	ना द . ने . |	ना दे . रे . |
२२५	१	नि प | ग रि	नि प । ग रि

२२७ अशुध्द ६ ब्रह्म को भूल भ्रम में भटकत रैनदिन

२२७ शुध्द ६ ब्रह्म को भूल भ्रम में भटकत रैन दिना

२३२ ९ नाहो बोल बोले कान्हा, नाही बोले कान्हा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आमुख

प्रभु कृपया १९५० में जब पूज्य गुरु महाराज स्व० पं० वामन राव पाध्ये जी कोल्हापुर (जोकि पाध्ये बुआ के नाम से पहचाने जाते थे)ने मुझे (संगीत कला प्रवीण) की उपाधि से अलंकृत किया तो उस के साथ यह भी आदेश उपदेश दिया और आज्ञा की, कि संगीत की ऐसी पुस्तक तैय्यार करो जिस में प्रथम वर्ष के प्राथमिक रागों से लेकर संगीत प्रवीण M. A तक के १२ वर्ष की चीज़ें स्वर लिपि में निबद्ध हों और प्रवीण से आगे के अति उच्च शिक्षण के अप्रचलित, अप्रसिद्ध रागों तथा अप्रसिद्ध तालों में निबद्ध चीज़ों को संगीत सेवार्थ (प्रचारार्थ) पुस्तक रूप में अवश्य छपा दो और प्रारम्भिक रागों में भी प्रथम वर्ष से लेकर संगीत प्रवीण तथा इससे और उच्च माध्यम की चीज़ों का संग्रह हो। गुरु जीकी आज्ञा से ही सगीत (कला प्रवीण प्रथम भाग) संसार के सम्मुख उपस्थित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। प्रभु के सम्मुख मेरी प्रार्थना है कि गुरु महाराज से प्राप्त सब कुछ लिपि बद्ध करके पुस्तिका छपवा देने की क्षमता प्रदान करें, एक भी चीज़ छपने से रह न जाए।

सर्व शक्तिमान परमात्मा की अपार कृपा से और गायन महर्षि पूज्यपाद पंडित श्री वामन राव पाध्ये जी गायनाचार्य्य कोल्हा पुर की असीम कृपा, आशीर्वाद तथा विद्यादान भावना के फल स्वरूप मैं (संगीत कला प्रवीण) प्रथम भाग संगीत रसिकों के सम्मुख उपस्थित कर रहा हूं। इस मेरी प्रथम कृति को गुणी जन हृदय में स्थान देंगे। ऐसी पूर्ण आशा है। संसार में सदैव से चली आ रही सदैव रहने वाली सर्व व्यापी स्वर की भाषा जो अनेक समयों में अनेक रूप धारण करने वाली, आकाश, पृथ्वी, पाताल तीनों स्थानों में, रोम रोम में, कण कण में रमने वाली, जन जन को उत्साहित करने वाली, सदैव पवित्र मार्ग दर्शाने वाली, सरस्वती माता की (स्वर—लय—ताल) अर्थात् भाव रस ताल की भरत त्रिवेणी, पतित पावनी गंगा जो नाद सिन्धु की लहरों का हृदय की भावनाओं द्वारा अपना परिचय दिलाती हैं। सद्यः आनन्द दायिनी ललित कलाओं में अग्रगण्य, संगीत कला और माता सरस्वती वीणा धारिणी को सदैव नत मस्तक हूं।

ग्वालियर की सगीत परम्परा का ही प्रसाद सर्वत्र विस्तार पा रहा है। ग्वालियर संगीत परम्परा के सर्व श्री खां साहिब हद्दू खां, हस्सू खां साहिब की शिष्य परम्परा में गायनाचार्य पं० बाल कृष्ण बुआ इचल करंजीकर जी के प्रख्यात शिष्य संगीत जगत गुरु गायनाचार्य पण्डित श्री विष्णु दिगम्बर जी पलुस्कर, उन के शिष्यों में सर्व श्री पं०वामन राव जी पाध्ये कोल्हापुर, पं० ओमकार नाथ जी ठाकुर, पं० विनायक नारायण जी पटवर्धन, पं० नारायण राव जी व्यास, पं० शंकर राव व्यास, पं० वी. ए. कुशालकर इत्यादि और श्री हद्दू खां श्री हस्सू खां श्री नत्थू खां की ही परम्परा में ग्वालियर घराने के प्रतिनिधि डा० श्री कृष्ण राव संकर पंडित जी इन सब पूर्वजों को मैं आदर समर्पित करता हूं।

परमात्मा को अनेक नाम प्राप्त हैं, अनेक रुपों, रंगों, रसों, गन्धों इत्यादि को उत्पन्न करने वाला, स्वयं हर रूप, रंग, रस, गन्ध में विराजमान एक से एक रूप रंग रस गन्ध भिन्न बनाने वाला, उपजाने वाला, क्षण क्षण में वातावरण और प्रकृति को बदलते रहने वाला, ऋतुओं, समयों प्रभात, रात दोपहर, सायं इत्यादि, ऐसा अन्तर रूपी निरन्तर इस सृष्टि के कार्य को चलाने वाला बनाते संहारते,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न थकने वाला, अकथ, एक से अनेक और अनेकों को एक करने वाला स्वयं स्वर रूप ईश्वर ऐसा है तो उस के प्रेरित बने हुए या उस के बनाए हुए, सभों में ही एकता, विभिन्नता होना कोई अपवाद का विषय न होगा।

बुद्धि भी एक हो के अनेक प्रकार की है। अपना अपना दृष्टिकोण होता है। वस्तु, विषय, स्वर, राग, ताल, एक एक होते हुए भी इन में गाई जाने वाली रचनाएं एक ही स्वरों के रागों की तालों की शैली क्रियात्मक भिन्नता लिए दिखाई देती हैं तो इस ग्रन्थ के विषय में विभिन्न विचार होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। परन्तु सत्य सत्य ही होगा, असत्य सत्य नहीं। जहां सत्य है वहां विचार भेद हो, दृष्टिकोण भिन्न हो, तो भी वह एक है। इसी कारण एक ही राग को अनेक घरानों में या एक घराने के अनेक कलाकार अनेक तरह से प्रस्तुत करते हैं (परन्तु सत्य सत्य ही रहता है) अर्थात राग एक ही रहता है। यह कभी न भूलने वाली बात है।

संगीत कला प्रवीण के प्रथम भाग में, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, पंजाब यूनिवर्सिटी इत्यादि सब के पाठयक्रम को ध्यान में रखते हुए तीन वर्षों से अधिक पाठयक्रम के राग दिए हैं लगभग २८ राग हैं उनकी लगभग २७ तालों की चीज़ें दी हैं। परन्तु प्रत्येक राग में प्रथम वर्ष के माध्यम से लेकर प्रवीण (M. MUS) तक के माध्यम की चीज़ें दी हैं। इन में ध्रुपद, धमार, बड़े ख्याल, छोटे ख्याल, टप्पा, ठुमरी, चतुरंग, सारिगम गीत, भजन तथा प्रत्येक राग का तराना भी दिया है। प्रत्येक राग से पूर्व उसके शास्त्रीय परिचय के साथ साथ लय बद्ध आलाप तथा खुली तानें भी दी हैं। लय बद्ध आलापों पर आवश्यकता अनुसार न्यूनाधिक ठहर कर, ताल बध किए जा सकते हैं इसी प्रकार तीनों को, जितने गुण में बिठाना चाहें उतने गुण में बिठा कर तैय्यार कर सकते हैं। इस से खुली ख्याल गायकी तैय्यार करने में सहायता मिलती है। इन्हीं पर बोल आलाप, बोल तानें बनावें। पुस्तक में २७ तालों में चीज़ें निबद्ध हैं उन सब तालों के ठेके भी दिये हैं।

पुरानी तथा नवीन चीज़ों का यह संग्रह है। इसमें अशलील शृंगार को स्थान न देकर भक्त कवि सूरदास, कबीर, तुलसी, मीरा, गुरु नानक देव इत्यादि महान् कवियों की कविताओं का भी रागों में निबद्ध किया है। ध्रुपद गायन बहुत तालों में होता रहा, ख्याल गायन में थोड़ ताल प्रयोग में आने लगे। परन्तु अप्रचलित ताल भी कलाकारों की ही सम्पत्ति है। उस से वञ्चित नहीं रहना चाहिए। इस लिए अप्रचलित तालों में भी ध्रुपद और ख्याल तरानों की बन्दिशें दी हैं। अभ्यास से, और सीखते सिखाते, प्रचार में सब वस्तुएं आते ही सरल हो जाती हैं। ऐसा मेरा अनुभव है। इस पाठय-क्रम में दी गई बन्दिशों (रागों की चीज़ों) में अधिक ऐसी चीज़ें भी मिलेंगी जिन में सम के साथ २ विषम, अतीत, अनागत तथा (मुकान, मुकाम या जगह) जिसे कहते हैं विद्यमान हैं। पूरी मात्रा में समाप्त होने वाले तालों के अतिरिक्त आधी मात्रा अर्थात साढ़े तीन ताल अर्थात साढ़ वाली मात्रा पर पूरी होने वाली ताल की एक बन्दिश भी दी है।

संगीत कला प्रवीण के अगले भाग में आने वाले नए ३५ रागों की बन्दिशों के साथ २ बोल आलाप तथा बोल तानें भी देने का विचार है। पुरानी तथा नई चीज़ें भी दी जाएंगी। इस पुस्तक में आए हुए तालों के अतिरिक्त और भी अप्रसिद्ध तालों में ध्रुपद ख्याल, तराने आदि दिए जाएंगे। भारत के विश्वविद्यालयों के पाठय क्रम को ध्यान में रखते हुए अगले तीन वर्ष से अर्थात चतुर्थ वर्ष से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगीत विशारद, प्रभाकर, B. MUS. के पाठय क्रम के साथ २ संगीत अलंकार, प्रवीण, M. MUS. के राग भी उस में कुछ डाले जाएंगे। होरी, टप्पा, चतुरंग, राग सागर, तालसागर, ठुमरी, भजन आदि का भी समावेश होगा। अनेक बन्दिशें ऐसी भी दी जाएंगी जिनके तालों की मात्रा, सवा मात्रा पर, आध मात्रा पर, पौन मात्रा पर पूर्ण होते हैं। राग सागर, राग माला, ताल सागर, चतुरंग इत्यादि अनेक प्रकार की गायन शैली भी अगले भागों में दी जा रही हैं।

मुझे संगीत शिक्षण गुरुवर्य्य पं० विष्णु दिगम्बर जी पलुस्कर के अनुकरणी प्रख्यात ध्रुपद गायक पंजाब के पं० मंगतराम जी से सर्व प्रथम प्राप्त हुआ। पंजाब भर में आप ने संगीत का स्रोत बहा रखा था। निःशुल्क संगीत शिक्षण देते थे परन्तु खान पान, रहन सहन का खर्चा हम अपना करते थे और बल्कि ऐसे अनेक विद्यार्थी जिनका खान पान, रहन सहन का बोझा भी सर्व प्रकार का भक्त जी ने अपने ऊपर ले रखा था। ऐसे विद्यार्थी मेरे समय में भी थे, मुझ से पहले और मेरे पश्चात भी। पूज्य पं० मंगत राम जी प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी वह केवल ध्रुपद गायक ही नहीं थे धर्म शास्त्र तथा संस्कृत व्याकरण के भी पण्डित थे आर्य समाज उनका ऋण नहीं चुका सकता। उस समय के मेरे गुरु बन्धु (श्री हरिकृष्ण जी जोशी तथा गंधर्व सेन जो थापर) ने पुस्तक छपाने में अमूल्य प्रोत्साहन दिये हैं। पं० मंगत राम जी भक्त जी के नाम से जाने पहचाने जाते थे। भक्त जी के शिक्षण के उपरांत पंजाब में बोहन पटी के उस्ताद मलंग खां प्रसिद्ध तबला निवाज़ अपने समय के विलक्षण कलाकार से भी मुझे शिक्षण प्राप्त करने के सुअवसर में कठिन तालों के साथ२ रागों की चीजें भी बहुत संख्या में आप के पास से प्राप्त हुई। आप के पास कई घरानों का अनूठा संग्रह था।

उपरोक्त दोनों प्रसिद्ध कलाकारों से संगीत प्रसाद प्राप्त करने के उपरांत आप दोनों ही ने मुझे (भारत विख्यात कलाकार जिन्हांने अपनी संगीत साधना से गुणीजनों में बिशेष स्थान और सन्मान प्राप्त कर रखा है। जिनकी विलक्षण गायकी पर प्रख्यात कलाकार भी मुग्ध हैं) ऐसे गायनाचार्य पण्डित वामन राव पाध्ये जी के पास कोल्हापुर में उच्च शिक्षण प्राप्त करने के लिए उत्साहित किया। मेरा संगीत शिक्षण गुरुवर्य्य पं० विष्णु दिगम्बर जी पलुस्कर के चरणों में आरम्भ होकर बाधाएं पड़ीं।

मैं अपने को इतना सौभाग्य शाली समझता हूं कि शिक्षण के लिए जगत विख्यात गायनाचार्य परम पूज्य पं० डा० ओम्कार नाथ जी ठाकुर संगीत मार्तण्ड की छत्र छाया भी समय समय पर मुझे प्राप्त हुई जिस के लिए मैं उपरोक्त सब महानुभावों का आभार मानता हूं।

इस मेरी आशा को प्रभु ने कैसे भी पूर्ण किया और आज मैं अंश मात्र संगीत सेवा तथा गुरु जी का प्रसाद संगीत जगत के सम्मुख रख रहा हूं मेरा यह अल्प प्रयत्न गुणी जनों के सामने आ रहा है और जल्दी ही अगले भाग भी आने वाले हैं।

जनते समय, मल से ओत प्रोत, तो भी निर्मल, जननी की (वेदना) जगत जननी जाने
जन्म भूमि भारत माता जाने
वह सौभाग्य वती माता जाने जो रत्न पुत्र जने, और वह गुरु जाने
जो शिष्य जनता (तैय्यार) करता है और भी कोई २ जाने

क्या मैं भी आज इसी परिस्थिति में हूं ?

ग्रंथ कर्ता की सहर्ष वेदना—

निवेदक—

श्रुति रत्न प्रभाकर शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरू वन्दना

ख्याल राग भूप जय ताल (मात्रा १३)

ताली १, ३, ५, ७, ९, १०, १२, १३ खाली २, ४, ६, ८, ११

स्थाई—परसत चरण कमल, शुभ रंग, उज्वल रंग, श्रुति स्वर ताल
राग भेद, गुरु मुख सों पाय ।।

अन्तरा—वामन राव अवतार गुरु, विष्णु दिगम्बर ब्रह्म रूप, भ्रम भय
उरझन को, सुरझ सुरझ, नाद को भेद समझाय ।।।

स्थाई

सा धं ऽ सा ग ग रि रि सा रि | प ग रि ग ग रि रि सा सा ग रि ऽ ग ग रि सा रि ऽ सा सा धं पं
0 | 0 — — 0 0
प . . र स . . त . . | च र ण . . . : . . . क . . म . . . . . ल : :
१२ १३ | १ + ३ + ५ + ७ + ९

सा रि
सा धं ऽ सा धं ऽ सा रि ग ग रि सा धं ऽ सा रि ऽ ग रि ग रि सा रि | ग रि प ग ध प ग रि
0 0 | 0 0 0 0 0 0 0
शु . . भ . . रं ग उ . . ज्व . . ल . . रं . ग : : . | श्रु ति स्व र ता . . ल
१० + १२ १३ | १ + ३ +

सा सा ऽ सा धं ऽ धं सा ग रि प ग ध प सां ध सां सां सां रिं ऽ सां सां सां ध प ग रि ग रि सा ||
0 0 0 0 0
. रा . ग भे . द गु . . रु . . . मु . ख सों पा . . . . . ये . . . . . .
५ + ७ + ९ १० +

अन्तरा

गं
ग प ध सां ऽ सां | सां सां सां ऽ सां सां ध ऽ सां ध ऽ सां ध सां सां रिं गं ग रिं सां सां ध ऽ प
0 0 | 0 0 0 0 0 0 0
वा म न रा . व | अ व ता . र गु . . रु . . . : . वि ष्ण दि गं . . ब . . र
१२ १३ | १ + ३ + ५ + ७

ग रि ग रि ग रि सा रि ऽ सा ग रि प ग ऽ ग प ग प सां ध सां रिं सां ध प ग रि
0 0
ब्र . . . ह्म . . . . रु . . . . . प भ्र . म भ य . उ र झ . न .
+ ९ १० + १२

प ग ध प सां ध सां | रिं सां रिं सां गं रिं सां ऽ गं रिं सां ध सां ऽ ध प रि प ऽ ग रि
0 0
को . . . . . . | सु . र . झ . . . सु र झ ना . . . . द . . . .
१३ | १ + ३ + ५

सा सा धं ऽ सा ऽ सा सा ग रि प ग ध प सां ध रिं सां गं रिं ग रिं सां ध प ग रि सा ||
— 0 0 0
को भे . . . . द स . . म . . . झा . . . . . . ये . . . . . .
+ ७ + ९ १० +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुर्जनों के अत्याचारों से नष्ट भ्रष्ट हो चुकी संगीत कला को पुनर्जीवन प्रदान कर, पुर्नोत्थान करने वाले, संगीत कला का काया कल्प और प्रचार करने में जिन्होंने आजन्म कार्य किया भारत माता के सच्चे सपूत एवं एकमेव गायनाचार्य संगीत जगत गुरु गायनमहर्षि गुरु वर्य्य कै० पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

जन्म १८—८—१८७२ ईस्वी

मृत्यु २१—८—१९३१ ईस्वी

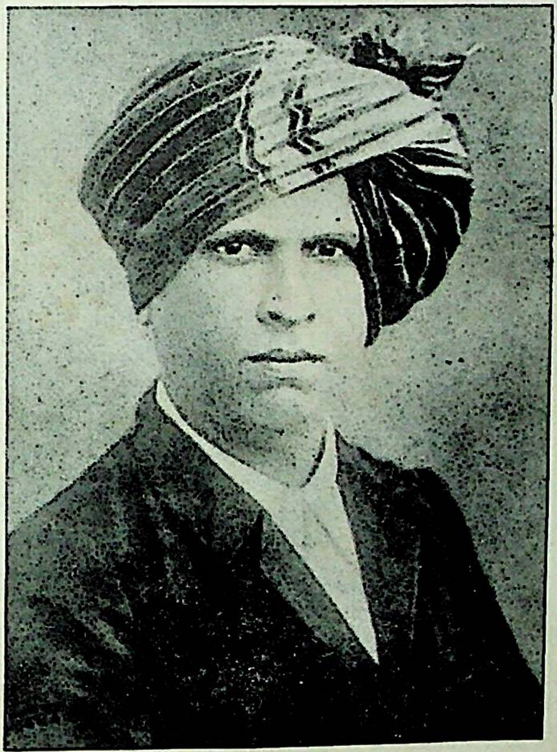

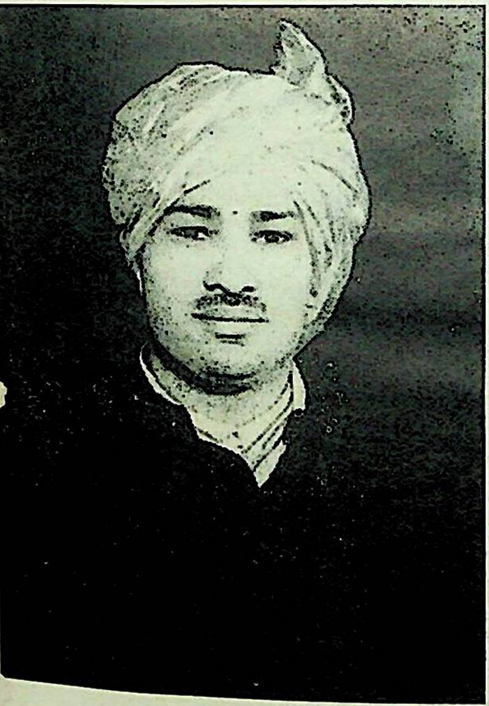

ग्रन्थ कर्ता :—
विनम्र शिष्य श्रुतिरत्न, प्रभाकर शर्मा

गायनाचार्य गायन महर्षि गुरु वर्य्य कै० पं० वामन राव जी, पाध्ये बोआ, कोल्हापुर श्रुति-स्वर-लय-ताल के देवता, जिन्होंने आजन्म तपश्चर्या से संगीत में विशेष सिध्दि प्राप्त की।

जन्म ८—६—१८९८ ईस्वी

मृत्यु २८-१-१९५८ ईस्वी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगीत कला प्रवीण

★ राग भूपाली ★

इस राग में मध्यम और निषाद वर्जित हैं। 'सा, रि, ग, प, ध' केवल इन पाँच शुद्ध स्वरों में इस राग का स्वरूप बनता है। पांच स्वरों के कारण से इस की जाति औढ़व कहलाती है। कल्याण अंग का यह गम्भीर प्रकृति का राग है। मेल पद्धति वाले इसको कल्याण मेल से कहते हैं। इस में पूर्वांग में अंश गांधार स्वर है, उतरांग में 'धैवत' जिसे लोग वादी-संवादी भी कहने लगे हैं। 'पंचम' से 'गांधार' तक मींड से लौटते हैं। रात्रि का प्रथम प्रहर इस का गायन समय है।

आगे चल कर क्रमशः 'देसकार', 'ज्यत कल्याण', और 'औढव शुद्ध कल्याण' आदि राग दिये जायेंगे जो कि इन्हीं पांच स्वरों से गाये जाते हैं।

आरोह :—सा रि ग प ध सां

अवरोह :—सां ध प ग रि सा

मुख्य अंग :—ग, रि, प ग, ध प ग रि ग, रि सा।

आलाप राग भूपाली

सा, सा रि ऽ ग रि ग, रि सा, सा धं, सा पं धं सा, धं सा रि, ग रे गं,

रि सा रि, सा धं, सा, सा रि ऽ सा धं ऽ सा, सा रि ग, रि ग प ग, ग रि

सा रि ग, ग रि प ग, ग रि ग, रि सा, सा रि ग प ध प ग, ग रि प ग

ध प ग, ग रि ग, रि सा रि, सा धं सा, सा रि सा सां धं सा, ग ग रि सा

रि ग ऽ प ग ऽ ग रि प ग ध प ग ऽ रि ग, सा ग रि, ग प ग, प

सां ध, सां ध प ग रि सा, ग रि प ग ध, ग ऽ प रि ग सा रि सा,

सा रि सा सा, धं धं सा रि, ग रि सा रि ग, प ग, ध प ग, ग प ध सां,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध सां ध प ग –, रि ग रि, ग प ग, प ध प, –, ग प ग, प ध प,

ध सां ध, सां रिं सां ध प ग रिं ग –, ग रि प ग –, ग प ध सां रिं सां ध

प ग रिं, सा धं सा रि ग ऽ रि सा धं सा –,

ग रि सा रि ग ऽ रि प – ग –, ग प ध सां प सां ध सां –, सां रिं सां सां ध

ऽ सां प सां ध सां –, सां ध सां रिं गं रिं गं –, ग प ग, प ध प, ध सां ध सां,

रिं सां, गं रिं सां रिं गं ऽ रिं सां ध प ग रिं सां ध प ग रि सा –

सा रि सा ग, रि ग रि प, ग प ग ध, प ध प सां, ध सां ध रिं, सां रिं सां गं, रिं गं सां रिं

सां प ग

गं गं गं रिं सां ध, रिं सां ध प, सां ध प ग, ध प ग रि, ग ग रि सा रि

ग रि ग –, रि सा रि –, सा ध सा –,

सा रि सा सा ग रि प रि ग –, सा ग रि प ग ध प ग रि प – ग –, सा ग

रि, रि प ग, ग ध प, प सां ध सां –, गं, रिं गं ऽ रिं सां रिं –, सां ध सां ऽ ध

प ध –, प ग प ऽ ग रि प ग ध प सां ध रिं सां गं रिं गं सां रिं ध

सां प ध ग प रि ग रि प ग रि ग रि, सा धं सा,

तानें राग भूपाली

सा रि ग ग रि सा,ग रि प प ग रि, ग ग रि सा,सा धं रि सा ग रि प ग,रि ग ग रि,सा रि सा सा,सा रि ग रि, रि ग प ग,ग प ध प ग ग रि सा,रि सा ग रि प ग ध प ग ग रि सा, रि सा सा,ग रि रि,प ग ग,ध प प, ध प ग रि ग ग रि सा,सा रि ग प ध ध प प ग ग रि सा, रि सा ग रि प ग ध प ध ध प प ग ग रि सा,सा रि ग प ध सां प ध सांसां ध प ग ग रि स,रि सा ग रि प ग ध प सांसां ध प प ग रि सा,सा रि गरि सा, रि ग प ग रि,ग प ध प ग, प ध सां ध प,सां सां, ध प ग ग रि सा,सा ग रि प ग ध प सां ध सां ध प ग ग रि सा,सा रि ग रि, रि ग प ग, ग प ध प,प ध सां ध, ध सां रिं सां, रिं रिं सां ध,सां सां ध प, प ग रि सा,सा रि ग ग रिसा,रि ग प प ग रि,ग प ध ध प ग,प ध सां सां ध प,धसां रिं रिं सां ध,सां सां ध प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ग रि सा, ग रि सा, प ग रि, ध प ग, सां ध प, रिं सां ध, गं रिं सां सां ध प प ग रि सा,ग रि सा रि, प ग रि ग, ध प ग प, सां ध प ध, रिं सां ध सां, गं रिं सां रिं, गं रिं सां ध प ग रि सा, सा रि ग प ध सां रिं गं सां ऽ रिं गं रिं सां ध प ग रि सा,सा ग रि,सा रि सा,रि प ग,रि ग रि,ग ध प, ग प ग,प सां ध,पध प, ध रिं सां, ध सां ध, सां गं रिं, सां रिं सां, गं रिं सां ध प ग रि सा,सा रि, रि ग,ग प,प ध,ध सां, सां रिं, रिं गं, गं रिं, रिं सां,सां ध, ध प, प ग, ग रि, रि सा, सा रि सा,रि गं रि,रि ग रि,ग प ग, ग प ग,प ध प,

सां ध प ग रि सा

प ध प, ध सां ध, ध सां ध,सां रिं सां,सां रिं सां, रिं गं रिं, गं रिं रिं, रिं सां सां, सां ध ध, ध प प,प ग ग,ग

धं सा

रि रि, रि सा सा, धं सा सा।

चिन्ह रहित तानों को चतुर्दांश, अष्टमांश, तृतीमांशः, षष्टमांश द्वादशांश और भी अधिक तेजी से ले सकते हैं। षोडषांश तक तो विलंबित लय में चलती ही हैं। तैय्यारी अपने २ शिक्षण प्राप्ति और अभ्यास पर निर्भर रहता है। विशेष कर तो राग के रस, भाव; प्रकृति पर (रागों के विस्तार गायन क्रम आलाप तान लय बांट) निर्भर होना चाहिये ॥

विलम्बित ख्याल राग भूपाली ताल तिलवाड़ा

स्थायी :- ए जी अब तो जाने न दूंगी
शगुन भले जी बहुत दिन न मेरे घर आए
कर राखो उर हार ॥

अन्तरा :—शाम सुन्दर पिया अत ही रंगीलवा
सांची तो कहो तुम काके बसो जी ॥।

स्थायी

प

ग ग रि सा ग प | ग ऽ रि ग रि सा धं पं धं सा रि ग ऽ ऽ ग रि सा रि

ए · · जी अ ब तो जा · · · · · · · · · · · · · ने न दूं ·

१ ५

सा रि ग रि सा धं धं धं धं धं सा रि सा धं पं रि सा सा रि ग रि ग प |

· · · · · गी · श गु न भ · · · ले · · जी ब हु त दि न न |

\+ १३

प ग रि सा रि ग प ध प ग प ध प ग प ग प ध ऽ प ध प प ग रि

मे · · · · · · · · रे घ र आ ये क र रा · · खो · · · · ·

१ ५ +

ग प ध सां ध प ग रि सा ‖ ग रि सा ग प

उ र हा · · · · · र ऐ · जी अ ब

१३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प | सां सां सां रिं सां सां ध ऽ सां ध ऽ सां रिं सां सां रिं ऽ सां ध प
शा म सु द र पि या अ · · त · · ही · रं गी · · ल वा ·
१ ५ + १३

ग ऽ | रि ग प ग प ध सां प ध सां ध सां ऽ सां रिं ग प ध सां रिं सां
सां ची तो · क · · · · · · · हो · तु म का · · · · ·
१ ५ +

सां प ध सां रिं गं रिं सां ध गं रिं सां ध रिं सां ध प सां ध प ग रि सा ||
के ब सो · · · · · · · · · · · · · · · · · जी · · ·
१३

ग रि सा ग प |
ए · जी अ ब |

राग भूपाली

ताल सवारी (मात्रा १५) ताली १, ४, ८, ११ खाली ६, १०, १४)

स्थाई :—नाना रूप नाना जाके रंग, नाना भेष करहि इक रंग,
नाना विधि की नो विस्तार ।।

अन्तरा १. प्रभु अविनाशी एक ओंकार । नाना चरित करे छिन माहीं,
पूर रहयो पूरन सब ठाहिं, नाना विधि कर बनत बनाई ।।।

अन्तरा २. अपनी कीमत आपे पाई, सभ घट तिस के सभ तिसके ठाऊं,
जप जप जीवै नानक हरि नाऊं ।।।

स्थाई

| प ऽ ग ग ऽ रि प ग ग रि सा ध सा रि | सा ध सा रि ग ग रि प ग ध प ग
| ना ना रू प जा · के ना · ना रं · ग | ना ना भे ष क र हि इ क रं · ग
| १ ४ + ८ + ११ + | १ ४ + ८ + ११ +

सा सा ऽ प ग रि ऽ ग ग ऽ ध सा रि सा	
ना ना · वि धि की · नो वि · · स्ता · र	
१ ४ + ८ +११ +	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग ग ग प ग ग प ऽ सां ध सां सां | सां ध ऽ सां सां सा सां सां रिं गं रिं सां ध प
प्र भु अ वि ना शी ए ·क ओं · का र | ना ना · च रि त क रे · छि न मां · ही
१ ४ + ८ +११ + | १ ४ + ८ + ११ +

ग ग रि ग रि सा धं सा रि ग ग | सा रि ग रि प ग ध प ग रि सा ध
पू र र ह्यो पू र न स ब ठा हि | ना · ना · वि धि क र ब न त ब
१ ४ + ८ +११ + | १ ४ + ८ +११

प ग रि ग ||
ना · · ई ||
+

(राग भूपाली) ख्याल आडा चौताल

स्थाई :—जब मैं जानी, तेहारी बात अब मैं सुरजनवा ।।

अन्तरा :—मुहमदशा पिया सदा रंगीली बतियां सुन ले हो कान ।।।

स्थाई

ग रि सा रि | प ग रि ऽ ग ग ग ग ऽ प ध प प ग | रि धं सा ऽ
ज ब मैं · | जा · · · · नी ते हा · · · · री बा | · त
७ | १ ३ + ७ + ११ + | १ ३ +

ग प ध सां ऽ प ध प ध सां ध प ग रि सा ऽ रि ग || ग रि सा रि |
अ ब मैं · · · · सु र ज न वा · · · · · · || ज ब मैं · |
७ + ११ +

अन्तरा

प प सां ध | सां ऽ ध सां सां ध सां सां सां सां सां सां रिं ऽ सां रिं सां सां ध प
मु ह म द | शा · पि या स दा रं गी ली ब ति · · · यां · · · · ·
| १ ३ + ७ + ११ +

ग | ग प ध सां रिं गं ऽ रिं ऽ सां प सां ध रिं सां ध प ग रि रि ग सा रि ||
· | सु न ले · · · · · · हो का · · · · · · · · न · · · ||
| १ ३ + ७ + ११ +

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाली तीन ताल

स्थाई :—झांझ मंदिलरा मोरा बाजे हिलीरे ॥

अन्तरा :—गुणि सब गावें रास्मंदिलरा नाचत कान्हन कन्हैया
आनंद करै सब लोग ॥।

स्थाई

प ग ग ग ग ग सा ग ग ऽ रि सा सा सा रि | ' ' सा ध सा रि रि
झां झ मं दि ल रा · · · · · मो रा | बा · जे हि लो
१ ३ + ७ | १ ३ +

रि सा
ग ऽ ग ग रि सा रि ग ‖
· रे · · · · · ·
७

अन्तरा

सां सां
ग ग ग ग प ध ऽ सां सां सां सां सां | ध ध ध सां सां सां ऽ सां रिं सां सां
गु णि स ब गा वें रा स्मं दि ल रा | ना च त का न्ह न क · न्है ·
१ ३ + ७ | १ ३ +

सां सां प
ऽ ध ध ध | ग ग ग ग ग प ध प प प ध सां सां ध सां ध प प ग
या · · | आ न द क रै · स ब लो · · · · · · · · ·
७ | १ ३ + ७

रि सा स रि ‖
ग · मो रा

राग भूपाली तीन ताल

स्थाई :—जब से तुमीं सन लाग ली पीत नवेलरी, प्यारे बलमा मोरे जब से तुमीं सन ॥

अन्तरा :—जो न न देखो तोहे, कल न परे मोहे, चर्चा करे सब सहेलरी ॥।

स्थाई

रि प
ग रि ग रि रि सा सा ध | सा सा रि रि ग ऽ ' ग प ग | प ध प प ग रि सा
ज ब से · तु मीं स न | ला · · ग ली पी त न | वे · · · ल री
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ऽ ग प ध सां	प ध सां सां ध प	ग रि ग रि रि सा सा धं
· प्या रे ब ल्	मा · · · मो रे	ज ब से · तु मी स न
७	१ ३	+ ७

अन्तरा

प प ध सां सां सां ऽ ध सां सां	सां ऽ ध ध सां सां सां ऽ सां रिं सां रिं
जो · न न दे खों · · · तो	हे क ल न प · · · · रे ·
१ ३ ७	१ ३ ३ ७

सां ध	ध प ऽ सां सां ध प ग रि ऽ ऽ ग प ध ऽ ध सां	सां रिं सां सां
मो हे	· · च · र्चा क · · रे · स ब् स	हे · · ·
	१ ३ + ७	१

ध प ऽ ग
ल री · ·
३

राग भूपाली तीन ताल

स्थाई

जय जय जय रघुवंश दुलारे, सुख सागर रवि वंश उजागर,
लीला ललित मनोहर प्यारे ।।

अन्तरा

यज्ञ सुधारन असुर सहारन गोतम नारी उधारन हारे
जनक स्वयंवर पावन कीनो ।।

स्थाई

सा रि ग रि प ग ध प ग रि सा रि	प ग ग रि ग ग रि सा सा धं स रि
ज य ज य ज य र घु व · श दु	ला रे सु ख सा ग र र वि वं श उ
३ + ७	१ ३ + ७

ग ग ग सा रि ग रि ग प ध सां ध सां प ध	प ग रि सां
जा ग र ली · ला · ल लि त म नो · ह र	प्या · रे ·
१ ३ + ७	१

अन्तरा

ग प ध सां सां सां सां सां सां सां	सां रिं सां सां रिं गं गं रिं सां रिं रिं सां
य ज्ञ सु धा र न अ सु र स	हा र न गो · त म ना · रि उ
३ + ७	१ ३ +

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध सां सां ध | प ध प ग ग रि ग रि ग रि स स ग प ध | सां सां ||
धा · र न | प्या · रे · ज न क स्व यं · ब र पा व न | की नो ||
७ | १ ३ + ७ | १ ||

राग भूपाली तीन ताल

स्थाई

अब देखो राम ध्वजा फहरानी।

अन्तरा-

हलकत ढाल फरकत नेजा, गरद उठी असमानी,
लक्षमण वीर बालि सुत अंगद, हनूमान अगवानी।
कहत मन्दोदरि सुन पिय रावण, कौन कुमति सिय आनी।
जिस सागर का मान करत हैं, तापर शिला तरानी।।
तिरिया जाति बुद्धि की ओछी, उनकी करत बढ़ाई।
ध्रुव मण्डल से पकर मंगाऊं, वह तपसी दोउ भाई।।
हनुमान राम पायक उनके, लक्ष्मण जैसे भाई ।
जरत अग्नि में कूद परेंगे, शोच कभू नहिं पाई।।
मेघनाद से पुत्र हमारे, कुभकर्ण से भाई ।
एक बेर सन्मुख होय लड़ेंगे, युग युग होत बढ़ाई ।।
इक लख पूत सवा लख नाती, मौत अपनी आई ।
अग्र के स्वामी गढ़ लंका घेरी, अजहूं समझ अभिमानी ।।

स्थाई

| प | प
सा धं स रि | ग ग ग ग ग ध प ग रि स ग रि स रि | ग ऽ प प ध ध सां
अ ब दे · | खो रा म ध्व जा फ़ ह रा · नी फ ह रा · | नी ऽ व जा · फ ह
७ | १ ३ + ७ | १ ३

ध प ग रि ||
रा · नी · ||
+ ||

अन्तरा

ग ग प ध | सां ऽ सां सां ऽ सां सां सां रिं सां सां ध ध ध ध | सां प ध सां
हु ल क त | दा · ल फ र क त ने · जा · ग र द उ | ठी अ सा मा
७ | १ ३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ ध प ग गं रिं गं गं | रिं सां रिं रिं सां ध सां सां ध प ग ग ग स रि |
· नी · · ल क्ष म ण | वी · र बा · ली सु त अ · ग द ह नु मा
+ ७ | १ ३ + ७

ग प ध सां प ध सां ध प ग ||
· न अ ग वा · · नी · ·
१ ३ +

बाकी अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

राग भूपाली तीन ताल

स्थाई

ना मैं योग ध्यान चित लाया विनशे राग न छूटे माया
कैसे जीवन होय हमारा ध्यान चित लाया ।।

अन्तरा

जब न होय राम नाम अधारा कहूं कबीर खोजहू असमान
राम समान न देखो आन ।।।

स्थाई

ग प ध सां प ध सां ध प ग ऽ ग ध प | ग रि सा धं सा रि सा धं प
ना · · · · · मैं यो ग ध्या न चि त | ला · या वि · न · शे ·
३ + ७ | १ ३

ऽ धं सा सा सा | सा ग रि ग रि ग ध प ग रि सा ग रि ग प | प प ग प
रा · ग न | छू · · ट मा · · · या · · कै से · जी | व न हो ·
+ ७ | १ ३ + ७ | १

ध सां प सां ध सां रिं सां ध प ग रि सा || ग रि ग ध प | ग रि सा ग
· · · · · · य ह · मा · · · रा || ध्या न चि त | ला · या ना
३ + || ७ | १ ३

प ध सां प ध सां ध प ग ग ध प | ग रि सा
· · · · · · मैं यो ग ध्या न चि त | ला · या
+ ७ | १

अन्तरा

ग प ध सां ऽ सां ध ध सां सां | रिं सां ध प रिं सां गं रिं ऽ सां ध ध सां ध सां रिं
ज ब न हो · य रा म ना म | अ धा · र क हूं क बी · र खो ज हूं अ · स
३ + ७ | १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| सां ध प ग ग रिं सां ध प ग प ध सां ध सां ध प | ग रि सा || ग प ध सं

| मा · न रा म स मा न न दे · · · खो · · · | आ · न || ना · ·

| १ ३ + ७ | १ || ३

राग भूपाली तीन ताल

स्थाई

कौशल्या मैयाचिर जीवो तेरो छौना,

राज समाज सकल सुख संपति, अधिक अधिक नित होना।

अन्तरा

मुनि जन ध्यान धरत निशि वासुर अधिक जन्म धर मौना।

रत्न हरि प्रभु त्रिभुवन नायक तैंकर लियो खिलौना॥

स्थाई

ग प ध प ग रि सा ध | सा ध सा रि ग ग ग ग प | ग प ध प ग रि सा

कौ · श ल्या · मै · | या चि र जी · वो ते रो · | छौं · · ना · · ·

\+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

ग रि सा रि सा ग ग | रि ग ध प ग रि सा सा ग ग रि ग प प ध ध | प ध

ज स मा ज स | क ल सु ख सं · प ति अ धि क अ धि क नि त | हो ·

\+ ७ | १ ३ + ७ | १

सां ऽ ध प ग रि सा ||

· · ना · · · ·

३

अन्तरा

ग ग ग ग प प प | ध ध प ध सां सां सां ध ध ध सां ऽ सां सां सां | सं रिं

मु नि ज न ध्या न ध | र त नि शि वा स र अ धि क ज न्म ध र | मौ ·

\+ ७ | १ ३ ७ + ७ | १

ऽ सां ध प गं रिं सां रिं सां ध | ध सां रिं सां ध प ग ग ग ग रि ग प ऽ प

ना · · र त्न ह रि प्र भु | त्रि भु व न ना · य क त क र लि यो खि

३ + ७ | १ ३ + ७

ग प ध सां रिं सां ध प ग रि ||

लो · · · · · ना · · · ·

१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण और राग जैमिनी कल्याण (यमन कल्याण)

जैमिनी कल्याण राग में शुद्ध, तथा तीव्र दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं, इस राग को सम्पूर्ण सम्पूर्ण अथवा षाडव सम्पूर्ण मानें, और आरोह सा रि ग म्, प ध नि सां, स रि ग म्, ध नि सां, अथवा नि रि ग म्, ध नि सां करें तो भी यह राग बना ही रहता है। कारण, कि ऋषभ पंचम अंश स्वर दोनों प्रकारों में किसी भी तरह बने रहते हैं। पूर्वांग में तथा उत्तरांग दोनों में अंश स्वर बन कर, दोनों अंगों का प्रतिनिधित्व करते रहें, तो आपत्ति नहीं। निषाद ग्रह, गांधार न्यास तो हैं, परन्तु इन को अंश अथवा वादि संवादि क्यों नहीं कह सकते, उस का कारण, प्रत्यक्ष प्रयोग से सभी समझ सकते हैं। कल्याण के स्वरों में से गांधार को छोड़ कर, ऋषभ लगा कर गा कर देखें, और फिर ऋषभ को छोड़ कर, गांधार लगा कर देखें, तो ऋषभ युक्त स्वरावली में कल्याण की छाया अधिक दीख पड़ेगी। यह सत्य है कि कल्याण सम्पूर्ण जाति का होने से दोनों स्वर बारी २ से ऋषभ तथा गांधार वर्ज्य कर के कल्याण की अधिक अथवा कम छाया का निर्णय तो होगा ही। परन्तु दोनों षाडव स्वरावलियों में कोई भी कल्याण नहीं कहलाएगी, क्योंकि कल्याण तो सम्पूर्ण रहा। जैमिनी कल्याण भी सम्पूर्ण जाति का राग है।

एक प्रश्न, कल्याण राग को ही यमन का नाम प्राप्त है इसे चाहे इमन भी कहें। परन्तु जब इस को यमन कल्याण कहेंगे, तो यमन अथवा कल्याण एक ही तो राग है जो कि केवल तीव्र मध्यम से ही है। तो फिर यमन कल्याण नाम मिलते ही शुद्ध मध्यम का इस में प्रयोग किस कारण युक्ति युक्त सिद्ध होता है। सो उचित यही होगा, कि जैमिनी कल्याण ही दोनों मध्यम का राग माना जाय। और कल्याण में केवल तीव्र मध्यम चाहिये।

यह राग, श्रम पूर्ण, मृदु भाषी रात्रि के प्रथम याम में गाया जाता है, इस के अनेक (प्रकार) हैं। श्री कल्याण, पंच कल्याण, सामंत कल्काण, जयत कल्याण, शुद्ध कल्याण, शाम कल्याण, राज कल्याण भूप कल्याण, चन्द्रकान्त कल्याण, हेम कल्याण, सावनी कल्याण इत्यादि बड़े आकर्षक इस राग के भेद हैं। गौरख राग के स्वर चाहे न्यारे हैं परन्तु गौरख कल्याण ही नाम उसे प्राप्त है।

आगे कल्याण और जैमिनी कल्याण (यमन कल्याण) दोनों ही रागों की चीजें दी हैं।

आरोह नि रि ग म् ध नि सां, अवरोह सां नि ध प म् ग रि स, मुख्यांग स, नि ध नि रि, ग रि, नि रि, सा।

अलाप राग कल्याण

स, नि ध नि ऽ, रि सा, नि रि ग, ग रि ग, रि, नि रि सा, नि ध नि, म् ध नि, ध

नि रि ग रि, नि रि सा, नि रि ग म्, प, म्, ध म ऽ ग रि नि रि सा, नि रि ग,

नि रि ग रि, ग म् प ऽ म ग रि सा नि ध नि रि ग, नि ऽ रि ग म् प, रि ग रि

नि रि सा, सा नि रि ऽ सा, नि ध सा नि रि ऽ सा, नि ध म् ध नि ध प, नि ध सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निं रि ऽ सा, धं निं रि ग रि ऽ सा निं रि सा, निं रि ग म् ध नि ध म् ध प, म् ध

म् ग रि निं रि सा, नि रि ग म ध नि सां ऽ नि ध नि म ध नि ध प ऽ म् ध म्

नि

ग ऽ रि ग म प रि, ग रि निं रिसा, ग, म् ध नि सां ऽ नि ध नि रिं सां ध नि

रिं गं, नि ऽ रिं सां, ध नि ध, म् ध म् प ऽ, म् ध म, ग रि, निं रि स, निं रि ग

नि नि

म, ध नि ऽ म् ध सां नि ध ऽ नि रिं गं रिं, नि रिं सां, रिं रिं सां नि सं ऽ नि ध

नि म् ध म् प ग म ध नि म ऽ धं नि ऽ ध म ध म प रि ग रि निं रि सा

आवश्यक्तानुसार स्वरों पर अधिक अथवा कम भी ठहर सकते हैं।

तानें राग कल्याण

निं रि ग रि सा निं धं निं, निं रि ग म्, ग रि निं सा, नि रि ग म् प म् ग रि ग म् प म् ग रि निं सा, सा निं, रि सा, ग रि, म् ग, प म् ग रि, ग रि निं सा, निं रि ग रि, रि ग म् ग, ग म् प म्, ग रि निं सा, निं रि ग, रि ग म्, ग म्, ग म् प म् ग रि निं स, ग ग रि सा, म् म् ग रि, ग म् प म् ग रि निं सा, निं रि ग म् प ध प म् ग म् प म् ग रि निं सां, सा निं, रि सा, ग रि, म् ग, प म्, ध प म् ग रि सा, निं रि ग म् ध नि ध प, म् ध प म् ग रि निं सा, निं रि ग म् ध नि नि ध नि नि ध प म् ग रि सा, निं रि ग म् ध निं सां निं ध प म् ग रि सा निं सा, निं रि ग रि, रि ग म् ग, ग म् प म्, म् ध नि ध, ध नि सां नि, ध प म् ग रि सा निं सा, निं रि निं, रि ग रि, ग म् ग, म् ध म्, ध नि ध, नि रिं नि, रिं गं रिं, नि रिं नि, रिं गं रिं सां नि ध प म् ग रि नि स, ग रि ग ग रि सा, नि धं नि नि ध प, गं रिं गं गं रिं सां, रिं रिं सां निं ध प, सां सां नि ध प म्, नि नि ध प, म् ग, ग ध प म् ग रि, ग म् ग रि नि सा, ग रि स नि रि स, म् ग रि सा ग रि, प म् ग रि म् ग, नि ध प म् ध प, सां नि ध प रिं सां, गं रिं सां नि रिं सां, म्ं म्ं गं रिं सां नि ध प म् ग रि सा, ग रि सा म् ग रि सा, म् ग रि प म् ग रि, प म् ग ध प म् ग, ध प म् नि ध प म्, नि ध प सां नि ध प, सां नि ध रिं सां नि ध, रिं सां नि गं रिं सां निं, ध प म् ग रि नि सा, नि रि ग म् ग रि, रि ग म् ध म् ग, ग म् ध नि ध प, म् ध नि रिं नि ध, ध नि रिं गं रिं सां, नि रिं गं म्ं गं रिं, गं म्ं पं म्ं गं रिं, सां नि ध प म् ग, ध प म् ग रि सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नोट :—उपरोक्त आलाप तान कल्याण के हैं, जैमिनी कल्याण में जब आलाप तान लेना हो तो इन्हीं आलाप तानों में प मॢ ग रि ग म ग रि स इस प्रकार अथवा ग म ग रि नि रि स इत्हादि केवल इस ढंग से शुद्ध मध्यम का भी प्रयोग करें। क्योंकि जैमिनी कल्याण में शुद्ध और तीव्र दोनों मध्यम लगते हैं। अनेक संगीतकार इसी को (यमन कल्याण) भी कहते हैं।

राग कल्याण

बड़ा ख्याल बिलम्बित एक ताल

स्थाई

मोसो बात सुनो व्रिज नारी।
एक उपाख्यान चलत त्रिभुवन में, सो तुम आज उघारी॥

अन्तरा

कबहूं बालक मोहन दीजै नारी।
जो मन आवे सोई कर डारै मूंड चढ़त हैं भारी॥

स्थाई

स ग रि ग स निं धं निं | धं निं ऽ ऽ धं ऽ पं निं धं निं रि ऽ स ऽ धं निं रि ग
मो · सो · बा त सु · | नो · · · · व्रि ज ना · · री · ए क उ पा
१ + ५ + ९ ११

रि निं रि रि निं रि ग रि ग म् प म् ऽ ग ऽ म् ग म् ध | प ऽ म् ग रि स रि
ख्या · · न च ल त त्रि भु व न में · · सो · तु म | आ · · · · · ·
१ + ५ + ९ ११ | १ +

ग म् प ग म् ऽ प प रि ग रि म् ग प ऽ म् ध म् रि सा | निं रि ग रि सा रि
· · · · · · · ज उ धा · · · · · · · · · · री | मो · से · बा ·
५ + ९

निं सा ऽ निं धं |
· · · त सु |

अन्तरा

म ग म् ध | प म् ग म् प प ग म् ध नि ध नि ऽ ध म् ध प ऽ म् ग | ग म्
क ब हूं · | बा · · ल · क मो · ह न दी · · · · ज ना री | जो ·
| १ + ५ + ९ ११ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध नि ध नि म् ध नि ऽ म् ध नि सां रिं सां नि ध प म् रि ग नि रि स
o o o o — o — o o o o
म न आ · · वे · · सो ई क · र · डा · र मू ड च ढ़ त है
+ ५ + ९

रि ग म् ध नि सां नि ध म् रि स
भा · · · · · · · · · · री
११

राग कल्याण ख्याल ठाय तीन ताल

स्थाई

मोको डगर चलत दीनी गारी रे।
ऐसो री ढीठ बनवारी गुइयां बिनति सकल कर हारी रे।।

अन्तरा

नीर भरन मैं चली हूं धाम सो, बीच मिले पनघन में कान्ह रे।
वह तो जाने न दे पनघट को सनद पिया, निरखत सगगी पनिहारी रे।।

स्थाई

रि रि नि म्
नि रि ग म् ध प प ग रि स स | ध नि रि ग म् प म् ग रि ग म् प ग | म्
o o o o o o | — o o o o — — — | o
मो को ड · ग · · र च ल त | दी नी गा · · · री रे · ऐ सो री ढी | ठ
+ ७ | १ ३ + | १

ध म् ध नि ध प नि सां रिं सां नि ध नि ध म् ध | नि ध नि प म् रि स
o o o o o — o o o o o o | o o o o o o —
ब न वा · रि री गु · ई · या बि न ति स क | ल क र हा · रि रे
३ + ७ | १ ३

नि रि रि ग ग म् म् ध म् ' रि ग रि सा सा
o o
मो · को · ड · ग · · · र · च ल त
+ ७

अन्तरा

ग ग ग म् म् ध | म् ध नि ध नि रिं सां नि नि रिं नि रिं नि ध प प | ग
— o o o o — | o o o o o o — — o o o o | o
नी र भ र न मैं | च लि हू धा · म सों बी च मि ले · · · प न | घ
+ ७ | १ ३ + ७ | १

म् ध म् ध नि ध प प प प प म् प ध प म् ग ग | रि ग म् म् ग म् ग रि
o o o o — o o o o o | o o o o o o
ट में · का · न्ह रे व ह तो जा ने · न · दे प न | घ ट को स न · द पि
३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा निं निं रि रि ग ग म | सां नि ध प म रि सा ||
० ० ० ० ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० —
या नि र ख त स ग री | प निं हा · री · रे
\+ ७ | १ ३

राग कल्याण तीन ताल

स्थाई

मोहे दरस दीजे दीजे कृपा कीजे इतनी मोपे गरिबनि वाजाऐ मोरे राजा ।।

अन्तरा

मांगत नहीं मैं अन धन लक्ष्मी मांगत इतनो मन रंग तोसे गरिबनिवाजा ऐ मोरे राजा ।।।

स्थाई

रि ध ग
ग ऽ रि निं रि ग ग म ध नि ध | प ऽ म ध म ऽ म ग ग ऽ रि निं रि
मो · हे द र स दी · · · | जे दी · · जे · कृ · पा ·
\+ ७ | १ ३ +

ग रि ग म प | म रि ग रि ऽ सा सा निं रि सा निं सा धं निं रि ग म रि ग |
की · जो · · | इ · त नो · मो · · पे ग · रि ब नि वा · · जा
७ | १ ३ + ७

ग
म ध नि ध प म ऽ ध म म ग ||
ऐ · · मे रे रा · · · जा ·
१ ३

अन्तरा

प ग प प प प प नि ध | सां रिं सां नि ऽ नि ध सां नि रिं सां नि नि नि
मां · ग त न हीं मैं · · | अ · न · ध न ल · क्ष मी मां ग त
\+ ७ | १ ३ +

नि नि नि ध नि म | म म नि ध नि ध म ऽ ध प म ग रि स निं धं निं रि
इ त नो · · · | म न र · ग तो · · रे · · · ग · रि ब नि
७ | १ ३ +

ग प ग रि
ग ग ऽ म म | नि नि ऽ ध प म ध प म म ग ग रि ||
वा · · जा | ऐ · मो रे रा · · · जा · · ·
७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण तीन ताल

स्थाई

लंगर तोरे कजिन छुवो, मोरी घगरिया भारी, आब देऊ गारी,
ब्रिजनारी निरख निरख, हस हंस देत मोहे गारी ।।

अन्तरा

तुम तो महा धीट पी अत तन लागोई, आवत धावत अत, बार बार
मइ सन हेरत हेरत हो, लाज न माने, जात हैं ब्रिज नारी ।।।

स्थाई

निं धं निं सा रि ग रि निं रि सा निं | निं धं नि रि ग ग रि ग ऽ म् ध म् प म्
लं · · ग र ती रे क जी न छु | वो · मो री ध ग रि या · भा · · · ·
+ ७ | १ ३ + ७

| रि निं रि ग रि नि सा ग रि सा निं | निं धं निं धं धं पं निं रि सा सा निं ऽ रि
| री आ ब दे ऊ गा री ब्रि ज ना री | नि र ख नि र ख हं स हं स दे त
| १ ३ + ७ | १ ३ + ७

ग रि | ग म् प रि स ||
मो हे | गा · · · री ||
| १ ३ ||

अन्तरा

ग ग प प सां सां ऽ सां सां सां सां सां सां | नि रिं गं रिं निं रिं सां सां ध नि ध
तु म तो म हा धी · ट पी अ त त न | ला · गो ई आ · व त धा · व
१ ३ + ७ | १ ३ +

प प प नि ध नि | ध प म् प प प रि ऽ रि रि प ग ऽ प प सां ध ऽ नि सां
त अ त वा · · | र बा · · र मैं · स न हे · र त हे · र त
७ | १ ३ + ७

सां गं गं रिं सां रिं सां ऽ ध नि ध म् ध प म्	ग रि ऽ ग रि	
हा ला · ज न मा ने · जा · त हैं · ब्रि ज	ना · · री	
१ ३ + ७	१ ३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण तीन ताल

स्थाई

जाके दरस को जग तरसत है, ताहि दरस तू दे मेरी प्यारी।
जा की मुरली की धुन सुन मोहे, ता तन नेक चितै मेरी प्यारी ।।

अन्तरा

शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पग पर से री प्यारी।
सूर दास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश है मेरी प्यारी ।।

स्थाई

म्	रि	म्	ग	म्	ग	रि	सा	|	नि	सा	नि	सा	ध	नि	रि	नि	रि	ग	म्	ग	प
जा	के	द	र	·	स	·	को	|	ज	ग	त	र	स	त	है	ता	हि	द	र	स	तू
+		७						|	१				३				+			७	

म्	ध	प	म्	ग	म्	ग	ग	म्	ध	नि	ध	नि	|	म्	ध	नि	ध	म्	ध	प	नि	ध	नि	प	म्	ग
दे	·	मे	री	प्या	·	री	जा	की	मु	र	ली	की	|	धु	न	सु	न	मो	·	हे	ता	त	न	ने	क	चि
१				३			+				७		|	१				३			+				७	

प	रि	ग	म्	ग	म्	ग	रि	सा	|
तैं	·	मे	री	प्या	·	·	·	री	|
१				३					

अन्तरा

नि	रि	ग	म्	ध	नि	म्	ध	|	नि	नि	ध	नि	सां	सां	नि	रिं	सां	नि	ध	नि	म् ध
शि	व	वि	रं	चि	जा	·	के	|	पा	र	न	पा	व	त	सो	·	ते	रे	प	ग	प र
+				७				|	१				३			+				७	

नि	ध	नि	म्	ध	नि	प	म्	ग	म्	रि	ग	नि	रि	ग	|	ऽ	रि	ग	म्	ऽ	रि	सा	सा	नि
से	·	री	·	प्या	·	री	सू	र	दा	·	स	व	श	ती	|	·	न	लो	·	·	क	जा	के	सो
१				३			+				७				|	१					३			+

रिं	ग	नि	ध	|	प (म्)	रि	ग	म्	ग	रि	सा
ते	रे	व	श	|	है	·	मे	री	प्या	·	री
७				|	१			३			

राग कल्याण मध्यलय तीन ताल

स्थाई

बिन देखे मन मान न मेरो, श्याम वरन चित
हरन लाडिलो, रूप सुधा निधि जगत उजेरो ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

चाल मराल मनोहर बोलन, चपल नयन मोतन हस हेरो,
नारायण त्रिभुवन को स्वामी, श्री वृष भानु कुंवरी को चेरी ।।।

स्थाई

नि रि ग म् रि स स	धं नि रि ग ग ग ग रि ग म् ग म्	ध प म् रि
बि न दे · खे म न	मा न न मे रो श्या म व र न चि त	ह र न ला
+ ७	१ ३ + ७	१

ग म् रि स नि ध नि म् ध प प	नि रि ग म् प म् ‖
· · डि लो रु प सु धा · नि धि	ज ग त उ जे रो ‖
३ +	१ ३

अन्तरा

नि ध नि म् ध प म्	ग म् ध नि रिं सां सां नि नि नि नि ध नि म् ध
चा ल म रा · ल म	नो · ह र बो ल न च प ल न म न मो ·
+ ७	१ ३ + ७

म् ध नि ध म् ध प प प म् प म् ग	रि ग म् रि स नि रि ग म् ग म्
त न ह स हे · रो ना रा य ण त्रि भु	व न को स्वा मी श्री वृ ष भा नु कु
१ ३ + ७	१ ३ + ७

नि ध प म् प ध प म् ‖
व रि को चे · · · री ‖
३

राग जयमिनी कल्याण

आरोह—नि रि ग म् ध नि सां अवरोह—सां नि ध प, म् ग रि ग म ग, रि, स

स्थाई

अवगुण न कीजिए, गुणीसन, का जाने गुण की सार,
और गुणी गुणी जाने, गुण की सार ।।

अन्तरा

बड़ी बेर समझे नाहीं समझत, बेर बेर कौन कहे,
एक बेर कह दीनी, कौन कहे यह बार बार ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

निं ग ग
धं निं रि ग प रि ग रि निं रि निं स | ग रि ग ग म् ध म् प ऽ म् ग म ग
० ० ० ० ० ० ० ० १/३ १/३ १/३ ० | ० ० ० ० १/३ १/३ १/३ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ०
अ व गु ण न की · जि ये · · · | गु णी स न का · · · · · जा · ने
\+ ७ | १ ३ +

ग रि ग ग म्
रि स निं धं पं पं | ग ग रि ग रि निं रि ग रि स निं रि ग रि | ग म् प
० ० ० — ० | — ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० | ⌣ ०
गु ण की सा र | और गु णी · गु णी · · जा ने गु ण की · | · · ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

ग
ऽ रि ग रि ||
० ० ० ०
· सा · र
३

अन्तरा

नि नि
| प ग ग प प नि ध सां सां नि ध सां नि रिं सां सां | ध नि ध नि सां सां ध
० — ० ० ० ० ० — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ०
ब ड़ी बे · र स म झ ना हीं · स · म झ त | बे · र बे · र कौ
१ ३ + ७ | १ ३

निं निं रि
नि ध प प ऽ म् ग रि ग | ऽ रि धं निं रि स धं निं धं निं स निं रि |
० ० ० ० ⌣ — ० ० | ० ० ० ० — — ० ० ० ० — ० ०
· न क हे · · ए क बे | · र क ह दी नी कौ · न क हे य ह
\+ ७ | १ ३ + ७

ग रि ग ऽ रि |||
— ० ० ० ०
बा र बा · र
१ ३

राग जयमिनी कल्याण तीन ताल

स्थाई

पीयरवा तिहारी नेक नजर पर, बार बार
गई हुं बलिहारी, बरज रही हूं, बार बार ।।

अन्तरा

मोरे मन की पुजी आई ली, मोरे मन की पुजी आई ली
नेहाल, कर प्यार, सीस नवारी, हस रस पार उतारन हार ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

रि निं निं सा रिं ग रि निं रि निं सा | निं ऽ निं ध पं पं निं धं सा सा सा रि
‿ ‿ ० ० ० ० ० — ‿ ‿ ० | — ‿ ‿ ० ० ० ० ० — ० ० ०
पी · · य र वा ति हा री · · · | ने क न ज र प र वा र बा र
+ , ७ | १ ३ + ७

निं सा | सा ग रि ग ध म् प ' म् ग म ग रि ग रि निं सा
० ० | — ० ० — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ०
ग ई | हूं ब लि हा री · · · ब र ज र ही · हूं ·
| १ ३ + ७

| रि ग ग म् रि ग रि ||
० ० ० ‿ ‿ ० ०
बा · र बा · · र
१ ३

अन्तरा

रि निं निं सा रि ग रि ऽ सा सा | सा रि सा ग ऽ प प प प ऽ सा सा |
‿ ‿ ० ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ~ — ० ०
पी · · य र वा · · मो रे | म न की पु जी आ ई ली · मो रे
+ ७ | १ ३ + ७

सा रि सा ग ऽ प प प प प नि ध नि ऽ ध म् प ऽ म् | ग म ग ऽ रि निं ग रि
० ० ० ० ० ० ० ० ० — ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ — ‿ ० | ० ० - — — - ० ०
म न की पु जी आ ई ली ने · · हा · · ल | क र प्यार · · · · ·
१ ३ + ७ | १ ३ +

नि
निं रि सा | सा सा सा ग ग प प प नि ध नि ध म् प म् ग रि |
० ० — | — ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ० ० ०
· · र | सी स न वा री ह स र स · · पा · · र उ ता
७ | १ ३ + ७

ग म् प रि ग ऽ रि ||
‿ ‿ ० ० ० ० ०
र · · न हा · र
१ ३

ध्रुपद जयमिनी कल्याण (चौताल)

स्थाई

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द,
नन्द नन्दन आनन्द कन्द, यशोदा नन्द श्री गोविन्द।

अन्तरा

दीनानाथ दुःख भजन, पदमनाभ मधुसूदन,
वासुदेव बनवारी, ब्रिजपति यदुनंद नन्दन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म्

प ग ग ग रे ग ध प म् ग म ग रे | ग म् प म् ध प म् ग म ग रे निं

— — — — — — — o o — — — — | — — — — — o o — — o o —

पा · र ब्र · ह्म प र · मे · श्व र | पु रु षो · त्त म · प र मा · नं

१ ५ + ९ ११ | १ ५ + ९

रे सा | निं ऽ धं निं रे सा निं ग रे ग ऽ ग | सा नि ध नि म् ध प ऽ

— — | — — — — — — — — — — — — | — — — — — — — —

· द | नं · द नं द न आ न द कं · द | य शो दा नं · द श्री ·

११ | १ ५ + ९ ११ | १ ५ + ·

म ग रे ग |

— — — — |

गो विं · द |

९ ११ |

अन्तरा

ग म् ध सां ऽ सां सां सां सां ऽ सां सां | नि ऽ ध नि रें गं नि रें

— — — — — — — — — — — — | — — — — — — — —

दी ना · ना · थ दु ख भ · ज न | प द म ना · भ म धु

१ ५ + ९ ११ | १ ५ +

सां नि ध प | सां गं गं मं गं रें सां नि ध नि म् ध प ऽ | ग म्

— — — — | — — — o o — — o o — — — — — | — —

सू · द न | वा · सु दे · · व ब · न वा · री · | व्रि ज

९ ११ | १ ५ ९ ११ | १

प ध नि ध म् ध प म् ग रे ग ||

— — — — — — o o — — — ||

प ती य दु नं · द · नं द न ||

५ + ९ ११ ||

राग सारंग (वृन्दावनी सारंग)

ओड़व ओड़व जाति का गन्धार, धैवत, रहित, (वर्ज्यं)। शुद्ध और कोमल दोनों निषाद इसमें लगते हैं। आरोह के समय शुद्ध निषाद, अवरोह के समय कोमल निषाद इसमें लेते हैं। ऋषभ, पंचम इसके अंश स्वर हैं। कोई लोग इनको वादी संवादी मानते हैं। दोपहर दिन का यह राग न गम्भीर प्रकृति का, न चपल प्राकृति का मध्य अवस्था में इसकी प्रकृति प्रतीत होती है। इसमें काफी राग की छाया न होने पर भी अनजाने ही लोग इसको काफी मेल से मानते हैं। इसमें थोड़े २ धैवत, और कभी गन्धार के प्रयोग से सारंग के अनेक प्रकार विद्वजनों ने कहे हैं। अच्छे गुणीजन इनको खूब रुचि से गाते बजाते हैं। यथा सामन्त सारंग, लंकदहन सारंग, बरवा सारंग, बड़हंस सारंग, मियां की सारंग, नूर सारंग इत्यादि और भी इसके प्रचलित प्रकार हैं। इसका :—

आरोह :—सा रे म प नि सां,

अवरोह :—सां नि़ प म रे सा।

मुख्य अंग :—म रे, प म रे, नि़ प म रे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप राग सारंग

रि
स निं स ऽ निं स रि रि म रि निं स निं स रि म रि रि म रि प म रि
~ , ० ० —, ० ० ~ , ० ० ~ , —, —, ० ० ० ० ~, ० — ०, — ० ०

ऽ म रि निं स निं स ऽ ऽ स रि निं स रि म रि प म रि निं स नि॒ पं
—, – — — —, ‿ ० ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ ० — ०, ० ० —, – –, – –,

स नि पं मं पं स निं स रि म प नि॒ म प म रि ऽ रि म रि म प म प नि॒ प
० ० – ० ० ~, ० ० ० ० ~, ० ० – ० ०, –, ० ० ०, ० ० ०, ० ० ०

म रि ऽ रि म प नि॒ म प ऽ म रि ऽ म प नि॒ म प नि॒ प म रि प म रि
० ० —, ० ० ० ० ० ० ० – ० ० –, ० ० ‿ ‿ ० – ० ० –, – ० ०

रि
निं सा निं स रि म प नि ऽ सां ऽ नि सां ऽ नि सां रिं ऽ सां रिं मं रिं ऽ मं
– –, ० ० ० ० ० ० ० – – – ‿ ० ‿, ० ० – –, ० ० – – – –

रिं नि सां नि सां रिं रिं सां नि सां प नि॒ प म प नि सां रिं नि सां ऽ प नि॒ प
– – –, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० – ०, ‿ ‿ ‿ ‿ – ० ० –, ० – ०,

म प नि॒ नि॒ प म प म रि ऽ म म रि प प म नि॒ नि॒ प सां सां नि रिं रिं सां
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ०, ० ० –, ० ‿ ‿, ० ‿ ‿, ० ‿ ‿, ० ‿ ‿, ० ‿ ‿,

रि
नि॒ प ऽ नि॒ म प म रि ऽ प म रि निं सा म प ऽ म प नि सां नि सां ऽ नि
० ० –, ‿ ‿ ०, ० ० –, ० ० –, – –, ० ० – ० ० ०, – ‿ ०‿, ‿

सां रिं ऽ सां रिं नि सां नि॒ प म प नि सां रिं नि सां नि॒ प म प म प नि॒ प
‿ ० –, ‿ ‿ ‿ ‿ – –, ‿ ‿ ‿ ‿ –, ० ० – –, ‿ ० ‿, ‿ ० ‿,

मं म
नि सां नि सां रिं नि सां नि॒ प ऽ नि नि सां रिं मं रिं रि म रि म प नि सां
‿ ० ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० –, ० ० –, ० ० –, ० ० —, ‿ ‿ ‿ ‿

रिं
रिं मं पं मं रिं ऽ नि सां नि सां रिं सां नि॒ प ऽ म प नि॒ प म रि ऽ म प नि॒
‿ ‿ ० ० ० — – —, ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० – ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ०, ‿ ‿ ‿

म प ऽ म रि निं स
‿ ० ‿ ‿ ‿, – –,.

आलापों में आवश्यकतानुसार न्यून अथवा अधिक भी ठहर सकते हैं।

तानें राग सारंग

निं सा रि म रि सा, निं सा रि म प रि सा निं सा, रि म प नि॒ प म रि म प नि॒
प म रि स निं स, रि सा, म रि, प म, नि॒ प, नि॒ नि॒ प म रि स निं स, रि निं स,
म स रि, प रि म, नि॒ म प, नि॒ नि॒ प म रि स निं स, स रि म रि, रि म प म,
म प नि॒ प, प नि सां नि॒, प नि॒ प म रि स निं स, स रि म प नि सां रिं रिं सां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि् प म रि सा निं स, म रि, प म, नि् प, सां नि, सां रिं सां नि् प म रि सा, सा रि रि, रि म म, म प प, प नि नि, नि सां सां, सां रिं रिं, म रिं, रि सां, सां नि्, नि् प, प म, म रि, रि स, निं सा रि म प नि सां रिं मं मं रिं सां, नि् नि् प म रि स निं स, म रि स रि, प म रि म, नि् प म प, सां नि् प नि, रिं सां नि सां, मं रिं सां रिं, पं मं रिं सां, नि् नि् प ः, रि स निं सा, सा रि सा, रि म रि, म प म, रि म प, नि् नि् प म, रि सा निं सा, रि म रि, म प म, प नि् प, म प नि, सां नि् प म रि सा निं सा, म प म, प नि् प, नि सां नि. प नि सां, रिं रिं सां नि् प म रि स, निं स रि म प नि सां रिं, मं मं रिं, रिं रिं सां, सां सां नि्, नि् नि् प, प प म, म म रि, निं स, निं रि स, स म रि, रि प म, म नि् प, प सां नि् नि रिं सां, सां मं रिं, रिं पं मं, मं रिं रिं सां, सां नि् प म, रि स निं स, निं स रि म रि स, स रि म प म रि, रि म प नि् प म, म प नि सां नि् प, प नि सां रिं सां नि्, नि सां रिं मं रिं सां, सं रिं मं पं मं रिं, पं मं रिं मं रिं सां, मं रिं सं रिं सां नि्, रिं सां नि सां नि् प, सां नि् प नि् प म, नि् प म प म रि, प म रि म रि स, निं स, रि म प नि सां रिं सं नि् प म रि म रि स निं स।

राग सारंग आड़ा चौताल

स्थाई

झांझ मंदिलरा बाजेहि लो मोरे घर आये सजत साजन।

अन्तरा

मालनियां आई हरवा लाई गुथाई पीया के गरवा पहिराये।

स्थाई

नि् नि् प म रि म रि सा निं सा | म/रि ऽ म ऽ रि प ऽ म नि् ऽ ऽ प सां ऽ ऽ स/रिं
झां · झ · म · दि · ल · | रा · · · · · · · · · · · · बा ·
+ | १ ३ + ७ +

सां नि् प नि प म रि म रि सा निं सा रि म प नि् प | नि सां ऽ नि सां रिं रिं
· · जे · हि · लो · · · · · मो रे घ · र | आ ये स · · ज
११ | १ ३ +

सां ऽ रिं नि सां नि प रि म प म म प नि् प प नि सां नि सां रिं सां
· · · त · · सा · · · · · · · · · · · ज · ·
७ + ११

नि प म ||
· न · ||

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म प नि॒ प नि	सां	नि	सां	ऽ	रिं	रिं	रिं	नि	सां	सां	नि	सां	नि	सां	रिं	सां सां		नि॒	प
माल · नियां	आ	ई	·		ह	र	वा	ला	ई	गु	था	·	·	·	·	·		ई	·
	१	३		+			७			+				११					

रिं ऽ पं मं	रिं	सां	रिं	मं	रिं	सां	नि	सां	नि॒	प	म	प	नि	सां	रिं	रिं	सां	नि॒	प
पी या के	ग	र	वा	·	·	·	·	·	·	·प	हि	रा	·	·	·	·	·	·	·
	१		३					+				७				+			

म रि म	
· ये ·	
११	

राग सारंग मध्यलय एक ताल

इसी का जवद्रुत एक ताल में गाया जायगा, तब स्वरों के नीचे लिखी हुई मात्राओं को आधे प्रमाण में समझना चाहिए क्योंकि द्रुत एक ताल की छः मात्रा हैं। ताली, १,३,५,६, पर।

स्थाई

सुन्दर मुख वारे मोरे, मीत पियरवा ।।

अन्तरा

देखन को चाहत हूं, मोरे मन्दरवा आवो,
मन भाए तोरे नयन सुन्दरवा ।।।

स्थाई

म	रि	प	म	नि॒	प	रिं	म	रि	स	निं	स
सु	·	द	र	मु	ख	वा	·	रे	मो	·	रे
१		+		५		+		९		११	

म	रि	ऽ	ऽ	म	प	नि॒	प	सां	रिं
मी	·	·	·	त	पि	य	र	वा	·
१				+		५		+	

सां	नि॒	प	म	प	नि॒	प	म	रि	स
·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
		९			११				

अन्तरा

म	ऽ	प	प	नि॒	प	ऽ	नि	सां	नि	सां	ऽ
दे	·	ख	न	को	·	·	च	ह	त	हूं	·
१		+		५		+		९		११	

रिं	ऽ	सां	रिं	सां	नि	सां	रिं	सां	नि॒ प
मो	·	रे	मं	द	र	वा	·	·	· आ
१		+		५		+			९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि प ऽ	म प नि सां मं रिं मं रिं सां सां रिं सां नि॒ प म रि स	
· वो ·	म न भा ये तो · रे न न सु · द · र · वा ·	
११	१ ५ + ९ ११	

राग सारंग तीन ताल

स्थाई

कर मन नंद नंदन को ध्यान
यह अवसर तोहे फिर न मिलै गो, मेरो कहो मान ।।

अन्तरा

घुंघर वारी अलकै मुख पर, कुंडल झलकत कान,
नारायण अलसाने नयना झूमत रूप निधान ।।।

स्थाई

नि़ सा रि म म प प रि | म प नि॒ प म रि सा नि़ नि़ नि़ नि़ नि़ सा रि रि
क र म न नं · द नं | · द न को · ध्या न य ह अ व सु र तो हि
\+ ७ | १ ३ + ७

रि म रि म प म रि सा नि़ सा रि ऽ रि म	प सां नि॒ प म रि सा	
फि र न · मि · लै गो मे · रो · क हो	· अ ब मा · · न	
१ ३ + ७	१ ३	

अन्तरा

म म म प प | नि सां रिं सां नि॒ प प रि म म प प नि नि | प नि ऽ सां
घुं घ र वा री | अ ल कै मु ख प र कुं ड ल झ ल क त | का · · ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

सां प नि सां सां नि सां | रिं सां नि सां नि॒ प रिं सां सां सां नि॒ नि॒ | प नि सां
न ना रा य ण अ ल | सा ने न य ना · झू म त रू प नि | धा · ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

नि॒ प म रि सा |||
· · · · न |||
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग झपताल

स्थाई

रघुवर आज रहो मोरे प्यारे जो तुम को बनवास दिया है
करियो गमन सकारे ।।

अन्तरा १.

रघुवर कहे सुनो मेरी जननी
यह ब्रत नेम हमारे
अब न रहूं घर मात कौशल्या, दशरथ बाचा हारे ।।।

अन्तरा २.

सीता सहित सुमित्रां नन्दन, भये कुटम्ब ते न्यारे ।
तुलसी दास प्रभु दूर गमन कियो, चलत नयन जल डारे ।

स्थाई

रि म प सां | नि़ प प रि म प नि़ प म रि सा निं निं निं | निं सा निं सा
० ० ० ० | – – – ० ० ० ० ० ० – – – ० ० | – – ० ०
र घु व र | आ ऽ ज र हो ऽ ऽ मो रे प्या रे जो तु म | को ऽ व न
| १ ३ + ८ | १ ३

रि म प नि़ प म रि सा रि म प | नि नि सां म प नि सां रिं ऽ सां रिं सां नि़
० ० ० ० ० ० – – ० ० – | — — — ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿
बा ऽ ऽ ऽ स दि यो है क रि यो | ग म न स ऽ का ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
+ ८ | १ ३ +

प नि़ प म रि || म रि म प सां |
— ‿ ‿ ‿ ० || ‿ ‿ ० ० ० |
ऽ ऽ ऽ रे || र ऽ घु व र |
८

अन्तरा

रि म प नि | नि सां ऽ नि सां नि सां नि सां रिं सां नि़ प म प नि सां | नि सां
० ० ० ० | ० ० – ० – ० – ‿ ‿ ० ० ० — ० ० ० ० | ‿ ‿
र घु व र | क हे सु नो मे री ज ऽ न नी ऽ ऽ य ह ब्र त | ने ऽ
| १ ३ + ८ | १

रिं ऽ रिं नि सां ऽ नि सां रिं सां नि़ प नि नि नि प नि | रिं नि सां प सां नि
० — – ० ० — ‿ ‿ ० ० ० — ० ० ० ‿ ‿ | — — — ० ‿ ‿
ऽ म ह मा ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ अ ब न र ऽ | हूं घ र मा ऽ ऽ
३ + ८ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि़ प म रि रि म प नि | सां म प नि सां रिं ऽ सां रिं नि सां ऽ नि़ प नि़
— ० - ० — ० ० ० ० | — ० ० ‿ ‿ ० — ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿
· त कौ श ल्या द श र · | थ वा · चा · · हा · · · · · · ·
+ ८ | १ ३ +

प म रि सा ||
‿ ० ०
‿ · · रे
८

नोट :—दूसरा अन्तरा पहले अन्तरे के ढंग पर चलेगा।

तराना राग सारंग द्रुत एक ताल

स्थाई

दीम् तननन दीम् ता तननन दीम् तननन,
तादारे तद्रेदानी तादारे तद्रे दानी तन नन नन नन ।।

अन्तरा

तन ना दिर दिर दा नी तन ना दिर दिर दा नी, दिर दिर दानी तारे दानी,
शुभ रंग देखत हिय मंदरवा सुखद सुलोचन,
परत चैन नित, परत चैन नित, परत चैन नित ।।।

स्थाई

|सा सां ऽ रिं सां नि़ प म रि म ऽ नि़ | प म रि सा निं सा ऽ म रि सा निं सा
|० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
|दी म् त न न न न दीं · · त | न न न न दीं म् त न न न न
|१ ३ ५ ६ | १ ३ ५ ६

म रि ऽ म प प प प नि़ म ऽ प	नि नि सां सां सां रिं सां नि़ प म रि सा	
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	
त दा · रे त द्र दा नी त दा · रे	त द्रे दा नी त न न न	
१ ३ ५ ६	१ ३ ५ ६	

अन्तरा

|प प म प प प प नि़ प नि नि सां रिं रिं | रिं रिं रिं मं रिं रिं रिं रिं सां सां
|० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ — ० ० ० ० ‿ ‿ | ‿ ‿ — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०
|त न न दि र दि र दा नी त न न दि र | दि र दा नी दि र दि र दा नी
|१ ३ ५ ६ | १ ३

रिं नि सां सां | मं मं रिं मं रिं सां सां नि सां ऽ रिं | सां नि़ प रि म प म रि सा
० ० ० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० | ० ० — ० ० ० ० — ०
ता रे दा नी | शु भ र ग दे ख त हि य · म | दि र वा सु ख द सु लो च
५ ६ | १ ३ ५ ६ | १ ३ ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा | रि निं सा रि म प रि म नि॒ म प नि | ऽ नि सां सां प रिं सां रिं ऽ सां नि सां
० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
न, | प र त चै · न नि त, प र त चैं | · न नि त प र त चैं · न नि त
| १ ३ ५ ६ | १ ३ ५ ६ ||

राग सारंग तीन ताल

स्थाई

तोरी सुरतियां मोरे मन भावे,
घरि पल छिन दिन रैन जियरवा, नेक पलक नाहीं लागे।

अन्तरा

हस हंस मोहे आन बुलावे, कर हठकेली मनुवा रिझावे,
सोहे सुन्दरी मान भरी।

स्थाई

नि॒ प नि॒ प नि॒ प म रि सा निं सा | रि रि म प नि प प नि॒ म प रि रि म प
तो री सु र · ति · या · · · | मो रे म न भा वे घ रि प ल छि न दि न
\+ ७ | १ ३ + ७

प नि॒ प म रि रि सा म रि म प नि नि सां सां | रिं रिं रिं सां नि॒ प म प नि॒ प
र · न जि य र वा ने · क प ल क न हीं | ला · · · · · · · · ·
१ ३ + ७ | १ ३

म, रि सा निं सा
· गे · · · ||

अन्तरा

म म प ऽ प रि रि | म प प नि सां नि नि सां सां मं रिं मं रिं सां | नि नि सां रिं
हं स हं · स मो हे | आ न बु ला वे क र ह ठ के · · ली · | म नु वा रि
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

सां रिं सां नि सां नि॒ प रि म ऽ रि नि॒ ऽ प रि | रिं सां सां सां रिं सां नि॒ प म रि म
· झा · · · वे · सो · · हे सु · द री | मा न भ री · · · · · · ·
३ + ७ | १ ३

रि सा निं स
· · · · ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा

यह सा रि म प ध, इन पांच शुद्ध स्वरों का औडव जाति का राग है। गांडार, निषाद इस में वर्ज्य हैं। रात्रि के प्रथम पहर की समाप्ति पर, आरम्भ कर के द्वितीय पहर रात्रि में गाते हैं। इस में कोई मध्यम षड़ज को अंश मानते हैं। कोई धैवत ऋषभ को। परन्तु दोनों ही इसे दुर्गा के नाम से पैछानते हैं। यह समस्या अनेक रागों के लिये वनी हुई है। इन्हीं स्वरों में चलन के बदल से, जलधर, शुद्ध मल्हार अर्थात् विष्णु मल्हार इत्यादि राग बनते हैं। मिया मल्हार जिसे कहते हैं वह मल्हार ही है। उस में कोमल गांधार और कोमल और शुद्ध दोनों निषाद लगते हैं शुद्ध मल्हार से पृथिक स्वरों का है। सर्व प्रकार से मध्य अवस्था इसे प्राप्त है। तो गति को प्रकृति भी मध्य में ही, न गम्भीर ना चंचल, बड़ा सरल और मधुर राग है। मन को शीघ्र आकर्षित करता है। कुछ वर्षो से अधिक प्रचार पा रहा है।

आरोह: सा रि म प ध, सां।

अवरोह:—सां ध म प ध, म रि, सा।

मुख्यांग: –म प ध, म रि।

अलाप राग दुर्गा

सा सा रि म रि सा धं स म रि प म प ध म रि म प म म रि म प ध म रि
~, o o — ~, o o — o o —, ⌣ ⌣ o — —, ⌣⌣ ⌣ ⌣—, o o — ——,

म रि प म ध प ध ऽ म रि सा धं सा सा रि म रि रि म प म म प ध म रि
⌣ ⌣⌣ ⌣ ⌣⌣ o — — — o o —, ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣ o — — —

रि प म प म प ध ऽ म रि ऽ सा धं सा सा रि सा रि म रि म प म
o ⌣ ⌣ ~, ⌣ ⌣ o —, o — o o o —, ⌣ o ⌣, ⌣ o ⌣, ⌣ o ⌣

प ध ऽ ऽ प ध प म रि म प ध ऽ म रि सा रि सा रि म रि म प म प ध
⌣ o ⌣ ⌣, ⌣ ⌣⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣⌣ — — —, o ⌣, o ⌣ ⌣, o ⌣ ⌣, ⌣ o

ऽ म रि सा सा रि म प ध म म प म म रि सा रि म प ध सां ऽ ध म प
⌣, o — o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣⌣ o ⌣ ~, ⌣ ⌣

म म रि म प ध म प ध ऽ म प म म रि सा धं ऽ सा सा रि म प ध सां ऽ ध
⌣⌣ —, ⌣ ⌣⌣ ⌣ ⌣ o ⌣⌣ ⌣⌣ ⌣ —, ⌣ o ⌣—, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣⌣ o — —,

म प म म रि प म प ध म प ध ऽ म रि ऽ रि म प ध म प ध म रि सा धं
⌣⌣ ⌣ ⌣ — ~, ⌣⌣ ⌣⌣ ⌣ o ⌣ o — o, ⌣ ⌣⌣ ⌣ ⌣⌣ o, — — ⌣ o

ऽ सा म म प ध सां ऽ सां ध ऽ सां ध सां ध प म प ध सां ऽ ध सां रिं सां रिं
⌣ —, — o o o o —, ⌣ o —, ⌣ ⌣⌣ ⌣—, ⌣ ⌣ o — o o ~, ⌣ ⌣

सां सां ध ऽ प म प ध म रि ऽ सा धं सा म प ध सां रिं सां रिं ऽ सां रिं मं
⌣⌣, o ⌣⌣ ⌣ ⌣ o — — — o o —, ⌣⌣ ⌣ ⌣ — o o —, ⌣ ⌣ o

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

रिं सां रिं सां सां ध म प ध सं रिं रि म प ध म प ध सां ध ऽ प म प म म
—, ◡◡ ◡—, ◡◡◡◡— –, ◡◡◡◡ ◡◡ o o ◡◡◡◡◡◡

रि म रि प म प ध म रि सा धं सा धं सा रि म ऽ रि प म प ध म म प
—, o o —◡◡ o — —, o o —, ◡◡ ◡◡ o o ~, ◡◡ o —, ◡◡

म म रि सा रि सा धं सा ऽ
◡◡ —◡ o ◡ o o —

आलापों पर आवश्यकतानुसार कम या अधिक ठहर सकते हैं।

तानें राग दुर्गा

सा रि म प, रि म प ध, म प ध ध, म म रि सा, रि सा म रि, प म ध प, म प ध ध, म म रि सा, सा रि म प ध म प ध सां सां ध प म म रि सा, म म रि सा, ध ध प म, सां सां ध प म म रि सा, रि सा म रि, प म ध प, सां ध रिं सां, ध प म रि, रि सा सा, म रि रि, प म म, ध प प, सां ध ध, रिं सां सां, ध प म म रि सा, सा रि म म, रि म प प, म प ध ध प ध सां सां, ध सां रिं रिं, सां रिं मं मं, रिं सां ध प, म म रि सा, सा रि म प ध सां रिं मं रिं सां ध प म म रि सा, सा रि, रि म, म प, प ध, ध सां, सां रिं, रिं मं, मं रिं, रिं सां, सां ध, ध प म प, ध ध म म, रि सा धं सा, सा रि सा, रि म रि, म प म, प ध प. ध सां ध, सां रि' सां, रि' मं रि', सां रि' सां, ध सां ध प, म म रि सा, सा रि म म रि सा, रि म प प म रि, म प ध ध प म, प ध सां सां ध, प, ध सां रि' रि' सां ध, सां रि' मं मं रि' सां, ध सां रिं रिं सां ध, सां सां ध प म म रि सा सा रि सा, रि म रि, म प म, प ध प, रि म रि, म प म, प ध प, ध सां ध, म प म, प ध प, ध सां ध, सां रि' सां, प ध प, ध सां ध, सां रि' सां, रि' मं रि', सां मं रि' मं रि' सां रि' सां, ध रि' सां रि' सां ध सां ध, प सां ध सां ध प ध प, म ध प ध प म प म, रि प म प म रि म रि, सा रि म प ध सां रि' सां, रि' मं रि' सां, ध सां ध प, म म रि सा, सा रि, सा म, रि प, म ध, प सां, ध सां, ध प, सां ध, प म, रि सा,

तानों को दुगण, चौगुण, आठ गुण, तिगुण, छः गुण, बारह गुण, सोलह गुण इत्यादि जैसा भी तैयारी से ले सकते हैं।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा ख्याल ताल झूमरा

स्थाई

बिसर ना जायो मेरे मीत, यह वर मांगू मैं नित।

अन्तरा

मैं मति मंद कछु नहीं जानू, नाहीं कुछ तुम संग हित।
बांह गहे की लाज तुमको, तुम संग मेरी जीत।

स्थाई

ध म रि | प ऽ म रि सा ऽ सा रि सा धं सा ऽ धं सा ऽ धं सा रि रि ऽ सा रि
बि स र | ना · जा · · · यो · · · · · मे · · · · · रे · मी ·
१ ४ +

म म रि सा ऽ ऽ सा रि सा धं सा धं सा रि | म ऽ रि म ऽ रि म रि सा रि म
· · · · · · त · · · · य · ह | · · व · · · · · र मां ·
११ | १ ४

प ध ऽ म म प रि म प ध सां ध सां ध प म प ऽ म प ध म रि सा
· · · · गू · मैं · · · · · · · · नी · · · · · · · त
+ ११

रि धं सा || प ध प, म प म, रि म रि, स रि स | प ऽ
· · · || वि · · · · · स · · र · · | ना
१

अन्तरा

म प ध | ध सां ऽ ऽ सां ऽ सां ध ऽ सां रिं ऽ सां रिं सां ध ऽ प म प ध ऽ म
मैं म ति | मं · · · द · क · · छु · · न हीं जा · · · · · · · नू
१ ४ +

रि ऽ रि प म प म प ध | सां ध ऽ सां ऽ ध सां रिं सां ध प ऽ म प म म
· · न हीं · · क छु · | तु · · · · · · · · म · · सं · ग
११ | १ ४

रि ऽ सा धं धं सा सा धं ऽ सा ऽ सा ऽ सा रि म ऽ रि म रि सा | प म प म
· · हि · त · बां · · · · ह · ग हे · · · · · की | ला · · ·
+ ११ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प ध ध प ध म म रि ऽ सां ध ऽ ध सां ध सां सां ध सां रिं रिं सां ध म रि ऽ
· · · ज तु · म को · · तु · · म सं · · ग में · · री जो · · ·
४ + ११

सा रि ध सा ||
त · · ·

राग दुर्गा ख्याल तिलवाड़ा

स्थाई

देवी भजो दुर्गा भवानी जगत जननी महिषासुर· मरदनी ॥

अन्तरा

हीम नगने दीनी भव भय कंदीनी शरणांगत चतर अभय वरदानी ॥।

प ऽ म प ध | म रि ऽ सा सा रि सा सा म रि ऽ प ऽ प ध प ध ऽ म रि
दे · वी भ | जो · · दु र · · · गा · · · · भ · वा · · नी ·
| १ ५ +

ऽ सा रि रि प ऽ म ऽ रि रि | सा रि धं सा ऽ म रि प म सां ध ऽ सां ऽ सां
ज · ग · त ज न | नीं म . हि · षा · · · · सु
१३ | १ ५

सां सां रिं ऽ ऽ सां रिं सां सां ऽ ध प ध सां रिं सां ध प म ध प म रि स ||
र · · म · र · · द ·
+ १३

अन्तरा

म म प ध सां ध ऽ सां सां सां ऽ सां | सां ऽ ऽ सां रिं मं रिं सां रिं सां सां ऽ ध
हि म न ग नं · · · · दी | नी भ व भ य कं · · · दी
१३ | १ ५

प म रि ऽ सां मं रिं ऽ ऽ सां रिं सां ध | सां ध प ध प म ऽ रि ऽ ऽ सा रि
· नी · श र णां ग · · त | · · च · · त र अ भ
+ १३ | १ ५

प ध सां
म प ध प ध ऽ म प सां ध सां ऽ ध ध सां रिं मं रिं सां, ध रिं सां ध प म,
य व र दा · · · · · · · · · ·
+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प सां ध प म रि, म ध प म रि सा ||
१/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६, १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६

राग दुर्गा ख्याल तलवाड़ा

स्थाई

दूध पिये सिध साध बालक बच्छीया।
काम रखे सिध साध खोजे खस्सिया।

अन्तरा

अस्नान करे सिध साध मेंडक मच्छियां।
नानक मन संभाल सब गल्ल अच्छियां।

स्थाई

प म प ध | प ध ऽ म रि रि म प ध म रि ऽ सा धं सा सा धं सा ऽ धं सा
० ० ‿ ‿ | ‿‿ ० — — ‿ ‿ ‿‿ ० ० ० ‿‿ — — ‿ ‿ ० ‿ ‿
दू · ध पि | ये · · · सि · ध · सा · · · · ध बा · ल ·
| १ ५ +

रि ऽ रि सा रि सा रि म रि म रि सा रि म प | म प ध ऽ म रि रि म प
० ० ० ० ० ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० | ‿‿ ० — — — ‿ ‿‿
· · क ब च्छी या · · · · · · का म र | खे · · सि ध सा · ·
१३ | १ ५

धं म रि सा ध ध सां ऽ ऽ ध सां ध सां रिं सां ध म रि सा ||
‿ ० ० —, — ‿ ‿ ० — ० ० ‿‿ ० ० ० ० ० ० ० ||
· · · ध, खो जे · ख स्सि या। · · · · · · · ||
+

अन्तरा

म प ध सां | ऽ सां ध ध सां ध सां ध सां रिं ऽ रिं सां रिं मं रिं सां ध सां
० ‿ ‿ ० | — — — — — ० ० ‿ ‿ ० — — ‿ ‿ ० — — ‿ ‿
अ स्ना · · | न क रे · सि ध सा · · ध में · · ड क म ·
| १ ५ . + १३

रिं सां ध प प म | म प प रि म रि म प ध प ध ऽ म रि सा ध ध ध सां
‿ ‿ — ० ० — | — — — ० ० ‿‿‿‿‿ ० — — — ० ० ० ०
च्छि · यां · ना · | न · क म न सं · · · भा · · · ल स ब ग
| १ ५ +

सां ध सां रिं सां ध म रि म रि सा |||
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ० |||
ल्ल अ · च्छि · या · · · · · |||
१३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा झपताल

स्थाई

सखी मोरी रूम झूम बादल गरजे बरसे ।।

अन्तरा

रैन अंधेरी काली बिजली चमके
कैसे जाऊं मैं जल भरन बादल गरजे बरसे ।।।

स्थाई

| प प रि म प ध म प ध ध ध म म म रि ऽ ऽ सा | धं धं सा प प प प
| स खी मो · · · · · · · री रू · म झू · · म | ब · द · ल ग र
| १ ३ + ८ | १ ३ +

म प ध ऽ ध प धसां रिं सां, ध सां ध, प ध प, म रि स ||
· जे · ब र · से
८

अन्तरा

मं प ध सां ध ऽ सां सां ऽ | ध ध सां सां रिं मं रिं सां ध म | प प म म
रै न अं धे · · री | का ली बी ज ली च म के · · | कै से · जा
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १ ३

प ध म प ध ऽ ध प म म रि रि सा | धं धं सा प प प प म प ध ऽ ध
· · ऊं मैं · ज ल भ र न | बा · द · ल ग र · जे · ब
+ ८ | १ ३ + ८

प ध सां रिं सां ध सां ध ध प म म रि सा ||
र · से

राग दुर्गा मध्यलय त्रिताल

स्थाई

हो रसिया मैं तो शरण तिहारी,
नहीं साधन बल वचन चातुरी,
एक भरोसो चरणे गिरधारी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

कडुई तुंबरिया मैं तो नीच भूमि की,
गुण सागर पिया तुम ही संवारी।

स्थाई

```
ध़ सा रि प | प ध सां ध प म प ध म म रि म रि सा ध़ ध़ ध़ | सा रि
० ० ० ० | – ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० – | ० ०
हो · र सि | या · मैं तो श र ण ति हा · · री न ही सा | ध न
७ | १ ३ + ७ | १
```

```
रि रि सा रि म म प ध म रि सा म प ध सां ध म | रि म प प प रिं सां
० ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ० – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० | ⌣ ⌣ ० ० ० ⌣ ⌣
ब ल व · च · चा · तु री ए · · · क भ | री · · सां च र ·
३ + ७ | १ ३
```

```
रिं सां रिं सां ध म रि सा ||
० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ०
णे गि · र धा · · रि
+
```

अन्तरा

```
म म प ध | ध सां सां ऽ ऽ ध म प ध सां ध सां रिं रिं सां रिं | मं रिं
० ० ० ० | ० ० – – ० ० ० ⌣ ⌣ – ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ | ० ०
क टु ई तुं | ब रि या · · · · · मैं · · तो नी · | · च
७ | १ ३ + ७ | १
```

```
सां ध म रि म म प म प ऽ ध रिं सां ध म | रि सा सां रिं सां रिं सां
– ० ० — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ० | – – ० ⌣ ⌣ ० ०
भू मि की · गु ण · सा · · · · ग र पि | या · तु म · हि सं
३ + ७ | १ ३
```

```
ध म रि सा |||
० ० ० ०
वा · · री
+
```

राग तिलंग

इस राग में 'रे' और 'ध' वर्ज्य है। शुद्ध और कोमल दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार इसकी जाति ओड़व कहलाती है। इसके आरोह में शुद्ध 'नी' अथवा अवरोह में कोमल 'निषाद' लगता है इसकी प्राकृति चपल श्रृंगार है और समय दिन के तीसरे प्रहर से मध्य रात्रि तक, यह बहुत चित्त आकर्षिक राग है। जन साधारण तुरन्त इससे प्रभावित होकर आनन्द लेते हैं। इसमें रिषभ वर्ज्य होते हुए भी तार 'सप्तक' में इसके प्रयोग का प्रचार सर्वत्र माना जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गन्धार और निषाद अंश स्वर है पूर्वांग तथा उत्तरांग के इन अंश स्वरों को लोग वादी संम्वादी समझने लगे हैं। इस राग में खमाज का तनिक भी अंश नहीं है तो भी न जाने इसको खमाज थाट से सबन्धित क्यों किया जाता है। इसका :—

आरोह :—नीं सा ग म प नी सां,

अवरोह :—सां, नि़, प म ग सा। अथवा निं सा ग म प नि़ प नि सां–रिं सां नि़ प म ग सा इस प्रकार से भी आरोह अवरोह करते हैं।

मुख्य अंग–नि़ प, ग म ग।

आलाप राग तिलंग

सा, सा ग म ग म प, म प ऽ ग म ग सा ग म प ऽ ग म प नि़ ऽ प म ग
~ o o ~, o o ~ o o –, o o ~, o o o o –, o o o o o –, o o o

म ग सा ग म प नि़ प ऽ म प ग म प नि ऽ सां नि़ प म ग म ग ग सा म ग
o ~, o o o o o o –, o o o o o o –, o o o o o o –, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

प म नि़ प नि़ प नि़ प म ग म ग सा ग म प ऽ ऽ नि़ प म ग म ग ग
⌣ ⌣ ⌣ ⌣, – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ –, ⌣

सा ग म प नि़ प म ग म प नि सां नि सां ऽ प नि सां रिं ऽ ऽ सां नि़ प
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

ग म ग सा ग म ग म प म प नि़ प नि सां ऽ नि सां गं सां सां रिं सां नि़
⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ o, ⌣ ⌣ o, ⌣ ⌣ o, ⌣ ⌣ o –, ⌣ ⌣ o –, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

प म ग म सां ऽ नि़ प म ग म ग ग म प नि सां नि सां ऽ प नि सां
⌣ ⌣ ⌣ ⌣, o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ – ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣

गं ऽ सां नि़ प ग म ग ग म प म म प नि़ प प नि सां नि़ प म ग म
⌣ o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

प नि सां ऽ नि सां ऽ सां गं मं पं गं मं गं ऽ सां रिं सां नि़ प म ग म प नि़
⌣ ⌣ o – ⌣ o –, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o –, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

प नि सां ऽ नि सां सां रिं नि सां प नि़ म प नि़ प ग म ग सा ग म प
⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ –, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣

नि़ प ग म ग सा
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, —,

तानें राग तिलंग

निं सा ग म, प म ग म, प म ग म, ग सा निं सा, निं सा ग म प नि़ प म ग म पं म ग सा निं सा, निं सा ग म, प म ग म, प नि़ प म ग म ग सा, निं सा ग म प नि सां नि़ प नि़ प म ग म ग सा, निं सा ग ग, सा ग म म, ग म प प, म प नि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि, प नि॒ प म ग म ग सा, ग सा नि̣ सा, म ग सा ग, प म ग म, नि॒ प म प, सां नि॒ प म ग म ग सा, ग सा म ग, प म नि॒ प, सां नि॒ प म, ग म ग सा, सा ग सा, ग म ग, म प म, प नि॒ प, नि सां नि॒, सां रिं सां, सां रिं सां नि॒ प म ग सा नि̣ सा, ग ग सा, म प ग, प प म, नि॒ नि॒ प, सां सां नि, रिं रिं सां, गं गं सां नि॒ प म ग सा नि̣ सा, सा म ग सा, ग प म ग, म नि॒ प म, प सां नि॒ प, सां रिं सां नि॒ प म ग सा, ग म प, ग म प, ग म ग सा नि̣ सा, प नि सां, प नि सां, प नि, सां रिं सां नि॒ प म ग सा, गं मं पं, गं मं पं, गं मं, गं सां नि सां, सां रिं सां नि॒ प म, प नि॒ प म ग म, नि॒ प, सां नि, रिं सां, नि॒ प म प ग म प नि॒ प म ग सा, नि̣ सा, सा ग, ग म, म प, प नि, नि सां सां गं गं मं पं मं गं सां, सां रिं सां नि॒ प म, प नि॒ प म ग सा, ग म प म ग सा प नि॒ सां नि॒ प म. सां रिं सां नि॒ प म, प नि॒ प म ग सा, ग सा सा, म ग ग, प म म, नि॒ प प, सां नि॒ प म ग म ग सा।

राग तिलंग धीमातीन ताल पंजाबी

स्थाई

साहिब को मिहि होय सो पावे।

अन्तरा

मोटा सूत दिया कोरिया घर, मिहि मिहि गुहरावे।
मोटे सूत का ताना तान- मिहि कहां से पावे।

स्थाई

ग म प नि सां प नि॒ प म प सां | नि॒ सां नि॒ प म ऽ सा ग ऽसा ग म प ऽ म
सा . . . . हि ब | को . . . . मि हि . हो . . . ये
७ | १ ३ +

ऽ प ग ऽ | म सा ग म प नि॒ ऽ ऽ प नि॒ प म म ग म प नि ऽ ऽ सां रिं
७ | . . सो . . . . पा . . . . . .
| १ ३ +

सां नि॒ प म ||
. . . . ||

अन्तरा

सा ग म प ऽ नि॒ म प सां | सां ऽ नि॒ प म ग म प नि सां ऽ प नि॒ रिं सां
मो टा . . . सू . त दि | या . . . . को . रि
७ | १ ३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि
सां नि़ प म सा ग ग म प नि़ | प नि़ सां रिं सां नि़ प म प म प म प म ऽ
या घ ॰ र मि हि मि हि गु ह | रा ॰ ॰ ॰ ॰ वे ॰ ॰ मो टे सू ॰ त का
\+ ७ | १ ३ +

ग म ऽ ग म प म ग सा | ग म प नि़ प ऽ नि़ सां नि़ प म ग म प नि सां
मा ना ॰ ता ॰ ॰ ॰ न ॰ | मि ॰ हि ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ क ॰ हां ॰ ॰
७ | १ ३

ग ऽ सां सां प नि सां रिं सां नि़ प म ||
॰ से पा ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ वे ॰
\+

राग तिलंग तीनताल

स्थाई

तू गोबिंद है और तू गोपाल है
तू ही कृष्ण है तू ही नंद लाल है ।।

अन्तरा

एक रूप तेरा जगत् में समाया
पछाव तेरा कहीं ढूंढे न पाया
मैं ढूंढूं किधर नाथ देखूं तुझे
कृपा करके अब दरशन दीजो मुझे ।।।

स्थाई

ग म प म प नि़ सां ऽ नि़ प ग | म ऽ सा ग प ऽ ग म प नि़ ऽ प नि सां
तू ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ गो ॰ ॰ बिं द | है औ ॰ र तू ॰ ॰ ॰ ॰ गो ॰ ॰
\+ ७ | १ ३ + ७

नि सां | रिं सां नि़ प म ग म ग ग म नि़ प प रिं सां ऽ नि़ | प ऽ प नि
पा ॰ | ल ॰ है ॰ ॰ ॰ तू ॰ ॰ ही कृ ॰ ॰ ष्णा ला ॰ | ला तू ॰
| १ ३ + ७ | १ ३

सां नि सां नि सां ऽ सां प नि़ | ऽ प नि़ सां नि़ प म ग सा ||
॰ नं द ला ॰ ल है ॰ | ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰
\+ ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग प म म म नि़ प प प नि | सां ऽ प नि रिं सां ऽ सां म ग ग ऽ | ऽ सां
ए · · · क रू · · प ते | रा ज ग त् में स मा · · · | ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

रिं सां सां ऽ नि़ प म म ग म प नि़ ऽ प नि सां नि़ प म | ऽ प म ग ग म
या · · · · · · प छा · · व ते · · · · रा · | क हीं · ढू
३ + ७ | १ ३

प ऽ म प नि नि़ प नि़ सां | नि रिं सां नि़ प नि़ सां नि़ प म ग म प नि़ सां
· ढू · · · त पा · · | · · · · · · · या · · · मैं · ढू · ढू
\+ ७ | १ ३ +

नि सां सां नि सां | रिं सां नि सां रिं सां नि़ रिं सां नि़ प म ग म ऽ प नि़ सां
कि ध र ना · | · थ दे · · खू · तु · झे · · कृ पा क · र
७ | १ ३ + ७

नि़ | प म ग ग म प नि सां सां नि सां गं गं सां ऽ | रिं सां रिं सां नि सां
· | के · अ ब द र श न दी · · जो · · | मु झे · · · ·
| १ ३ + ७ | १

नि प म ग म |||
· · · · ·
३

राग तिलंग द्रुत एक ताल (एका)

स्थाई

श्याम श्याम श्याम रटत, प्यारी आप श्याम भई।
पूछत फिरे अपनी सखियन, सों प्यारी कहां गई।

अन्तरा १.

वृन्दावन बीथिन यमुना तट श्री राधे श्री राधे।
सखी संग की यह छवि निरखत, हो सकल मौन साधे।

अन्तरा २.

गरुवी प्रीति कहा न करावे, क्यों न होय गति ऐसी।
कहे भगवान हित राम राय, प्रभु लग्न लगे जो जैसी।

स्थाई

सा सा ग म ग म प प नि म प | नि सां नि़ प म ग म प ऽ | प नि़ प नि
शा म शा म शा · · म र ट त | प्या · · री · आ प · · | शा · म ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि़ प म ग ग म ग म | प प नि़ म प नि नि सां नि सां गं | सां सां नि
‿ ‿ ० ० — ० ० ० ० | ० ० — ० ० ० ० — ‿ ‿ ० | — ० ‿
भ · ई पू · छ त फि रे | अ प नी स खी य न सों प्या · · | रीं क हीं
३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १ +

सां रिं सां रिं सां नि़ प नि़ प म ||
‿ — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० — ||
· · · · · · · · ग ई ||
३ + ५ ६ ||

अन्तरा

ग म प नि़ प नि सां नि सां ऽ सां सां | नि नि सां सां सां नि सां रिं सां ऽ नि़
० — ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० — ० | ० ० — ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿
वं · दा · · व न बी · · थी न | य मु ना त ट श्री · · रा · ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

प ऽ सां | नि सां नि़ प म ग म ऽ प नि़ प | नि सां नि सां गं गं सां सां सां सां
० ‿ ‿ | ‿ ० ‿ — — ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
धे · | श्री · · रा धे स खी · सं · ग | की · य ह छ वी नि र ख त
| १ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

सां सां | नि सां रिं सां रिं सां नि रिं सां नि़ प नि़ प म प ||
० ० | ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ||
र हो | स क ल मो · न सा · · · · · धे · · ||
६ | १ + ३ + ५ ६ ||

राग तिलंग तीन ताल

स्थाई

अब मोरि खेल न जातअ लैया
जब हिं मोहि देखत लरिकन संग
तब हिं खिजत बल भैया ।।

अन्तरा

मो को कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया ।
मोल लिया कछु दे वसुदेव हिं कर कर यतन बड़े ।।

स्थाई

नि़ प ग ग | म ग सा नि सा ग म प प नि़ प नि सां नि़ प म सा ग म प नि
० ० — ० | — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ —
अ ब मो रि | खे ल न जा · · · त ब · लै · · · · या · ज ब हिं · मो
७ | १ ३ + ७

प नि़ प म ग म प नि़ प नि सां नि़ प म सा ग म प प नि नि | प नि सां सां
‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ० ० ० | ० — ० ०
· · · हि दे · ख त ल · रि · क न सं · · · ग त ब | हि खि ज त
१ ३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प नि॒ प नि सां नि॒ प म ||
० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०
ब ल भैं · · · या ·
\+

अंतरा

ग म प नि नि | सां ऽ सां प नि नि सां सां प नि सां नि सां नि॒ | प म ऽ नि
० ० ० ० ० | ~ ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ — ‿ ‿ ० | ० ० ०' ‿
मो को क ह त | ता त व सु दे · व है · · दे · · | व की ते
७ | १ ३ + ७ | १

सां गं सां प नि॒ सां नि॒ प म सा ग म | प प नि॒ प नि सां प नि॒ प नि सां नि॒
‿ ० — ‿ ‿ ‿ ‿ ० — — ० ० | — ० ० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿
· · री मैं · · · या · मो ल लि | यो क छु दे · · व सु दे · · ·
३ + ७ | १ ३

प म ग म प प | नि नि सां सां प नि सां गं ऽ ||
० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ०
व हिं क र क र | य त न व ड़ै · · ·
७ | १ ३

राग तिलंग

स्थाई

छतियां लेहू लगाय सजन अब मत तरसावो रे
तुम बिन तरफत प्राण हमारे नयनन सो बहे जल की धार
बढ़ी है तनु विरह पीर सूरत दिखलावो रे ।।

अंतरा

हरिचन्द पिया गिरिवर धारि, पैयां परूं जाऊं बलिहारी
अब जिया नहीं धरत धीर, जलदी उठी धावो रे ।।।

नोट—रंजकता के लिए, नि॒ नि॒ प नि॒ सां या नि॒ रिं सां नि॒ प नि॒ प म ग म इत्यादि इस प्रकार से भी कोमल निषाद का प्रयोग करते हैं और कोमल गांधार प्रयुक्त करने से तो जोग राग ही होता है जो कि जोगी या जोगियों से न्यारा है।

स्थाई

ग म प नि सां नि॒ प म ग | म ऽ म ऽ सा ग म प ऽ ग म प नि॒ प नि॒ |
० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० — ० ० ० ०
छ ति यां · · ले · हू ल | गा य · से ज · न अ ब म त त र
\+ ७ | १ ३ + ७

प नि सां नि रिं सां नि॒ प म नि॒ नि॒ प नि॒ प नि॒ प म ग म | सां नि रिं सां
‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ — — ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० | — ० ० ०
सा · · वो · · · रे · तु म बि न त · र · फ त | प्रा ण ह मा
१ ३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि़ प धि़ नि़ प नि सां नि सां | ऽ नि रिं सां नि़ प म ग म प नि नि | रिं
० — ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० — — — ० ० | ०
· रे न य न न सो ब हे | ज ल की धा · र ब ढ़ी है त नु | वि
+ ७ | १ ३ + ७ | १

सां नि रिं सां नि़ प म गं सां सां नि रिं सां | नि सां रिं सां नि़ प नि़ सां
० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० — | ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿
र ह पी · · · र सू र त दि ख ला | वो · · · · रे · ·
३ + ७ | १ ३

नि़ प म ||
‿ ० ० ||
· · · ||

अन्तरा

ग म प नि नि सां सां | प नि सां रिं सां रिं प म ग ग ऽ प नि नि | प नि
० – ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० – ० – ० | ० ०
ह री च · द पि या | गि रि व र धा रि पैं यां प रू जा · ऊं | ब लि
+ ७ | १ ३ + ७ | १

नि सां रिं सां नि़ प म ग म प नि रिं सां | रिं सां रिं नि सां प प नि नि नि
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० — ० ० ० — ० – | ० ० ० ० — ० ० – ०
हा · · · री · · अ ब जि या न हीं | ध र त धी · र ज ल दी उ
३ + ७ | १ ३ + ९

सां नि सां गं | ऽ सां नि़ प म |||
० ‿ ‿ ० | — — ० ० – |||
ठी धा · · | वो रे · · |||
| १ ३

राग बिहाग

इसमें शुद्ध और तीव्र दोनों मध्यम, बाकी सब स्वर शुद्ध। पूर्वांग में रे निं स। उत्तरांग में इसी की प्रति क्रिया ध म् प ऐसी बनेगी, और यह 'मध्यम' तीव्र ही होना चाहिए, क्योंकि ध म् प के 'पंचम' को षड़ज मानने से यह स्वर रे निं सा बन जायेंगे और यह निषाद शुद्ध होगा। इसी प्रकार रि निं सा के षड़ज को पंचम मानने से रि निं सा के बदल में ध म् प बन जाएगा, और यह मध्यम तीव्र होगा। इस प्रकार के राग, जिन के पूर्वांग और उत्तरांग में स्वरान्तर और स्वर क्रियाएं एक जैसी हों और प्रायः अधिकतर उसके प्रयोग करने की लयकारी भी एक जैसी ही होगी। ऐसे नियम में आने वाले रागों को शुद्ध रागों की गणना में लिया जाता है गुणीजनों से यह छिपा नहीं, और नवसिख विद्यार्थी इस नियम का प्रमाण जिन रागों में भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखें, उन सब रागों को शुद्ध राग समझें, चाहे उन रागों के पूर्वांग, उत्तरांग में कोमल स्वर लगते हों, या शुद्ध स्वर लगते हों, अथवा तीव्र स्वर का प्रयोग होता हो। इन शब्दों का भावार्थ यूं समझना चाहिए, कि किसी भी राग के षड्ज, पंचम को पंचम, षड्ज मान लिया जाए और पूर्वांग उत्तरांग में वह स्वरावलियां एक जैसे ही हों, तो वह शुद्ध राग कहलाते हैं। शुद्ध रागों के और लक्षण भी हैं जिनमें किसी दूसरे राग की छाया नहीं आती। वे भी शुद्ध राग कहलाते हैं। बिहाग राग के पूर्वांग और उत्तरांग को एक दूसरे का प्रतिउत्तर समझते हुए तीव्र मध्यम इसका एक अनिवार्य स्वर बन जाता है। वास्तव में है भी ऐसा ही। जब अवरोह में 'सां नि ध प म ग रे स' ऐसी शुद्ध मध्यम की तान लेने से, यह तान यह घोषिना करने की अधिकारो नहीं हो सकती, कि इसमें मध्यम तीव्र लगता ही नहीं! ऐसे देखा जाए, तो भूपाली में 'प, सां, जब चलते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं कि इस में 'धैवत' नहीं लगता, इसी प्रकार दरबारी में 'सां, नि, प, म, रे, सा' इस प्रकार अवरोह करने का अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि दरबारी के अवरोह में वक्र रीति से 'धैवत' और 'गन्धार' का प्रयोग नहीं होता, अगर इसकी अवरोही की तान सरल पांच स्वरों की, और 'धैवत' 'गन्धार' के वक्रत्व से भी, ली जा सकती है तो बिहाग में भी अवरोह की सरल तान शुद्ध मध्यम से और तीव्र मध्यम को वक्र रीति से लगाकर दोनों मध्यम से उचित ही सिद्ध होती है। इस राग के आरोह में 'रि' और 'ध' वर्ज्य किए जाते हैं और अवरोह में भी इनका प्रयोग बहुत दीर्घ उच्चार से नहीं किया जाता। इसकी जाति औड़व, वक्र सम्पूर्ण है। 'गन्धार' 'निषाद' इसके अंश स्वर है। मेल पद्धति वाले इसको विलावल मेल से मानते हैं। परन्तु रागांग, रसांग, और हृदय स्पर्शी इसके भाव! इसको विलावल मेल से मानना उचित नहीं समझते। यह राग रात्रि के कल्याण, भूपाली आदि रागों के पश्चात। परन्तु रात के प्रथम पहर में ही गाया जाता है। इसकी स्वरावली अपने हृदय के श्रृंगार भाव प्रकट करने में शक्तिशाली होती है। तीनों ही सप्तकों में इसका बिस्तार आर्कषिक सिद्ध होता है इसका :–

आरोह :–निं, सा, ग, म, प, नि, सां।

अवरोह :–सां नि ध म् प म, ग म ग, | रि निं सां
‿ ‿ o ‿ o o — | ‿ ‿ o

मुख्य अंग :–नि ध म् प म् ग म ग,
‿ ‿ o ‿ o o –

अलाप राग विहाग

सा रि निं सा ऽ प निं सा ग ऽ सा ग ऽ रि निं सा सा रि निं सा निं सा ग म ऽ
~, ‿ ‿ o —, o o o o — ‿ o ‿‿ ‿ o, ‿ ‿ ‿ ‿ —, o ‿ ‿ ‿

ग निं सा ग म प ऽ म् ग प म ऽ ग सा ग ऽ ऽ रि निं सा सा रि निं सा निं
—, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿‿ o ‿ ‿‿ —, ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿ o, — ‿ ‿ o —,

धं म्ं पं म्ं गं मं प निं सा ऽ निं सा ग म ग ग म प ध म् प म् ग म ग
‿‿ o ‿ o o o o — —, o o o o —, ‿‿ o ‿ ‿ o ‿ o o —,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग म ग नि ध म् प म् ग म ग सां प म् ग प म ग रि निं सा ऽ ग म प नि
⌣ o ⌣ — ⌣ ⌣ o ⌣ o o —, ⌣ o ⌣ o ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ o —, o o o o

सां नि सां ऽ सां रिं नि सां नि प नि सां गं ऽ ऽ रिं नि सां नि ध म् प म् ग म
— ⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o — ⌣ ⌣ o ⌣, ⌣ ⌣ o ⌣ o o

गं ग म प ध ग म ग ग म ध म् प म् ग म ग रि निं सा ऽ निं सा ग
— ⌣ ⌣ ⌣ o o —, o o ⌣ ⌣ o ⌣ o o —, ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣

म प नि सां गं ऽ रिं नि सां ऽ नि सां गं मं गं रिं नि सां ऽ ग म प नि सां गं
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ⌣ ⌣ o —, o o o o —, ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o

ऽ रिं नि सां ऽ सां रिं नि सां नि ध म् प ग ग म ग ग म प नि सां नि
⌣ ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o; ⌣ ⌣ o ⌣ o o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o

ध म् प म् ग म ग रिं रि सा निं सा ऽ प प मं ग म ऽ सां सां नि प नि ऽ
⌣ ⌣ o ⌣ o o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

सां गं ऽ रिं नि सां नि ध म् प म् ग म ग सा प म् ग म ग रि निं सा ऽ
⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o ⌣ o o —, ⌣ o ⌣ o o — ⌣ ⌣ o —,

तानें राग बिहाग

निं सा ग म ग रि निं सा, निं सा ग म प म ग रि निं सा, ग म ग रि निं सा, प म ग रि निं सा, निं सा ग म, सा ग म प, ग म प म ग रि निं सा, निं सा ग म प म ग म, ग म प म ग रि निं सा, निं सा ग सा, सा ग म ग, ग म प म ग रि निं सा, निं सा ग म प ध म् प ग म प म ग रि निं सा, सा रि निं सा, प ध म् प, ग म प म ग रि निं सा, रि निं सा, ध म् प, ग म प प म ग रि सा, निं सा, निं सा ग म प नि ध प म् प ग म ग रि निं सा, निं सा ग म, सा ग म प, ग म प नि, ध प म् प, ग म प म ग रि निं सा, निं सा निं, ग म ग, सा ग, म प ग म ग रि निं सा, ग म ग रि निं सा; प मं ग म ग रि निं सा, निं सा ग म प नि सां नि ध प म ग रि सा निं सा, सा रि निं सा, प ध म् प, सां नि ध प म ग रि सा, निं सा ग म प नि, नि सां गं गं रिं सां, सां नि ध प म ग रि सा, ग ग रि सा नि नि ध प, रिं रिं सां नि ध प म् प, ग म प म ग रि निं सा, ग म ग रि निं सा नि सां नि ध म् प, गं मं गं रिं नि सां, नि सां नि ध म् प, ग म प म ग रि निं सा, निं सा ग म प नि नि सां गं मं गं रिं सां नि ध प म् प ग म प नि सां नि ध प म् प, ग म प नि ध प म् प, ग म प ध म् प ग म प म् ग म ग रि निं सा, निं सा निं, ग म ग, प ध म् प ग म ग रि निं सा, ग म ग रि निं सा ग म प नि सां नि ध प म् प, ग म प नि नि सां गं मं गं रिं सां नि ध प म ग रि सा ग म ग, ग म ग, ग म ग रि निं सा, नि सां नि, नि सां नि, नि सां नि ध म् प, गं मं गं, गं मं गं, गं मं पं मं गं मं गं रिं नि सां, प नि सां नि ध प म् प ग म प म् ग म ग रि निं सा।

तानों को द्विगुण, चौगुण, इसी प्रकार सोलह गुण या जितना भी तेजी से ले सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग ख्याल तिलवाड़ा

स्थाई

कैसे सुख सोवे, नींदरियां, शाम मूरत, चित चढ़ी ।

अन्तरा

सोंच सोच सदा रंग अकुलाये, या विधि गांठ परी ।

स्थाई

नि नि ऽ ध म् प म् ग ऽ म ग म प म | ग ऽ रि निं सा ऽ सा ऽ सा ऽ निं
कैं . . से . . . . सु ख | सों . . . . . . वे . नीं . द
१३ | १ ५

सां ऽ सां रिं निं सां निं धं म्ं पं ऽ ऽ सा म म ग ऽ ग ऽ म म प म | म
. . रि . . . यां . . . . . शा म . . . मू . . र . . | त
+ १३ | १

म ग ग ऽ गं ऽ म पं म ग सां सां ग म ग प ऽ ऽ म् प ऽ नि नि ऽ ध म् प
. . . . चि . त . . . . च . . ढ़ी . .
५ +

म् ग मं प ध ग मं गं ||
. . . . ||

अन्तरा

प सां सां ऽ निं सां ऽ | सां ऽ नि सां ऽ ऽ सां नि ऽ ध म् प ऽ ऽ नि सां रिं रिं
सो च सो . . . . | च . . . . . स दा . . . .
१३ | १ ५ +

सां नि सां नि निं ऽ ध म् प म् ग ऽ म प म | ग रि निं सा ऽ ऽ सा म ऽ ग
. . . रं . . ग . . . . . . अ कु | ला ये . . . . या वि . .
१३ | १ ५

म प म ग ग म प ध ग सां नि ध म् प म् ग म ग ||
धि . . . गां . . . ठ प री . . . . ||
+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग धीमा त्रिताल

स्थाई

देखो सखी कन्हैया रोके ठाडो है गैल ।
पानियां भरन कैसे जाऊं मोरी आली ।

अन्तरा

हु जल यमुना भरन घर से जाती ।
विच में मिल गये ये नंद जी के छोरा ।

स्थाई

| सा पं ऽ निं सा ऽ ग सा ग ऽ ऽ ग सा ऽ सा ऽ ग ग म प ध म् प ग
  दे · · खो · · · खी · · · क · · न्है · · या · रो · के · ठा
  १ ३ +

म ग रि निं सा सा | निं सा सा म ग म ग म प प प सां ऽ नि ऽ ध प ध म्
ढ़ो है गे · · ल | प · नि · या · भ · र न कै · · से · · जा · ऊं
७ | १ ३ +

प ऽ ग प म ऽ ग रि निं ऽ सा सा ||
· · मो री · · · आ · · · ली ||
७

अन्तरा

| प ग ऽ म प नि सां सां सां सां प ऽ नि सां गं पं मं गं रिं नि सां सां रिं सां
  हूं · · · ज ल य मु ना भ · · र न घ · · र से · · जा · ·

नि | सां गं गं मं पं मं गं गं रिं नि सां ऽ सां ऽ नि ध म् प प ऽ म् ग प म ग
ती | बी च में · मि · ल ग ये · · · ये · · नं · · द · · जू · · के
  | १ ३ + ७

रि सा रि निं सा ||
· छो · · रा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग तीन ताल

स्थाई

बालम रे मोरे मन की चित होवन देरे,
होवन देरे मीत पीयरवा ॥

अन्तरा

सदा रंग जिन जावो विदेसवा, सुख नींदरियां सोवन देरे,
सोवन देरे मीत पीयरवा ॥

स्थाई

ग म प नि सां ऽ | नि ध म॒ प ऽ म॒ प ग म ग नि ध म॒ प | ग म प ऽ म॒
o o o ‿ ‿ ‿ | — ‿ ‿ o — o o o o — — ‿ ‿ o | — — o ‿ ‿
बा · ल म · · | रे · · · मो रे म न की चि त · · | · · हो ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३

ग म ग रि निं सा पं निं निं | सा ग म प ध म॒ प ऽ म॒ ग म नि ध म॒ प ग
o o — ‿ ‿ o — o o | — o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿
व न दे रे · · हो व न | दे रे · मी · · · · · त · पि य · · र
+ ७ | १ ३ +

म ग रि निं सा ‖
‿ o ‿ ‿ ‿
· वा · · ·

अन्तरा

प ग म | प प नि नि सां सां सां सां रिं सां सां रिं नि ध म॒ प ऽ | ग म ग
o — o | o o o o — o o o o — ‿ ‿ o ‿ ‿ o ‿ | o o —
स दा रं | · ग जि न जा वो वि दे स वा, सु · ख नी · · | द रि यां
७ | १ ३ + ७ | १

ग म प नि सां रिं नि सां ऽ नि प ग म | ग रि निं सा पं निं सा ग म ग रि
o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ o — — o o | — ‿ ‿ o — o o ‿ ‿ o ‿
सो · व न दे · · · रे सो व न | दे रे · · मी त पि य · र वा।
३ + ७ | १ ३ +

निं सा ‖
‿ o
· ·

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग छाया लगत्व बिहाग (एक प्रकार) तीन ताल

स्थाई

जाके दरश को जग तरसत है, ताहि दरश दे तू मेरी प्यारी।
जाके मुरली की धुनि सुर मोहे, तता तन नेक चितै मेरी प्यारी।

अन्तरा

शिव विरंचि जाके पार न पावत, सो तेरे पग परसे री प्यारी।
सूर दास वश तीन लोक जाके, सो तेरे वश है मेरी प्यारी।

स्थाई

रि सा निं सा ग म | ग सा ग म प ध म् प ग म ग रि सा निं सा ग ग म |
जा ऽ के द र स | को ज ग ऽ त ऽ र ऽ स त है ऽ ऽ ता हि द र श |
७ | १ ३ + ७

ग प ऽ ध म् ऽ प नि नि ऽ प ध प ध ऽ म् प ग म प नि | ऽ प नि प नि सां
तू ऽ दे ऽ मे ऽ री प्या ऽ री ऽ जा के मु र ली की | ऽ धु नि सु ऽ र
१ ३ + ७ | १ ३

रिं सां रिं सां नि ध प म् प नि नि | ध प प ध प ध ऽ म् प सा ध
ऽ मो ऽ ऽ हे ऽ ऽ ना त न ने | क ऽ चि ऽ तै ऽ मे री ऽ ऽ
+ ७ | १ ३ +

प म् ग |
प्या ऽ री |

अन्तरा

सा ग ग ग म प प | ग म प नि नि नि सां रिं सां नि नि नि ग म प नि |
शि व विं रं ऽ ऽ चि | जा को पा र न पा ऽ ऽ ऽ व त सो ते रे प ग |
७ | १ ३ + ७

प नि नि सां रिं सां नि ध प प म् ग म | ग रि सा निं सा ग ग म ग ऽ ग
प र सै ऽ ऽ ऽ री प्या री सू र दा स | व ऽ श ती न लो क ऽ जा ऽ के
१ ३ + ७ | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा ग म प म् प | ग म प नि ध प ध प म् ग म ग ||
— 0 0 0 | — — 0 0 0 0
सो ते · रे व श | है · · · मे री · प्या · · · री ||
७ | १ ३ +

राग बिहाग छाया लगत्व तीन ताल

स्थाई

चल रे योगी, नंद भुवन में, यशुमति तोहि बुलावे।
लटकत मटकत शंकर आवै, मन में मोद बढ़ावै॥

अन्तरा १.

नंद भुवन में आये योगी, राई लोन कर लीनो।
वार फेर लाला के ऊपर, हाथ शीश पै दीनो॥

अन्तरा २.

व्यथा भई सब दूर वदन की, किलकी उठे नंदलाला।
खुशी भई नंदजू की रानी, दीनी मोतियन माला।

अन्तरा ३.

रहो रे योगी नंद भवन में, व्रज में वासो कीजै।
जब जब मेरो लाला रोवे, तब तब दर्शन दीजै।

अन्तरा ४.

तुम तो योगी परम मनोहर, तुम को वेद बखानै।
बूढ़ो बाबू नाम हमारो, सूरश्याक मोहिं जानै।

स्थाई

ग म प नि सां रें सां | नि ध म् प म् प ग म ग नि सां नि ध म् प ग म् |
0 0 — | — 0 0 0 0 0 — 0 0 0 0
च ल रे यो · · · | गी नं · · द भु व न में · य शु म ति · तो · · |
७ | १ ३ + ७

प ध ग म प नि ध प म् ग म प म ग सा ग ग म प प | ग म प नि सां नि
0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 — 0 0 —
· · हि · · बु ला · · · · · · वे ल ट क त म ट | क त शं क र आ
१ ३ + ७ | १ ३

ध म् प प नि नि नि सां रें सां | नि ध म् प सां नि प ध ऽ ऽ म् म ग ||
0 0 0 — | 0 — — 0 — 0 0
· · वे म न में मौ · · · | द ब · · ढ़ा · · · · वे · ||
+ ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म ग म प नि | सां नि सां रिं सां नि प नि सां नि नि नि नि | ऽ नि नि
० ० ० ० ० ० | — ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿ ० — — — — | ० ० ०
नं · द भ वु न | में आ · · · ये यो · · गी रा ई लो | · न क
७ | १ ३ + ७ | १

सां नि ध म् प प ग ग म ध ध | प ध ध प म् ग म प म ग ग नि नि सां नि
० — ‿ ‿ ० — — ‿ ‿ — ० | ० ० — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० — ‿ ‿
र ली · · · नो वा र · फे र | ला · ला के · ऊ · · · प र हा थ · शी
३ + ७ | १ ३ + ७

ध ऽ ध | प सा ग म ध ऽ प म् |||
‿ ० ० | — ‿ ‿ ‿ ‿ — — — |||
· श | पै दी · · · · नो |||
| १ ३ + |||

राग बिहाग झपताल

स्थाई

सखी आज नंद नंद, सुख कंद, मुख चद,
हंसत आनन्द सों मची होरी ॥

अन्तरा

एक संग ग्वाल ने, शाम सों बात कर,
उतब्रिज नार मिल राधा गोरी ॥

स्थाई

प नि | सां रिं नि सां ऽ सां नि नि ध म् प ऽ प प नि ऽ ध म् ग ऽ | ग ऽ
— — | ‿ ‿ ‿ ‿ — — — — ‿ ‿ ० — — ‿ ० ‿ ‿ ‿ ० ‿ | — —
स खी | आ · · · · · ज न द न · · · द सु · · ख · · · | कं ·
| १ ३ + ८ | १

ग म प ध म् प ग ऽ म प म ग ऽ रि निं सा ऽ सा | निं स प प ऽ म्
० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — — ‿ ‿ ० — — | — — — — ० ०
द मु · · · ख · · · · च · · · · · द | हं स त आ · ·
३ + ८ | १ ३

ग ऽ म ध म् प ग प म ग ऽ | ग ग म प ध | ग म ग रि निं सा
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ — — | — ० ० ० ० | ० ० — ‿ ‿ ०
नं · · · · · द · · सों | म ची · · · | · · हो · · ·
+ ८ | १ ३ | +

प ग ऽ ग म ऽ म प ऽ ‖ प नि नि | सां
‿ ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ‿, ‖ ‿ ‿ ० | —
रा · · · · · · · · ‖ स · खी | आ
८ ‖ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प ग ऽ ऽ म प नि नि सां ऽ ऽ नि सां ऽ | सां ऽ सां रिं नि सां ऽ नि ध म् प
ए · · · क सं ग ग्वा · · · ल ने · | शा · म सो · · · वा · · ·
१ ३ + ८ | १ ३ +

प सां नि | सां मं गं ऽ गं मं ऽ पं गं मं गं रिं नि सां सां रिं सां | नि ऽ ध
न क र | उ त · · · · · ब्रि ज · ना · · · र मि ल | रा . धा
८ | १ ३ + ८ | १ ३

म् प ऽ ऽ ग म ग नि सां नि गं रिं सां नि ध प म ग रि सा प नि | सां
· · · · गो · · री · · · · · · · · · · · · स खी | आ
+ ८ | १

राग खमाज

षाड़व सम्पूर्ण जाति का यह राग जिसके आरोह में ऋषभ वर्ज्य किया जाता है। छाया लगत्व या छाया लग खमाज में तीव्र मध्यम का भी प्रयोग किया है और आरोह शुद्ध निषाद से और अवरोह कोमल निषाद से लिया जाता है। ऐसा दो निषाद वाला राग है इसके पूर्वांग में 'गांधार' और उत्तरांग में 'धैवत' अंश स्वर है। कई लोग 'ग' और 'नि' को वादी संवादी मानते हैं परन्तु 'धैवत' के योग से इस राग का स्वरूप इतना अधिक खिलता है कि 'निषाद' उस बात की पूर्ति नहीं कर सकता। इस राग का रस, शृङ्गार होने से, ठुमरी अंग इसमें अधिक सुहाता है। जब मींड से इसके अनेक स्वरों का आपसी मिलान किया जाता है। तब इसकी कोमलता, मृदुता, शृङ्गार भाव, प्राकृतिक रूप से मध्य रात्रि से पूर्व तक हो गाए जाने की गवाही सी देती हैं। गम्भीर प्राकृति के रागों के पश्चात यह अधिक सुहावना लगता है। इसमें ध्रुपद, धमार भी गाए जाते हैं। ख्याल अंग को इसमें विशेष स्थान प्राप्त नहीं है। ठुमरी गायन के लिए यह राग अधिक उपयुक्त है। इसी लिए प्रायः तीन ताल के अतिरिक्त दीपचन्दी ताल विशेष कर ठुमरी अंग के लिए निश्चित है। खमाज मेल का राग माना जाता है। इस में टप्पा अंग भी खूब गाते हैं। इसका–

आरोह–सा ग म प ध नी सां।

अवरोह–सां, नी ध, प ध, ग म ग, म ग रे सा।

मुख्य अङ्ग—ग म प ध, ग म ग।

आलाप राग खमाज

सा, सा ग म प ऽ, ग म प ध ऽ, ग म ग, ग म प ध नि् ऽ, ध प

ऽ, म ध प नि् ध म ग ऽ, सा ग म प ऽ ग म रिं ग प ऽ, ग म ध प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

न्ि ध, प ध म प ध म ग, ग म प ध नि, नि सां ध सां न्ि ध प,
o — ‿ ‿ ‿ ‿ o o — ‿ ‿ ‿ ‿ ~ o o o o o o -

प न्ि ध प, ग म ग, सा, ग म ध नि सां, नि सां ऽ, ध न्ि रिं नि
‿ ‿ ‿ - o o — — o o o o ~ o o — o o ‿ ‿

सां, न्ि ध प, प ध म प ध म ग, म ग रि स, ग म ध नि सां,
o, o o — o o o o o o — o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ —

नि सां ऽ, प नि, नि सां नि सां, रिं नि सां, ध ऽ सां न्ि ध प, प
‿ o ‿ o o o o o o ‿ ‿ o o ‿ ‿ o o - ‿

ध सां रिं गं सां ऽ, ध सां रिं गं सां रिं गं सां, सां गं रिं मं गं ऽ रिं सां,
‿ ‿ ‿ o o — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o o o ‿ ‿ -

ध ऽ न्ि रिं नि सां, न्ि ध प, म प ध म प ध ' ग ऽ म सां न्ि ध प
o ‿ ‿ ‿ ‿ o o o - ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ o ‿ ‿ — - o o,

ग म ग, म ग रि सा |
o o —, o o o o |

तानें राग खमाज

निं सा ग म प ध न्ि ध प ग ग रि सा, निं सा ग म ध नि सां न्ि ध प म ग रि स निं सा ग म प ध सां न्ि ध प म ग रि स, निं सा ग म प ध सां रिं सां न्ि ध प म ग रि सा, ग म ध नि सां रिं रिं, सां रिं रिं, सां न्ि ध प म म ग रि सा निं सा, ग म प ध सां रिं गं रिं सां न्ि ध प म ग रि सा, ग म प ध न्ि ध प ध सां न्ि ध प म ग रि सा, ग म ध नि सां रिं नि सां ध न्ि प ध सां न्ि ध प म ग रि सा,

अपनी इच्छा से तानों को जितने गुणा भी तेज ले सकते हैं।

राग खमाज तीनताल

स्थाई

माधव मो समान जग माही,
सब विधि हीन, मलीन दीन, अति लीन विषय कोऊ नाहीं ।।

अन्तरा

तुम सम हेतु रहित कृपालु
आरत हित ईशाहि त्यागी मैं दुःख शोक विकल
कृपालु के हि कारण दया न लागी ।।।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

ग म ध नि़ ध प | म प ग सा ग रि ग ध म़ प प ग म प ध प ध ऽ |
० ० ० ‿ ‿ — | ‿ ‿ – ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० – ० ० ० ० ‿ ‿ ० |
मा · ध व · मो | स · मा न ज ग · मा · · ही स ब वि धि ही · · |
७ | १ ३ + ७ |

ऽ ऽ ध ग प ध नि़ ऽ ऽ नि़ ध सां नि़ ध प ध प ऽ प | ग म प ध नि ऽ
– ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ – ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० | ० ० ‿ ‿ ० –
न म · ली · न दी · · · · · · · · न | अ ति लो · ·
१ ३ + ७ | १ ३

ऽ नि प नि नि नि सां नि सां | नि सां नि सां रिं सां नि़ ध प म ग |||
० ० ० ० ० ० ० – ० | – ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० |||
न वि ष य को ऊ ना · | · · · · · · ही · · · · |||
+ ७ | १ ३ + |||

अन्तरा

प प ग म प | प नि नि प ध नि सां नि सां नि ध प नि नि नि नि नि |
० ० ० ० – | ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० – ० ० ० ० |
तु म स· म हे | तु र हि त · · · कृ पा · · लु आ र त हि त |
७ | १ ३ + ७ |

नि नि नि प ध नि प ध ऽ नि प ऽ ग म प ध ध | ध ग प ध नि़ ध ऽ
– ० ० ३ ३ ३ ‿ ‿ ‿ ० ० – ० ० ० ० – | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०
ई श हि त्या · · · · गी · मैं · दुः ख शो | क वि · क . ल
१ ३ + ७ | १ ३

ग प प ध नि ऽ सां नि ध प म़ प प | प म़ प ध सां नि़ ध प ध प म ग ||
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० ० – ० ० | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० – ० ० ||
कृ , · पा : लु · के हि का र ण | द या · · · · · · · · ली गी · ||
+ ७ | १ ३ + ||

राग खमाज तीन ताल

है नीको मेरो देवता,
कौशल पति राम सुभग सरोसह लोचन सुठि सुंदर श्याम।

अन्तरा १. सिय समेत सोहत सदा छबि,
अमित अनंग भुज विशाल, सर धनु धरे। कटि चारु निशंग।

अन्तरा २. बलि पूजा चाहत नहीं। चाहत एक प्रीति
सुमरित ही मानै भलौ। पावन सब रीति।

अन्तरा ३. देहि सकल सुख दुख दहै। आरत जन बन्धु
गुन गहि अघ औगुन हरै। अस करुणा सिन्धु।

अन्तरा ४. देश काल पूरन। सदा वद वेद पुरान
सबको प्रभु सब में बसै। सब की गीत जान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. को करि कौटिक कामना। पुजै बहु देव
तुलसी दास तेहि से इए। शंकर जेहि सेव।

सा ग म प ध नि॒ ध म प ध | सं नि नि॒ ध प म ग ग म ध नि॒ ध ध प
– ० – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० | – ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ⌣
है नी को मे · रो · दे · व | ता · · · · · · कौ · श ल प ति रा
\+ ७ | १ ३ + ७

ध नि सं नि सं | नि ऽ सं रिं सं नि॒ ध प ग म ध ध ध ऽ नि॒ ध | ध सं नि॒
⌣ ⌣ ⌣ ० ० | ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० — — ० ० | ⌣ ⌣
· · · · · | · · · · · · म · · सु भ ग स रो · रु ह | लो · ·
| १ ३ + ७ | १

ध प ध प प नि नि नि नि प नि ऽ ऽ सं | रिं सं नि ध प म ग
⌣ ० ० ० ० ० – ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ | ⌣ ⌣ ० ० ० ० ०
· · · च न सु ढि सु द र श्या · · · | · · म · · · ·
३ + ७ | १ ३ ||

म ग म प ऽ ऽ म ग प प | नि सं नि ध प ध प प नि नि नि नि रिं सं
० ० ० ० – ० ⌣ ⌣ ० ० | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
सि य स मे · · · · · त | सो · · · · · ह त स दा छ बि अ मि
\+ ७ | १ ३ +

नि नि प ध | नि सं ऽ नि ध प ध प प ध सां रिं ऽ ऽ रिं सं रिं | ग रिं सं रिं
० ० ⌣ ⌣ | ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ – ० ० ० ० – ० ० ० ० | ० ⌣ ⌣ ०
त श्र नं · | · · · · · · · ग भु ज वि शा · · ल स र | धु न · ध
| १ ३ + ७ | १

सं ऽ ग म ग म ग म सं रिं सं नि॒ ध | प गं नि नि॒ ध प म ग
० – ० ० – ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० | ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
रे · क टि चा · · · · · · · · | रु नि श · ग · · ·
३ + ७ | १ ३ |||

राग खमाज तीनताल

स्थाई

आली री तू क्यों रही मुरझाय,
पनघट गई यमुना जल भरने, आई है रोग लगाय ।।

अन्तरा

केशो कारो चन्द्र उजारो, टोना डार गयो
करी उपाय अब सखी मेरो, ब्रज निधि बैध मंगाओ ।।।

स्थाई

ध प म ग प | ध ऽ ग प प ध सां नि॒ ध ग प म ग ग म प नि नि नि |
० ० ⌣ ⌣ — | — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० |
आ ली री · तू | क्यों र · ही · · मु र झा · य · प न घ ट ग ई |
७ | १ ३ + ७ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ नि सां सां नि सां रें ध सां नि॒ ध प ग म प ध | प ध नि॒ नि॒ नि॒ ध नि॒
o o o o ‿ ‿ o o o ‿ ‿ o o o — — | ‿ ‿ o o o ‿ ‿
य मु ना ज · ल भ र ने · · आ · ई है | रो · · ग ल गा ·
१ ३ + ७ | १ ३

सां नि सां रें सां नि॒ ध सां नि॒ ध प म ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
· · · · · · · · य · · ·
+

अन्तरा

म ग म प | नि ऽ नि नि नि प ध नि सां नि सां नि नि नि | नि नि प ध
o o o – | — o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ o — o – – | o o ‿ ‿
के शो · का | रो चं द्र उ जा · · · · रो टो ना डा | र ग यो ·
७ | १ ३ + ७ | १

सां रें रें सां नि सां नि॒ ध प प ध ऽ सां सां रें गं | सां सां नि नि सां नि सां
‿ ‿ ‿ ‿ — o o o o ‿ ‿ o o ‿ ‿ o | o o — o o ‿ ‿
· · · · · · · · · क रो उ पा · · | य स खी अ ब में ·
३ + ७ | १ ३

रें सां नि॒ ध प ग म ध ध | नि॒ नि॒ नि॒ ग प ध सां रें सां नि॒ ध सां
‿ ‿ o o o o o o — | — o o ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿
· · रो · · व्र ज नि धि | बै द म गा · · · · · · · ·
+ ७ | १ ३ +

नि॒ ध प म |||
‿ ‿ ‿ ‿
यो · · ·

राग खमाज ख्यालगत्व ठुमरी पंजाबी ठेका तीन ताल

(इसमें दो मध्यम) (और दोनों निषाद)

स्थाई

सुरतिया रे लाग रही हरि सों,
आवन कह गये अजहू न आये,
बीत गैयां बरसों ।।

अन्तरा

यह तो जोबन चार दिहाड़े, आज कल्ह परसों,
अंबुआ मौले केसु फले, और फूली है सरसों ।।।

स्थाई

सा ग ग म प ध नि सां ऽ नि ध प | सां नि ऽ नि नि प ध नि सां ऽ ध सां
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | × ~ — o o ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿
सु र ति · या · · · · · · · | रे ला ग र ही · · · · ह ·
| १ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिं सां नि़ ध प म ग सा ग म ध प | म़ प म ग प ऽ ग प प ध सां नि़
⌣ ⌣ o o o o o o o o o o | o o ⌣ ⌣ o ~ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
रि · मो · · · · · आ · व न | क हु ग · ये · अ · ज · हू ·
१३ | १ ५

ध प म़ ग म ध नि नि नि सां रिं सां नि ध प म ग सा ||
o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ~ — o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o o
न आ · · · ये बी त गे · · · या · ब र सों ·
+ १३

अन्तरा

प नि ध ऽ | ऽ प ध नि सां नि ध प नि ध प म ग प प सां सां नि सां ऽ
⌣ ⌣ o — | ~ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o — o o ~
य हु तो · | · जौ · · · · · · · · · · · व न चा र दि हा
१ ५ +

नि ध ध सां नि | ऽ नि़ नि नि ध नि रिं सां ऽ ध सां रिं गं नि सां नि सां रिं सां
⌣ ⌣ o ~ ~ | o o o o ⌣ ⌣ o ~ - o o o o — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· · · डे आ | ज क ल्ह प · र सो अं बु आ · मो ले के · · ·
१३ | १ ५ +

नि नि सां नि ध ध प ग प ध सां सां नि़ ध | नि़ ध प ध प ग प म म प म
o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o - ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o | o o o o o o - - ⌣ ⌣ ⌣
सु फु · · · · · ले ओ · · · · · · | · · · · · · र फू ली · ·
१३ | १ ५

ग ग निं सा ग म प ध सां रिं गं सां नि़ ध प म ग ||
⌣ - — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o o o o o
· · है · स · र · सो · · · · · · · ·
+ १३

राग खमाज जी मांड दादरा

स्थाई

वसि वारे तु मेरी गलि आजा रे
तेरे बिन देखे कल न परत है
टुक मुखड़ा दिखला जा रे ॥

अन्तरा

रैन दिन मोहि ध्यान तिहारो
बंसी की टेक सुना जा रे ॥१॥

अन्तरा २.

चरण दास सुखदेव पियारे, मेरो ही माखन खाजा रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

ग सा ग ग | ग म ग म ध प | नि नि प ध नि सां ऽ | नि ध प नि
~ — ~ — | — — o o — ~ | — — o o o o ~ | o o o o
बं सि वा रे | तु · मे · · री | ग लि आ · · · | जा · · ·
१ + | १ + | १ + | १

ध नि ध प ग | नि नि प ध प म् | ग म ग प म ग रि सा | ग म प
o o o o ~ | — — — — — | — — o o o o — — | o o o
· · · · रे | ते रे बि न दे खे | क ल ना · प · र त | है · ·
+ | १ + | १ + | १

ध नि सां नि ध प ध ऽ | सां सां नि सां ध | ग प ग प ध नि सां | नि
o o o o o o o — | — — — — ~ | — — o o o o ~ | ~
· · · · · · · | टु क मु ख ड़ा | दि ख ला · · · · | जा
+ | १ + | १ + | १

प नि ध प ग ||
o o o o ~
· · · · रे
+

नोट—खमाज राग, ठुमरी, अंग के लिए अधिक उपयुक्त है और ठुमरी अंग में, दूसरे राग का मिश्रण अथवा छाया आ ही जाती है। इसी कारण इस की चोजों में, और रागों की छाया लग रही है।

अन्तरा

सां सां नि सां | ध प ध ऽ सां सां | ध सां रिं ऽ | सां रिं गं रिं ऽ सां | रिं सां
~ — — ~ | ~ ~ o ~ — | — ~ — ~ | o o — — — ~ | ~ —
रै न दि न | मो हि · · ध्या न | ति हा रो | ब · · सी की | टै र
१ + | १ + | १ + | १ + | १

सां नि | प ध नि सां नि ध प म ||
— ~ | o o o o — — — —
सु ना | जा · · · रे · · ·
+ | १ +

राग खमाज (काम्बोझी भी कहते है) ठुमरी ताल पंजाबी तीनताल

स्थाई

सगरा बिगारा जोबनुवा मेरा ॥

अन्तरा

जावो जी बालम तुम हम से न बोलो, मेरा सगरा बिगारा।

स्थाई

सा ग ग म प प म म ग सा सा रि ग रि ग | प ऽ म ग प ग म प ध नि
‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o ‿ ‿ ‿ ‿ | ~ o ‿ · · ‿ ‿ ‿ ‿ o
स ग रा · · · · · · बि गा · · · | रा · · · जी · · ·
१३ | १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ प ध प ऽ ग म प ध नि ऽ ध प म ध प म प ग सा ||
० ० ० ०
· ब नु वा मे · · · · · · · · · · · · रा ·
+

अन्तरा

ग म प नि नि नि सां ऽ ऽ नि ध | सां नि नि नि प ध नि सां ऽ ऽ नि सां नि
० ० ० ०
जा · वो जी बा ल म तु · | म ह म से ना · · · बो · ·
१३ | १ ५

ध प ध प ग म प ध नि ऽ प ध नि ध प म प ध सां नि ध प ध
० ०
· · · लो मे · रा · · स · ग · रा · · · · · · ·
+ १३

ध म प ग सा सा रि ग रि ग || प
० ० ० –
· · · · बि गा · · · · || रा
१

राग खमाज होरी-दीपचन्दी (चंचल ताल)

स्थाई

पिया प्यारी आज, होरी खेलत, यमुना तीर,
हम हंस हंस, बदन, अरग जा डारत,
मारत मूठि अबीर ।।

अन्तरा १.

चलत कुम कुमा रंग पिचकारी, भीज रहे तन चीर,
जनु धन दामिनी, रूप धरे है,
गोरे शाम शरीर ।

अन्तरा २.

बजत अनेक भांति मृदु बाजे, होय रही अति भीर ।
नारायण या सुख निरखे बिन, कौन धरै मनधीर ।।

स्थाई

ग म प ध नि सां ऽ नि प | ध सां ऽ सां ध सां रिं सां नि ध प म ध ध म
० ० | ० ० ० ० ०
पि या प्या · · · री · | आ · ज हो · · · री · · खे ल त य
+ ६ | १ १२ + ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध सां रें सां सां | ऽ ऽ नि॒ ध प म ग सा नि॒ ध ग म प प प नि | नि नि
० ‿ ‿ ‿ ‿ | — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० | ० ०
मु ना · · · | ती · · · · र हं स हं स ब द न अ | र ग
१ १३ + ६ | १

प ध नि सां नि ध प नि नि नि सां नि रें | सां नि॒ ध प म ग सा ||
है है है ० ० ० ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ||
जा · · · डा र त मा र त म्र ठ अ | बी · · · · · र ||
१३ + ६ | १ १३ ||

अन्तरा

प नि ध प म ग प नि नि नि रें नि रें नि॒ ध प ध ऽ नि नि नि सां | नि
‿ ‿ ० ० ० ० — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ~ | ०
च ल त कु म कु मा रं ग पि च का · · · री · भी ज र हे | त
+ ६ १ १३ + ६ | १

सां नि॒ ध म प ग म प ध नि नि॒ ध प | नि सां रें ध सां नि॒ ध प प ध सां
० ० ० — ० ‿ ‿ ० ० — ० ‿ ‿ | — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿
न चो · · र ज नु ध न दा मि नि ऽ | रू प ध रे · है · · गो · रे
१३ + ६ | १ १३ +

रें गं सां नि॒ ध रें | ऽ ऽ सां नि॒ ध प म ग सा ||
‿ ० ० ० ० ० | — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ||
· शा म श री · | र · · · · · · ||
६ | १३ ||

राग खमाज, ठुमरी, ताल पंजाबी तीन ताल

स्थाई

सांवेरे क्यों मोसो रिस मानी
तेरे काज घर बार त्याग के
गलियन फिरत दीवानी ॥

अन्तरा

लोक लाज कुल रीति प्रीत जग,
इन हूं को दियो पानी,
नारायण अब तो हँस चितवो,
एरे, रूप गुमानी ॥।

स्थाई

ग म प ध नि ऽ प नि ध प ग सा सा रि ग | प ऽ म ग प ग प ध ऽ ध ग
० ० ‿ ‿ ० — ‿ ‿ ‿ ‿ — — ० ० — | ~ ० ‿ ‿ — ० ० — ० ० ०
सां · व · रे क्यों · · · मो सो रि स मा | नी · · , ते रे का ज घ
+ १३ | १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध ऽ ध प ध नि ध प ध ऽ प नि नि | नि नि सां सां प नि ऽ सां रिं सां
० – ० ०‿ ‿ ० ०‿ ‿ – – – – | – – – – ० – ‿, ‿ ‿
र बा र त्या · · ग के · ग लि य | न फि र त दि वा · · ·
+ १३ | १ ५

नि॒ ध प ||
० ० ०
नी · ·

अन्तरा

ग, ग म प प नि नि नि नि सां नि ध सां सां | प नि नि नि नि नि नि प ध
– ‿ ‿ – ० ० ० – ० – ‿ ‿ ० ० | ० ० ० ० – – ० ‿ ‿
लो क · ला ज कु ल री त श्री · · · त | ज ग इ न हूं का दि यो ·
+ १३ | १ ५

नि सां ऽ नि ध प ध प ध. ध ध ध प नि नि रिं सां ध ध प | ग म पं नि
‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ – – – ० ० ० ० – ० ० ० ० – | ० ० – –
· · पा · · · नी ना रा य ण अ ब तो ह स चि त वो | ए · रे ...
+ १३ | १

नि नि प ध नि सां ऽ ध सां नि॒ ध प |||
० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०, ० ० ० ०
प गु मा · · · · · · नी · ·
५

राग मिश्र खमाज तीनताल पंजाबी, तीनताल

स्थाई

पिया बिन नागिन कालरी रात
कबहूं यामिन होत जुन्हैया
डस उलटी है जात ॥

अन्तरा

यंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत, आयु सिरानी जात
सूर श्याम बिन विकल विरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥॥

स्थाई

सा ग म प प प ग प म म म ग ग सा रि ग ऽ | रि ग ऽ सा सा सा सा
० ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ | ‿ ० ‿ ० ० ‿ ‿
पि या · · बि न ना · गि न का · · ल ड़ी · | रा · · · त क ब
३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग ग रि सा रि ऽ म ऽ प प रि म प ध सां नि ध प प ध प | ऽ ऽ म ग
हू · · · · · या · मि न हो · · · · · · · त जु न्है | · · · ·
+ ७ | १

प प ग म प ध प ध ऽ प ध ऽ ग म प ध नि सां ऽ सा सां | ऽ नि नि नि
· या ड स उ ल टी · · है · · जा · · · · · · · · | · · · त
३ + ७ | १

सां नि ध प ||
· · · ·

अन्तरा

ग म ध नि सां नि ध प ग प म म म ग ग सा रि ग ऽ | रि ग ऽ सा सा ||
पि या · · · बि न · ना · गि न का · · ल री · | रा · · · त
३ + ७ | १

म ग म प ध प ध नि ऽ नि नि सां ऽ सां नि सां | ऽ नि सां नि ध प ध प
य त्र · न · · फु · र त मं त्र न हिं | ला · · · · ग त
३ + ७ | १

ग म ध ध ध प ध सां रिं सां सां नि ऽ नि सां नि ध प ग म प ध नि |
आ · · यु सि रा · · · · · · नी · · · जा · · · ·
३ + ७

ऽ ध प म ग ध प म म म प म ग ग ग सा सा सा ग म ग | म धं प ग
· · · · · · त सू र शा · · · · म बिं न वि क ल वि | र ह नी मु
१ ३ + ७ | १ ३

म प ध प ध प ध ऽ ग म प ध नि सां ऽ सा सां | ऽ नि नि सां नि ध प ||
र मु र ल ह री · खा · · · · · · · · | · · त, · · · ·
+ ७ | १

ठुमरी राग खमाज झपताल

स्थाई—लाग गई तब लाज कहां री
जो दृग लागें नंद नदन सों
औरन सों फिर काज कहा री ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा–भर भर पियें प्रेम रस प्याले
ओछे अमल को स्वाद कहां री
बृज निधि बृज रस चाखो चाहै
या सुख आगे राज कहां री ॥।

स्थाई

ग म प ध | नि प ऽ ग म ध ध ध ग ऽ म सां नि॒ ध प म म म | म प म
० ० ० ० | ० — ० ० ० – ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० – ० ० | ‿ ‿
ला॰ ग ग | ई · · त ब ला ज क हां · · · री · · जे दृ ग | ला · .
| १ ३ + ८ | १

ग ग सा ऽ ग म ग म प प प ध म प ऽ ग म प ध नि | ध नि ऽ प प नि नि
‿ ० ० ० — ० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ० — ० ० ० ‿ ‿ | ‿ ० ‿ ० ० — ०
· · गे · नं द नं · · द न सों · · · औ · र न · | सों · · फि र का ज
३ + ८ | १ ३

नि प ध नि सां ऽ ध सां नि॒ ध प ||
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ||
क हा · · · · · री · · ||
+ ८ ||

अन्तरा

ग म प ध | नि नि सां ऽ सां सां सां नि सां नि सां रें सां नि॒ ध प ग म प ध |
० ० ० ० | ० — ० ० ० ० — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० |
भ र भ र | पि ये प्रे · म र स प्या · · · · · · ले · · ओ · छे · |
| १ ३ + ८ |

नि नि नि ध नि ऽ ग प प प ग प ध नि ऽ ध प म ग प म म म म | ग ग
० ० ० ‿ ‿ — ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० | ० ०
अ म ल को · · स्वा · द क हां · · · · री · · · · बृ ज नि धि | बृ ज
१ ३ + ८ | १

सा सा ग ग सा ग म प ऽ म प ऽ ध म प ग म प ऽ ध | नि ध ऽ ध प ध
० ० — — ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ० ‿ ‿ — ० ० ० ‿ ‿ | — — ० ० ० ‿
र स चा खो चा · · · · · है · · या · · सु ख आ · · | गे रा · ज क हां
३ + ८ | १ ३

सां रें गं ऽ सां नि सां रें सां नि॒ ध प |||
‿ ‿ ० ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० |||
· · · · री · · · · · · · |||
+ ८ |||

—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी

इसके अपने स्वर 'गन्धार', 'निषाद' कोमल हैं बाकी स्वर शुद्ध हैं सम्पूर्ण जाति का यह राग जिसके पूर्वांग उत्तरांग के स्वर एक जैसे ही हैं इस कारण यह भी शुद्ध रागों में समझा जाता है परन्तु इस में शुद्ध गांधार तथा शुद्ध निषाद का प्रयोग भी प्रचार में अधिक देखा जाता है। जब जब धैवत कोमल प्रयोग में लेते हैं तब सिंध काफ़ी (संधि काफ़ी) कहते है शायद सिंध प्रान्त में इस का जन्म हुआ हो।

सैंधवी राग का धैवत शुद्ध है जन साधारण को तो तुरन्त मोह लेने वाला यह राग जिसमें फागुन मास और होरी (होली) के गीत गाये जाते हैं वह भी अधिक तर दीपचन्दी (चंचल) ताल में ताकि अधिक गंभीर नहीं रह सके, यही इसकी प्रकृति है। यह राग होरी के दिनों (फागुण) में सर्वकाल में गाया जाता है इस में भक्ति मय प्रेम, जो कि श्रृंगार भावों से ओत प्रोत होता है, प्रगटता है। परन्तु धमार ताल में इस के गीत कुछ गंभीरता धारण करने को उत्सक रहते हैं। रागों के रस, प्रकृतियां, स्वर के साथ २ तालों तथा लय पर भी अविलंवित रहते हैं गांधार निषाद अंश स्वर हैं रि, प, न्यास हैं जिन को वादी संवादी मानने की भी प्रथा है। मेल पद्धति में इसे काफ़ी मेल से ही मानते हैं।

आरोह : सा रि ग़ म प ध नि़ सां

अवरोह :- सां नि़ ध व म ग़ रि सा

मुख्यांग :—सा रि रि ग़ ऽ म ऽ म प

आलाप राग काफी और मिश्र काफी

सा रि ग़ रि रि ग़ म प ऽ म प ध प ग़ रि ऽ रि ग़ म ऽ ग़ रि सा ऽ
~, o o ~, o o o o –, ‿ ‿ ‿ ‿ o o –, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o –

नि़ धं नि़ सा रि ग़ रि ऽ ग सा रि ग़ म प ऽ सा रि रि ग़ ग़ रि ग़ म प
o o —, o o o o o o o —, o o o o —, o o ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿

म प ऽ रि म प ध नि़ ध प म प ध प म ग़ रि रि ग़ म ऽ ग़ रि
‿ o ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿

सा ऽ नि़ धं सा ऽ सा नि़ सा रि ग़ ऽ म प म प ध नि़ ध प ऽ म प ध
o — ‿ ‿ o —, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ —, o ‿ ‿ ‿ ‿ o – ‿ ‿ ‿

नि़ सां नि़ ध सां नि़ सां रिं सां नि़ ध प ऽ म प ध प म ग़ रि ऽ रि
‿ —, o o —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o —, ‿

म प ध नि़ ध प ग़ रि रि ग़ म ऽ ग़ रि सा ऽ रि म प ध सां नि़ प
‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ o o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o —, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿

ग़ रि ऽ रि ग़ म प ऽ रि म नि़ प ग़ रि ग़ ग़ रि सा रि प म ग़ ऽ
o o — ‿ ‿ ‿ ‿ – ‿ ‿ ‿ ‿ o o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ o

रि ग़ रि निं सा सा रि ग़ म प ध नि़ सां ऽ नि़ ध प म प ऽ म प ध नि़
—, o o o o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿

सां नि़ ध प म ग़ ऽ रि रि म प ध सां नि़ ध प ध म प नि सां प ध
‿ ‿ ‿ o, ‿ o ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, —, ‿ ‿

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां रिं गं् रिं ऽ सां नि् ध प म प ग् रि ऽ म रि प म ध प नि् ध प

म ग म प म ग् ऽ रि रि म प ध म ग् ऽ रि रि ग् सा रि प नि्

सा रि ग् म प म प ऽ रि म प ध नि् ध नि् प ध सां प ध सां रिं गं् रिं

ऽ ऽ सां नि् ध सां ध नि् प ध म प ग म नि् ऽ प म ग् ऽ रि रि ग्

म प ऽ म ग् रि ऽ ग् सा

तानें राग काफी

नि् सा रि ग् रि सा, नि् सा रि ग्, सा रि ग् म प प म ग् रि सा नि् सा, नि् सा रि ग् म प ध नि ध प म ग् रि सा, रि ग् म प ध नि् सां नि् ध प म ग् रि सा नि् सा, नि् सा रि ग् रि, सा रि ग् म प ध नि् ध प म ग् रि सा नि सा, सा रि ग् म, रि ग् म प, ग् म प ध, म प ध नि्, प ध नि सां रिं रिं सां नि् ध प म ग् रि सा, सा रि ग म प, रि ग् म प ध, ग म प ध नि्, म प ध नि् सां, प ध नि् सां रिं गं् रिं सां नि् ध प म ग् रि नि सा, नि् सा नि्, सा रि सा, रि ग् रि, ग् म ग्, म प म, प ध प, ध नि् ध, नि् सां नि् ध प, म ग् रि सा नि् सा, सा रि ग् रि, रि ग् म ग्, ग् म प म, म प ध प, प ध नि् ध, ध नि् सां नि्, नि् सां रिं सां, सां रिं गं् रिं सां नि् ध प म ग् रि सा, रि ग् म प ध नि् सां रिं गं् रिं, मं गं् रिं सां, नि सां रिं रिं सां नि् ध प म ग् रि सा नि् सा रि ग् म प, मं गं् रिं सां, गं् रिं सां नि, रिं सां नि् ध, सां नि् ध प, नि् ध प म, सां नि् ध प, म ग् रि सा,

राग काफी तीन ताल

स्थाई—हरि के संग मैं क्यों न गई हरि संग जाती कंचन बन आती
अब माटी के मोल भई ।।

अन्तरा—१. बरजो न कोई इन दूतिन कों, जाती बेर
मोहे रोक लई, हरि बिछुरन इक मरन हमारा,
नई दासी संग प्रीति भई ।।।
२. छल गयो काल बहुरि नहिं आवे
अपने हाथ से मैं बिदा दई
'सूर दास' प्रभू तुम्हरे दरश को
पिछली प्रीति अब नई भई ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

रि म प ध नि ध प म प म ग ऽ रि रि ग म ग रि सा नि़ | सा नि सा रि
0 0 0 | — 0 0 –
ह रि के · · · · · स · ग · मैं क्यों · · · ना ग · | ई ह रि सं
३ . + ७ | १ ३

ग़ म ध प ऽ रि म प ध | ध ध म प ध नि ध म ध ध नि सां नि ध प म
0 0 0 0 – 0 0 0 0 0 | 0 0 — 0 0 0 0 0
ग जा · ती कं · च न | ब न आ · · · ती अ ब मा · · · टि के ·
+ ७ | १ ३ + ७

ध प म | ग रि ||
0 0 0 | 0 0 ||
मो ल भ | ई · ||
| १ ||

अन्तरा

म प ध ध प ध नि ध नि़ सां नि रिं | सां सां सां नि सां रिं सां नि नि ध नि
0 0 —.0 — 0 0 — 0 0 | — — 0 0 0 0 0
ब र जो न को · ई इ न दू ति न | को जा ति बे · · र मो हे रो ·
३ + ७ | १ ३ +

सां नि ध प ध प | रि म प ध सां रिं सां सां नि नि ध प म रि रि म प
0 – | 0 0 0 0 0 0 0 0 0
· · क · ल ई | ह रि बि छु र न · इ क म · र · न ह मा ·
७ | १ ३ + ७

ध ध | म ध ऽ ध नि सां नि सां नि ध प ध प म ध प म ग | रि सा ||
0 — | 0 0 – 0 0 0 0 – 0 0 | 0 0 ||
· रा | न ई दा · · सी · · स ग प्री ति · भ · ई · | · · ||
| १ ३ + ७ | १ ||

अन्तरा २.

म प ध ध नि ऽ नि ध नि सां नि रिं सां | ऽ सां सां सां सां नि सां रिं सां नि
0 0 0 – 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 0
छ ल ग यो का · ल ब हु रि न हि आ | वे अ प ने हा · · थ से
३ + ७ | १ ३ +

नि नि ध नि सां नि ध प | रि म प ध ध सां ऽ रिं सां सां नि सां नि ध प
– 0 0 0 | 0 0 0 0 0 0
मैं बि दा · · · द ई | सू · र · दा · स · प्र भु तु · म्ह रे
७ | १ ३ +

म रि म प ध | म ध ध ध नि सां नि सां ध प म प म ध प म ग | रि सा ||
0 0 0 — | 0 0 — 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 ||
· द र श को | पि छ ली प्री · · ती · अ ब न ई · · भ ई · | · · ||
७ | १ ३ + ७ | १ ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी होरी ताल दीपचन्दी

स्थाई—मत मारो पिचकारी श्याम अब देऊंगी मैं गारी
भीजेगी लाल नई मेरी अंगीया चुंदर बिगरैंगी न्यारी ॥

अन्तरा—१. देखेगी सास रिसायगी, मोपै, संग कीं ऐसी है दारी
हंसेगी दै दै तारी घाट बाट सब सों अटकत हो लै लै रारि उधारी ॥

अन्तरा—२. कहां लो तेरी कुचाल, कहूं मैं, एक एक ब्रजनारी।
जानत करतूत तिहारी, मूठ अबीर न डारो दृगन में दूखेगी आंख हमारी

अन्तरा—३. नारायण न बहुत इतरावो, छांडो डगर गिरिधारी।
नए भए तुमही खिलारी ॥

स्थाई

ध ध प म प ग् रि म म | प ऽ प ऽ ऽ ध ध नि् नि् नि् नि् | म प ध
‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o | – o o – o – o o o o o | ‿ ‿ ‿
म त मा · · रो · पि च | का री श्या म अ ब दे ऊं | गी · ·
\+ ६ | १ १३ + ६ | १

सां नि् ध प म ग् रि म प ध सां | नि् ध नि् सां ऽ नि् सां नि् रिं सां | नि्
‿ o o ‿ ‿ o o – ‿ ‿ ~ | – o o o o — o o — | —
· मैं · गा · री · भी जे · गी | ला ल न ई मे री अ गि या | चुं
१३ + ६ | १ १३ + ६ | १

नि् नि् नि् नि् नि् सां नि् ध प ध प | रि म प ध नि् ध प म ग् ||
o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ o o ~ | ‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o ||
द र बि ग रे · · · · · गी | न्या · · · · · री · · ||
१३ + ६ | १ १३ ||

अन्तरा

रिं रिं रिं गं् रिं | गं् सां रिं नि् रिं सां प ध नि् सां | नि् सां रिं गं् रिं सां ऽ
o – – o o | o o o o o — o – — — | ‿ ‿ ‿ ‿ o o –
दे खे गी सा · | स रि सा · य गी भी · पै · | सं · · · ग की
\+ ६ | १ १३ + ६ | १ १३

ऽ नि् नि् नि् सां नि् ध ध प | रि म प ध म ध प ऽ ऽ म प ध सां नि् |
o o — ‿ ‿ ‿ ‿ o o | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — — o o ‿ ‿ o ~ |
ऐ सी है · · · · · | दा · · · · · री ह से · · गी |
\+ ६ | १ १३ + ६ |

नि् रिं सां रिं ध सां नि् ध प ध ध ध ध प ध सां नि् | नि रिं सां नि् ध प ध ध
‿ ‿ ‿ ‿ o o ‿ ‿ – o ‿ o ‿ ‿ ‿ o — | o o o o o — o —
है · दे · ता · री · · घा ट बा ट स · ब सों | अ ट क त हो · लै ल
१ १३ + ६ | १ १३ +

प ध प म ग् नि् | ध ऽ प म ग् रि ||
‿ ‿ ‿ ‿ o o | — o o o o o ||
स · · · रि उ | धा · · री · · ||
| १ १३ ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी तीन ताल

स्थाई– जे जन शरण गये ते तारे, दीन दयालु प्रगट पुरुषोतम
सुनिये नंद दुलारे ।।

अन्तरा—माला कंठ तिलक माथे "दे" शंख चक्र विपु धारे
जितने रवि छाया के कनका तितने दोष हमारे
तुम्हरे दरश प्रताप तेज ते, तत्क्षण ते सब टारे
'मनिक चन्द प्रभु के गुण, ऐसे महापतित निस्तारे ।।

स्थाई

ध नि॒ सां नि॒ सां रें सां नि॒ ध प म ध प ग॒ रि ग॒ नि॒ ध | प म म ध ध ध
जे · · ज · न · श र ण · ग · ये ते · ता · | रे दी न द या लु
३ + ० | १ २ +

ध नि॒ नि॒ ध नि॒ सां नि॒ सां | ध प म म ध ध नि॒ सां ऽ सां नि॒ गं॒ गं॒ रें सां नि॒ ध प |
प्र ग ट पु · रु षो · | त म सु नि ये नं · द · दु ला · · · · · · रे |
० | १ २ + ० |

म ग॒ ||
· · ||
१ ||

अन्तरा

म ध नि॒ सां सां नि॒ सां सां नि॒ ध नि॒ रें | सां नि॒ नि॒ सां सां नि॒ ध नि॒ रें रें ऽ
मा ला · कं ठ ति ल क मा · · थे | दे श ख च क्र वि पु धा · ·
२ + ० | १ २ + ०

सां नि॒ ध | सां म ध ध नि॒ सां नि॒ सां नि॒ ध म प ध सां नि॒ | ध म ग॒ रि म
· · · | रे जि त ने र वि छा · या के · क · न · | का ति त ने दो
| १ २ + ० | १ २

ऽ म म ध नि॒ सां ऽ नि॒ ध रें | सां नि॒ रें रें रें गं॒ रें सां नि॒ सां रें सां नि॒
ष ह मा · · · · · · · | रे तु म्हा रे द र श प्र ता · · प ते
+ ० | १ २ + ०

सां नि॒ ध | सां ग॒ रें ग॒ सां ग॒ रें ग॒ सां रें ग॒ रें सां नि॒ ध नि॒ रें | सां सां नि॒
· ज · | ति त · त्क्ष ण ते · स ब टा · · · · · · | रे मा णि
| १ २ + ० | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध सां सां रिं ग॒ रिं सां नि॒ रिं सां नि॒ सां | नि॒ ध नि॒ ध ऽ सां नि॒ ध ग॒ रिं सां नि॒
क चं द्र प्र भू के · गु ण ऐ · | से · म हा · प ति त नि · स्ता ·
३ + ७ | १ ३ + ७

ध प म ग॒ | रि सा ||
· रे · · | · ·
| १

राग काफी, होरी

स्थाई—गोरी कूंजन में आज होरी मची, तूं कहां बैठी मांग संवारैं,
मेरौ कही जो सांच न माने, सुन ले डफ धुधकारैं ।

अन्तरा—उठ सजनी चल फाग खेल ले प्रीतम तोहे पुकारे ।
नारायण तब बात है तेरी, तू जीते पिया हारे ।

स्थाई

सां नि॒ सां नि॒ ध प म ध म | प ऽ म प ध नि॒ ध प म ग रि सा | सा रि ग
गो री कूं · ज · न में · | आ ज हो · · · · री · · | म ची तू
+ ६ | १ १३ | + ६

म प | ऽ म ध प नि॒ ध प म ग॒ सां नि॒ ध प म | ध ध ध नि॒ ध नि॒ सां ध
क हां | · बै · ठी मां · · · ग स वा · रे मे | री क ही · जो · · सां
| १ १३ + ६ | १ १३ +

सां रिं सां नि॒ नि॒ ध प ध | प म ध ध रिं रिं सां नि॒ ध म ध सां | ऽ ऽ नि॒
· · · च न मा · · | ने सु न ले ड ऽ ऽ फ ऽ धु ध का | रैं
६ | १ १३ + ६ | १ १३

ध प म ग॒ रि सा |
· · · · · · |

अन्तरा

म म प ध सां सां सां | सां रिं ग॒ रिं सां ग॒ रिं सां नि॒ ध प ध ध ध ध ध
उ ठ स ज नी च ल | फा · · ग खे · ल · ले · · प्री त म तो ही
+ ६ | १ १३ + ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध | न्ि ध न्ि प ध प म प प ध सां रें गं॒ रें सां रें सां सां | ध सां रें
० | ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ० | ⌣ ⌣ ०
पु | का · · · · रै · · ना ऽ रा · · य · न त व | वा · ·
| १ १३ + ६ | १

सां ध सां ऽ न्ि ध ध ऽ न्ि ध सां | न्ि गं॒ गं॒ रें सां न्ि ध प म ग॒ रे सा ||
० ⌣ ⌣ ० ० ० ० — ० ० — | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ||
त है · · ते री तू · जी ऽ ते | पि ऽ या ऽ हा ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ||
१३ + ६ | १ १३ ||

राग देश

यह राग ओड़व सम्पूर्ण जाति का माना जाता है। इसमें आरोह में सारंग की तरह 'सा रे म प नी सां' शुद्ध 'नी' से अर्थात आरोह में 'गन्धार' और 'धैवत' वर्ज्य करके और अवरोह में कोमल 'निषाद' का प्रयोग करते हैं और 'सां न्ि ध प म ग रे' इस प्रकार 'रिषभ' पर ठहराव देकर तब ग निं ऽ सा या ग स पर, समाप्त करते हैं। कई लोग इसमें रिषभ, पंचम वादी, संवादी करते हैं। और कोई गन्धार, धैवत को इस राग का अंश स्वर मानते हैं। यह अपनी हार्दिक भावना को व्यक्त करने के लिएं मुग्ध स्वरावलियों से विस्तृत होता है। रात्रि के दूसरे प्रहर में इसका गायन समय है। खमाज राग की छाया इसमें नहीं दीख पड़ती है। तो भी मेल पद्धति वाले इसको खमाज मेल से बताते हैं। इसमें ध्रुपद, धमार, ठुमरी और ख्याल भजन आदि गाए जाते हैं। इसका :—

आरोह —निं सा रे म प नि सां।

अवरोह —रें सां रें न्ि ध प, ध, म ग रे, ग निं, सा।

मुख्य अंग —रें न्ि ध प, ध, म ग रे।

आलाप राग देश

सा निं सा रि म ऽ ग रि ग निं ऽ सा रि प म ऽ ग रि ग रि म ग रि ऽ ग निं
~, ० ० ० ० ⌣⌣ ०, ⌣ ० ⌣, — ० ० ०⌣⌣—, ⌣⌣ ० ⌣ ० ⌣⌣ ०
ऽ सा निं सा रि म प ध म ऽ ग रि ग निं ऽ सा निं सा रि म प न्ि ऽ ध प
⌣—, ० ० ० ० —, ० ० ⌣⌣ ०, ⌣ ० ⌣—, ० ० ० ० ० ० ० ०—,
ध म ऽ ध प ऽ न्ि ध प रि म प ध ऽ म ग रि ऽ रि म ऽ ग रि प रि म ऽ
⌣⌣ ⌣⌣ ⌣⌣ — ० ०, ० ० ० ० ० ० ⌣ ० ⌣, ० ० ⌣⌣ ०, —, ० ०⌣

ग रि ग निं ऽ सा निं सा रि म प नि ऽ सां नि सां ऽ म रि ऽ प म ऽ ध प ऽ
⌣० ⌣ ० ⌣—, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣⌣ ० ⌣ — ⌣ ० ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣⌣ ⌣⌣

नि ऽ सां नि सां ऽ म प नि सां रिं न्ि ध प रि म प न्ि ध प ऽ ध म ग रि
० —, — ⌣ ० ⌣, ⌣⌣ ⌣ ⌣ —, — ० ०, ० ० ० ० ० ०—, ० — ० —,
ग निं ऽ सा म प नि नि सां सां ऽ प नि सां रिं ऽ न्ि ध प म प नि सां रिं
⌣ ० ⌣—, ० ० —, ० ० ०—, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ०—, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गं रिं मं गं रिं गं नि ऽ सां नि सां रिं सां रिं नि॒ ध प ध म ऽ ग रि म ऽ ग
◡ ◡ ० ० ०, ◡ ० ◡ —, ◡ ◡ ◡ ◡ ० ०, ० ० — ० ◡◡ —, ० ◡◡
रि नि॒ ऽ ध प मं ऽ गं रिं गं नि ऽ सां प नि सां रिं ऽ नि॒ ध प ध म ऽ ग रि
— ० ◡◡ —, ० ◡◡ — ◡ ० ◡ —, ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡, ० ◡ ◡◡◡ —,
प रि म ग रि ऽ ग नि॒ ऽ सा म प नि सां प नि सां प नि सां रिं ऽ गं रिं
— ० ० ◡ ० ◡◡ ० ◡ —, ० ० —, —, ◡ ◡ ◡, ◡ ◡ ◡ ◡ —, ◡ ◡
मं गं रिं गं नि ऽ सां नि सां रिं सां रिं नि॒ ध प म प ध प ध म ग रि ऽ रि
० ० ०, ◡ ० ◡ —, ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ०, ◡ ◡◡ ◡ ० ० ० ० —, ०
म ऽ ग रि ग नि॒ ऽ सा ।
० ० ० —, ◡ ० ◡ — ।

तानें राग देश

नि॒ सा रि म ग रि नि॒ सा, ग रि प म ग रि नि॒ सा, रि म प ध म प ध म ग रि, प म ग रि नि॒ सा, नि सा रि म प नि॒ ध प म प ध म ग रि, प म ग रि नि॒ सा, रि ग रि सा नि॒ सा, प ध म प ध म ग रि नि॒ सा, सा रि नि॒ सा, रि ग सा रि, म प रि म, प ध म प, नि॒ ध प म ग रि नि॒ सा। नि॒ सा रि म प नि सां नि॒ ध प म ग रि सा नि॒ सा। म रि प म ध प, सां नि॒ ध प म ग रि सा नि॒ सा। नि॒ सा रि म ग रि नि॒ सा। रि म प नि सां नि॒ ध प म ग रि सा। सा रि म प नि सां रिं रिं सां नि॒ ध प म ग रि सा। नि॒ सा रि म प नि॒ ध प म प ध म ग रि नि॒ सा। प म ग रि, म ग रि सा, सां नि॒ ध प म ग रि सा, म रि म प नि सां रिं रिं सां नि॒ ध प म ग रि सा। म ग रि सा, नि सां रिं रिं सां नि॒ ध प म ग रि सा। सा रि म प, नि सां रिं, नि सां रिं, नि सां, रिं रिं सां नि॒ ध प म ग रि सा नि॒ सा। रि ऽ म ऽ प ऽ नि ऽ सां ऽ ऽ रिं, सां नि॒ ध प म ग रि सा। सा रि सा, रि म रि, म प म, प ध प, नि॒ ध प म ग रि नि॒ सा। रि म रि, म प म, प ध प, नि सां नि॒, सां नि॒ ध प म ग रि सा। रि म प ध म प ध म ग रि प म ग रि नि॒ सा, म प नि सां, रिं नि सां, रिं नि सां, रिं मं गं रिं सां रिं सां नि॒ ध प, म ग रि सा।

राग देश झपताल

(यह गीत राग खमाज में भी स्वर लिपि बद्ध दिया है)

स्थाई—सुरतिया रे लाग रही हरि सों
आवन कह गये अजहू न आये, बीत गए बरसों ॥
अन्तरा—यह तो जोवन चार दिहाड़े, आज कल्ह परसों,
अंबुआ मौले केसू फूले, और फूली है सरसों ॥।

स्थाई

सा	रि	म	प	नि	|	सां	प	नि	नि	सां	प	नि	सां	नि॒	ध	म	ग	रि	म	म	म	प	म
०	०	०	०	०	|	~	०	०	०	०	◡	◡	०	०	०	०	०	०	—	०	०	◡	◡
सु	र	ति	या	ऽ	|	रे	ला	ऽ	ग	र	ही	ऽ	ऽ	ह	री	सों	ऽ	ऽ	आ	व	न	क	ऽ
						१	३							+				६					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग रि ग निं सा निं सा रि म प प ध ध प म प नि़ ऽ प ध ऽ प | म प नि
⌣ ० — — ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ⌣ ⌣ ⌣ — | ० ० ०
ह · ग ये · अ ज हू · · न आ · · · · · · · · ये | बी · ती
१ ३ + ८ | १

नि ऽ नि ऽ प नि प नि सां नि़ ध म ||
० ० — ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ||
ग ये ब र सों · · · · · ||
३ + ८ ||

अन्तरा

म प नि ऽ | सां सां सां प नि नि सां नि सां रिं रिं नि़ ध प नि़ नि़ नि़ नि़ |
० ० — ० | — ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० — ० ० ० — ० ० ० |
य ह तो | जो ब न चा · र दि हा · · ऽ · · · आ ज क लह |
| १ ३ + ८ |

नि़ सां नि़ ध ध प म प नि सां रिं रिं गं गं रिं सां नि सां रिं ऽ नि़ ध प नि |
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ⌣ ⌣ — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० — |
प · र · सों · अ बु आ · मौ ले के · · · · · सू · फू · ले औ |
१ ३ + ८ |

नि सां सां ऽ सां प नि प नि सां रिं रिं सां नि़ ध म ||
० — ० ० — ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ||
र फू ली · है स र सों · · · · · · · · ||
१ ३ + ८ ||

राग देश झपताल

स्थाई—या सांवरे सों मैं प्रीती लगाई, कुल कलंक ते नाहीं डरोंगी,
अब तो करों अपने मन भाई।

अन्तरा—१. बीच बाजार पुकार कहूं मैं, चाहे करो तुम कोटि बुराई।

अन्तरा—२. लाज मरयाद मिली औरन को, मृदु मुस्कान मेरे बट आई॥

अन्तरा—३. बिन देखे मनमोहन को मुख, मोहिं लागत त्रिभुवन दुखदाई।

अन्तरा—४. नारायण तिन को सब फीको, जिन चाखी यह रूप मिठाई॥

स्थाई

म प नि | सां नि़ ध प प ध म ग रि म | म म प ध म ग रि निं सा पं निं |
० ० — | ~ — — — ० ० — ० ० ~ | ~ ⌣ ⌣ ० — — — — — — — |
या · · | सां व रे · सों · मैं · · प्री | ती ल · · गा · : ई · कु ल |
| १ ३ + ८ | १ ३ + ८ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा रि म ग रि रि म प ऽ ध म ग | रि रि म प नि॒ ध प ऽ सां नि॒ ध प म प
— — — — — — ० ० — — ० — ० | — ० ० ० ० ० ० — — ० ० — —
क लं · क ते ना · ही · ड रों गी | · अ · ब · तो · · क रो · · अ प
१ ३ + ८ | १ ३ + ८

नि नि नि नि सां रिं ऽ नि॒ ध म ग रि ||
~ — — ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ०
ने म न भा · · ई · · · ·
१ ३ + ८

अन्तरा

म ऽ प | नि प नि ऽ ऽ नि सां नि सां ऽ ऽ सां प नि ऽ | नि सां रिं ऽ नि॒ रि
— ० ० | — ⌣ ⌣ ० — — — ⌣ ० — — ० ० — | ⌣ ⌣ ० — — —
बी च | ब जा · · · र पु क़ा · · · र क हूं | मैं · · चा हैं
| १ ३ + ८ | १ ३

ऽ सां नि॒ ध प प नि | सां सां रिं नि॒ ध प ध म ग रि ||
— ० ० — — — — | ~ — — ० ० ० ० — ० ०
· क रो · · तु म | को टि बु रा · · · ई · ·
+ ८ | १ ३ + ८

बाकी अन्तरे इसी प्रकार गावें।

राग देश तीनताल

स्थाई—मो सम कौन कुटिल खल कामी,
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी।

अन्तरा—भरि भरि उदर विषय को धावों, जैसे शूकर ग्रामी।
हरिजन छांड हरि विमुखन की, निस दिन करत गुलामी।

अन्तरा—२. पापी कौन बड़ो है मोते, सब पतितन में नामी।
सूर पतित को ठौर कहां है, सुनिये श्री पति स्वामी।

नि॒ ध म प ध म ग रि ग सा निं | सा ऽ नि सा सा रि म प म ग रि ऽ निं सा
० ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० | — ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣
मो स · · म को · · न कु टि | ल ख ल का · · · · मी · · जि न
+ ७ | १ ३ +

रि म प प नि॒ | ऽ ध म प ध ध नि॒ ध प म ऽ ग रि ऽ रि म प नि नि नि नि
० ० ० — ० | ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ०
त नु दि यो ता | · हि · · बि स · · रा · यो · ऐ · सो · न म क
७ | १ ३ + ७

सां | प ध म प सां रिं सां ऽ नि॒ नि॒ सां नि ध प ऽ ||
० | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ०
ह | रा · · · · · · · · मी · · · · ·
| १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रि म प नि सां रिं नि॒ ध | प ध म प नि सां ऽ प नि सां रिं गं सां रिं मं गं
0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 0 0 — — 0 0 ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ 0 0
भ रि भ रि उ द र वि | ष य को · धा वो · जै से · · · · · शू क
+ ७ | १ ३ + ७

रिं | सां नि॒ ध म प ध म ग रि ऽ रि म प सां नि॒ ध प ध म | ग रि रि ग
0 | 0 0 0◡ ◡0 0 0 0 0 0 0 0 0 ◡ ◡ ◡◡ 0 | 0 0 ◡ ◡
र | म्रा · · · · · मी · · · ह रि ज न छां · · · · | ड ह री ·
| १ ३ + ७ | १

सा रि म ध प नि॒ ध सां नि॒ ध प म प नि नि नि सां सि सां | नि सां प प ध
◡ ◡ 0 ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ 0 0 0 0 0 0 ◡ ◡ ◡ ◡ | ◡ ◡ 0 ◡ ◡
· · वि मु · ख · न · की · नि स दि न क · र · | त · · गु ·
३ + ७ | १

म प नि सां रिं सां नि॒ ध प |||
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ 0
ला · · · · · मो · ·
३

राग देश तीनताल विलंबित

स्थाई—अब हौं कासौं बैर करों, कहत पुकारत प्रभु ।
तज मुख ते, घट घट होवे हरि ॥

अन्तरा—आप समान सबै जग लखो, भक्तन अधिक डरो ।
श्री हरि दास कृपा हरि की नित, निरभय बिचरो ॥

स्थाई

रि म नि॒ ध म ग रि | म ग रि ऽ रि म म प म ग रि ऽ ग ग रि सा रि ग
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ | — ◡ 0 ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ 0 ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
अ · · · ब · · | हौं · · · का · सौं · · · · · बै · · · · · ·
| १ २ +

ऽ सा नि सा ऽ नि सा | रि म ऽ ग रि ऽ रि म रि म प नि॒ ऽ ऽ नि॒ सां नि॒ ध
◡ 0 ◡ — 0 ◡ ◡ | ◡ ◡ — ◡ ◡ 0 ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ 0 ◡ ◡ ◡ ◡
· र क रों · क ह | त · · · · · पु · का · · · · · र · · त
७ | १ ३ +

प ऽ ऽ रि प म प ऽ म प नि ऽ सां रिं नि॒ ध | म ग रि ऽ रि प म प रि म
◡ 0 0 ◡ ◡ ◡ 0 ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ | 0 ◡ ◡ 0 ◡ ◡ ◡ 0 ◡ ◡
· · · प्र · भु · · त · ज · · · मु ख | ते · · · घ · ट · घ ·
७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ऽ ग नि सा ऽ रि म प नि ऽ ऽ म प नि सां रिं नि ध म ग रि ||
· · ट · · हो · · · · · वे ह री · · · · · · ·
+ ७

अन्तरा

नि सा रि म प नि ऽ सां | नि सां ऽ ऽ नि ध प म प नि सां सां प नि ऽ प नि
आ · · · प स · · | मा · · · · · · · · · · न स · · बै ·
| १ ३

नि प नि सां रिं सां नि ऽ नि नि नि नि सां नि ध प ध म प ध म ग रि ऽ रि म रि प म ध प नि
· · · · · · · · ज ग ल खो · : · · · · · · · · · · · भ · · : क्त · ·
+ ७

ध प ऽ नि ध म ऽ ग रि ग ऽ रि नि सा ऽ पं नि ऽ सा ऽ नि सा रि म ऽ
न · · अ धि क · · · · · · ड रो · श्री · · · · · ह रि दा · ·
१ ३ + ७

ग रि रि म ध प नि ध | प नि ध म ऽ ग रि रि प म प नि नि प नि नि प
· स कृ पा · · · · | · ह रि को · · · नि त · नि र भ ·
| १ ३ +

नि सां सां ऽ प नि प नि सां रिं नि ध म ग रि |||
· · य · वि च री · · · · · · · ·
७

राग देश छाया लगत्व तीनताल

स्थाई—मेरे जिया ऐसी आन बनी,
बिन गोपाल और नहि जानू, सुन मोसो सजनी।
अन्तरा—कहा कांच संग्रह के कीने, हीरा एक कनी,
मन वच क्रम मोहिं और न भावे।
अब मोरे श्याम धनी, सूरदास स्वामी के कारण तजी जात अपनी।

स्थाई

ग सा रि म प नि | सां ऽ नि ध प म ग रि म म ग रि रि | निं निं निं सा
० ० ० ० ० — | — ० ० ० ० ० ० ० — ० — ० | — ० ० ०
मे रे जि या · ऐ | सी · आ · न ब नी · बि न गो पा ल | औ र न हिं
७ | १ ३ + ७ | १ ३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रि प म ग रि रि रि म प | नि॒ ध म ग रि ||
० ० ० ० ० ० ० — — | — — – — ० ||
जा · नू · · सु न मो सो | स ज नी · · ||
+ ७ | १ ३ + ||

अन्तरा

म प नि ऽ नि नि | नि नि सां नि॒ ध प ध म नि॒ नि॒ ऽ नि॒ | ऽ नि॒ सां नि॒ ध
० ० ० ० ० — | ० ० — ० ० ० ० ० — ० — — | ० ० ० ० ०
क हा का · च सं | ग्र ह के की · ने · · ही रा · · | · क क नी ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३

प म ग रि म म म म रि ग नि | ऽ सा नि सा रि म नि॒ ध प रि म प प |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० — — |
· · · · म न व च क्र म मो | · हि औ · र न भा · वे अ ब मो रे |
+ ७ | १ ३ + ७ |

नि॒ ध प म रि म ध प ऽ म प नि नि | सां नि सां नि रिं नि॒ ध प प रि म
० ० ० ० ० ० ० ० — — ० — ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ०
श्या · म · · · ध नी · सू र दा स | स्वा · मी · के का · र ण त जी
१ ३ + ७ | १ ३ +

ऽ प | ऽ प नि॒ ध म ग रि |||
— — | ० ० — — ० ० ० |||
· जा | ः त अ प नी · · |||
७ | १ ३ + |||

राग भैरवी

राग रागनी पद्धति में यह प्रमुख भैरव राग की प्रमुख रागनी मानी जाती है यह एक विशेष स्थान इस को प्राप्त है। शायद इसी कारण से यह मनमानी चाल चलती है और किसी भी महफिल में, किसी भी राग के पश्चात, किसी भी ऋतु में, और किसी भी समय गायी जाती है (मानों किसी का इसको भय नहीं, केवल रवि का ही) हां, तो यहां तक इस का साहस बढ़ने लगा, कि धीरे २ इस ने सभी स्वरों को अपने में खपत किया तो भी भैरवी ही कहलाती है। ऐसी गर्व भरी स्वरावली सभी भावों को प्रगट करने में समर्थवान, रागनी होते हुए भी बलवान। और सप्तक के शुद्ध कोमल तीव्र, बारह ही स्वरों पर अपना अधिकार जमा बैठी। तो भी इसके अपने स्वर केवल, रि, ग, ध नि कोमल बाकी स्वर शुद्ध, इन अपने स्वरों से ही शुद्ध संज्ञा इस को प्राप्त रहेगी। इसके ऋषभ धैवत अंश स्वर हैं। कोई मध्य या पंचम, वादी, षड्ज को संवादी मानते हैं। प्रचार में इस के अन्तरे उठाव के समय यह मालकौंस का सिमरण न जाने क्यों करती है। शायद किसी जन्म के सम्बन्ध से संस्कारित है।

और इसी के स्वरों में वास्तविक धनाश्री (जिसमें रि, ग, ध, नि कोमल ही लगते हैं) विलासखानी तोड़ी, गोपिका बसन्त (गोपी बसन्त) भोपाल तोड़ी है और कोमल ऋषभ आसावरी, (जो कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री हरिदास स्वामी तथा श्री तानसेन जैसे उच्च संगीतकारों के समय में प्रचलित थी) हैं। (शुद्ध ऋषभ की आसावरी तो, तान क्रिया में सुभीते के लिये प्रचलित है।

आरोह :—सा रि॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां, अथवा नि़॒, सा ग॒ म प ध॒ नि॒ सां,

अवरोह :—सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रि॒ सा।

मुख्यांग :—धं॒ निं॒ सा रि॒ निं॒ सा, ग॒ म प, म, ग॒, रि॒, सा,

आलाप भैरवी

सा रि॒ सा धं॒ निं॒ सा ऽ धं॒ निं॒ सा रि॒ ऽ सा ग॒ रि॒ सा निं॒ धं॒ सा ऽ सा रि॒
~, o o — o o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —, o o

ग॒ म ऽ ग॒ म प म ग॒ म ग॒ रि॒ सा ऽ नि॒ सा ग॒ म प ध॒ प ऽ म ग॒
o o ~, ⌣ ⌣ o ~, o o —, o o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣

सा ग॒ प ग॒ प म ध॒ ऽ प म ग॒ म ग॒ म प म ग॒ रि॒ सा ऽ धं॒ निं॒ सा रि॒
⌣ ⌣ —, o ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o —, ⌣ ⌣ o o o o o o —, o o o o

निं॒ सा ऽ धं॒ निं॒ धं॒ पं ऽ मं धं॒ पं मं ऽ गं॒ मं धं॒ निं॒ सा रि॒ निं॒ सा ऽ ग॒
o o —, o o o o —, o o o o —, o o o o o o o o —, ⌣

म प ऽ म ग॒ रि॒ सा ऽ रि॒ सा नि॒ सा ग॒ म प ध॒ प ऽ म ग॒ सा ग॒ प
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ~,

ग॒ प म ध॒ प नि॒ ध॒ प म ग॒ प म ग॒ रि॒ सा | ग॒ म ध॒ नि॒ सां नि॒ रिं॒ सां
o ⌣ ⌣ ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ~, ⌣ ⌣ ⌣ o o, | o o o o ~, o o —,

ध॒ नि॒ सां रिं॒ सां ऽ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ प म ध॒ प नि॒ ध॒ प म ग॒ म ग॒ म प म ग॒
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ~, o o o o, o ⌣ ⌣ o o o ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ o ⌣

म ग॒ रि॒ ऽ सा नि॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां ऽ नि॒ सां ऽ ध॒ नि॒ सां रिं॒ ऽ सां
o, ⌣ o ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o — ⌣ o ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣

गं॒ रिं॒ सां नि॒ ध॒ सां ऽ सां रिं॒ गं॒ मं गं॒ सां रिं॒ सां सां गं॒ रिं॒ सां नि॒ नि॒ रिं॒
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —; o o o o ~, o o ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣

सां नि॒ ध॒ ध॒ सां नि॒ ध॒ प प नि॒ ध॒ प म म ध॒ प म ग॒ ग॒ प म ग॒
⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣,

रि॒ सा ग॒ रि॒ सा निं॒ धं॒ सा ऽ
—, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —,

इसी राग को जब मिश्र करके गाते हैं तब शुद्ध, कोमल, तीव्र, बारह स्वर लगाते हैं, उस के कुछ आलाप।

सा नि॒ सा ग॒ म प ध॒ प म ग॒ म ऽ ग॒ रि म ग॒ रि रि॒ सा सा ग॒ म प
~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ o —, — — —, ⌣ ⌣ ⌣

म ग॒ रि सा धं॒ निं॒ सा रि ग॒ रि ग॒ ऽ रि सा रि॒ निं॒ सा ग॒ म प ऽ म ग॒
⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रि् म ग् सा ग् रि् सा निं् धं् सा ऽ ग् म प ध् प ध् नि् सां ऽ प ऽ
‿ ० —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० —, ‿ ‿ ‿ ~, ‿ ‿ ० —, ‿ ‿

नि् रिं सां ध् प ऽ ग् प म ध् प नि् ध सां नि् सां नि् ध् ऽ प ऽ सां रिं् ऽ नि् सां
‿ ‿ ‿ ० ०—, ० ‿ ‿ ० — ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ०—, ‿ ‿ ‿ ‿

ऽ नि् ध् ऽ प ध् ऽ प म ग म सा ग् म प ध् म् म ग् रि रि् सा नि्
‿ ‿ ‿ ०—; ‿ ‿ ‿ ‿ ‿, —, ‿ ‿ ‿ ‿ ३ ३ ३ ३ ३ ३ — ‿

धं् सा ऽ सा ग् म प म प म ग् सा निं ऽ सा ऽ ग् प ऽ म ग रि्
‿ ० —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿

ऽ सा ऽ |
‿ ० ‿, |

ताने भैरवी

निं् सा ग् म प प म ग् रि् सा, निं् सा ग् म ध् प म ग् रि् सा, निं् सा ग् म प
नि् ध् प म ग् रि् सा, धं् निं् सा रि् निं् सा ग् म प प म ग् रि् सा निं् सा धं्
निं सा रि् निं् सा ग् म प नि् ध् प म ग् रि् सा, निं् सा ग् म ध् नि् सां नि् ध्
प म ग् रि् सा निं् सा, ग् म ध् नि् सां रिं् सां नि् ध् प म ग् रि् सा निं्
सा, सा रि् सा, ग् म ग्, म प म, प ध् प, ध् नि् ध् प म ग् रि् सा, ध् नि् सां
निं् ध् प म ग् रि् सा, रि् सा निं् सा, म ग् सा ग्, प म ग् म, ध् प म प, नि्
ध् प ध्, सां नि् ध् प म ग् रि् सा, निं् सा ग् म ध् नि् सां रिं् गं् रिं् सां
नि् ध् प म ग् रि् सा निं् सा, ग् म ध् नि् सां रिं् गं् रिं् सां नि् ध् प म ग् रि्
सा, म ग् रि् सा, ध् प म ग् रि् सा, नि् नि् ध् प म ग् रि् सा, गं् रिं् सां नि्
ध् प म ग् रि् सा, सा रि् ग् म ग् प म ग् रि् सा, प ध् नि् सां प नि् ध् प म
ग्, सां रिं् गं् मं, गं् पं मं गं् रिं् सां, सां नि् ध् प म ग् रि् सा, सा निं्; रि् सा,
ग् रि्, म ग्, प म, ध् प, नि् ध्, सां नि् रिं् सां, गं् रिं् सां नि् ध् प म ग् रि
सा, निं् सा ग् म प म, ग् म ध् नि् सां नि्, ध् नि् सां रिं् सां नि् ध् प म ग्
रि् सा, निं् सा ग् म प म ग् म, ध् नि् सां रिं् सां नि् ध् नि्, सां रिं् गं् मं
गं् रिं् सां नि् ध् प म ग् रि् सा निं् सा। सा रि् सा, निं् सा निं् ग् म, ग् प
म ग् रि् सा निं् सा, प ध् प, म प म, ग् म प नि् ध् प म ग् रि् सा, ध्
नि् ध्, नि् सां नि् ध् नि्, सां गं् रिं् सां, नि् रिं् सां नि्, ध् सां नि् ध्, प नि्
ध् प, म ध् प म, ग् प म ग् रि् सा निं् सा, ग् रि् सा रि्, म ग् रि् ग्, प
म ग् म, ध् प म प, नि् ध् प ध् सां नि् ध् नि्, रिं् सां नि् सां, गं् रिं् सां
रिं् गं् मं गं् रिं् सां नि् ध् प म ग् रि् सा, गं् रिं् सां नि् ध् प म ग् रि् सा, गं्
रिं्, गं् रिं् सां नि्, रिं् सां रिं् सां नि् ध्, सां नि् सां नि् ध् प, नि् ध् नि् ध्
प म, ध् प ध् प म ग् रि् सा, निं् सा निं्, ग् म ग्, म प म, प ध् प; ध्
नि् ध्, नि् सां नि्, सां रिं् सां, गं् मं गं्, गं् पं मं गं् रिं् सां, सां नि् ध् प म ग्
रि् सा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(दोनों ऋषभ) राग भैरवी होरी ताल दीपचन्दी (निषाद दोनों)

स्थाई–तन मन रंग बनाय, पिया संग खेलीये, होरी ।।

अन्तरा–तार बनाऊं जिया, को तन का करूं जी तबूरा,
खेलूं अपने, शाम सों, सब कारज पूरा।

स्थाई

धं_ निं_ सा ऽ ग_ म प ग_ म ग_ रि_ | सा ऽ निं धं_ सा सा धं_ रि_ ऽ ऽ ऽ ऽ सा
त न · · · · · · म · · न | रं · · · · · ग ब न · · · ·
\+ ६ | १ १३ + ६

निं | ऽ ऽ सा धं_ सा सा ऽ रि सा ग_ ऽ ऽ ऽ रि रिं | म ग_ ऽ सा ग_ सा ग_
· | · · · · · · य · पि · या · · · · · | सं ग · खे · · ·
| १ १३ ६ | १ १३ +

म_
सा ग_ म प म प म रि_ सा | सा ग_ म प ध_ म_ म ग_ रि_ सा ||
· · · · · · · ली ये | हो · · · · · · री · · ||
६ | १ १३ ||

अन्तरा

सा सा रि_ ग_ म ऽ ऽ ऽ ग_ सा ग_ प | म सा रि_ ऽ निं रि_ सा प प म ऽ ग_ सा
ता र ब ना · · · · · · · · | ऊं जि या · · · को त न का · · क
\+ ६ | १ १३ + ६

ग_ ग_ म ध_ ध_ म | म म_ म ग_ म ग_ रि_ ग_ रि_ सा ऽ ध_ प म प ग_ म
· रू · · · · | · बी · · त बू · रा · · खे लूं · · · ·
| १ १३ + ६

रि_ ग_ | म ग_ ऽ प म ध_ ध_ प ध_ नि_ ध_ प म प म | ऽ ग_ म प म
अ प | ने शा · म सों स ब का · · · · र · · ज | · पू · · ·
| १ १३ + ६ | १ १३

ग_
रि_ सा ||
रा · ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(दो ऋषभ) राग भैरवी ताल चंचल (दीपचन्दी) (दो धैवत)

स्थाई—तोसे ना मैं बोलूंगी कान्हा, मानत नाहीं करत बरजोरी ॥

अन्तरा—छांड कुंवरवा, जाने दे मैका, देखे ननन्दिया कछु बोल बोले ॥

स्थाई

सा ग॒ ग॒ म प म ग॒ म ग॒ रि॒ | सा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ध॒ नि॒ सा ग॒ रि ग॒ ऽ |
तो से ना · · मैं बो · · लूं | गी · · · · · का · · · न्हा · · |
+ ६ | १ १½ + ६ |

ऽ ऽ रि म ग॒ रि सा नि॒ ध॒ नि॒ सा रि ग॒ रि रि॒ | सा ऽ नि॒ ध॒ सा ऽ ऽ ग॒
· · श्रा · · · · · · · · · · · · | श्रा · · · · · · मा
१ १½ + ६ | १ १½ +

प ध॒ प म ग॒ प | ऽ ऽ म प म ग॒ सा ग॒ म प ऽ प ऽ म ध॒ ध॒ | प म ग॒
न त ना · · ही | · · · · · · · · · · · · · क र त | ब र ·
६ | १ १½ ६ + | १

ग॒ प म ग॒ रि॒ सा ||
जो · · · री · ||
१½

अन्तरा

नि॒ नि॒ ध प ध प म म | ऽ ऽ म प ऽ ध॒ रिं सां नि॒ सां नि॒ ध॒ प ऽ | ऽ ऽ
छां ड कुं व र वा · · | · · जा ने · · · दे मैं · · का · · | · ·
+ ६ | १ १½ + ६ | १

म ग॒ सा ग॒ प ऽ ग॒ प ध॒ ध॒ ध॒ प ध॒ प म प म | ग॒ म ग॒ ग॒ ऽ सा ग॒ ग॒ ग॒
· · · · · · दे खे न नं दि या · · · · · | · · · · · क छु बो ·
१½ + ६ | १ १½

प म ग॒ म ग॒ रि॒ सा ऽ | ग॒ रि रि॒ सा ऽ |||
· ल बो · · ले · · | का · न्हा · · |||
+ ६ | १ १½ |||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी ताल दीपचन्दी (होरी) चन्चल ताल

स्थाई—मोसे भोर ही आन जगाई या मोहना, बंसी वाले यार आन जगाई ॥

अन्तरा—कह न सकत कछु लाज की मारी, नयी नयी प्रीत लगाई ॥।

स्थाई

ग॒ ध॒ ऽ ग॒ म प ध॒ | ऽ ऽ प म प रि म प म ग॒ रि रि॒ सा रि॒ सा धं॒ निं॒ |
० — — ‿ ‿ ‿ ‿ | — ‿ ‿ ० ० ० ३ ३ ३ ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० |
मो से · भो · · · | · · · · · र · · · ही · · · आ · न ज |
\+ ६ | १ १३ + ६ |

ग॒ सा सा ऽ ऽ ऽ निं॒ सा ग॒ म प ध॒ प ध॒ प | ऽ म ग॒ सा ग॒ प ऽ ऽ ग॒ प प ध॒ ऽ |
० ० ० ०—० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० — | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० —०० ० ० — — |
गा · ई · · या · · · · · मो ह ना | · · · · : · · बं सी वा ले · |
१ १३ + ६ | १ १३ + ६ |

ऽ ऽ म ध॒ म॒ म ऽ ग॒ रि॒ सा रि॒ सा धं॒ निं॒ | ग॒ सा सा ऽ ऽ ऽ ||
— ० ‿ ‿ — ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० | ० ० ० ० ० — ||
· · या · · · · · · र आ · न ज | गा · ई · · · ||
१ १३ + ६ | १ १३ ||

अन्तरा

ध॒ प ग॒ सा सा ग॒ म प नि॒ | ध॒ प ग॒ सा ग॒ म म प ऽ ग॒ प प प म प प नि॒ |
० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ | ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — ० ० ० ० ‿ ‿ ३ ३ |
क ह न · स क · · · | त · · · क · छु · · ला ज की मा · · री · |
\+ ६ | १ १३ + ६ |

ध॒ ध॒ | ऽ ऽ म ध॒ सा ऽ ऽ ग॒ ग॒ प प प ध॒ नि॒ प नि॒ | ध॒ प म ग॒ सा ग॒ ग॒ म |
३ ० | — ० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ — ‿ ‿ | ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ |
· · | · · · · · · · न यी न यी प्री · · · · | त · · · ल · गा · |
| १ १३ + ६ | १ १३ |

ध॒ म॒ म ग॒ रि॒ सा || रि॒ सा धं॒ निं॒ | ग॒ सा सा
— ० ० ० ‿ ‿ || ‿ ‿ ० ० | ० ० ०
· · ई · · · || आ · न ज | गा · ई
\+ ६ || | १

(सांझ का) राग भैरवी तीनताल द्वि मध्यम

स्थाई—सांझ परी घर आये न कन्हैया,
गोपी पूछें, ग्वालिन सों, कहां गये मोरे, बृज के बसैया ॥
अन्तरा—घर रहे बछरु, बन रही गैया,
यमुना किनारे ठाडी यशुमति मैया ॥।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

सा रि॒ ग॒ प | म सा ग॒ ग॒ म प म ग॒ प म प म ग॒ रि॒ सा ऽ रि॒ सा धं॒ निं॒ |
सां · ऋ प | री घ र आ · ये न · क न्है · · · या · · गो · पी · |
७ | १ ३ + ७

सा सा सा रि॒ ग॒ ग॒ म ग॒ म ग॒ प म | ग॒ प प प ध॒ ध॒ म ध॒ म॒ म ग॒ रि॒ ||
पू छे श्वा · लि न सों क हां · ग ये | मो रे बृ ज के ब सै · · · या · ||
१ ३ + ७ | १ ३ +

अन्तरा

ऽ सा रि॒ ग॒ म | प ध॒ प ऽ ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ म प ध॒ प म ग॒ प ऽ ग॒ प ध॒ नि॒ |
· घ र र हे | ब छ रु · ब न र ही गै · · · या · · · य मु ना कि |
७ | १ ३ + ७

ध॒ प म ग॒ सा ग॒ म म॒ म म॒ म ग॒ रि॒ सा |||
ना रे ठा ड़ी य शु म ति मैं · · · या · |||
१ ३ +

(द्वि ऋषभ मध्यम) राग भैरवी तीनताल मध्यलय

स्थाई—सरस्वती शारदा माई, सरस्वती शारदा विद्या दानी,
दयानी दुःख हरनी, जगत् जननी, ज्वालामुखी मात ।।

अन्तरा—कीजे सुदृष्टि सेवक जान इतनो, अपनो कर बक्स दीजे,
तान ताल कर सुहाग, बुध अलंकार ।।।

स्थाई

म ग॒ रि॒ सा ऽ निं॒ सा | ध॒ नि॒ ध॒ ध॒ ऽ प म रि ग॒ म ग॒ रि॒ सा ऽ निं॒ सा |
स र स्व ती · शा र | दा · · · · आ · मा ई स र स्व ती · शा र |
+ ७ | १ ३ + ७

ध॒ नि॒ ध॒ ध॒ ऽ ध॒ ध॒ नि॒ ध॒ ध॒ ध॒ प म ग॒ म नि॒ सां नि॒ नि॒ ध॒ | प ग॒ म
दा · · · · वि द्या · · · दा · नी · द या · · · नी | · दुः ख
१ ३ + ७ | १

ग॒ रि॒ सा निं॒ सा ग॒ म प प ध॒ प | म ग॒ ग॒ प म म ग॒ रि॒ सा ||
ह र नी ज ग त ज न नी ज्वा · | ला · मु खी · · मा · त ||
३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प नि_ ध_ ध_ नि_ सां सां नि_ नि_ सां गं_ ऽ मं गं_ रिं_ | सां नि_ सां गं_ रिं_ सां प ध_ प

की जे · · सु दृ ष्टि से व क जा · न ई त | नो अ प नो क र ब · कस

१ ३ + ७ | १ ३ +

म ग_ ग_ सा प ध_ | प म म_ म ग_ म ग_ रि_ ऽ सा प प ध_ प ऽ | ग_ म ध_ नि_ सां

दी · · जे ता · | न ता · ल क र सु हा · ग बु ध अ लं · | का · · · ·

७ | १ ३ + ७ | १

रिं_ सां नि_ ध_ प म_ ग_ रि_ सा |||

· · · · · · · · रे ·

३

राग भैरवी तीनताल (मध्यलय)

स्थाई—सखी मेरे मन की को जानें, कासे कहूं, सुने जो चित दे,
हित की बात बखाने ॥

अन्तरा—ऐसो को है अन्तरयामी, तुरत पीर पहचाने,
नारायण जो बीत रही है, कब कोई सच्च माने ॥

स्थाई

रि_ नि_ सा ग_ | म ग_ प म ग_ प म प म ग_ रि_ सा प प प ध_ | ऽ ध_ प

स खी · मे | रे म न की · को जा · · · ने · का से क हूं | · सु ने

७ | १ ३ + ७ | १

ध_ नि_ ध_ प म ग_ प म सा ग_ ग_ | ग_ म म म ग_ म प म ग_ प म प

· · · जो · चि त दे हि त की | बा · त ब खा · · · · · · ·

३ + ७ | १ ३ +

म ग_ रि_ सा ||

· ने · ·

अन्तरा

सा सा रि_ ग_ | म ग_ प प म प म ग_ रि_ सा प प प प प ध_ | ऽ ध_ प ध_ प म

ए सो · को | है अं त र या · · · मी · तु र त पी · | · र प हि चा ·

७ | १ ३ + ७ | १ ३

ग_ प प ध_ ध_ प नि_ | ध_ प ध_ प म ग_ म प म सा सा ग_ ग_ | ऽ सा ग_

· · ने ना रा य ण | जो बा · त र ही · · है क ब को ई | · स च

+ ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग_म प म ग_प म प म ग_रि_सा

⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ०

मा · · · · · · · · ने · ·

३ +

राग भैरवी तीनताल (द्वि ऋषभ, मध्यम, धैवत निषाद)

स्थाई—ओ, सजन घर आजा, मैं तो वारी बांके छब वारे तेरे देखन दा चाव रे ॥

अन्तरा—तरफ तरफ दिन रैन बिहानी, आव सजन मोहे गरवा लगाओ ।।।

स्थाई

सा

ग_ऽ प म ग_सा नि | सा ग_ऽ प म ग_सा ऽ प प प ध नि_ध प ऽ म

— ० ० ० ० ० ० | — ० ⌣ ⌣ ० ० — ० — ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ०

ओ · स ज न घ र | आ · · · जा · · · मैं तो वा · · री · · ·

+ ७ | १ ३ + ७

ऽ प नि_रिं सां नि_ध_ध_ऽ प ग_प म ध_म म_म | ऽ सा ग_ग_म प म

० — ० ० ० ⌣ ⌣ ० ⌣ — ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० | ० ० ० ⌣ ⌣ ० ०

· बां के छ ब वा · · · रे ते रे दे ख न · दा | · चा · · · · ·

१ ३ + ७ | १ ३

ग_रि_ऽ सा

⌣ ⌣ ⌣ ०

रे · · ·

अन्तरा

ध_म ध_नि_सां नि_सां सां | ऽ नि_ध नि_सां प नि_ध_प गं_रिं नि_रिं सां ध_

० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ०

त र फ त र फ दि न | · र · न बि हा · नी · आ वो स ज न मो

+ ७ | १ ३ + ७

| प म म_म म_ध_म ग_रि_ग_रि_सा

० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣

हे ग र वा · · ल गा · · वो ·

१ ३

(द्वि मध्यम) राग भैरवी तीनताल मध्यलय

स्थाई—नन्द भुवन को भूषण माई, यशोधा को लाल,

बीर हल धर को, राधा रमन परम सुख दाई ॥

अन्तरा—१. शिव को धन संतन को सर्वस, महिमा वेद पुराणन गाई, इन्द्र को इन्द्र, देव देवन को, ब्रह्म को ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥

२. काल को काल, ईश ईशन को, अतिहि, अतुल, तोल्य नाहीं बाई। नन्द दास को जीवन गिरिधर, गोकुल गांव को कुंवर कन्हाई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

सा रि॒ नि॑ सा प म | ग॒ रि॒ ऽ सा प प प ग॒ म प ध॒ प ग॒ प प ग॒ म प ध॒

० ० ० ० ० ० | ⌣ ⌣ ⌣ ० — ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣

न · द भु व न | को · · · भू ष न मा · · · ई य शो धा को · ·

७ | १ ३ + ७

ध॒ | ऽ ध॒ ध॒ प म ग॒ सा ग॒ ग॒ म प म ग॒ रि॒ सा ध॒ ध॒ रि॒ ग॒ | नि॒ ध॒ म

० | ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० — - ० ० | ० ० ०

ल | · ल वी · · · र · ह · ल ध · र को रा धा र म | न प र

| १ ३ + ७ | १

म ग॒ म ग॒ रि॒ सा रि॒ सा नि॑ सा ||

० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ० ||

म सु · ख · दा · ई · · ||

२ + ||

अन्तरा

ध॒ म ध॒ नि॒ नि॒ | नि॒ नि॒ नि॒ नि॒ नि॒ सां रिं॒ सां नि॒ ध॒ ध॒ नि॒ नि॒ ध॒ म | ग॒ रि॒

० ० — ० ० | — ० ० — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० — — | ० ०

शि व को ध न | सं त न को स · · · वं · स म हि भा वे | द पु

७ | १ ३ + ७ | १

ग म म ध॒ नि॒ सां नि॒ ध॒ सा ग॒ म ध॒ | ऽ ध॒ ग॒ म ध॒ नि॒ सां रिं॒ सां नि॒ ध॒ ऽ

— ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — ० — ० | ० ० — ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ०

रा ण न गा · · · ई इं द्र को इं | · द्र दे व दे व · न · को · ·

३ + ७ | १ ३ +

ग॒ म ध॒ नि॒ सां नि॒ | ध॒ प ग॒ प ध॒ म ध॒ म॒ म ग॒ रि॒ सा |||

— ० ⌣ ⌣ ० ० | ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० |||

ब्र ह्म को · · ब्र | · ह्म अ धि क अ · धि · का · ई |||

७ | १ ३ + |||

राग हमीर

शुद्ध और तीव्र दोनों मध्यम इस में प्रयुक्त होते हैं, और बाकी स्वर शुद्ध। सुलझे हुए कलाकार, जब कोमल निषाद का थोड़ा प्रयोग करते हैं। उसका कारण केवल यही है कि अगर हमीर के पंचम को षड़ज मान लेवें। तब म॒ प ग म ध यह स्वरावली निं स धं निं॒ रि, इस प्रकार जयजयवन्ती राग का रूप धारण कर लेती है, और निं सा धं निं॒ रि, के साथ ग॒ रि स यह कोमल गंधार युक्त ग॒ रि स को हमीर के नि॒ ध प का स्थान प्राप्त होता है। इस लिए थोड़ा कोमल निषाद का प्रयोग भी इस राग में होता है परन्तु कामोद और गौड़ सारंग में सर्वथा निषेध है।

इस में धैवत अंश स्वर हैं पंचम को वादी मानने वाले, शब्दों में ही पंचम को वादि मान कर रह जाते हैं। जब इसको प्रत्यक्ष गाते हैं तब धैवत ही अंश रहता है। और सहसा उन से ऐसा ही गाया जाता है, क्योंकि राग का रूप ही तब स्पष्ट होता है। तो उनका वचन और कर्म एक न होने से शंका होती है और अगर क्रियात्मक रूप से पंचम को अंश बना कर गायें, तब उनका हमीर राग भ्रष्ट होता है। हमीर बनता ही नहीं। यह उत्तरांग प्रधान राग होने पर भी मध्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रात्रि के पश्चात से दिन के १२ बजे तक में, किसी समय में नहीं गाया जाता, अपितु रात्रि के दूसरे पहर में गाया जाता है। यही शास्त्र सम्मति, गुणीजन सम्मत तथा प्राकृतिक नियमों से भी प्रकटता है। तो चूंकि रात्रि के दूसरे पहर में गाया जाता है, और पूर्वांग उत्तरांग के केवल आधार पर रागों के समय निश्चित करने वालों, या मानने वालों का वश न चल सका तो इसका वादी ही पंचम को कहने लगे। जिस से यह उदाहरण पुष्ट होता है। 'जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट' उत्तर में 'तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू'। इसका भावार्थ स्वयं समझ कर गुणीजन अपने अपने हृदय, बुद्धि से निर्णय लेंगे। ऐसा नम्र निवेदन है।

विचित्र बात तो यह है कि ऐसे ही प्रश्नों के उत्तर न बन पड़ने से, पूर्वांग को सा रि ग म, के बदल में प जोड़ कर सा रि ग म प, तक और उत्तरांग को प ध नि सां के बदल में एक स्वर पूर्व का जोड़ कर म से आरम्भ कर दिया, और म प ध नि सां, यूं कर दिया। तो मध्यम तथा पंचम इन स्वरों की परिस्थिति, को कहीं का न छोड़ा। इन की इतनी दयनीय अवस्था हमीर में पंचम वादी कहने वालों ने कर दी, कि, निर्दोष पंचम अपना सा मुंह लेकर किनारे ही रहता है अंशत्व फिर भी धैवत ही कर रहा होता है।

सीधे ढंग से इस का आरोह, नि सा ग म ध नि सां से औडव, और सा रि ग म ध नि सां से षाडव परन्तु दोनों प्रकारों में ध, नि ध सां ऐसे वक्र रूप से भी धैवत लेते हैं और अवरोह में सम्पूर्ण वक्र चलन रहता है। अवरोह सां नि ध प म प ध प ग म रि, ग म ध, प, ग म रि, सा। मुख्यांग स रि स, ग म ध, अथवा म् प ग म ध, इस आरोह अवरोह तथा मुख्यांग से और पुरानी बन्दिशों को प्रत्यक्ष गाने से तथा प्रचलित पद्धति सभी, धैवत के अंशत्व का अनुमोदन करते हैं। और पंचम वादि मानने वालों के जिम्मे इतनी बात रह ही जाती हैं (कहत बनत है, सुनत बनत नहीं) इतना होने पर भी, एक विचित्र और विशेष बात यह हैं हमीर, केदार, छाया नट, बिहाग, नंद, कामोद इत्यादि ऐसे अनेक रागों के अन्तरे का उठाव, पंचम स्वर से भी अनेक बार चलता हैं, चाहे और स्वरों से भी अन्तरे उठते हैं।

आलाप राग हमीर

सा सा नि रि ऽ सा ग म नि ध ऽ नि ध ऽ म् प ऽ ग म रि ग म नि ध

ऽ नि ध ऽ म् प ऽ प ध म् प प ग ऽ म रि सा | रि रि सा नि सा प

ग ऽ म रि ग म नि ध ऽ ऽ म् प ऽ ऽ ध ध प म् प ग म नि ध ऽ नि

ध ऽ नि म् ऽ प ऽ प ध म् प ऽ ग म रि ग म नि ध ऽ ऽ म् प ऽ ऽ ग

म रि सा | सा रि ग म ध म् प ग म नि ध नि ध ऽ म् प ऽ म् प

ध म् प ग म रि सा नि ध ऽ नि ध ऽ सां ऽ नि सां रि सा ग म नि ध ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि ध सां नि सां ऽ ग म रि सा नि ध नि म॒ प ग म रि ग म नि ध ऽ नि

ध ऽ सां ऽ नि ध प प ध म॒ प ऽ ग म रि सा | ग म ध नि सां ऽ नि

सां रिं नि सां नि ध ऽ प म॒ प ध ग म नि ध ऽ ध नि सां रिं नि सां ध म॒

प ध म॒ प ग म नि ध ऽ म॒ प ऽ ग म रि ग म ध म॒ प ऽ प ध म॒

प ऽ ग म रि सा | रि सा ग म नि ध ऽ म॒ प ऽ ग म रि ग म नि ध ऽ

सां नि सां ऽ रि ग म ध म॒ प ग म नि ध ऽ ग म रि ध ध प सां ऽ

नि सां रिं नि सां नि ध ऽ म॒ प ऽ ग म ध म प ऽ ग म रि ग म प ग म

रि सा नि सा ग म नि ध ऽ सां ऽ नि सां रि सा सा ग म नि ध ऽ सां ऽ

नि सां सा रि ग म ध नि सां रिं नि सां ध म॒ प ग म नि ध ऽ सां ऽ नि

सां म॒ प ध नि सां रिं सां गं मं रिं सां रिं नि सां ध म॒ प ऽ ध म॒ प ग

म रि ग म ध म॒ प ग म ध रि रि सा नि सा ध ध प म॒ प ग म रि

ग म ध म॒ प ऽ ग म रि सा |

तानें राग हमीर

सा रि नि सा ग म रि सा, रि सा नि सा ग म ध ध म॒ प ग म रि सा, रि रि
सा ग म रि ग म ध ध म॒ प ग म रि सा, सा रि ग म ध नि सां नि ध प ग म
रि सा नि सा, नि सा ग म, ध ध ध नि, सां नि ध प, म॒ प ध ध म॒ प ग म रि सा नि
सा, रि नि सा, ध म॒ प, रिं नि सां, ध म॒ प, ग म ध ध म॒ प, ग म रिं सा, रि
सा ग म रि सा नि सा, नि ध सां नि ध प म॒ प, रिं सां गं मं रिं सां नि सां, ध
नि सां रिं सां नि ध प म॒ प ध ध म॒ प ग म रि ग म ध म॒ प ग म, ध ध म॒
प, ग म रि सा, सा रि नि सा, प ध म॒ प, सां रिं नि सां प ध म॒ प, ध नि सां
रिं सां नि ध नि म॒ ध म॒ प ग म रि ग म ध म॒ प ग म रि सा, नि सा ग म
ध नि, सां रिं रिं, सां रिं रिं सां रिं सां नि ध प म॒ प ध ध म॒ प ग म रि
सा। सा नि, रि नि सा, प म॒ ध म॒ प, सां नि रिं नि सां, प म॒ ध म॒ प, ग म
रि ग म ध म॒ प ग म रि सा, सा रि सा ग म रि ग म, ध ध म॒ प ग म रि
सा, प ध म॒ प ध म॒ प ग म रि ग म ध ध म॒ प ग म रि सा, सा रि ग म ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नि सां रें गं मं रें सां, ध नि सां रें सां नि ध प, म् ध म् प ग म रि ग म ध म् प ग म रि सा, रि सा ग म ध ऽ ऽ ऽ, नि ध सां नि रें ऽ ऽ ऽ, गं मं रें सां नि सां, ध नि ध प म् प ग म रि सा नि सा, सा रि ग म ध ध प. ध ध प, म् प ध ध म् प ग म रि सा, ग म ध नि सां रें सां, सां रें सां, रें रें सां नि ध प म् प ग म ध ध म् प ग म रि सा, रि सा सा, ग म रि, ध ध प, रें नि सां गं मं पं, गं मं रें नि सां, ध नि सां रें नि सां, रें नि सां, रें नि सां, रें रें सां नि ध प म् प, ध म् प, ध म् प, ध ध म् प ग म, रि ग म ध म् प, ग म रि सा, नि सा ग म ध नि सां नि ध प म् प ग म रि सा।

राग हमीर ख्याल, ताल तिलवाड़ा

स्थाई—ये पिया हम जानी न जानी, तोरे मन की बतियां ॥

अन्तरा—तरपत बीते घरि पल छिन, मोहे चैन न पावे, कछु न सुहावे ॥

स्थाई

सा रि सा ग म रि नि ध नि ध म् प ग ऽ म | ध ऽ नि म् प ऽ प म् ध
ये · · · · · · · पि या · · ह · म | जा · नी · · · ना जा ·
| १ ५

म् प ऽ प ग ऽ म रि ऽ ग म नि ध ऽ नि ध ध नि सां रें ऽ नि सां ऽ नि ध नि
· · · · · · · नी · तो · रे · · · · · म · न · · की · · ब · ·
+ १३

म् प ग म रि सा ||
ती · यां · · · ||

अन्तरा

प प सां सां | सां ऽ ध नि सां रें ऽ सां सां मं गं मं रें सां ऽ नि ध ऽ नि ध ऽ
त र प त | बी · · · · · · ते घ · रि · प ल · छि · · न · ·
| १ ५ +

नि म् ऽ प प म् प ऽ म् ध म् प ग | म रि सा रि ऽ सा ग म रि ग म ध नि
मो · · · हे · · · चै · · · न | · न पा · · वे क छु ना · सु हा ·
१३ | १ ५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध ऽ सां नि सां ऽ सां रिं नि सां नि ध नि म॒ ध म प प ग म रि सा ||| ध नि
० ‿ — ‿ ० ‿ ३ ३ ३ ० ‿ ० ‿ ३ ३ ३ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ||| ‿ ‿
· · · · · · · · · · · · · वे · · · · · · · · ||| ये ·
\+ १३

सां रिं नि सां ध प ध म॒ प ग म | ध
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | —
· · · · पि या · · · ह म | जा
| १

राग हमीर ख्याल रुद्र ताल मात्रा ११

(ताली १, २, ४, ५, ६, ८, ९, १० पर खाली ३, ७, ११ पर)

स्थाई झाली री उनि सों कौन कहे जाय, उन बिन नेक पलक नहीं लागे।

अन्तरा—निंदिया लागे मोहे, पलक न लागे मोरी, तरपत बीते रैन सगरी जागी।

स्थाई

ग ऽ म | ध ऽ ध ध नि म॒ ऽ प ग म रि ग म॒ ध म॒ प ग म रि स रि सा |
० ० ० | — — ० ० ‿ ० ‿ — ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० |
झा · ली | री · उ नि सों · · · कौ · न क हे · · · जा · य उ न बि |
\+ | १ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + |

सा म ग म रि ग म ध ध ध नि सां रिं सां रिं नि सां ध नि प ध म॒ प ग
‿ ‿ ‿ ‿ — ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
न · · · · ने · क प ल क न हीं ला · · · गे · · · · · ·
१ २ + ४ ५ ६ + ८ ९

म रि ||
‿ ० ||
· · ||
१० ||

अन्तरा

प प सां | सां ऽ ऽ ऽ सां ऽ रिं सां नि ध ऽ नि ध ऽ म॒ प ऽ प गं गं | मं ऽ
० ० ० | — — — — ० ० — ‿ ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० | — ०
निं दि या | ला · · · गे · मो हे · · · · · · · · · · · प ल क | · ·
\+ | १ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + | १ २

रिं नि सां ऽ ऽ नि ध ऽ ऽ ध नि ध सां रिं सां रिं सां नि ध प म॒ प ग म रि |
० ‿ ० ‿ — ‿ ० ‿ — ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० |
न ला · · · · · · · गे · · मो · री · · · · · · · · त र प |
\+ ४ ५ ६ + ८ ९ १० + |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ ग ग म नि ध ऽ ऽ म् प ध नि सां गं मं रिं सां रिं रिं सां नि सां नि ध ध प
० ० ० ० ० ० ० ०
· त बी · ते · · · रै · · · न स · ग री जा · · · · · · · ·
१ २ + ४ ५ ६ + ८ ९

म् प प ग म रि |||
गी · · · · ·
१०

राग हमीर ताल रूपक

इस के सम पर ताली न लगा कर, खाली दिखाते हैं।

स्थाई—सजनी आज मोर घर चाव, प्रीतम आये मोरे मन्दिरवा पहिर के
मोतियन के हरवा, साजत सुन्दर नार ।।

अन्तरा—गावो बजावो मिल सखी सब, राग के व्योरे बतावो,
नाचत दे दे ताल धि धि किट ता किट धुम किट बाज ।।

स्थाई

ध नि ध नि सां रिं | नि सां ध म् प ग म | ध ऽ प ध नि ध नि सां रिं |
— — ० ० ० ० | — — — — — — | — — — — ० ० ० ०
स ज नी · · · | आ · ज मो रे घ र | चा · व स ज नी · · ·
४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६

म म् म प ऽ प ऽ | म् म् म् प प प ऽ | ग म रि ग म ध प | ग म रि
— — — — — — — | — — — — — — — | — — — — — — — | — — —
प्री त म आ · ये · | मो रे मं दि र वा · | प हि र के · मो ति | य न के
+ ४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६ | +

सा रि सा ऽ | सां सां सां ध नि सां रिं | नि सां ध || ध नि ध नि सां रिं
— — — — | — — — — — — — | — — — || — — ० ० ० ०
ह र वा · | सा ज त सुं · द र | ना · र || स ज नी · · ·
४ ६ | + ४ ६ | + ||

अन्तरा

प प प प नि ध | सां सां सां सां सां सां | ध ऽ ध ध नि सां रिं | नि सां
— — — ~ — — | — — — ~ — — | — — — — — — — | ~ —
गा वो ब जा वो · | मि ल स खी स ब | रा · ग के · व्यो · | रे ब
+ ४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६ | +

ध प | प गं गं गं मं रिं सां | सां ऽ सां सां सां सां सां | सां सां सां ध नि
~ ~ | — — — — — — — | — — — — — — — | — — — — —
ता वो | ना च त दे · दे · | ता · ल धि धि कि ट | ता कि ट धु म
४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६ | + ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सां रिं | नि सां ध |||
— — | — — — |||
कि ट | बा · ज |||
६ | + |||

नोट–इस राग में ध पर सदैव नि का कण लगाईये ।

हमीर द्रुत एक ताल

स्थाई–तेंडरे कारण मेंडरे यार, आवी वे, तपदी सिकेंदी जिंदरी मोरी ।

अन्तरा–रमली कमली फिरदी हर रंग तुमरे मिलन को ।।।

स्थाई

नि ध नि सां नि सां ध नि म् ऽ प ध म् प ग म | नि ध ऽ ऽ ऽ सां ऽ सां
⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ० ० | ⌣ ⌣ ⌣ ० — · — ⌣
तें · ड रे का र ण में · · ड रे या · · र | आ · · · · वी · वे
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

रिं नि सां ध म् प ऽ | ग म रि ग म ध प ग म प ग म रि सा ||
⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ | ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ||
· · · · · · · | त प दी सि कें · दी जिं द री मो · · री ||
६ | १ + ३ + ५ ६ ||

अन्तरा

प प सां सां सां सां सां नि रिं सां | सां मं गं मं रिं सां ध नि ध सां नि रिं
० ० — ० ० — ⌣ ⌣ ० — | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ⌣
र म ली क म ली फि · र दी | ह · र · रं ग तु म रे मि ल न
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

सां ध प || प नि ध सां नि रिं सां ध प म् प ध नि सां ध प म् प ग म |
⌣ ० ० || ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० |
· को · || तु म · रे · का · र ण में · · · · उ रे या · · र |
६ || १ + ३ + ५ ६ |

राग हमीर द्रुत एकताल

स्थाई–मन रे कौन कुमती तैं लीन्ही,
पर दारा निंदा रस राच्यो, राम भक्ति नाहिं कोनी ।

अन्तरा–मुक्ति पथ जान्यो तैंनाहिंन, धन जोरन को धायो ।
अन्त संग काहू नहिं दीनो, बिरथा आप बंधायो ।

अन्तरा २.–न हरि भजे न गुरुजन सेयो, नाहिं उपज्यो कछु ज्ञाना ।
घटही मांहि निरंजन तेरे, तैं खोजत उद्याना ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा ३.—बहुत जन्म भ्रमत तैं हारयो, अस्थिर मति नहिं पायो ।
मानस देह पाय पद हरि भज, नानक बात बतायो ।

स्थाई

ग म | नि ध ऽ ऽ सां नि ध प म् प | ध म् प ग म ध नि रिं सां ध नि ध नि
० ० | ‿ ‿ ० — ० ० — — ० ० | ० ० — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿
म न | रे · · · कौ · · न कु म | ति तैं · ली · न्ही · · · · · · प
६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

सां नि ध | प म् ध प ग म रि ग म ध प ग म रि सा रि | सा सा रि ग
‿ ‿ ‿ | ‿ ‿ ० — ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० | ० ० ० ‿
· र · | दा · · रा निं · · दा · · · र · स रा · | च्यो रा म भ
| १ + ३ + ५ ६ | १ +

म ध नि सां नि ध म प ||
‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ||
क्ति · न हिं की · नी ||
३ + ५ ||

अन्तरा

प प | सां सां सां सां सां सां रिं सां सां नि ध ऽ नि ध ऽ | ध नि सां रिं नि
० ० | — ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | — ० ० ० ०
मु क्ति | प थ जा न्यो ते ना · हि न ध · · न · · | जो र न को धा
६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३

सां ध प नि सां गं | ऽ मं रिं सां नि सां ध म् प ग म ध नि सां | नि ध पं
० ० — ० ‿ ‿ | ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० | ० ० ०
· यो · भ्रं त सं | · ग का हु न हिं दी · नो वि र था · · | आ · प
+ ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १ +

म् प ध प ग म रि सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० — ||
वं · · · धा · यो · ||
३ + ५ ||

राग हमीर तीनताल

स्थाई—जा कोऊ वृन्दा वन रस चाखै, भवन चतुर्दश तिहूं लोक लो ।
सुपने हूं नहीं अभिलाखै ।

अन्तरा—ललित किशोरी परे कोन में, शाम राधिका भाखै,
चुगल रूप बिन पलक न खोले, लोभ दिखावो लाखे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

ध नि सां नि ध प म् ध प | प प ग म ध ध प म् प नि ध प प | ग ग म
⌣ ⌣ ० ० ० ⌣ ⌣ ० — | ० ० ० ० — — ० ० ० ० — ० ० | ० ⌣
जा · · क्रो ऊ वृं · · दा | व न र स चा खै भ व न च तु दं श | ति हूं ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

प ग म रि सा सा रि ग म ध प प | ग म ध नि रिं सां नि ध ||
० ० ० ० — ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ||
· लो · क लौं सु प ने · हू न हीं | अ भि ला · · खे · · ||
३ + ७ | १ ३ ||

अन्तरा

प प सां सां सां सां | सां ध सां रिं नि सां ध प सां ध प म् ध प | ग म ध
० ० ० ० — — | ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० — — ० ० ० ० — | ० ० ०
ल लि त कि शो री | प रे · · को · न में शा म रा · धि का | भा · ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

नि़ सां ध प सां गं रिं गं मं रिं सां सां | ध नि सां रिं सां नि सां ध प म् प ध
० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० — ० ०
· · खै · यु ग ल रू प बि न | प ल क न खो · · ले · लो भ दि
३ + ७ | १ ३ +

म् प ग म | ध नि सां नि सां ध म् प |||
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० |||
खा · वो · | · · · ला · खे · · |||
७ | १ ३ |||

राग भीम पलासी

दिन के तीसरे प्रहर के रागों में अत्यन्त मधुर, हृदय मोहक भाव उत्पन्न करता है। सरस और सरल राग है, साधारण गायक भी इसे सहज से गा लेते हैं। इसमें गांधार, निषाद कोमल, बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ, धैवत वर्ज्य है। अवरोह में सभी स्वर लगते हैं इसलिए औडव सम्पूर्ण जाति कही जाती है। इसके ऋषभ को षडज का और धैवत को पंचम का कण लगा कर गाना, केवल रक्ति को ही नहीं बढ़ाता अपितु इस राग में यह क्रिया अनिवार्य है इस राग में गांधार स्वर को प्रशस्त्व प्राप्त है। कोई कोई इस में मध्यम अथवा पंचम को वादि मानते हैं। पंचम न्यास मानने में किसी को भी आपत्ति नहीं क्योंकि प्रत्यक्ष गाते बजाते समय पंचम पर न्यास देते ही हैं। इन्हीं स्वरों में धनाश्री मानना उचित नहीं, उस के स्वर इस से भिन्न हैं। केवल भीम नाम का राग भी दो प्रकार से माना जाता है। इसी प्रकार पलासी का स्वरूप भी इससे भिन्न है। और उपरोक्त विवरण भीम पलासी का है। काफी राग के स्वरों का चलन सम्पूर्ण होने के साथ २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध गांधार निषाद भी कभी कभी उसमें लगाते हैं। परन्तु भीम पलासी में केवल कोमल, गांधार निषाद ही होने चाहिये। भीम पलासी और तिलंग के मिश्रण से हंस ककणी राग होता है इसमें दोनों गांधार दोनों निषाद लगते है। नाद चिन्तामणी के आरोह में धैवत वक्र रूप से लगता है और धानी राग को औडव भी, षाडव भी, और कोमल धैवत युक्त धानी को सातों स्वरों से गाते हैं। आगे चलकर यह सभी राग तथा और इसके निकट के राग दिये जाएेंगे।

प सा,
आरोह :—सा, नि॒ सा ग॒ म प नि॒ सां अवरोह :—सां नि॒ ध, प, म प ग॒ म, प ग॒, म ग॒ रि
प सा प
सा, अथवा सां नि॒ ध, प, म ग॒ रि सा, मुख्य अंग नि॒ सा ग॒ म प नि॒ ऽ ध ऽ, प, म प ग॒, म।

राग आलाप, भीमपलासी

सा सा नि॒ ऽ सा नि॒ ऽ पं सा नि॒ ऽ सा नि॒ सा ऽ | सा नि॒ ऽ सा नि॒ ऽ सा

म ग॒ ऽ सा रि ऽ सा|सा रि नि॒ सा ऽ नि॒ पं धं ऽ पं पं मं ऽ धं पं ऽ पं नि॒ पं धं

ऽ पं नि॒ नि॒ सा म ग॒ ऽ सा रि ऽ सा | रि रि सा नि॒ सा नि॒ पं सा नि॒ ऽ

सा रि नि॒ ऽ सा ग॒ सा रि ऽ सा | रि नि॒ सा नि॒ पं सा नि॒ रि सा रि नि॒ पं

नि॒ सा नि॒ सा ऽ | रि नि॒ रि सा म म ग॒ ऽ सा म ग॒ ऽ म म ग॒ ऽ सा रि ऽ

सा | रि नि॒ सा नि॒ प धं ऽ पं धं मं ऽ धं पं ऽ सा नि॒ ऽ रि सा ऽ म ग॒ ऽ

सा म ग॒ म ग॒ सा रि ऽ सा | सा नि॒ रि सा म ग॒ प म प म प ऽ

सा सा नि॒ ऽ ऽ रि रि सा ऽ ऽ म म ग॒ ऽ ऽ प प म ऽ ऽ प म प ऽ सा रि

नि॒ सा म प ग॒ म प ध म प म ग॒ ऽ म ग॒ ऽ म ग॒ प म प म प ऽ ध म प

म ग॒ ऽ म सा म ग॒ म प ग॒ म ग॒ सा रि ऽ सा | नि॒ सा ग॒ म प नि॒ ऽ प ध ऽ प

प म ध प सां नि॒ ऽ प ध ऽ प पं मं धं पं सा नि॒ ऽ पं धं ऽ प सा ग॒ सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ म ग़ म प म प सां नि़ ऽ प ध ऽ प सा नि़ रि सा म ग़ प म ध प सां नि़

ऽ प ध ऽ प म ध प म प ग़ म रि सा म ग़ प म ध प म ग़ ऽ म ध म प

म ग़ ऽ म ग़ सा रि ऽ सा | रि नि़ ऽ रि सा ऽ म ग़ ऽ प म ऽ ध प ऽ सां

नि़ ऽ प ध ऽ प सा नि़ ऽ सा ग़ म ग़ ग़ म प म म प ध प प नि़ सां नि़

सां नि़ प ध ऽ प ध ध प म प ऽ सां नि़ ऽ म प ध म प सां नि़ ऽ प ध ऽ

प प म ध प नि़ प ध ऽ प म प ध म प म ग ऽ म सा ग़ म प ग़ म ध म

प म ग़ ऽ म सा म ग़ सा रि ऽ सा | नि़ सा ग़ म प नि़ ऽ प नि़ सां नि़

सां ग़ म प म म प नि़ प प नि़ सां नि़ सां नि़ सां ऽ प म ध प सां नि़ रिं

सां मं गं ऽ सां रिं ऽ सां सां रिं सां रिं ऽ सां नि़ सां नि़ सां ऽ नि़ प ध प ध ऽ प

प म ऽ ध प ऽ सां नि़ ऽ प ध ऽ प ग़ म प नि़ सां ऽ नि ध प म ध प ग़ म

सा म ग़ म प म ग़ ऽ सा नि़ ऽ सा ग़ सा रि ऽ सा |

नि़ सा ग़ म प नि़ सां प सां ऽ नि़ सां रिं नि़ ऽ रिं सां ऽ मं गं ऽ सां रिं ऽ सां

नि़ नि़ सां नि़ सां नि़ ऽ प ध ऽ प म ध प म ग़ ऽ म रि नि़ रि सा म ग़ प

म ध प सां नि़ सां रि नि़ ऽ सा म ग़ ऽ सा रि ऽ सा | प म ध प ग़ म प

नि़ सां नि़ सां ऽ नि़ सां गं सां रिं ऽ सां नि़ नि़ सां नि़ प ध ऽ प म ध प

नि़ प ध ऽ प म प म प नि़ प नि़ सां नि़ सां गं सां रिं ऽ सां सां नि़ ऽ प ध

ऽ प म ध म प ग़ म प म ध प नि़ सां नि़ रिं सां मं गं ऽ सां रिं ऽ सां रिं

रिं सां नि़ सां नि़ ऽ प नि़ सां गं सां रिं ऽ सां नि़ सां नि़ ध प म ध प नि़ प

ध ऽ प म ध म प ग़ म सा म ग़ प म ध प म ग़ ऽ सा रि ऽ सा |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान, राग भीमपलासी

निं सा म ग॒ रि सा, निं॒ सा ग॒ म प प म ग॒ रि सा। सा निं॒ रि सा म ग॒ प म प नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं॒ सा ग॒ म प म ग॒ म प नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं॒ सा ग॒, सा ग॒ म, ग॒ म प नि॒ ध प म ग॒ रि सा, निं॒ सा ग॒ सा, सा ग॒ म ग॒, ग॒ म प म, प नि॒ ध प म ग॒ रि सा। म ग॒ रि सा, प नि॒ ध प, सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं सा ग॒ सा, सा ग॒ म ग॒, ग॒ म प म, म प नि॒ प, प नि॒ सां नि॒, सां नि ध प म ग॒ रि सा, निं॒ सा ग॒ म प नि॒ सां रिं सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं॒ सा निं, सा ग॒ सा, ग॒ म ग॒, म प म, प नि॒ प, नि॒ सां नि॒, सां रिं सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं॒ सा निं॒, ग॒ म ग॒, सा ग सा, म प म, ग॒ म ग॒, प ध प, म प म, नि॒ सां नि॒, प नि॒ प, सां रिं सां, नि॒ सां गं॒ रिं सां नि॒ ध प म ग रि सा निं॒ सा। सा रि निं॒ सा, म प ग॒ म, प ध म प, नि॒ सां प नि॒ सां मं गं॒ रिं सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। सा निं॒ निं॒, ग॒ सा सा, म ग॒ ग॒, प म म, ध प प, सां नि॒ नि॒, सां मं गं॒ रिं सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा निं॒ सा। नि॒ सा ग॒ म प नि॒ सां रिं नि॒ सां प नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं॒ सा ग॒ म प, ग॒ म प, ग॒ म प नि॒ ध प म ग॒ रि सा, प नि॒ सां, प नि॒ सां, प नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। म ग॒ म ग॒ रि सा, सां नि॒ सां नि॒ ध प, मं गं॒ मं गं॒ रिं सां, सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। सा रि निं॒ सा, म ग॒ रि सा, रि निं सा, म ग॒ म, प म प, ध म प, नि॒ प नि॒, सां नि॒ सां, रिं नि॒ सां, गं॒ रिं सां, सां रिं सां नि॒ ध प म प, सां नि॒ ध प, म प नि॒ ध प म, ग॒ म प नि॒ ध प म ग॒ रि सा। सा ग॒ म ग॒ रि सा, प नि॒ सां नि॒ ध प, सां गं॒ मं गं॒ रिं सां, प नि॒ सां नि॒ ध प, ग॒ म प नि॒ सां मं गं॒ रिं सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा। सा निं॒ रि सा, रि निं॒ रि सा, म ग॒ प म, प ग॒ म ग॒, प म ध प, ध म ध प, सां नि॒ सां प ध म ध प, सां नि॒ रिं सां, रिं नि॒ रिं सां, मं गं॒ रिं सां नि॒ सां, गं॒ रिं सां नि॒ प नि॒, सां नि॒ ध प म प, निं॒ ध प म ग॒ म, प नि॒ ध प म ग॒ रि सा। निं॒ सा, सा ग॒, ग॒ म, म प, प नि॒, नि॒ सां, सां गं॒, गं॒ रिं, रिं सां, सां नि॒, नि॒ ध, ध प, प म, म ग॒, ग॒ रि, रि सा। निं॒ सा ग॒ म प नि॒ सां मं, मं गं॒, गं॒ रिं, रिं सां, सां नि॒, नि॒ ध, ध प, प म, म ग॒, ग॒ रि, रि सा, निं॒ सा। निं॒ सा ग॒ म ग॒ प ऽ प, म प ग॒ म प नि॒ ऽ नि॒, प ध म प नि॒ सां ऽ सां, सां रिं नि॒ सां गं॒ मं ऽ मं, गं॒ मं गं॒ पं मं पं ऽ पं, मं पं गं॒ मं पं गं॒ ऽ मं, गं॒ रिं सां रिं नि॒ सां ऽ सां, प नि॒ ध प म प ऽ प, म प ग म सा ग॒ ऽ ग॒, सा रि निं॒ सा, म ग॒ रि सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी (सारिगम) झपताल

स्थाई

प म प ग॒ म ग॒ रि नि॒ नि॒ सा | नि॒ नि॒ सा ऽ म ग॒ ऽ रि ऽ सा | म प
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १

(सां प)
ग॒ ऽ म प नि॒ ध ऽ प | ध म प ग॒ म म ग॒ रि सा ||
३ + ८ | १ ३ + ८ ||

अन्तरा

सा सां सां ऽ सां नि॒ नि॒ प नि॒ सां | नि॒ नि॒ प नि॒ सां मं ऽ गं॒ रें सां | रें
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १

(प)
सां रें नि॒ सां नि॒ नि॒ ध ऽ प | म प नि॒ सां नि॒ ध प प ग॒ म ||
३ + ८ | १ ३ + ८ ||

राग भीमपलासी ख्याल एक ताल बिलंबित

स्थाई—गरीब निवाज़, साईं करम क़रो, पाक परवरदिगार।

अन्तरा—दीन दुनी के तुम प्रति पालक, करम करो पाक परवरदिगार।

स्थाई

सा सां नि॒ प सां नि॒ | नि॒ सां ऽ रें सां सां नि॒ ऽ प ध ऽ प ध म ऽ म प ऽ
ग री · · ब नि | वा · · · · · · · · · · ज · सा · ईं · ·
· ११ | १ + ५

(रि रि)
ग॒ ग॒ म ग॒ सा रि ऽ सा ऽ ’ रि रि सा नि॒ सा ऽ नि॒ सा | सा म ऽ म म ग॒
क र म क रो · · · · · पा · · · · · · · | · · · · क प
+ ९ ११ | १ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म   म म स म
म प म ग म ग म ध म प ग ग म ग सा रि निं सा ऽ ||
ऽ ० ऽ ऽ ० ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ० ० — — ऽ ० ऽ ० ऽ
· · र · · व · · · · र · दि गा · · · र
५   +   ९

अन्तरा

नि   सां   सां
ग म प सां नि ऽ सां | सां ऽ प नि सां गं गं ऽ रिं रिं ऽ सां नि ऽ ध प ध
दी · न दु नी · · | के · तु म प्र ति पा · · · · · · · · · ·
११   १ +   ५

म म सा   सा   रि
प प ऽ म ध प प म ग ग म ग रि सा रि रि सा निं सा ऽ निं सा |
· ल · · क · · · क र म क रो · पा · · · · · · ·
+   ९   ११

म म स म म
सा म ऽ ऽ म ग म प म ग म ग म ध म प ग ग म ग ग सा रि ऽ
ऽ ऽ ० ० ० ऽ ऽ ० ऽ ऽ ० ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ० ० — ० ० ऽ ० ऽ
· · · · क प · · र · · व · · · · र · दि गा · · · ·
१   +   ५   +   ९
निं सा |||
ऽ ०
र ·

राग भीमपलासी झपताल

स्थाई–आवो आवो आवो घर शाम सुंदरवा, बास बसावो रास रचावो आवो।

अन्तरा–विकल भये गोप सखा सब, आवो आवो नन्द दुलारे ।।

स्थाई

गं रिं सां रिं ऽ सां नि प सां ऽ नि ध प म प सां | नि सां नि प ध ऽ प ग
— ऽ ऽ ० ० ऽ ऽ ऽ ० ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० | ऽ ० ऽ ऽ ऽ ऽ ० ०
आ वो · आ · वो · आ · · वो · · · घ र | शा · · म · · सु द
+   ८ | १   ३

ग रि सा रि सा निं सा सा म म ऽ प म ग म प नि प नि | प नि सां नि
० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० | ऽ ऽ ऽ ऽ
र वा · बा · · · स ब सा · · वो · · रा · स र | चा · · ·
+   ८ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा |
० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
वो · आ · · · वो · · ·
३

अन्तरा

प नि॒ प नि॒ नि॒ सां नि॒ सां रिं सां ऽ प नि॒ सां रिं | सां रिं सां नि॒ सां नि॒ प
० ० ० ० ‿ ० ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० ० | ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ०
वि क ल भ ये · · · · · · गो · प स | खा · · · · · स
+ ८ | १ ३

सां नि॒ ध प सां मं गं॒ रिं सां नि॒ सां गं॒ रिं सां नि॒ सां प नि॒ प नि॒ सां नि॒ सां
‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
· · ब · आ · · · वो · आ · · · वो · नं · · द · · दु
+ ८

रिं सां नि॒ सां नि॒ | प नि॒ सां नि॒ ध प सां नि॒ ध प म ग॒ रि सा निं॒ सा |||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
· · ला · · | · · · · · · · रे · · · · · · · ·
| १ ३

राग भीमपलासी रुद्रताल

(ताली १, २, ४, ५, ६, ८, ९, १० पर खाली ३, ७, ११ पर)

स्थाई–बांसुरी बजाई प्यारे रे घनशाम ।

अन्तरा–बांसुरी से उपज्यो अमृत रस, भौम प्रकाश ।
नाथ कृष्ण बिन सूनी सब, गोकुल गाम् ।।

स्थाई

रि निं॒ ऽ रि सा ऽ म ग॒ ऽ प म ऽ ध प ऽ सां नि॒ ऽ प ध ऽ प म ऽ प सां
‿ ० ‿
बां · · सु · · री · · ब · · जा · · · · · ई · · · · · प्या ·
+ ४ ५ ६ +

नि॒ ऽ प ध ऽ प ग॒ म प म ग॒ ऽ सा रि ऽ सा | रि निं॒ सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० | ० ० —
· · रे · · · · · रे · · · घ · · न | शा · म
८ ९ १० + | १ २

अन्तरा

म ध प ऽ म ग॒ ऽ म प सां नि॒ सां सां नि॒ ऽ सां नि॒ सां सां रिं नि॒ ऽ
० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ — ‿ ० ‿ ० ० ० ० ‿ ० ‿
बां सु · · री · · से उ प · ज्यो अ · · मृ त र स भौं ग ·
+ ४ ५ ६ + ८ ९ १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां गं प प | रिं नि प ध ऽ प म प ग म प सां नि ऽ सां सां प सां नि सां नि
0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
का र | का · · · · श ना · थ कृ · ष्ण · · बि न सु · · · ·
+ | १ २ + ४ ५ ६ +

प ध ऽ प म ग म प म ग ऽ रि सा | रि नि सा |||
0 0 | 0 0 —
नी · · · स · ब गो कु · · ल · | गा · म |||
८ ९ १० + | १ २ |||

राग भीमपलासी द्रुत एकताल

स्थाईं–जोगन प्रेम वरण नहीं, वाणी वति मन शास्त्र,
प्रेम धाम घाटि नाहीं ।।

अन्तरा–ब्रह्म साध मद प्रेम, बहु रूप बहु मान्यो,
ये वीणा समथा जी, एक, एक भगवान् ।।

स्थाई

सा म ग प म ध प म ग ऽ सा ग म ग रि सा रि निं ऽ सा | प सां नि ऽ सां
0 0 0 0 0 0 | 0 —
जो · · ग . न · प्र · · · · म व र ण ना · · ही | वा · · · णी
१ + ३ + ५ ६ | १ +

सां प ऽ सां नि ऽ प सां ऽ नि प ध ऽ प प | प ध ऽ म म प ऽ ग सा म ऽ
0 0 0 0 | 0 0 0 0 0
व · · ति · · म · · न शा · · · स्त्र | प्र · · म धा · · म घा · ·
३ + ५ ६ | १ + ३ +

ग रि निं सा |||
0 0 0 0
टि ना · ही |||
५ ६ |||

अन्तरा

प ध प ऽ ग ऽ म प नि प प नि नि सां सां | सां नि सां नि ऽ सां नि ऽ प
0 0 0 0 0 0 0 |
ब्र ह्म · · सा · ध म द · प्र · · · म | ब · हु · · · · रु
१ + ३ + ५ ६ | १ +

सां ऽ सां गं ऽ सां रिं ऽ सां ऽ नि सां नि प ध ऽ प | सां नि ऽ सां नि ऽ सां
0 0 0 0 | 0
· · प · · ब · · हु · मा · · · · · न्यो | ये · · · · · वी
३ + ५ ६ | १ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गं॒ सां रिं सां सां नि॒ ऽ सां नि॒ सां नि॒ प ध ऽ प | प ध ऽ म म प ऽ ऽ ग॒
० ० ० ० ० ०
• णा • • स • • म • • था • • • जी | ए • • क ए • • •
३ + ५ ६ | १ + ३

सा म ऽ ग॒ रि नि॒ सा |||
० ० ० ० ०
भ • • ग वा • न्
+ ५ ६

राग भीमपलासी तीनताल

स्थाई—मेरे तो तुम एक सखा सांचो मीत।

अन्तरा—झूटे जग को झूट मोह सब झूठी जग की प्रीत रीत।

स्थाई

ग॒ म प सां, नि॒ ध प म नि॒ ध प म ग॒ रि सा नि॒ | सा नि॒ सा म म प म म ग॒
० ० ० ०
मे • • • रे • • • • • • • तु • म • | ए • क स खा • • •
+ ७ | १ ३

म ग॒ ऽ प म ऽ ध प ऽ सां नि॒ ऽ रिं सां ऽ गं॒ सां रिं ऽ सां | सां रिं सां रिं ऽ
० ० ०
सां • • • • • • • • • • • • • • • चो • • • | मी • • • •
+ ७ | १

सां नि॒ नि॒ सां नि॒ ध प |||
० ० ०
• • • • • त •
३

अन्तरा

प ग॒ म प नि॒ प सां | सां रिं ऽ सां नि॒ नि॒ सां नि॒ सां नि॒ ध प प ध ऽ प
० ० ० ० ० ० ० ०
झू • टे ज ग • को | झू • • ट • मो • • • ह • स • •
+ ७ | १ ३

प म ग॒ म ध प म प सां नि॒ प नि॒ सां | मं गं॒ गं॒ रिं रिं सां सां नि॒ नि॒ ध
झू • • ः ठी • • • ज • ग • की | प्री • • • त • री • •
+ ७ | १ ३

ध प प म ग॒ म |||
• • त • • •

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी झपताल

स्थाई–तुम सुनो राधिका विनय कान, नहिं सोहत मानत जिया सुजान ।

अन्तरा–अब करो कृपा जन अपनो जान, ऐसी काहे को रही हो मौन ठान,
मेरे तू ही है जीवन आधार, अब वेगि मिलो नहीं जात प्राण ।।

स्थाई

नि॒ सा ग॒ | म प ऽ ग॒ म प ध प म प ऽ म ग॒ ऽ सा ग॒ म ग॒ रि सा सा
o o o | o o — ⌣ ⌣⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o o o o . o o o
तु म सु | नो · · रा · · · धि का · · · · · वि न य का · न न
| १ ३ + ८

नि॒ | सा ग॒ ऽ रि सा म ग॒ प म ध प प ध म प ग॒ || नि॒ सा सा ग॒ म |
— | ⌣ ⌣ o — — — o o o o o o ⌣ ⌣ o o || ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o
हिं | सो · · ह त मा न त जि या · सु जा · · न || तु · म · सु
| १ ३ + ८

अन्तरा

म प नि॒ | सां नि॒ सां ऽ नि॒ नि॒ नि॒ नि॒ सां नि॒ ध प नि॒ नि॒ | प नि॒ सां
o o o | ~ o o — o o o o — o o o o — | ⌣ ⌣ o
अ ब क | रो कृ पा · ज न अ प नो जा · न ऐ सी | का · ·
| १ ३ + ८ | १

नि॒ ध प म ध प ऽ ग॒ म ग॒ रि सा म प | नि॒ रिं सां नि॒ नि॒ नि॒ प नि॒
o o — o — o o — o o o o o — | — — — — o o ⌣ ⌣
हे · को र ही हो · मौ न ठा · न मे रे | तू ही है जी व न आ ·
३ + ८ | १ ३ +

सां नि॒ प ध ऽ प म ध प | ऽ म ध प ग॒ म प नि॒ प नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒
o — ⌣ o ⌣ o o o o | o o ⌣ ⌣ o — o - ⌣ ⌣ o o o o o o
· धा · · · र अ ब वे | · गि मि · लो · न हीं जा · · · · त प्रा ·
८ | १ ३ + ८

रि सा ||| रि नि॒ ऽ रि सा ऽ म ग॒ ऽ | म प ऽ
⌣ ⌣ ||| ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ⌣ o ⌣
ण · ||| तु · · म · · सु · · | नो · ·
| | १

राग भीमपलासी तीनताल

स्थाई–सांचि कहो कै प्यारी हांसी ।
काहे को इतनी रिस पावत कत होत तुम उदासी ।

अन्तरा–पुनि पुनि कहत कहां तबहीं ते, कहा ठगी सी ठाडी,
इकटक चितै रही हरि दे तन, मानो चित्र लिखि काठी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

ग॒ म ध प म ग॒ रि सा | सा ग॒ सा ग॒ म प म ग॒ रि सा निं॒ सा म ग॒
o o o o o o o o | ‿ o ‿ ‿ ‿ o o o o o — — ‿ ‿ o
सां · चि क हो · कै · | प्या · · री · · · हां · सी का हे को · ·
\+ ७ | १ ३ + ७

रि सा रि | सा निं॒ सा ग॒ म प ग॒ रि सा निं॒ सा म म प म | ग॒ सा म ग॒
‿ ‿ o | — o o o o o o o o o — o ‿ ‿ | o o ‿ ‿
इ · त | नी रि स पा · · व · त क त हो त तु · | म उ दा ·
| १ ३ + ७ | १

प म ध प ग॒ रि सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ o o o
· · · · सी · ·
३

अन्तरा

ग॒ म प नि॒ ध ध प म | प सां नि॒ सां नि॒ ध प प म प नि॒ प नि॒ सां सां
o o o o o o o o | o o o o o o — ‿ ‿ o — o o o o
पु नि पु नि क ह त क | हां · त ब ही · ते क · हा · ठ गि · सी
\+ ७ | १ ३ + ७

ऽ नि॒ सां नि॒ ध प प नि॒ सां रिं सां नि॒ सां ऽ प | नि॒ सां नि॒ सां नि॒ ध प प
— o o o — o o o o o ‿ ‿ o o | o o o o o o o
· ठा · डी · · इ क ट क चि तै · · र | ही · ह रि दे · त न
१ ३ + ७ | १ ३

नि॒ नि॒ ध प म | ध प ध ऽ प म ग॒ रि सा ||
— — o o | o ‿ ‿ o o o o o o
मा नो चि त्र लि | खि का · · ठी · · · ·
\+ ७ | १ ३

राग भीमपलासी तीनताल

स्थाई—झूलत शाम हिन्डोरा, माई री,
झूलत शाम हिडोरा सब, सखियन, झुलावत राधा ।।

अन्तरा—रेशम डोरी से बांध्यो हिन्डोरा,
डारि कदम्ब की, तरे माई री ।।।

स्थाई

नि़॒ ध प म ग॒ ऽ रि सा | सा रि नि़॒ सा ऽ सा रि नि़॒ सा ग॒ म प नि़॒ ध प
o o o ‿ o ‿ o o | ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ o o o o o o o o
झू ल त शा · · म हिं | डो · रा · · मा · ई · री · · , झू ल त
७ | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ग़ ऽ रि सा | सा रि नि़ सा ऽ रि नि़ सा म ग़ रि सा ऽ सा नि़ सा ग़ म |
‿ 0 ‿ 0 0 | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
शा · · म हिं | डो · रा · ·, स · ब स खि य न ·, भु ला · व त
| १ ३ + ७ .

प सां रिं रिं सां नि़ प नि़ सां नि़ ध प म ग़ रि नि़ सा ||
— — ½ ½ ½ ½ ½ ½, ½ ½ ½ ½ ½ ½, ½ ½ ½
रा धा
१ ३ +

अन्तरा

प प प म ध प ग़ म | ऽ प नि़ नि़ सां सां ' नि़ सां मं गं़ गं़ रिं रिं सां सां
0 0 0 ‿ ‿ 0 0 0 | 0 0 0 0 — — 0 0 0 ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
रे श म डो · · री से | · बां ध्यो हिं डो रा, डा र क · द · म · की
७ | १ ३ + . ७

नि़ नि़ | सां नि़ नि़ ध ध प प म ग़ म प नि़ प म प नि़ सां रिं सां नि़ ध
‿ 0 | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ½ ½ ½ ½ ½ ½, ½ ½ ½ ½ ½ ½ ½
· · | त · रे · · · मा · ई · · · · · री · · · · · ·
| १ ३ +

प म ग़ रि सा ||| नि़ ध प म ग़ ऽ रि सा | रि सा सा निं़ सा ग़ म प नि़ सां
½ ½ ½ ½ ½ ||| 0 0 0 ‿ ‿ ‿ 0 0 | 0 — 0 0 0 ‿ ‿ ‿ ‿ 0
||| भू ल त शा · · म हिं | डो रा मा ई · री · · · ·
||| ७ | १ ३ +

'राग बागेश्वरी' (बागीश्वरी)

इसमें गन्धार, 'निषाद' कोमल आरोह में 'पंचम' वर्ज्य और 'रिषभ' कभी कभी आरोह में लिया ही जाना चाहिए। इसके लिए उच्च कलाकार तथा उनके अनुयायी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इसकी जाति ओड़व सन्पूर्ण मानना उचित न होगा, अपितु षाड़व वक्र सम्पूर्ण मानना ही उचित है। चाहे इसकी तानों में 'नि़ सा ग़ म ध नि़ सां' ऐसा 'ऋषभ' 'पंचम' छोड़कर भी चलते हैं। परन्तु 'म ग़ रि ग़ म ध नि़ सां' ऐसा भी विशेषकर चलन इसमें रहता ही है। यह तीनों सप्तकों में गाया जाने वाला राग, जिसके मध्यम षड़ज अंश स्वर है। मेल पद्धति वाले इन्हीं को वादी संवादी कहते हैं और इसे काफी मेल से मानते हैं। 'धं नि़ सा म' विशेषकर इसमें लिया जाता है। और मध्य सप्तक के 'धैवत' को बार बार जगाते हैं। इसके अवरोह में 'पंचम' वक्र रूप से आना ही चाहिये। जिससे यह 'श्री रंजनी' से अलग पहचाना जा सके। 'पंचम' और 'निषाद' के वर्ज्य होने से आभोगी (आभोगी कान्हड़ा) बनेगा। जो कि बागेश्वरी से अलग रहता है। इस राग में और रागों के मिश्रण से इसके मिश्रित प्रकार भी गाए जाते हैं। जैसे :—बागेश्वरी कान्हड़ा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्वरी बहार, बागेश्वरी भैरव, बागीश्वरी कौंस इत्यादि। इसको रात्रि के दूसरे प्रहर से मध्य रात्रि तक गाते हैं। पंचम रहित अथवा अल्प पंचम लगा कर गौरख (गौरख कल्याण) राग भी होता है और एक राग पुलन्दिका, नाम का, जिस की जाति औडव है आगे चल कर देंगे।

आरोह :—सा निं्, धं, निं् सा म, म ग्, रे ग् म, ध, नि् सां अथवा

सरल आरोह :—नि् सा ग् म ध नि् सां

अवरोह :—सां नि् ध, म प ध म, ग् रि, सा

मुख्य अंग :—धं निं् सा म, म ग् रे ग् म ध, नि् ध, म ग् रि सा।

अलाप राग बागेश्वरी

सा निं् धं सा धं निं् सा म ऽ म ग् ऽ रि ग् म ग् रि सा | सा सा रि नि्
~, 0 0 ~, 0 0 0 0 — ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — | ~, ⌣ ⌣ ⌣

सा निं् धं मं धं निं् धं निं् सा निं् धं रि रि सा निं् धं सा निं् ऽ धं मं धं निं् धं
⌣ — —, 0 0 ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ —, 0 0 0 0

निं् सा म म ग् रि ग् म ग् सा रि ऽ सा | रि रि सा निं् सा निं् ऽ मं निं्
0 0 —, 0 0 0 0 0 0 ⌣ 0 ⌣ —, | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 0

ऽ धं सा ऽ निं् रि ऽ सा | रि रि सा निं् धं निं् सा म ऽ ग् रि ग् म ऽ ग् म
0 0 0 0 0 0 0 0 0 | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — 0 0 0 0 —, 0 0

ध म ध प नि् ध म म प ध म प ध ऽ म ग् रि ग् म रि ग् म ऽ ग् रि
~ 0 ⌣ ⌣ 0 0 ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ —

सा | धं निं् सा म ऽ ग् म ध म ध नि् ध ऽ म ग् रि ग् म नि् ध म
— | 0 0 0 0 —, 0 0 —, 0 0 0 0 —, 0 0 0 0 0 0 0 —, 0

ध ध नि् नि् सां नि् ऽ ध म ध नि् सां ऽ ग् म ध नि् सां ध सां नि् ऽ ध म
0, 0 0, 0 ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 0 0 0 0 0, 0 ⌣ ⌣ ⌣ —, 0

ध प नि् ध म म प ध म प ध ऽ म ग् रि ऽ ग् म ग् रि सा | नि् सा ग् म
⌣ ⌣ 0 0 —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ 0 0 0 ⌣ ⌣ 0 0 - - — | ⌣ ⌣ ⌣

ध नि् सां ऽ नि् ध सां ध नि् सां नि् ऽ रिं नि् सां नि् ध म म प ध प नि्
⌣ ⌣ 0 — 0 0 ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — —, ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣

ध म म प ध ग् रि ग् म ग् रि सा |
0 —, ⌣ ⌣ 0 — 0 0 0 0 — — |

नि् सा ग् म ध नि् सां नि् सां ऽ ध नि् सां मं ऽ गं रिं गं मं गं रिं सां रि
0 0 0 0 0 0 — 0 0 —, 0 0 0 0 — — 0 0 0 0 — —, 0

ग् म ग् रि सा म ध नि् सां नि् ध ऽ म ध म नि् ध सां नि् रिं सां रिं नि्
0 0 0 — —, 0 0 0 0 0 0 0 —, 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा॑ नि॒ ध म ध प नि॒ ध म म प ध म प ध ऽ म ग॒ रि ग॒ म ध नि॒ सा॑ नि॒
o — —, o ‿ ‿ o o —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ —; o o o o o o o o

रि॑ नि॒ सा॑ नि॒ ध म ध ध म नि॒ नि॒ ध सा॑ सा॑ नि॒ रि॑ नि॒ सा॑ नि॒ ध म ग॒ म
‿ ‿ o — — —, ‿ o ‿ ‿ o ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ o — — —, ‿ ‿

ध नि॒ सा॑ रि॑ रि॑ सा॑ नि॒ सा॑ नि॒ ध म ध नि॒ सा॑ ध नि॒ सा॑ नि॒ ध म ग॒ म
‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ o — o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o — — ~, ‿ ‿

ध नि॒ सा॑ ग॒ रि ग॒ म ग॒ रि सा |
‿ ‿ — — o o o o — — |

तान राग बागेश्वरी

सा निं॒ धं निं॒ सा ग॒ म ग॒ रि ग॒ म ग॒ रि सा निं॒ सा। रि रि सा निं॒ धं निं॒ सा म ग॒ म ध म, म ग॒ रि सा, रि ग॒ म ग॒ रि सा, म ग॒ रि सा। सा निं॒ धं निं॒ सा म ग॒ म ध नि॒ ध म म ग॒ रि सा। म ग॒ म ग॒ रि सा, रि ग॒ म, सा रि ग॒, निं॒ सा रि, धं निं॒ सा, म ग॒ रि सा। निं॒ सा ग॒ म, ध नि॒ ध, ध नि॒ ध, ध नि॒ ध नि॒ ध म, म ग॒ रि सा। सा रि निं॒ सा धं निं॒ सा म, ग॒ म ध नि॒ ध म, ध नि॒ सा॑ नि॒ ध म, म ग॒ रि सा। निं॒ सा ग॒, सा ग॒ म, ग॒ म ध, म ध नि॒, ध नि॒ सा॑ नि॒ ध म, ध नि॒ सा॑ नि॒ ध म म ग॒ रि सा। निं॒ सा ग॒ म ध नि॒ सा॑ रि॑ नि॒ सा॑ ध नि॒ सा॑ नि॒ ध म, ध नि॒ ध म, म ग॒ रि सा। सा रि सा, निं॒ सा निं॒, धं निं॒ धं, ग॒ म ग॒, रि ग॒ रि, सा रि सा, म ध म, ग॒ म ग॒, रि ग॒ रि, ध नि॒ ध, म ध म, ग॒ म ग॒ नि॒ सा॑ नि॒, ध नि॒ ध, म ध म, सा॑ रि॑ सा॑, नि॒ सा॑ नि॒, ध नि॒ ध, रि॑ ग॒॑ रि॑, सा॑ रि॑ सा॑, नि॒ सा॑ नि॒, ग॒॑ म॑ ग॒॑ रि॑ ग॒॑ रि॑, सा॑ रि॑ सा॑, रि॑ ग॒॑ रि॑, सा॑ रि॑ सा॑, नि॒ सा॑ नि॒, सा॑ रि॑ सा॑, नि॒ सा॑ नि॒, ध नि॒ ध, नि॒ सा॑ नि॒, ध नि॒ ध, म ध म, ध नि॒ ध, म ध म, ग॒ म ग॒ म ध म, ग॒ म ग॒, रि ग॒ रि, सा रि सा।

रि रि सा निं॒ ध निं॒ सा रि निं॒ सा धं निं॒ मं धं निं॒ सा, धं निं॒ सा रि, ग॒ म म, ग॒ म म, ग॒ रि सा निं॒ ध निं॒ सा रि निं॒ सा। रि ग॒ म, रि ग॒ म, रि ग॒, रि ग॒ म ग॒, रि सा निं॒ सा, ध नि॒ सा॑, ध नि॒ सा॑, ध नि॒, ध नि॒ सा॑ नि॒ ध म ग॒ म, रि॑ ग॒॑ म॑, रि॑ ग॒॑ म॑, रि॑ ग॒॑, रि॑ ग॒॑ म॑ ग॒॑ रि॑ सा॑ नि॒ सा॑, ध नि॒ सा॑, ध नि॒ सा॑, ध नि॒, सा॑ नि॒ ध म, रि ग॒ म, रि ग॒ म, रि ग॒, रि ग॒ म ग॒ रि सा निं॒ सा। ग॒ ग॒ ग॒, म म म, ध ध ध, नि॒ नि॒ नि॒ सा॑ सा॑ सा॑, म॑ म॑ म॑ ग॒॑ ग॒॑ ग॒॑, रि॑ रि॑ रि॑, सा॑ सा॑ सा॑, नि॒ नि॒ नि॒, ध ध ध, म म म, सा॑ नि॒ ध म, म ग॒ रि सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख्याल राग बागेश्वरी वि० एक ताल

स्थाई–परदेसवा काहे को गवन कीनों, बात न जानी कछुक हमरी रे ।।

अन्तरा–जुगसी बीतत है, घरी पल छिन, शुभ रंग बिन देखे,
चैन नाहीं, रतियां सगरी बीती ।।

स्थाई

सां सां
म ग॒ रि सा म ध नि॒ रिं सां नि॒ | सां नि॒ नि॒ ध प ध ऽ म ऽ म प ध म प
प · र · दे · · · · स | वा · · · का · · हे · को · · · ·
१ + ५

सा सा सा सा सा
ध ऽ ग॒ ग॒ ग॒ म म ग॒ रि सा रिं ऽ सा ऽ म ग॒ रि सा रि सा | निं॒ निं॒ धं धं
· · · · · ग व न · · की · नो · बा · त · · न | जा · · नी
+ ९ ११ | १ +

सा
नि॒ सा ऽ म ग॒ रि ग॒ म नि॒ ध ध नि॒ सां ऽ नि॒ सां रिं सां नि॒ ध म ग॒ रि ऽ ग॒ म
· · · क · छु · क · · · · · · · ह · म · री · · · रे · ·
५ + ९

सा
ग॒ रि सा ||
· · ·
११

अन्तरा

म सां नि॒
ग॒ म म ध नि॒ रिं सां नि॒ | सां ऽ नि॒ ध सां नि॒ सां रिं सां ' रिं सां नि॒ सां रिं सां
जु ग सी · · · बी · | · त · है घ री प ल · छि · · · !
१ + ५

सा सा धं
नि॒ नि॒ ध म ग॒ रि सा रि सा ऽ निं॒ धं सा म ध नि॒ सां ध नि॒ रिं सां नि॒ |
ने · · शु भ ग बि न · दे · खे, चै · · · · · · · न |
+ ९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि॒
सां सां
नि॒ नि॒ ध ध नि॒ सां मं गं॒ गं॒ रिं सां ' नि॒ सां रिं सां नि॒ ऽ सां नि॒ ध मं म प
० हे हे है ० ० ० — — ० ० ० ०
· · · ना · · · · · · ही · र · ति · यां · · · · · · स ·
१ + ५ + ९

प ध ग॒ म ध नि॒ सां ध नि॒ सां नि ध म म ग॒ रि सा
०
ग · री बी · · · · · · · ती · · · · ·
११

'राग बागेश्वरी' झपताल

स्थाई—सखा तुम बोलो न बात विचारो, कहो कौन सी बाल जगत में,
जैसी है भानु दुलारी ॥

अन्तरा—भानु नगर के बसन हार, तुम प्यारी की अनुहारी ।

स्थाई

नि॒ | ध ध म ध नि॒ सां नि॒ ध म प म प ध म ग॒ म ग॒ रि सा रि | सा नि॒
० | ~ ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० | ~ —
स | खा तु म बो · · लो न बा · त · · वि चा · · रो · क | हो कौ
१ ३ + ८ | १ ३

ध नि॒ सा सा सा म म प ध ग॒ म | म ग॒ रि ग॒ म ध ऽ म ध नि॒ सां ऽ नि॒
० ० — — ० ० ० — — | ० ० — — ०
न सी · बा ल ज ग · त में · | जै · · · सी · · है · · · · भा
+ ८ | १ ३ +

सां सां रिं सां नि॒ सां नि॒ ध म ||| नि॒ | ध म ग॒ रि ग॒ म ध नि॒ सां नि॒ ध
० ० ० ० ० ० ० | ० ~ — ०
· नु दु · ला · री · · ||| स | खा तु · म · बो · · · लो न
८ | १ ३ +

अन्तरा

ग॒ म म ध प ध नि॒ ऽ ध नि॒ सां सां रिं नि॒ सां ऽ ऽ नि॒ ध सां सां | ध नि॒ सां
— ० ० ० ० ० ० — ० — ० ० ० | ० ०
भा नु न ग र के · · ब · स न · हा · · · · · · र | तु म प्या
१ ३ + ८ | १

रिं गं॒ ऽ रिं नि॒ सां ऽ नि॒ सां नि॒ सां रिं सां नि॒ सां रिं सां नि॒ ध |||
० — ० — ० ० ० ० ० ०
· · · रि की · · अ नु हा · · · · · · · · री · |||
३ + ८

(शेष अन्तरा सफा ११२)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्वरी झपताल

स्थाईं—बिनती सुनो मोरी, अवधपुरी के बसैया।
तुम बिन कवन मेरो, दुःख के हरैया।

अन्तरा—जहां जहां परी भीर, तहां तहां दियो धीर।
जानकी पति राम, भव के तरैया।

स्थाई

सां म म
म म प़ ध म प ध ऽ ऽ ध नि़ प ध नि़ ध म ग़ ग़ सा रि ऽ सा | रि सा सा
बि न · · · ती · · · सु · · · नो · · मो · · · · री | अ व ध
१ ३ + ८ | १ ३

नि़ रे ग़ म म ध
नि़ सा रिसा धं नि़ सा म ऽ ऽ म प ध म ग़ ऽ रि रि ग़ म | ग़ ग़ म नि़
पु · · · री · के · · · ब · · सै · · · या · · | तु म बि न
+ ८ | १ ३

नि सां प
ध नि़ ध सां सां रिं नि़ सां सां | सां नि़ सां रिं सां नि़ ऽ ध ध म ध नि़ ध
· क · व न मे · · रो | दुः ख · · · के · · · ह रै · ·
+ ८ | १ ३

नि
सां नि़ ऽ सां नि़ सां रिंसां नि़ ध म ग़ रि सा नि़ सा ||
· या · · · · · · · · · · · ·
८

अन्तरा

सां सां सां
म ग़ ऽ म ग़ ऽ म नि़ ऽ ध नि़ सां रिं नि़ ऽ सां सां | सां सां नि़ रिं रिंसां सां
ज · · हां · · ज हां · · प री भी · · · र | त हां · त हां · दी
१ ३ + ८ | १ ३ +

ध प
नि़ रिं नि़ सां नि़ ध ध | रिं रिं सां नि़ ध नि़ सां मं गं रिं सां नि़ सां नि़ सां रिं
· यो · · धी · र | जा · · · · · · · न की · प · ति
८ | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि़ ऽ ध प ध ऽ ध | सां ऽ नि़ सां ऽ रिं नि़ सां ऽ नि़ ऽ ध प ध ऽ म
० ० | ० ० ० —
· रा · · · · · म | भ · · व · · · · · के · · · · · त
८ | १ ३

नि़ ऽ ध सां रिं रिं सां सां नि़ ध म म ग़ रि सा |||
० — — ३ ३ ३
र · · · या · · · · · · · · · ·
\+ ८

राग बागेश्वरी झपताल

स्थाई–लागी रे लगनिया मोहन सों, सुन्दर श्याम कमल दल लोचन,
नन्द जू को छैल चिकनिया ।।

अन्तरा–कछु टोना सा डार गयो री, कैसे भरन जाऊं पनिया,
कृष्ण दास की प्यास मिटे जब, निरख्यो गिरि के घरनिया ।

स्थाई

रि ग़ म नि़ | ध म ध ध ध नि़ ध म ग़ म ग़ | रि सा नि़ सा ग़ म ध नि़
० ० ० ० | ~ — — — — — ० ० ० ० — | — — ० ० ० ० ० ०
ला · गी · | रे ल ग नि यां · · · मो · हे | न सों · · · · · ·
| १ ३ + ८ | १ ३

सां नि़ ध म ग़ रि | म म म ध ध ध नि़ ध नि़ सां नि़ ध म म ग़ म ध |
— — — — ० ० | ~ — ० ० ० ० ० ० — — ० |
· · · सु द र | श्या म क म ल द ल लो · · · च न नं द · जू |
\+ ८ | १ ३ + ८

ऽ ध म ध नि़ नि़ ध नि़ सां नि़ सां रिं सां नि़ ध नि़ सां नि़ ध |
— — ० ० ० ० ० ० ० ० |
· को छैं · · ल चि क नि या · · · · · · · · · |
१ ३ + ८

अन्तरा

ग़ म ध नि़ | सां नि़ ध म ध नि़ रिं सां नि़ ध सां म ध | म ध ध म ध
० ० ० ० | ~ ० ० ० ० ० ० — ० ० — — — | ० ० ०
क छु टो · | ना सा · डा · र ग यो · · री कै से | भ र न जा ·
| १ ३ + ८ | १

नि़ गं ऽ रिं सां नि़ सां रिं सां नि़ ध ग़ म ग़ | ऽ रि रि ग़ म सा रि ऽ सा
· · ० — — — — ० ० | ० ० ० ० ० ०
· · · ऊं प · नी · या · कृ ष्ण दा | · स की · · प्या · · स
३ + ८ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नि॒ सा नि॒ सा ऽ ग॒ रि ग॒ म म म ग॒ म ध | मा म ध ध म ध नि॒ ध नि॒
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० — ० ‿ ‿ — | — ० ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿
मि · ट ·· · ज ब नि र ख्यो गि रि · के | · ध र नि या · · · ·
\+ ८ | १ ३

सां नि॒ सां रिं सां नि॒ ध नि॒ सां नि॒ ध |||
— ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ०
· · · · · · · · · · ·
\+ ८

राग बागेश्वरी तीनताल

स्थाई–कहत शाम शामा जू मोको, दर्शन देत रहो जू ।
अचल अलक पलक सुनिरंतर, इक संकोच सहो जू ।।

अन्तरा–यह बिनती मानिये जो श्रवण सुन, नाहि न वचन कहो जू ।
बिहारन दास कहतरुख लिये, यह सुख सहज लहो जू ।।

स्थाई

रि ग॒ म ग॒ रि ऽसा धं निं॒ | सा म म म प ध म ग॒ ध ध ध नि॒ ध | म म प
० ० ‿ ‿ ० ०० ० ० | ० ० — ‿ ‿ ० ० ० — ० ० — — | — ० ०
क ह त · शा · म शा · | मा · जू मो · · को · द र्शं न दे · | त र हो
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

ध म ग॒ रि म ग॒ ग॒ म म म ध | ध ध नि॒ नि॒ नि॒ सां रिं सां नि॒ ध म ग॒ म
० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ० ० ० —
· जू · · अं च ल अ ल क प | ल क सु नि रं · · · त र इ क सं
३ + ७ | १ ३ +

ध ध रिं | सां नि॒ ध म ग॒ ||
— ० ० | — — — ० ०
को च स | हो · · जू ·
७ | १ ३

अन्तरा

म ग॒ म म ध ध नि॒ सां | नि॒ सां ऽ सां ऽ सां सां सां नि॒ नि॒ सां सां सां नि॒ सां |
० ० ० ० — ‿ ‿ ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ०
य ह बि न ती मा · · | नि ये · जो · श्र व ण सु न ना हि न व च
\+ ७ | १ ३ + ७

सां गं॒ रिं सां नि॒ सां रिं सां नि॒ ध ध ध ध ध नि॒ नि॒ | रि ग॒ म ग॒ रि म ग॒
० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० — ० ० — ० | ० ० ० ० ० ‿
न क हो · · · · · जू · वि हा र न दा स | क ह त रु ख लि
१ ३ + ७ | १ ३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रि सा म म ध ध नि॒ ध म सां | नि॒ ध म ग॒ रि |||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | — — — ० ० |||
ये · य हु सु ख स ह ज ल | हो · · जू |||
\+ ७ | १ ३ |||

राग बागेश्वरी तीनताल

स्थाई—कान्ह गिरधारी मेरी मगरोकत, टोकत चली पनिया भरन को,
सगरी ब्रिज की नारी, मेरो मगरोकत ॥

अन्तरा—कृष्ण के बस मोहन रस लीनो, अति सुख दीनो,
लाख यत्न कर हारी, मेरी मग रोकत ॥

स्थाई

सां सां
नि॒ नि॒ ध ध नि॒ प ध | नि॒ नि॒ ध म म म प प ध ग॒ रि सा रि रि सा
० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ | ० ० — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ०
का · न्ह गि · र · | धा · री मे रो म · ग · रो क त टो क त
७ | १ ३ + ७

निं
ध निं | सा म म ध नि॒ नि॒ ध मं गं॒ रिं सां गं॒ रिं सां नि॒ ध प ध | नि॒ ध म
० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ | — — ०
च ली | प नि या भ र न को स ग री बि र ज की · · · | ना री मे
| १ ३ + ७ | १ ३

म म प प ध ग॒ रि सा ||
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ||
रो म · ग · रो क त ||
\+ ||

अन्तरा

ग॒ ग॒ म म ध ध नि॒ ध नि॒ सां सां सां सां रिं नि॒ सां | ग॒ ग॒ ग॒ म ग॒ रि
० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० — | ० ० ० ‿ —
कृ · ष्ण के ब स मो · · ह न र स ली · नो | अ ति सु ख · दी
१ ३ + ७ | १ ३

सा मं गं॒ रिं सां गं॒ रिं सां नि॒ ध प ध | नि॒ ध म म म प प ध ग॒ रि
— ० ० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ | — — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०
नो ला · ख · य त न क · र · | हा री मे री म · ग · रो त
\+ ७ | १ ३ +

सा ||| सां ऽ नि॒ ध प ध | नि॒ ध
० ||| ० ० ० ‿ ‿ ० | — —
त ||| का · न्ह गि · रि | धा री
||| ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख्याल राग बागेश्वरी करुणा ताल मात्रा १८

१, ५, ९, ११, १५, १७ पर ताली, और ३, ७, १३ पर खाली।

स्थाई—भिनक परी हरि आवन की, मंगल चार वधावा गावो।

अन्तरा—हार गुंथावो गजरा वनावो, लगन सुधावो, आवो ।।

स्थाई

सां नि_ध ध | नि_ऽ नि_ध म म म प ध म ग_ ऽ म म ग_ ऽ म ग_ऽ रि
० ० ० ० | — ० ० — — — ‿ ‿ ० ‿ ० ‿ — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ०
भि न क प | री · ह रि · आ व · न की · · · मं · · · · · ग
१७ | १ + ५ + ९

सा सा रि नि_ सा ध नि_ सा ऽ म म म प ध म ग_ ऽ रि सा ||
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ — ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
ल चा · · · र ब धा · · वो गा · · वो · · · ·
११ + १५

अन्तरा

ग_ म म | ध ऽ नि ध नि सां सां सां मं गं रिं सां रिं रिं सां नि सा ऽ नि सां
— ० ० | — ० ० ‿ ‿ ० — ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ है है
हा र गु | था · · · · · वो ग ज · र व ना · · · · · ·
१७ | १ + ५ +

रिं सां नि सां ध सां नि ऽ ध ध ऽ म प ध सां नि ऽ ध म ग_ रि रि ग_ म रि ग_
है है है है ० ‿ ‿ ‿ — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿
· · · · वो · · · · ल · · ग · · · · न सु धा · वो · · आ ·
९ ११ + १५

म ग_ रि सा नि सा |||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
· · वो · · ·

(१०७ सफ़े का शेष)

ध | नि_ध ध म म ग_ रि सा ध नि_ ध ध नि_ध ध नि_ | सां मं गं_ रिं सां
० | ० ० — — ० ० ० ० ० ० — — ० ० ० ० | — — ० ० ०
र | वि श शी · को · टि म द न हू की छ बि, दी · | जे · तुम · प
| १ ३ + ८ | १ ३

सां नि_ सां रिं सां नि_ सां ध सां नि_ ऽ ध म प ध ऽ ग_ रि सा |||
० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿
र वा · · · · · · · · · · · · · · · · री ·
+ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा

इस राग के गायन के शब्दों में प्रायः शिव शंकर के ही गीत अधिकतर पुराने ध्रुवपदों में पाए जाते हैं। सम्भव है शंकर भगवान् के उपासक रात्रि समय इस राग को गाकर ही शिव शंकर भगवान् की पूजा करते रहे हों। इस राग के कुछ अप्रचलित प्रकार भी हैं जो कि कहीं कहीं घरानेदार कलाकारों के पास सुनने को मिलते हैं। जैसे :—शंकरा अरण, शंकरा करण, जयत शंकरा, शंकरा कल्याण इत्यादि आगे चल कर अप्रचलित रागों में यह सब देंगे। एक राग शंकरा भरण नाम का भी है और यह कर्नाटक पद्धति का कहलाता है। उत्तर भारत में उसको बिलावल नाम से सम्बोधित किया जाता है। शंकरा राग की जाति वक्र ओड़व षाड़व मानी जाती है। मध्यम इसमें वर्जित है, आरोह में ऋषभ का त्याग है 'धैवत' का प्रयोग आरोह में 'प नि ध सां नि' इस वक्रता से किया जाता है। यह युवावस्था का पुरुष राग जिसकी प्रकृति का माध्यम अधिक गम्भीर नहीं है। यह इसकी अवस्था पर और स्वरों पर ही निर्भर है। और यह उत्तरांग प्रधान राग है परन्तु तो भी रात को प्रथम प्रहर के अन्त में ही गाया जाता है : 'गांधार', इसका अंश स्वर और निषाद इसका न्यास है। कोई लोग पंचम, षड्ज को भी वादी सवाद कहते हैं परन्तु 'धैवत' के योग के बिना लगभग यह हंस ध्वनि राग हो बना रह जाएगा। वास्तव में 'धैवत' का प्रयोग, जो कि, वक्र रूप से इस राग में किया जाता है। वो ही शंकरा को बनाता है। तभी हंस ध्वनि से यह भिन्न हो सकता है। थाट पद्धति वाले चाहे इसको कल्याण मेल से मानें चाहे इसको बिलावल मेल से मानें परन्तु इसका अपना हो न्यारा रूप है। अधिक करके मध्य और द्रुत गति की ओर ही इसका झुकाव रहता है। शंकरा नन्द, शंकरा बहार क्रमश देंगे।

नोट—इस राग में गंधार पर ऋषभ का कण लगाना अनिवार्य है।

रि
आरोह : अवरोह—सा ग, प, नि, ध सां नि, ध प, ग प ग, रि सा,

रि
मुख्य अंग—प नि ध सां नि, ग प ग, रि सा

राग शंकरा अलाप

सा प ग ऽ प ग प रि ग ऽ ऽ रि सा | सा ग रि ग ऽ प ऽ ग प ध प प ऽ

ग प रि ग रि सा | सा ग प ध प ध ग ऽ प रि ग रि सा | रि सा सा प ग

ग प ऽ सा प रि ग प रि ग ऽ रि सा | प ग ग प प नि ऽ प ध प प ऽ ग

प ग ऽ प नि ध सां नि प ध प प ग प रि ग रि सा | सा प ग ऽ प नि ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि ग प नि ध सां नि प ग प नि ध सां नि प ग ऽ प सां नि ध प प ऽ

प ग प ग प रि ग रि सा | सा रि सा ग प नि ध प ऽ ग प नि ध सां ऽ नि

रिं सां सां रिं नि सां नि प नि ध सां नि रिं नि सां नि प ध प प ग प सां

नि ध प प प ध प प ग प रि ग रि सा | सा ग प नि ध सां ऽ नि सां सां गं

ऽ रिं गं ऽ पं रिं गं रिं सां सां रिं नि सां नि प नि ध सां नि ध प ऽ ग प

सां नि ध प ऽ प ध प प ग प रि ग रि सा | प ग प नि ध सां नि सां ऽ सां

गं ऽ रिं गं ऽ पं रिं गं रिं सां सां पं गं पं गं पं रिं गं रिं सां सां रिं नि सां नि

ध प प ऽ प ग ऽ सा ग ऽ ग ग प ऽ प ऽ प नि ध ऽ सां नि प ध प प ग

प सां नि ध प प ग ऽ रि ग प रि ग रि सा |

तान राग शंकरा

सा सा ग ग प प ग प ग रि सा सा । सा सा ग ग प प नि ध सां नि ध प प ग रि सा । सा सा सा, ग ग ग, प प प, ध प प, ग प प, रि ग ग, रि सा । सा सा प ग प प, ग प नि नि ध प ग रि सा सा । ग ग रि सा, प प ग प, नि नि ध प, ग रि सा सा । ग प ग रि सा सा, ग प नि नि ध प ग प ग रि सा सा । सा सा ग प नि ध सां नि, ध प ग प ग रि सा सा । प प ग रि सा सा, नि ध सां नि ध प ग रि सा सा । नि सा ग ग, सा ग प प, ग प नि नि, प नि सां सां, नि सां गं गं रिं सां नि ध, सां नि ध प ग प ग रि सा सा । सा सा ग प ग रि सा सा, प प ग प नि नि ध प, ग प नि सां गं रिं सां नि ध प ग प ग रि सा सा । सा सा सा, ग ग ग, प प प, नि नि नि, सां सां गं रिं सां नि ध प, ग प नि ध सां नि ध प, ग प ग रि सा सा । ग प ग रि नि सा, नि सां नि ध प प, गं पं गं रिं नि सां, नि सां नि ध प प, ग प ग रि नि सा, सा सा सा, प प प, ग ग ग, नि नि नि, प प प, सां सां सां, गं गं गं रिं सां नि ध प, प प ग प नि ध सां नि ध प ग प ग रि सा सा । सा रि सा, सा रि सा, प ध प, प ध प, ग प ग, ग प ग, नि सां नि, नि सां नि, प ध ध, प ध प, ग प नि ध सां नि ध प, ग प ग रि सा सा । प ग ऽ प ग रि सा सा, नि ध ऽ सां नि ध प प,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पं गं ऽ पं गं रिं मां सां, सां नि ध प, प ग रि सा । सा निं रि सा ग रि प ग ध प नि ध सां नि रिं सां गं रिं पं गं, पं पं गं रिं सां नि ध प, प नि ध सां नि रिं सां नि ध प ग प ग रि सा सा ।

राग शंकरा ताल धमार

स्थाई—खेलत शिव शंकर सुरस, फगवा मचावस कैलाश ।

अन्तरा—करत तांडव ईश गिरीजा, नंदी भृंगी अरस परस ॥

स्थाई

ध प प रि रिं
सां नि ध प ऽ ग प | सां नि ऽ प ऽ ग ग प ग सा पं पं सा सा निं | रि सा ऽ
खे · ल · · त · | शि व · शं · क र सु र स, फ ग वा · · | म चा ·
११ + | १ + ६ + ११ + | १

प प रि
ग ग प ग ऽ प ग ऽ प रि ग ऽ सा ||
व त कै · · · ला · · · · · श ||
+ ६ +

अन्तरा

ध ग
प ग प सां | ऽ सां नि रिं सां नि प प प नि ध सां नि ऽ प ऽ ग ऽ | प सां
क र त तां | · ड · व ई · श गि रि · · · जा · नं · दी · | भृं ·
११ + | १ + ६ + ११ + | १

ग प ग ग रि
नि ध प ऽ प ग प प ग सा |||
गी · · · अ र स प र स |||
+ ६ +

ख्याल राग शंकरा ताल झूमरा

स्थाई—आद महादेव बीन बजाई, पाई न्यामत खान पीया, सदा रंग कर करम दिखाई ।

अन्तरा—सप्त सुरन की, सुर सुर की सप्त तान, मन रंग उनचास कौटी तान ले, सब गुनीयन को समझाये ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

ग प ग प नि ध नि ध सां नि ध नि | नि प ऽ ऽ ऽ नि ध सां नि ऽ ध प प
आ · · द · · म · · हा · · | दे · · · · · · · · व · बी · ·
११ | १ ४

प   प प ग रि
ग ग ग ऽ प रि ग ऽ ग ग प ग रि सा सा | प ग प रि ग रि सा सा सा
न ब जा · · ई · · पा ई · न्या · म त | खा · · · · · · न पी
+ ११ | १ ४

प प प प ग
सा रि ऽ सा ऽ सा सा प ग ' सा ग ग प प | नि ध सां सां रिं सां नि प प नि
· · · या · स दा · · · · रं ग क र | क · र म दि खा · · · ·
+ ११ | १ ४

ध ध सां नि सां रिं नि सां नि ध प प ||
· · · · · · · · ई · · ·
+

अन्तरा

पं पं पं गं रिं
प प नि ध सां ' सां सां सां | सां ऽ ऽ सां गं रिं गं पं गं पं गं पं गं रिं सां |
स प्त · · · · सु र न | की · · सु र · सु र की · · स · · प्त
११ | १ ४ + ११

रिं   प
प नि ' ' ध प प सां पं गं रिं सां सां सां नि ध सां नि प ध प ग प सां गं रिं
ता · · · न · · म न रं ग · · उ न · चा स की · · टी · ता
१ ४ + ११

सां रिं सां सां | नि ध प प प ध प प ग ग प प प नि ध सां नि रिं ऽ सां रिं
न · · · | ले · · · स · ब · गु नी य न को · · · · · · · स
| १ ४ +

प   प
सां सां नि ऽ ध प ग प |||
म · भा · · · ये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख्याल राग शंकरा विलंबित एक ताल

स्थाई—शंकर पंच वदन पारवती पत, त्रैलोचन, डमरू धर नन्दी संग।

अन्तरा—व्याघ्रांबर, जटा-जूट, त्रिशूल कर, त्रय ताप हारी।

स्थाई

प प
ग प नि ध सां | नि ऽ ध प प ऽ प ग ऽ ग ग प रि ग ऽ ऽ रि सा ऽ सा ग
शं ऽ क ऽ रा | प ऽ च ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ व द ऽ न ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ पा ऽ
१ + ५ + ९

प ग रि प
ग प ग ऽ प ग सा | प ग प ऽ प ध प प ऽ ग सा ग प नि ऽ प ध प प ऽ
र व ती ऽ ऽ प त | त्रै ऽ ऽ ऽ लो ऽ ऽ ऽ ऽ च न ड म रू ऽ ध ऽ र ऽ ऽ
११ १ + ५

प प
ग प ऽ सां गं रिं सां ऽ नि रिं सां नि ध प प ग प ||
ऽ ऽ ऽ नं ऽ ऽ दी ऽ ऽ ऽ सं ऽ ग ऽ ऽ ऽ ऽ
+ ९ ११

अन्तरा

प पं
ग प सां | सां ऽ सां ऽ सां गं पं ऽ रिं गं रिं सां सां सां नि ध सां नि | ध प प
व्या ऽ घ्रां | ब ऽ र ऽ ज टा ऽ ऽ जू ऽ ऽ ऽ ऽ ट त्रि ऽ ऽ शू | ऽ ऽ ऽ
१ + ५ + ९ ११ १

प प प
प ग प सा प ग प ग प प नि ध सां नि रिं नि सां ऽ ऽ सां नि ध प प ग ऽ प
ल क र त्र्य ऽ ऽ ऽ ता ऽ प ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ हा ऽ री ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
+ ५ + ९

रि ग ग सा ||
ऽ ऽ ऽ ऽ
११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा तीनताल

स्थाई—राम सखा तब नाव बुलाई, प्रिय हि चढाय चढ़े रघुराई।

अन्तरा—लखन धरे धनु वाण बनाई, आप चढ़े प्रभु आयुष पाई।

स्थाई

नि ध सां | नि प ध प प ऽ ग रि ग प रि ग रि सा ऽ सा सा सा सा | ग
० ० ० | — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ० ⌣ — ० ⌣ ⌣ ० ० | —
रा म स | खा त · ब · · ना · व बु ला · · ई · प्रि य हि च | ढा
| १ ३ + ७ | १

ग ग प नि प · नि ऽ सां रिं सां नि ध प ||
० ० — ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣
य च ढ़े र घु रा · · · · · · ई
३ + ७

अन्तरा

प प सां सां | सां सां सां सां सां सां सां गं ऽ रिं सां ऽ पं गं पं | रिं गं रिं सां
⌣ ⌣ ० ० | — ० ० — ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० | ⌣ ० ⌣ ०
ल ख न . ध | रे ध नु बा ण ब ना · · ई · · आ प च | ढ़ · · प्र
| १ ३ + ७ | १

नि ग प नि ध नि सां रिं सां नि ध प ग रि सा |||
० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
भु आ · यु ष पा · · · ई · · · · ·
३ + ७

राग शंकरा झपताल

स्थाई—सूनी रे सेजरिया जिया डर पावे, कौन देश छाये पिया मोरे।

अन्तरा—हे सखी जियरा तरसे, विरहा उठत तन जोर ॥

स्थाई

सा सा सा प ग प नि ऽ ध सां रिं नि सां | नि नि ध ऽ सां नि ऽ प ध प प प
० ० ⌣ ⌣ ० — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ~ ⌣ ⌣ ⌣ ० — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
सू नी रे · · · · · से ज · रि · | या · · · · · · · · · ·
+ ८ | १ ३ +

ग ऽ ऽ ग ग रि ग प | रि ग ऽ ऽ सा ऽ ग सा ऽ सा प ग प प प प नि ध
० ⌣ — ० ⌣ ⌣ ० ० | ⌣ ⌣ ० — — — ⌣ ० ⌣ ० ⌣ ⌣ — ० ० ⌣ ⌣
· · · जि या · ड र | पा · · · वे · कौ · · न दे · · · श छा · ·
८ | १ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिं सां नि | प ध प प ग ऽ प रि ग प रि ग ऽ सा सा ||
· · ये | पि · · · या · · मो · · · · · · · रे ||
| १ ३

अन्तरा

प ध प प सां सां ऽ नि रिं सां रिं नि | ऽ ध प ऽ ऽ नि सां रिं सां नि ध प
हे · · · स खी · जि · य · रा | · · · · · त · र · से · ·
\+ ८ | १ ३ +

प ऽ प ग प नि ऽ ध सां नि | सां गं रिं गं ऽ पं रिं गं गं रिं सां ऽ नि ध प
· · · · · · · · · · | बि र हा · · उ ठ · त त · · न जो ·
८ | १ ३

प ग ऽ प रि ग ऽ सा ||| सा सा प ग ग ग प ऽ सां रिं नि सां | नि
· · · · · · · र ||| सू नी रे · · से · · ज · रि · | या
\+ ||| ८ | १

राग शंकरा तीनताल

स्थाई—ये रंगीला मनुवा रंग राचे, मन उमंग रस राग रंग सों,
सहज भाव भर नाचे ।।

अन्तरा—नहीं जाने रब को पयछाने, अन्त होय वाके, जो सांचे ।

स्थाई

ग ऽ प नि ध सां | नि ऽ ध प प ग ऽ रि ग प रि ग रि सा ऽ सा निं | रि
ये · · रं · गी | ला · · म नु वा · · रं ग रा · · ये · म न | उ
७ | १ ३ + ७ | १

सा सा सा सा प ग प ऽ प प ध प प ग प ऽ | सा ग रि ग ऽ प ऽ ग प नि
म ग र स रा · · · ग रं · · · ग सों · | स ह ज · · भा · व · भ
३ + ७ | १ ३

ध सां रिं सां नि ध प ग प ||
· ना · · · चे · · · ||
र +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प सां ऽ नि | ध प प ग प सां गं गं पं रिं गं रिं सां सां गं रिं सां रिं |
० ० ० ‿ ‿ | ‿ ‿ ० ० ० — ० ‿ ‿ ‿ ० ‿ — ० ० ० ‿ ‿
ना हीं जा · · | ने · · र ब को पै · · छा · · ने अं · त हो ·
७ | १ ३ + ७

सां नि ध प ग ऽ प रि ग ऽ सा ग प नि ध सां नि रिं सां ||| नि ध प नि
‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ० ‿ — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ||| ० ‿ ‿
· · य · वा · · के · · जो सां · · · चे · · · ||| र · · गो
१ ३ + ||| ७

ध सां | नि
‿ ० | —
· · | ला
| १

राग शंकरा तीनताल

स्थाई–राधा प्यारी बात सुनो इक मोरी,

मैं आयो चाहत हौं तुम पे, बीच लियो उन घेरी।

अन्तरा–जतन अनेक बिनती कर हारयो, कैसे जात न फेरी,

पर वश परयो दास परमानन्द, काहि सुनावो टेरी ।।

स्थाई

नि ध सां नि ध प | ग ग सा प ग प ध प प रि ग ऽ रि सा सा प ग प
० ० — ‿ ‿ ० | — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० — ‿ ‿ ०
रा · धा प्या · री | बा त सु नो · इ · क · मो · · रि · मैं आ · ·
७ | १ ३ + ७

रि ग सा | प नि ध सां नि प ध प प ग सा प गं रि ग सा | प ग प प
‿ ० ‿ | ० ० ० ० — ‿ ‿ ‿ ‿ — — ० ० ‿ ‿ ० | ‿ ‿ ० ‿
यो · · | चा · ह त हो तु · म · पे बी च लि यो · · | उ · न घे
| १ ३ + ७ | १

नि ध सां नि रिं सां नि ध प ग प ग रि निं सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ||
· · · · · · · · री · · · · · · ||
३ + ||

अन्तरा

प प सां सां सां | सां नि नि प ग प नि ध सां नि प सां गं रिं | सां सां प
० ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ — — — ० ० | ० ० ‿
ज त न अ ने | के बि न ती क र हा · · रयो, क से जा · | त न के
७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प प ग प रि ग ऽ रि सा नि सा ग ग प ग प | ऽ नि नि ध प प नि ध
⌣⌣ ⌣ o o ⌣ ⌣ ⌣ o — o o o o o ⌣ ⌣ | o - o ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣
· · · · · री · · · · प र व श प रयो · | · दा स प · र मा ·
३ + ७ | १ ३

सां नि नि सा ग ग प ऽ नि | ध सां नि गं रिं सां नि ध प ग प ग
o o o o o o o o o | o o — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· नं द, का · हे · · सु | ना · वो टे · · · · · री · ·
+ · ७ | १ ३ +

रि नि सा |||
⌣ ⌣ ⌣
· · ·

राग शंकरा द्रुत एकताल

स्थाई—झूलना झुलावो, आई रुत सावन की ।।

अन्तरा—कारि कारि बदरी चमके, बरसन को आई आई ।

सखियन संग मिल गावो, आई रुत सावन की ।।

स्थाई

नि सां नि ध नि ध प ग प नि ध सां नि | प ग प ध प प ग ऽ प रि ग रि सा ||
— o o o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o — | — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —
झू ल ना · झु ला · · · · · वो | आ ई रु · त · सा · · व · न की
३ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ ||

अन्तरा

प ग प सां ऽ सां सां रिं सां रिं नि प नि ध सां नि | नि सां सां गं रिं गं ऽ पं
o o o o o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o | o o o ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣
का · क्रि रा · रि ब · द · री च · म · के | ब र स न · को · ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३

रिं गं ऽ रिं सां ऽ नि | नि नि ध सां नि प प प ग प सां ऽ नि | सां रिं नि
⌣ o ⌣ o o o o | o ⌣ ⌣ o o o o o o o o o o | ⌣ ⌣ ⌣
आ · · ई आ · ई | स खि · य न सं ग मि · ल गा · वो | आ · ·
+ ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १

सां नि ऽ ध प प ग ऽ प रि ग रि सा |||
⌣ o ⌣ ⌣ o o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —
· ई · · रु त सा · · व · न की
+ ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख्याल शंकरा ताल सवारी १५ मात्रा

ताली १, ४, ८, १२ पर और ६, १०, १४ पर खाली

स्थाई–डमरू बजायो वामदेव शंकर हरदानी।

अन्तरा–विष धर भुजंग, शीश जटा गंग, पार्वती संगहरे ॥

स्थाई

ग प नि ध सां | नि ऽ ध प प ऽ ग रि ग प प प ग प सां नि ध प प ग प
० ० ० ० ० | — — ‿ ‿ ० — — ० ० ० ० — ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿
ड म रू · ·ब | जा · यो · · · वा म दे · व शं क र ह र दा · · · ·
+ | १ ४ + ८ +

रि ग रि सा ||
‿ ० ‿ ०
नी · · ·
१२

अन्तरा

ग प सां सां सां | सां ऽ सां गं ऽ रिं गं पं रिं गं ऽ रिं सां ऽ नि प नि ध सां नि
० ० ० ० ० | — ० ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ० ‿ ‿ ० ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ०
वि ष ध र भु | ज · ग शी · · श ज टा · · गं · · ग पा · · · र
+ | १ ४ + ८

प ग प रि ग ऽ सा प ग प |||
० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ०
व ती · स · · ग ह रे ·
+ १२

राग तिलक कामोद

इस में सब स्वर शुद्ध होते हुए भी, कभी कभी कोमल निषाद का प्रयोग प्रचार में सुना जाता है। सीधे से इस का आरोह सा रि म प सां यूं चार स्वरों से ही उचित है। राग भी स्पष्ट होता है। और जो औडव जाति से कम का राग नहीं मानते, यहां उन की क्या परिस्थिति रही, केवल यही, कि म प नि सां से शुद्ध को प्रयोग करके औडव जाति बनाने की चेष्टा की जाती है और अगर सा रि म प सां, इस ढंग से राग स्पष्ट हो तो आरोह को औडव लिखने का साहस क्यों। या तो चार स्वरों से (स्वरान्तर) ही इस का आरोह माना जाए। अवरोह वक्र सम्पूर्ण है। यह युवा अवस्था में गम्भीरता ग्रहण ही कैसे कर सकता है। वक्र होते हुए भी अपना मार्ग तय करते समय, तरलता से ही अपना समय व्यतीत करता है। चाहे इस के गांधार धैवत अंश स्वर होकर गांधार, निषाद न्यास की धारण भी करते हैं। स्वरों का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूर दूर तक उछल कूद दिखाने के कारण ही दोपहर दिन से रात तक गाया जाता है। सीमा ही अपनी नहीं मानता। तिलक कामोद में कामोद राग का अंश मात्र भी नहीं है।

आरोहावरोह—सा रि म प सां ऽ प, ध म ग, सा रि ग सा नि,

मुख्यांग—सां प ध म ग, सा रि म ग, सा रि ग, सा नि, पं नि सा रि ग सा।

इस में कोमल निषाद का प्रयोग नि॒ ध म ग, अथवा सां प नि॒ ध म ग, सा रि ग, सा नि, इस ढंग से करते हैं।

आलाप राग तिलक कामोद

सा ग रि ग ऽ सा सा रि म ग ऽ सा सा रि नि सा ग रि प म ग सा नि
~, ⌣ ⌣ o o o, o o o o o o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, o o

पं नि सा रि ग सा | सा नि रि सा ग रि प म ग ऽ रि सा नि पं नि सा रि
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o, o ⌣ ⌣ ⌣

ग सा | सा रि म प ध म ग ग रि प म ग ऽ सा पं नि सा रि ग ऽ सा |
⌣ o | o o o o — o o, o o o o — o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ |

सा नि रि सा म रि प म ध प ध म ग रि ग ऽ सा रि प म ग सा रि ग सा
o o o o o o o o o o — o o ⌣ o ⌣ - ⌣ o o o, ⌣ ⌣ o o

नि पं नि सा रि ग सा | नि प नि सा म रि म प ध म ग सा रि ग सा |
o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o | o o o o, o o o o o o o —, o o o o

सा रि म प सां ऽ प ध म ग सा रि नि सा रि ग सा रि प म ग सा रि म ग
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o —, o o o o,

सा रि ग सा नि ऽ पं नि सा रि ग सा | सा रि म प सां ऽ प ध म ग रि
o o —, o o — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o | ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o , ⌣

म प ध म प सां ऽ प नि॒ ध म ग ऽ. सा रि ग सा रि प म ग सा रि म ग
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o o o o o —, ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o o, o o o o,

सा रि नि सा प ध म प सां रिं नि सां प नि॒ ध म ग सा ग रि ऽ प म
⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, o o o o —, o ⌣ ⌣ ⌣ o o

ग सा रि ग सा नि | सा रि म प सां प नि सां रिं गं सां गं रिं पं मं गं
—, ⌣ ⌣ o o o, | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —,

सां रिं मं गं सां रिं गं सां नि प ध म प सां रिं नि सां प ध म प नि॒ ध म
⌣ ⌣ o — ⌣ ⌣ o o o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o

ग सा रि प म ग सा रि ग सा नि पं नि सा रि ग सा |
o, ⌣ ⌣ o o o, ⌣ ⌣ o o o, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताने तिलक कामोद

सा रि ग सा, रि ग सा रि म ग रि ग सा रि निं सा । सा रि ग रि, प प म ग रि सा निं सा । सा रि ग सा, रि ग सा रि, म प रि म, प ध म प, ध प म ग रि सा निं सा । सा रि निं सा, नि पं निं सा, ग रि प म ग रि निं सा। पं नि सा रि निं सा ग रि प प म ग रि सा निं सा । पं पं निं सा रि ग सा रि प प म ग रि सा निं सा । पं पं प, निं निं निं, सा सा सा, रि रि रि, प प म ग रि सा निं सा । सा रि ग सा रि ग सा रि म प रि म, प ध म प, सां सां ध प म ग रि सा, रि ग रि, प ध प, सां रिं सां, प ध प, सां सां ध प म ग रि सा । ग रि रि, प म म ध प, सां सां ध प म ग रि सा, रि सा सा, ग रि रि, प म म, ध प प, प ध म प सां सां ध प म ग रि सा । सा रिं म प, रि म प ध, म प नि सां, प नि सां रिं, नि सां प ध, म प ध प म ग रि सा । ग रि प म ग रि निं सा, ग रि प म, ध प, सां सां ध प म ग रि सा, सा सा सा, प प प, प प प, सां सां सां, सां रिं नि सां, प ध म प, नि सां प नि, सां रिं नि सां, प ध म प, सां सां ध म ग रि सा । रि ग रि प म ग रि सा पं निं सा रि निं सा, रि ग सा रि, म प रि म, प ध म प, नि सां प नि, सां रिं नि सां रिं गं सां रिं नि सां प ध म प सां सां ध प म ग रि सा ।

सा सा रि म प ध म प सां सां रिं गं रिं पं मं गं रिं सां, सां रिं सां नि ध प म ग रि सा । सा सा रि म प ध म प नि सां प नि सां रिं नि सां, प ध म प, प नि् ध म, ग रि ग सा, निं सा पं निं सा रि निं सा ।

(सा रि ग म गीत) राग तिलक कामोद

ताल गज झंपा, मात्रा १५ ताली, १, ५, १३ खाली, ९ पर ।

स्थाई

सां सां सां | नि सां प प प ध म ग रि ग सा निं ग रि ग | ऽ सा निं निं
— — — | — — — — — — — — — — — — — — — | — — — —
१३ | १ ५ + १३ | १

पं पं निं सा रि ग ऽ सा ||
—— — — — ——— —
५ + ||

अन्तरा

म म म | प प प नि नि सां सां प नि सां रिं गं सां नि सां | प ध प ध म ग
—— — | ——— — — — — — — — — — — — — | —— —— ——
१३ | १ ५ + १३ | १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रि ग सा रि सा निं ||
— — — — — —
+

राग छाया लगत्व तिलक कामोद तीनताल विलम्बित मात्रा १६

स्थाई—राम कहो, रहमान कहो, कोउ कान्ह कहो, महादेव री।

अन्तरा—पारस नाथ कहो, कोउ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेव री ॥

स्थाई

ध म प ध म | ग सा निं ऽ पं निं पं निं निं पं निं सा रि ऽ रि ग ग रि सा
रा · · म क | हो · · · र ह मा · · · · · · · न क · · ·
१ ५ +

रि ग म ऽ ऽ ग ऽ सा ग रि ग सा ऽ रि म म रि म प | म प ऽ ऽ म ऽ ग
· · · · · हो · को · · · उ · का · · · · · | न्ह · · · क · ·
१३ ५

सा ग रि ग सा ऽ सा रि म प सां ऽ प ऽ धं प ध ऽ ऽ म ऽ ग सा ग
· · · हो · · म · · · हा · · · · दे · · · व · · · ·
+ १३

रि ग सा ऽ ||

अन्तरा

म प प | नि सां ऽ सां प नि सां रिं गं सां रिं गं सां ऽ सां रिं सां प ऽ ऽ ध प
पा र स | ना · · थ क · · · · · · हो · को · · · · · · उ
१ ५ +

ध ऽ म ऽ ग सा ग रि ग सा ऽ रि रि | म ऽ रि म प ध सां नि ध प ध प ऽ
· · ब्र · · · · · · ह्मा · स क | ल ब्र · · · · · · · · · ह्म ·
१३ १ ५

रि म ऽ रि प ऽ म ध प ध ऽ म ग सा सा रि म प सां प ध ऽ म ग सा |||
स्व · · य · · मे · · · · · · · व · · · · · · · री · ·
९ १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ध न प म ग | ग ऽ
⌣ ⌣ ⌣ ० ० | — —
रा · · म क | हो ·
| १

राग तिलक कामोद (एक प्रकार) झपताल

स्थाई—मुकट पर वारी जाऊं, नागर नन्दा, सब देवन में कृष्ण बड़े हैं,
ज्यों तारों में चन्दा ।।

अन्तरा—सब सखियन में राधे बड़ी है, ज्यों नदियों में गंगा,
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि, काटे यम के फंदा ।

स्थाई

प | सां सां सां प प ध ऽ म म प ऽ ग सा पं निं सा रि | ऽ ऽ सा रि ग
— | — — — — ⌣ ० ⌣ — ⌣ ० ⌣ — —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | — ० ० ⌣ ०
मु | क ट प र वा · · रि जा · · · ऊं ना · · · | · · · ग ·
| १ ३ + ८ | १ ३

ऽ रि सा ऽ म रि प म ध प सां ऽ ध प म प ग सा रि ग सा रि | म म म
⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | — ० ⌣
· र · · न · · · · · · · · · · · न्दा ·, स · ब · | दे व न
+ ८ | १

प म प ऽ ऽ म प ध म प ग रि सा ऽ म प | नि नि नि सां ऽ प ध म प
⌣ ⌣ ० ⌣ — ⌣ ⌣ ० ० ० — ० ० — ० ० | — — ० ० — ⌣ ⌣ ⌣
· में · · · कृ · · ष्ण ब ड़े हैं · ·, ज्यों · | ता रों में · · चं · ·
३ + ८ | १ ३

सां रिं नि सां ऽ ध प म प ग सा ||
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० — ||
· · · · · · · · · न्दा · ||
+ ८ ||

अन्तरा

म प | नि नि नि नि नि सां ऽ प नि नि सां रिं ऽ सां रिं गं रिं सां प नि |
० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ०, ० ० |
स ब | स खि य न मे · · रा · ध · · · ब ड़ी · है · ज्यो · |
| १ ३ + ८ |

ऽ नि नि नि सां सां रिं नि सां प प ध म प ध ऽ म प ग सा रि | म प
— ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ० — — | ० ०
· न दि यों · में · · · · गं · · · · · · · · गा · च | न्द्र स
१ ३ + ८ |

नि सां प नि नि सां सां सां रिं नि सां प ध म ग सा रि | प प प ध प ध ऽ
छी · भ ज बा · ल क्रु · · · ष्ण छ वि · · का | टे य म · के · ·
३ + ८ | १ ३

म म प सां ऽ ध प म प ग सा ||| प ध म प | सां सां सां प
· फं · · · दा · · · · · ||| मु · · · | क ट प र
+ ८ | १ ३

राग तिलक कामोद झपताल ठायलय

स्थाई—मो मन बसो श्यामा श्याम ।
श्याम तन मन श्याम कामर माल की मणि श्याम ।

अन्तरा—श्याम अंगन, श्याम भूषण, वसन हैं अति श्याम ।
श्यामा श्याम के, अति भीने, गोबिंद जन भये श्याम ॥

स्थाई

सा रि सा रि म रि म प म प ध प | सां ऽ प ऽ ध प ध ऽ म ऽ प म प ऽ
मो · · · · · न · ब · · · | सो · श्या · · · · · मा · · · ·
| १ ३ +

ग रि सा पं निं सा | रि रि ग रि सा रि म प ध ऽ म म प ऽ गं रि सा रि
श्या म · श्या · म | त न म · · · · · · · न श्या · · म · · का
८ | १ ३ + ८

म प | नि नि नि सां म प नि सां रिं गं सां ऽ ध प म प सां ध प म प ध
म र | मा ल की · म · णि · · · · · श्या · · · · · · · ·
| १ ३ +

म प ग सा ||
म · · · ||
८

अन्तरा

म प नि | नि सां सां सां प नि सां सां प नि सां रिं सां रिं गं रिं गं सां सां रिं
श्या · म | अं · ग न श्या · · म भू · ष ण व · · स · न हैं ·
| १ ३ + ८

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां प प प ध म प नि | सां प प प ऽ ध प ध ऽ म ऽ प म प ऽ ग रि सा
⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० | — ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — ० —
· · अ ति · · · · | श्या · म श्या · · · · · म · · · · · श्या म के
| १ ३ + ८

रि म प | नि नि नि सां सां प नि सां रिं ऽ सां रिं गं सां ध प म प सां ध
० ० ० | — — ० — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣
प्र · म | भी ने गो विं द ज · न · · भ · ये · श्या · · · · म
| १ ३ + ८

म प ग सा |||
⌣ ⌣ ⌣ ०
· · · ·

राग तिलक कामोद झपताल

स्थाई—कैसे तुम गणिका के औगुण न गिने नाथ,
कैसे तुम भिलनी के जूठे बेर खाये हो।

अन्तरा १.—कैसे तुम द्वारिका में द्रोपदी की टेर सुन,
कैसे तुम गज काज नंगे पग धाय हो।

अन्तरा २.—कैसे तुम सुदामा के छिन में दरिद्र हरे,
कैसे तुम उग्रसेन, बंदीते छुड़ाये हो।

अन्तरा ३.—मेरी बेरे ऐति देर कान मून्द रहे नाथ,
दीन बन्धु दीनानाथ, काहे को कहाये हो।

स्थाई

रि ग सा रि म | प प म रि प म ध प ध प ध प म म प मं ग ग सा निं |
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — | — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ० ⌣ — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ~ |
क़ · · · से | तु म ग · · · णि · · का · · · · के · · · · औ |
· · | १ ३ + ८

सा सा रि ग सा रि म म म प म ग ग सा ग रि ग सा प सां | ऽ प म प निं
— — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ⌣ ⌣ ० ० — — | — — — ० ०
गु ण न · · · · गि ने · · · · ना · · · थ क़ से | · तु म भि ल
१ ३ + ८ | १ ३

नि प म प ग सा म ग | ऽ म प म ग ग सा सा रि म प सां ऽ ध प
— — ० ० ० ० — — | — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣
नी · · · के · झू ठे | · बे · · · · र खा · · · · · ये ·
+ ८ | १ ३ +

म प ग सा ||
० ० ० ०
· · हो ·
८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म प | नि नि नि नि सां ऽ ऽ नि प नि सां सां ऽ प नि सां | नि सां रिं ऽ सां
— — — — ० ० —, ‿ ‿ ‿ ‿ — — ० ० ० ० | ‿ ‿ ० — ‿
कै से | तु म द्वा रि का · · · · · · · · में · द्रो प दी | की · · · टे
| १ ३ + ८ | १ ३

रिं गं सां रिं सां नि प सां रिं सां प प प ध नि् ध म ऽ प | ग सा सा रि म
‿ ० ० ‿ ‿ — — ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ | — — ‿ ‿ ‿
· · र सु · नी क से · · तु म ग · ज · का · · | · ज नं · ·
+ ८ | १ ३

प सां सां प प सां रिं सां सां ध प म ग रि सा |||
‿ ० — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
· · गे प ग धा · · · ये · हो · · ·
+ ८

नोट—इस राग में दूसरे रागों की छाया लगा के ठुमरी गाते हैं।

राग तिलक कामोद तीनताल

स्थाई—लाल तुम कहां से आये, जगे सगरि रैन के हम ने पछाने।
थारी नजर खुमार भरी अखियां ।।

अन्तरा—१. नयन घुमावत लट लटकावत, होठ न बिन बोलन लगे ।।

अन्तरा—२. अधरन अजन भाल महावर, चरण धरत डगमगे।

अन्तरा—३. आनंद घन पिया वहीं जाओ तुम, जहां तुम्हारे सगें।

स्थाई

निं निं सा सा प म | ग सा रि ग ऽ सा सा निं पं निं सा रि सा रि ग रि मा
— ० ० ० ० — | ० ० ‿ ० ‿ ० ० — ० ० ० ० ‿ ‿ ० ‿ ०
ला ल तु म क हां | से · आ · · ये ज गे स ग रि र · · न के ·
+ ७ | १ ३ + ७

ऽ | म म म प ध म प ग रि सा ऽ सा रि रि म प प | सां प नि् ध प म
‿ | ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ‿ ० ‿ — — ० ० ० ० | — ० ‿ ‿ ‿ ‿
· | ह म ने · प छा · · ने · · था री न ज र खु | मा र भ · री ·
| १ ३ + ७ | १ ३

प म ग रि ग सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
अ खि यां · · ·

अन्तरा

म म म म प नि नि | नि नि नि नि सां सां सां प ध म प नि सां प प प नि
० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿ ‿
न य न घु मा व त | ल ट ल ट का व त हो · · · ठ न बि न बो ·
+ ७ | १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	रिं	|	गं	सां	रिं	गं	सां	प	ध	म	ग	सा	|||
‿	‿	|	‿	‿	‿	‿	०	०	०	०	०	०	|||
·	·	|	·	·	·	·	ल	न	·	·	ल	गे	|||
		|	१					३					|||

राग तिलक कामोद तीनताल

स्थाई–नहीं ऐसो जन्म बारंबार, क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे
मानस अवतार ॥

अन्तरा–१. बढ़त पल पल घटत छिन छिन चलत न लागे बार,
बिरछ के जो पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार ॥

अन्तरा–२. भवसागर अति जोर कहिये, विषम ओखी धार,
सुरत का नर बांध बेड़ा, बेग उतारो पार ॥

अन्तरा–३. साधु सन्ता ते महन्ता, चलत करत पुकार ।
दास मीरां लाल गिरिधर, जीवना दिन चार ।

स्थाई

पं	निं	सा	रि	|	ग	सा	म	प	ध	प	म	ग	सा	ग	रि	ग	सा	निं	निं	सा	रि	म	रि	|
०	०	‿	‿	|	०	—	‿	‿	‿	—	‿	‿	‿	‿	‿	०	—	०	‿	‿	‿	०	‿	|
न	हीं	ऐ	·	|	सो	·	ज	·	·	·	न्म	बा	·	रं	·	·	बा	र	क्या	·	·	·	·	|
				|	१				३				+				७							|

म	प	प	ऽ	सां	सां	प	प	नि	म	म	म	ग	रि	ग	सा	|	ऽ	प	प	रि	प	म	ध	प नि
०	०	—	०	०	०	०	‿	‿	‿	—	०	‿	‿	०	—	|	०	—	०	‿	‿	‿	‿	‿
जा	·	नूं	·	क	छु	·	·	·	·	पु	ण्ट	प्र	·	ग	टे	|	·	मा	न	स	·	·	·	अ ·
१			३			+					७					|	१			३				

ध	म	ग	सा	रि	ग	सा	निं	|||
०	०	‿	‿	‿	‿	०	०	|||
व	ता	·	·	·	·	र	·	|||
	+						७	|||

अन्तरा

म	म	प	नि	सां	नि	|	सां	ऽ	प	नि	सां	रिं	गं	सां	ऽ	रिं	नि	सां	प	ऽ	ध	म	ग	सा
०	०	—	०	०	०	|	—	०	०	०	‿	‿	०	‿	‿	‿	०	०	०	०	०	०	०	०
ब	ढ़	त	प	ल	प	|	ल	·	घ	ट	त	·	·	छि	·	·	न	·	·	·	छि	न	·	·
	७					|	१		३								+						७	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म म | म प म ग सा रि ग सा निं ऽ निं ऽ पं निं निं सा | सा ऽ प ऽ ध म
० ० | ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० — | — ० ० ० ० —
व ल | त न · ला · गे · बा · · र · बि र छ के | जो · पा · त टू
| १ ३ + ७ | १ ३

ग सा ऽ म प म प ऽ प सां नि | सां प ध प नि ध म ग सा ग रि
० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ० | — ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ — ० ० ⌣ ⌣
टे · · ल · गे · · न · हि | · पु · नि · · डा · · · ·
+ ७ | १ ३ +

ग सा निं |||
० ० ० |||
· र · |||
७ |||

छाया लगत्व तिलक कामोद तीनताल

स्थाई–कोयलिया बोले अंम्बुवा की डालरिया,
मोहक सुरसों हुलसावत जिया।

अन्तरा–झूम झूम कर नाचन लागे, गान सुनत बन बन के पतवा ॥

स्थाई

ग ग सा सा रि ग सा रि म प सां | प ध ऽ म प ऽ ग सा रि ऽ सा पं नि सा
० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० | ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ०, ० ० ०
को य लि या बो · ले · अं बु वा | की · · डा · · ल रि · · यां मो ह क
+ ७ | १ ३ +

ग रि ऽ ग रि निं सा रि म | प ध म प ध प म ग रि ग ऽ सा ||
⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ० | ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ - ⌣ ⌣ ⌣ ० ||
सु · · र सों · · ह ल | सा · व · त · जि · या · · · ||
७ | १ ३ ||

अन्तरा

म प नि नि सां सां सां प | सां सां गं रिं गं रिं नि सां प नि सां सां रिं नि सां
० ० — ० ० ० ० ० | ० ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
झू म झू म क र ना · | च न ला · · गे · · · गा न सु न · त ·
+ ७ | १ ३ +

प सां प नि नि | ध ध म ग रि ग सा रि ऽ सा |||
० ० ० ⌣ ⌣ | ⌣ ⌣ ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ० |||
ब न ब न · | · · के · प त वा · · · |||
७ | १ ३ |||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग तिलक कामोद द्रुत एकताल

स्थाई–हे गोबिंद हे गोपाल, हे दयाल लाल।
प्राण नाथ नाथ सखे, दीन दरद निवार ॥

अन्तरा–हे समर्थ अगम्यपूर्ण, मोहि माया धार।
अन्ध कूप महा ध्यान, नानक पार उतार।

स्थाई

सां प प प ध म ग सा रि म ग सा सा | निं पं निं सा सा ग रि प म ग ऽ रि
o o o o o o o ⌣ ⌣ o o o o | — o o o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣
हे · गो बिं · द हे · · गो पा · ल | हे द या · ल ला · · · · · ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

निं सा | ग सा रि प म ग सा सा सा रि ग सा नि | पं निं सा रि ग सा सा रि प म प
o o | o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o o o o — | o o o o o o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· ल | प्रा · · ण · ना · थ ना · थ स खे | दी · न द र द नि वा · · ·
६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

ध प म ग रि सा ||
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· · · · · र
६

अन्तरा

म प सां ऽ प नि सां नि सां सां | प नि सां सां गं रिं पं मं गं ऽ ऽ नि सां |
— o o o o — o o o o | — o o — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o o
हे स म · र्थाग म्य पू र ण | मो ह मा या धा · · · · · · · र
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

सां प प ध म ग सा ग रि म प प | प नि सां रिं गं रि मं गं सां सां सां नि ध
— o o o o o o ⌣ ⌣ o o o | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o — o o ⌣ ⌣ ⌣
अं ध कू · प म हा · · · ध्या न | ना · · · न · क पा र उ ता · ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ ५

प म ग रि सा |||
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· · · · र
६

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैया बिलावल

इस राग में शुद्ध और कोमल दोनों निषाद बाकी स्वर शुद्ध आरोह में मध्यम वर्ज्य से आरोह षाडव और अवरोह वक्र सम्पूर्ण। अंश स्वर रि ध, कई लोग ध ग को वादि संवादी कहते हैं। यह सुकुमार और बलवान हृदय से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने वाला निर्भय राग प्रतीत होता है। अपने आप को जिस के अर्पण कर चुका है। उस की खोज करने वाला युवा अवस्था का राग है। बिलावल राग को कर्नाटक पद्धति में शंकरा भरण कहते हैं। केवल शुद्ध स्वरों से, और सम्पूर्ण वक्र, सम्पूर्ण जाति का है। इस के अनेक आकर्षक प्रकार प्रचलित है। और गुणी जन उन को भर के गाते हैं जैसे देवगिरी, गुणाकली, (ऋषभ धैवत कोमल पांच स्वर की गुंडकरी है) शुकल बिलावल, सर्परदा अथवा सर्परदा बिलावल, जैज बिलावल, यमनी बिलावल, हमीरी बिलावल, नट बिलावल। देशकार बिलावल, गौड बिलावल, औडव बिलावल इत्यादि। और भी इसी अंग के राग हैं जो कि बिलावल के प्रकार अथवा इसी के भेद हैं। इस का गायन समय प्रातः प्रथम पहर के अन्त में कुछ अप्राकृतिक नियम रागों के गायन समय में लागू किये गये प्रतीत होते हैं जिस का आधार राग का पूर्वांग और उत्तरांग समझा जाता है। परन्तु यह तो स्पष्ट होना चाहिये, जिन जिन रागों को इस में बांधने का प्रयत्न करते, और उन को पूर्वांग वादि अथवा उतरांग वादि समझते हैं। क्या वास्तव में वह उसी पूर्व अथवा उत्रांग के राग हैं भी कि नहीं। और हैं तो क्या केवल इसी आधार पर इन के समय निश्चित कर डालें, या कुछ और भी प्राकृतिक बातें या कारण देख कर, सोच कर समझ कर, इन के समय निश्चित करना ठीक होगा। राग तो स्वयं अपने समय निर्धारित हुए बताते हैं। जैसे छाता केवल धूप में ही नहीं ओढ़ते, वर्षा में भी, विवाह समय दुल्हा पर भी, कोई सन्यासी महात्मा अथवा राजा महाराजा की सवारी पर भी छाता ओढ़ते हैं और छाते छाते में भी भेद होता है। तो यह समझ लेना, कि छाता ओढ़ा है इस कारण धूप अवश्य ही है। या सभी छाता ऊपर लेने वाले महात्मा या सन्यासी महात्मा है। ऐसा नहीं अर्थात राग पूर्वांग वादी है इस लिये, दोपहर १२ बजे से रात्री १२ बजे तक के बीच में ही किसी समय गाया जाएगा, ऐसी भ्रम पूर्ण बातें, रागों के समय निश्चित करने में सशक्त नहीं हैं। रागों की प्रकृति, रस, भाव, लय की गति, स्वर संगति, इत्यादि पर ही निर्भर है कि अमुक समय में अमुक राग गाया जा सकता है, सार्वकालिक राग भी तो पूर्वांग या उत्तरांग वादी हो सकते हैं। तो फिर सार्वकालिक क्यों। कुछ एक राग ऐसे अवश्य हैं जिनके पूर्वांग उतरांग के आधार पर गायन समय हैं परन्तु और नियमों का बन्धन भी साथ है। सभी रागों पर यह नियम लागू नहीं रहता।

ग नि
इस का आरोह—सा रि ग प ध नि सां।

अवरोह—सां नि ध प ध नि॒ ध प म ग म रि सा।

ग
मुख्यांग—ध नि॒ ध प म ग म रि नि॒ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप राग अल्हैया बिलावल

सा सा ग रि ग प म ऽ ग म रि ऽ ग निं ऽ सा | निं ध निं ऽ सा सा निं

धं नि॒ धं पं पं धं ऽ निं सा | सा ग रि ऽ ग म रि ऽ ग प प ध ऽ ऽ ध

ग ऽ म रि ऽ ग निं ऽ सा | सा ग रि ऽ म ग ऽ प ऽ प ध ऽ ऽ नि॒ ध प ऽ

ध ग ऽ म रि ऽ म ग ऽ प ऽ म ग म रि ऽ ग निं ऽ सा | ग ग रि सा ग

रि ग प ध ऽ नि॒ ध प ऽ म ग ऽ म रि ऽ म ग ऽ प ध ऽ नि॒ ध प ध ग

ऽ मं रि ऽ ग निं ऽ सा | सा ग रि ग प नि ध ऽ ऽ नि सां ऽ म ग ऽ प

ध नि सां नि सां नि सां ऽ सां रिं नि सां नि ध ऽ ऽ नि॒ ध प ध ग ऽ म रि

ऽ ग प ध नि सां ध नि॒ ध प ध ग ऽ म रि ग निं ऽ सा | सा ग रि ग प

ध नि सां नि सां ऽ सां गं रिं ऽ गं मं रिं ऽ गं नि ऽ सां सां रिं नि सां ध ऽ

नि॒ ध प ऽ ध ग ऽ म रि ऽ ग प म ग म रि ऽ ग निं ऽ सा ऽ | प नि ध

ऽ नि सां नि सां ऽ प ग ऽ म रि ऽ ग प ध नि सां नि सां ऽ सां गं रिं गं पं

मं ऽ गं मं रिं ऽ गं नि ऽ सां सां रिं नि सां ध नि॒ प ध ग म रि ग प ध नि

सां ऽ ध नि॒ ध प ध ग ऽ म रि ऽ ग प म ग म रि ऽ ग निं ऽ सा |

ताने राग अल्हैया बिलावल

सा रि ग रि ग प म ग, रि ग प प म ग रि सा । सा रि ग प ध नि
ध प म ग रि सा, ग रि ग प ध नि॒ ध प म ग रि सा । सा रि ग रि, रि ग
प ग, ग प ध नि॒ ध प म ग, रि ग प म ग रि सा सा । ग रि ग प ध नि सां
नि ध नि॒ ध प म ग प म ग रि सा सा । सा सा ग रि ग प ध नि, सां नि ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प म ग रि सा । प प म ग रि सा निं सा, ध नि् ध प म ग रि सा, ग प ध नि सां नि ध प ध नि् ध प म ग रि सा ।

सा रि ग रि, रि ग प ग, ग प ध प, प ध नि ध, ध नि सां नि ध नि् ध प, सां नि ध प म ग रि सा। सा सा सा, रि रि रि, ग ग ग, प प प, ध ध, ध नि् ध प म ग रि सा निं सा, सा सा ग रि ग प ध नि सां रिं नि सां ध नि् ध प म ग म रि, ग प ध नि सां रिं सां नि ध नि् ध प म ग रि सा। ग रि प म ग रि सा सा, नि ध सां नि ध प ध नि् ध प म ग रि सा निं सा । सा रि सा, रि ग रि, ग प ग, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रिं सां, रिं गं रिं, गं पं मं गं रिं सा, ध नि सां नि ध प ध नि् ध म म ग रि सा । सा रि सा, ग म रि, रि ग रि, प ध प, ग प ग, ध नि् ध, प ध प, नि सां नि, ध नि ध, सां रिं सां, नि सां नि, सां गं रिं, सां रिं सां, नि सां नि, ध नि् ध, प ध प । ध नि् ध, ध नि् ध, ध नि सां नि ध प म ग रि सा । रि रि रि, ग ग ग, प प प, नि नि नि, सां नि ध प म ग रि सा, ग ग ग, प प प, नि नि नि, सां सां सां, गं रिं सां नि ध प म ग रि सा निं सा ।

राग अल्हैया बिलावल (ध्रुपद) चौताल

स्थाई–तू ही आद नाद ब्रह्म विष्णु, तू ही गुरु तू ही चेला ।

अन्तरा–तू ही खङ्ग तू ही कपर्द, तू ही आबलाकर तू ही आकर आकेला ।।

स्थाई

प ऽ ध नि | सां सां ध नि प ऽ ऽ ध नि् ध प म प ऽ ऽ | ग म रि ऽ
— — o o | ~ — — — o ‿ ‿ — — — — — o ‿ ‿ | — — o ‿
तू · हो · | आ द ना · द · · ब्र · ह्म वि · ष्णु · · | तू · · ·
११ | १ + ५ + ९ ११ | १ +

ऽ ग म प म ग रि ऽ ऽ सा रि सा ऽ ऽ | सा ऽ ऽ ग प प प ऽ ऽ ध
‿ — — — — — o ‿ ‿ — — o ‿ ‿ | ~ o ‿ ‿ — — — ~ o ‿ ‿ —
· हि · म हा · · · · दे · व · · | तू · · · हि · गु रु · · · तू
५ + ९ ११ | १ + ५ + ९

नि रि ऽ ऽ | सां ध नि् प ऽ नि ध प म रि ग ऽ प ऽ ध नि ||
o ‿ ‿ | ~ — ‿ o ‿ — — — — ‿ o ‿ — — o o
हि · · · | चे · · · · · · ला · · · · · तू · ही ·
११ | १ + ५ + ९ ११

अन्तरा

ग प ध नि ध ऽ सां सां सां सां रिं सां सां ऽ ऽ | सां गं रिं गं मं गं रिं गं रिं
— — — ‿ o ‿ — — ~ — — — o ‿ ‿ | — o o — — o o o o
तू · ही खं · · · ग तू ही क प र्द · · | तू · · ही · आ · · ·
१ + ५ + ९ ११ | १ + ५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां रिं सां ऽ ध | नि॒ ध प ऽ ग प ध नि ध प ऽ | ध नि रिं सां ध नि
व · सा · क | · · र · · तू ही आ . क र · · | आ · · के · ·
+ ९ ११ | १ + ५ + ९ ११ | १ + ५

प ऽ नि ध प म रि ग ऽ |||
· · · ला · · · · ·
+ ९

ख्याल राग अल्हैया विलावल

ताल शेखर मात्रा १७ ताली १, १३, १५ खाली ६ पर

स्थाई—ये मन कहा करूं कित जाऊं, हरि के बिना ॥

अन्तरा—मन की व्यथा कासों कहिये, पूजन करूं, नित हरि नाम ध्याऊं ॥

स्थाई

प
ग प नि ध ऽ नि | सां ऽ ध नि॒ ध प ग म रि ग प म ग म रि ऽ ग निं ऽ
ये म न · · क | हा · · क रू · · · · · कि त जा · · · · ·
| १ +

सा सा सा सा निं धं निं सा ग रि ग प ध नि॒ ध प ध प म प म ग म रि ग ||
· ऊ ह रि के · · · बि · ना · · · · · · · · · · · · · ·
१३ १५

ग प ध नि | सां
ये म न क | हा
| १

अन्तरा

पं प नि ध नि | सां सां गं रिं गं मं गं रिं गं ऽ रिं सां सां रिं नि सां ध नि॒ ध
म न की · व्य | था का · · सों क हि · : ये · पू · · · ज · न
| १ +

प प ध ग म रि ऽ ग म रि ग निं सा ग म रि ग प प सां रिं सां, नि सां नि,
· क · रू · · · नि त · ह · री ना · · · · म ध्या ·
१३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध नि॒ ध प ध प म प म ग म ग रि ग रि निं सा सा ||| ग प ध
देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर देर ||| ० ० ‿
ॐ ||| ये म न
१५

नि॒ ध प म ग रि सा | सां
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | —
क | हा

ख्याल अल्हैया बिलावल विलम्बित एक ताल

स्थाई—दैया कहां गये लो, ब्रिज के बसैया।

अन्तरा—ना मोरे पंख, ना पायल और बल, ना कोऊ सुध के लवैया।

स्थाई

नि॒ ध प ग म | प ग ऽ ऽ म रि ऽ सा सा ऽ ग रि गं ऽ ऽ म रि ऽ ध प ऽ
० ० ० ० ० | ‿ ० ‿ — ‿ ० ‿ — ० ‿ ‿ ‿ ० ‿ — ‿ ० ‿ ० ० —
दै · या · · | क · · · हां · · · ग · · य · · · · · · लो · ·
११ | १ + ५ + ९

प प नि ध | नि सां ध नि॒ ध प प ऽ प ध ऽ ध नि॒ ध ध ऽ प प
— ० ‿ ‿ | — — ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ ० ‿ — ‿
· ब्रि ज · | के · · · · · ब · · · · · · सै · · या ·
११ | १ + ५ + ९

ध ग म रि ||
‿ ० ‿ ‿ ||
· · · · ||

अन्तरा

प नि ध नि सां सां सां | सां नि सां ऽ सां गं रिं गं मं गं रिं गं ऽ रिं सां ऽ सां
० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ | — ‿ ० ‿ ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० — ‿
ना मो · रे प · ख | ना · · · पा · · य ल औ · र · ब ल · ·
११ | १ + ५ +

प नि
ध नि॒ ध प प ऽ ध प ध ग म रि ग प | ध नि सां ऽ नि सां ऽ ऽ ध नि॒ ध
० ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — | ० ० — — ‿ ० ‿ — ० ० ०
· · · · ना · · · · को · ऊ · · | सु ध के · ले · · · वै · ·
९ ११ | १ + ५ +

प प ध ऽ ध ग ऽ म रि ग ऽ |||
० ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ |||
· या · · · · · · · · · |||
९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैया बिलावल झपताल

स्थाई—वट तर सांवरो ठाडो, पीत दुकूल,
गले बीच सेली चन्द्र चीर बाढ़ो।

अन्तरा—मोर मुकट पीताम्बर सोहे, फेटा कस गाढ़ो,
पुरुषोतम प्रभु तुम्हरे मिलन को, मो छित अति बाढ़ो।

स्थाई

ग प ध नि सां नि | सां ध नि् ध प ध ग ऽ प म ग रि सा ग रि ग प म
० ०⌣⌣ ० ० | ~ ० ० ० ० ० ० ०⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ०
व ट त · · र | सां · · · · व रो · ठा · डो · · पी · त · दु
| १ ३ + ८

ग म रि ऽ ग नि ऽ सा सा ग म रि ग प प प नि ध नि सां | ऽ सां सां नि
—⌣ ० ⌣⌣ ० ⌣ ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० | ० ० ० ०
कू · · · · · · · · ल ग ले · बी · · च से · ली चं | · द्र ची ·
१ ३ + ८ | १

ध प म ग नि् ध प म ग रि सा ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ||
· · · र बा · · · ढ़ो · · ||
३ + ८ ||

अन्तरा

प नि ध नि सां सां | सां सां सां सां सां गं रिं गं मं रिं सां सां सां ऽ नि | ध
० ⌣⌣ ० ० ० | ~ — ० ० ० ⌣⌣ — ० ० — — ० ⌣⌣ | —
मो र · मु क ट | पी तां ब र सो · · · · · · हे फे टा · · | ·
| १ ३ + ८ | १

ध नि् ध प ध ध प ध नि् ध प ध ग म रि ऽ सा सा ग म रि ऽ ग प | म
० ० ० ० ⌣⌣⌣⌣ ० ⌣⌣ ० ० ⌣ ० ⌣ ० ० ० ⌣⌣⌣ ० ० | —
· · क स गा · · · · · · · · रो · · पु रु षो · · · त म | के
३ + ८ | १

ग म रि सा ग म रि ग प ' प ध नि् ध प | नि ध नि सां सां ' सां | रिं सां
— ० ० — ० ⌣⌣ ० ० ० ० ० ० — — | ० ⌣⌣ — — ० ⌣ | ⌣
· · प्र भु, तु म्ह · रे · · मि ल न को · | मो · · हि त · अ | · ति
३ + ८ | १ ३

नि ध प ध नि् ध प ध प म ग रि सा ||
⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ||
· · · बा · · · ढ़ो · · · · · · ||
+ ८ ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैया बिलावल तीनताल

स्थाई—काहु जोगिया की लागि नजर, मेरो बारो कन्हैंया रोवे री।
मेरी गली जिन आऊरे जोगिया, अलख अलख कर बोले री।

अन्तरा—घर घर हाथ दिखावै यशोदा, बार बार मुख जोवैरी।
राई लोन उनारत छिन छिन, 'सूर' को प्रभु सुख सो वैरी।

स्थाई

म
ग रि ग ग प ध प म ग म रि | सा सा सा ग रि ग प प ग रि ग प प |
० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० | — ० ० ० ‿ ‿ ० ० — — ० — ० |
का हु · जो · गि · या · · कि | ला गि न ज र · मे री बा रो क न्है या |
\+ ७ | १ ३ + ७ |

ऽ ध नि सां नि ध प म ग म रि ग म रि ऽ ग प प | प प म ग म रि ग प
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿ ‿ — ‿ ० ‿ ० — ० | ० — ० ० ० ० ० —
· रो · · · वे · री . · · मे री · · ग लि जि | न आ ऊ रे जो · गि या
१ ३ + ७ | १ ३ +

ग ग प ध ध नि | सां रिं सां नि ध प म ग ||
० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ||
अ ल ख अ ल ख | क र बो · ले · री · ||
७ | १ ३ ||

अन्तरा

ग ग प प नि ध ऽ नि नि | सां सां नि ध सां रिं सां नि नि नि ऽ नि नि नि |
० ० ० ० ‿ ० ‿ ० ० | — ० ‿ ‿ ० ० — — ० ० ० ० ० ० |
घ र घ र हा · · थ दि | खा व या · शो · दा बा र बा · र मु ख |
\+ ७ | १ ३ + ७ |

सां सां नि ध नि ध नि सां सां रिं गं नि सां सां | ध नि रिं सां ध ध प प सां
० ‿ ‿ ‿ ० ‿ — — — — ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० —
जो · · · · · वै री रा ई लो · न उ | ता · र त छि न छि न सू
१ ३ + ७ | ३ +

नि सां ध नि् ध प | नि ध सां रिं सां सां ध, नि ध प म ग म रि |||
० ० ० ० ० ० | ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ |||
र को · · प्र भु | सु ख सो · · · वे · · · री · · · |||
७ | १ २ |||

राग अल्हैया बिलावल तीनताल

स्थाई—पथ देखत नयना दुःखि आये, झरत झरत जल भये झरना।

अन्तरा—यमुना गंगा अरु सब सरिता, देखत चकित भये दोऊ झरना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म नि॒ ध प ग म रि ग प | ध नि सां सां सां ध नि॒ प ग ग म रि ग निं सा ग
o o o o ⌣ ⌣ o o o | ⌣ ⌣ o o o o — o o o o o o o ⌣
प थ दे · ख · त न य | ना · · दु खि आ · ये झ र त झ र त ज
\+ ७ | १ ३ + ७

रि ऽ ग | प प नि ध नि सां रिं रिं सां नि ध प म ग म रि सा निं सा ||
⌣ ⌣ o | o o ⌣ ⌣ o १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/३ १/५
· · ल | भ ये झ · र ना · · · · · · · · · · · · ·
| १ ३

अन्तरा

ध नि॒ प प ध म म प ग ग म रि | ग प नि ध ऽ नि सां रिं सां ध नि॒ ध नि
⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o ⌣ ⌣ o | o o ⌣ ⌣ ⌣ o o o — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
य · मु ना · · गं · · गा · · | अ रु स · · ब स रि ता य · मु ·
\+ ७ | १ ३ +

ध ध प ध म प म प ग म रि ग | प प ध नि सां रिं सां गं मं रिं नि सां
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | o o o o o o — — o o o o
ना · · · गं · · · गा · · · | अ रु स ब स रि ता दे ख त च कि
७ | १ ३ + ७

ध नि॒ | ध प नि ध ऽ नि सां रिं गं रिं सां नि ध प म ग रि सा |||
o o | o o ⌣ ⌣ ⌣ o १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६
त भ | ये · दो · · ऊ झ · र · ना · · · · · · ·
| १ ३

राग बिलावल मध्यलय तीनताल

स्थाई—दे पूतना विष रे अमृत पायो।
जो कछु दैयत सो फलू पैयत, नाहक वेद ना गायो ॥

अन्तरा—शत यज्ञ राजा बलि कीनो, बांध पताल पठायो,
लक्ष गऊ राजा नृग दीनी, गिर गिट रूप जरायो ॥

अन्तरा—२. एक जन्म के मित्र सुदामा, कंचन धाम वनायो।
'सूरदास' तेरी अद्भुत लीला, वेद नीति कहि गायो ॥

स्थाई

ध प म ग ग म रि | सा ऽ सा सा प म ग रि ग ऽ म ग प प | प ध ऽ
o o ⌣ ⌣ o — o | ~ — o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — o ⌣ ⌣ o o | ⌣ o ⌣
दे · · · · पू त | ना · वि ष रे · · · · · अ · मृ त | पा · ·
७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध नि़ ध प म॑ ग ग ग ग रि ग प प | ध नि़ ध प ध नि़ ध प ग़ म़ रि ग़
⌣ ० ० ० ⌣ ⌣ ० — ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ०
. . . यो . . . . . जो क छु द य न | सो . फ ल पै . य त ना . . ह
३ + ७ | १ ३ + ७

प ध नि ऽ | ध नि नि सां ऽ ध प म ग नि़ ||
० ⌣ ० ⌣ | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — ० ⌣ ⌣ ०
क वे . . | द . ना . . गा यो . . .
| १ ३ +

अन्तरा

ग ग रि ग प प नि ध | सां सां सां सां रिं सां सां रिं गं रिं सां सां सां | सां रिं
० ० ० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० — ० ० ० ० — ० ० | ० ⌣
ध त . य . ज्ञ रा . | जा ब लि की . नो बां . ध प ता ल प | ठा .
+ ७ | १ ३ + ७ | १

सां सां ऽ ध प प प ध ध ध | प ध नि़ ध प ग म रि ग ग प प नि ध ऽ
⌣ — ० ० — — ० ० — — | ⌣ ⌣ ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ०
. . . यो . ल क्ष ग ऊ रा | जा . . नृ ग दी नी . गि र गि ट रू . .
३ + ७ | १ ३ + ७

नि नि | प प ध नि सां ध प म ग नि ||
० ० | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ० ० ० ०
प क | रा . . . . यो . . . .
| १ ३ +

राग अल्हैया बिलावल द्रुत एकताल

स्थाई—तेंडी याद, आवे पिया, गले डार बैय्यां सैयां,
दे बलैयां घोल गैयां ।।

अन्तरा—गली गली, बीथ बीच, ढूंढ फिरि चारों दिशि,
आवे पिया गर लगावें, बिनती करत तोरी सैयां ।।

स्थाई

सां नि सां ध नि़ प ग म रि ग प | प ध नि़ ध प म ग़ म रि निं सा सा |
— ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
तें डी या . . द आ . वे पि या | ग ले . डा . र बै . यां सैं . या
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

ग म रि ग प प ध नि सां नि ध प म ग रि सा निं सा || ध नि सां नि सां
⌣ ⌣ ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ || ⌣ ⌣ ० ० ०
दे ब . लै . या घो . . . ल . गै . . . यां . || तें . . डि यां
१ + ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प ऽ प नि ध नि सां ऽ नि सां ऽ सां | सां गं रिं गं पं मं गं नि सां सां ध
० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० | ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ — ० ० ० ०
ग ली · ग ली · · बी · थ बो · च | ढू · · ढ फि · री चा · रों दि
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

नि॒ प | प ध ग ग म रि ग प प ध नि सां नि ध प | ध नि॒ ध प ध ग म
० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ० ० ० ० ० ०⌣
· शि | आ · वे पि या · ग र ल गा · · · वे · | बि न ती क र त तो
६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३ +

रि ग प ध नि॒ ध प म ग |||
⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣⌣ ⌣
· · री सैं · · · यां ·
५ ६

राग केदार

इसमें शुद्ध और तीव्र दोनों 'मध्यम', शुद्ध और कोमल दोनों 'निषाद', बाक़ी स्वर शुद्ध लगाते हैं और गान्धार वर्ज्य है तो भी सा म (ग) प इस प्रकार गान्धार कण स्वर के रुप में लेते है। इस राग का 'मध्यम' अंश स्वर, 'षड़ज' उस का संवाद देता है। यह स्वरूप इसका सर्व मान्य है। गुरू मुख से शिक्षा प्राप्त किए हुए लोग स्वयं इस बात का प्रमाण हैं। फिर थाट पद्धति वाले न जाने इसको कल्याण थाट से क्यों मानते या समझते हैं। जब कि इसमें कण मात्र भी कल्याण की छाया नहीं आती। शुद्ध मध्यम इसका प्राण स्वर है। मेल पद्धति वाले 'मध्यम' षड़ज को ही वादी संवादी मानते हैं। और कल्याण राग केवल तीव्र 'मध्यम' ही लगता है। अथवा 'गान्धार, ऋषभ' से भी कल्याण अंग की छाया दीख सकती है। और 'गान्धार' तो इसमें वर्जित है। 'मध्यम' को षड़ज का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। और मध्यम, षड़ज इन दो स्वरों के दीर्घ उच्चार और बलिष्ठ उच्चार के कारण, 'ऋषभ', भी कल्याण अंग स्पष्ट करने में असमर्थ ही रहता है। और ऋषभ स्वर मध्यम, षड़ज में ही लिप्त रहना अपना सम्मान समझता है इतना होने पर भी इस को कल्याण थाट से मानना कहां तक उचित है संगीत मर्मज्ञ स्वयं ही विचार करें। सत्य से विमुखता क्यों, केदार राग के अन्य सुमधुर प्रकार भी हैं। आगे चल कर निम्न प्रकार भी देंगे.।

यथा :—चांदनी केदार, मलूहा केदार, जलधर केदार, संगम केदार, नट केदार इत्यादि और नवीन प्रकारों में :—शाम केदार, केदार बहार, भवानी केदार इत्यादि। ऐसे मिश्र प्रकार भी प्रचार पा रहे हैं। तो भी इनमें केदार का केदारत्व अधिक अंश में दीखता ही रहता है। इसकी प्राकृति शान्त, गम्भीर है। गायन समय रात्रि के प्रथम प्रहर का अन्त समय। इसका :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरोह :—सा म, म प, म॒ प ध प, ध म, म प प सां ।

अवरोह :—सां नि ध प, मं प ध नि॒ ध प, मं प ध । ध म, रि सा ।

मुख्य अंग :—मं प ध नि॒ ध प, मं प, ध म ।

आलाप राग केदार

सा सा म ऽ म रि ऽ सा निं सा ऽ | सा रि निं सा म म प ऽ म॒ प म॒ प ध प
~, o o —, o o — — ‿ o ‿ | ‿ ‿ ‿ ‿ ~, o o—, o o ‿ ‿ ‿ ‿

ध म ऽ ऽ सा म म रि ऽ सा | सा रि सा निं धं - पं पं धं मं॒ पं सा सा
‿ o ‿ o, o o ‿ o ‿ ~ | o o — ‿ o ‿ ~, ‿ ‿ ‿ ‿ ~, ‿

म म रि सा ऽ रि रि सा निं सा धं धं पं मं॒ पं सा सा रि निं सा म ग प ऽ ऽ
o ‿ o o o, ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ o —, ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ o ‿—,

म॒ प ध ऽ नि॒ ध प ऽ म॒ प ध म॒ प म सा म ऽ ग प म॒ ध म॒ प म म रि
o o — o o — — —, o o ‿ ‿ o ~, o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ o

ऽ सा | रि रि सा निं सा म म म प ऽ ध ध प म॒ प म म॒ प ध ऽ म॒
‿ —, | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ~, o ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ o o ‿

प ऽ ध म ऽ ऽ म॒ प ध नि ध प म॒ प प सां नि ध नि॒ ध प म॒ प ध प
‿ ‿, ‿ o ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿, ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿, ‿ ‿ ‿ ‿

म सा म ऽ ग प म॒ ध ऽ प म म॒ प प सां ऽ ऽ नि ध प म॒ प ध म॒ प म
—, o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ — —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —

म रि ऽ सा |
o o — ~ |

सा रि निं सा म प ध म॒ प सां नि सां ऽ ध नि ध प ध म॒ प ' म प ध
‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ — ‿ o ‿, o — o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿

प ऽ म सा ऽ सा म ऽ ग प ऽ म ध म॒ प म ध ऽ नि॒ ध प म॒ प ध प म
‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —, o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —,

म रि ऽ सा | म प प सां ऽ नि सां ऽ सां रिं नि सां मं मं रिं ऽ सां म॒ ध प
o o o o | o o ‿ o ‿ ‿ o ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ o ‿ —, o ‿ ‿

ऽ नि रिं सां ऽ मं मं रिं ऽ सां ध नि॒ ध म॒ प म॒ प ध प ध म ऽ म रि ऽ सा |
‿ o ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿ o o o ‿ ‿ o, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿, o o o o |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताने राग केदार

सा रि सा सा म म रि सा । म म प प ध प म प ध प म म रि सा नि सा । म म रि सा नि सा, ध प म म रि सा । सा सा म म प प ध प म् प ध प म म रि सा । सा सा म म प प ध प सां नि ध प म म रि सा । म म रि सा, ध ध म् प, सां नि ध प म म रि सा । सा सा सा, म म म, प प प, सां सां सां, सां नि ध प म म रि सा । सा रि सा सा, म प म म, प ध प प, सां रिं सां सां, सां नि ध प म म रि सा । म म रि, म म रि नि सा, ध ध प, ध ध प म् प, रिं रिं सां, रिं रिं सां नि सां, ध नि् ध प, ध नि् ध प, म् प ध प म म रि सा ।

सा म ऽ म, म म रि सा, प सां ऽ सां, सां नि ध प, सां मं, ऽ मं मं मं रिं सां, सां नि ध प, म म रि सा । सा सा सा, सा रि निं सा, ध ध ध, प ध म् प, रिं रिं रिं, सां रिं नि सां, मं पं पं, मं मं रिं सां, सां रिं सां, सां रिं नि सां, ध नि् ध, प ध म् प, म प प, म म रि सा । सा सा म ग, प म्, ध प, सां नि रिं सां, सां मं ऽ मं, मं मं रिं सां, सां नि ध प, ध नि् ध प, म् प ध प, म म रि सा । म म म, म म म, म म रि सा निं सा, ध ध ध, ध नि् ध, प ध, म् प ध प, म म रि सा, सां मं मं, सां रिं रिं, नि सां सां, ध नि् नि्, प ध ध, म् प प, ध प म म रि सा । सा रि निं सा, प ध म् प, सां रिं नि सां, प ध म् प, ध नि् ध प, म म रि सा । म म रि सा, रि सा निं सा, ध नि् ध प, ध प म् प, मं मं रिं सां, रिं सां नि सां, ध नि् ध प, प ध म् प, म् प ध प, म म रि सा, सा सा म म प म् ध प, ध म् प, ध म् प, ध प, म् प ध प, म म रि सा, म म म, प प प, सां सां सां, मं मं मं, मं मं मं रिं सां नि ध प, म म रि सा । सा म, म प, प सां, सां मं, मं पं, मंमं, मं रिं, रिं सां, सां नि, ध प, म् प, ध नि् ध प, म म रि सा ।

ख्याल राग केदार शेष ताल मात्रा १९

ताली १, ५, ९, ११, १३, १७, १८ खाली ३, ७, १५

स्थाई—दरस कैसे पाऊं, री सखी, मोरे राजा आज गये लो विदेश ।

अन्तरा—आवन की झांक लागी, मग जोवती अखियां थाकन लागी ।।

स्थाई

प ध म् प म ऽ सा रि सा | म म ऽ ग प ऽ ध म् ऽ प म् प म् प ध ध प म
द · र · स · क · से | पा ऊं · · · · री · · · · · · · · स · खी
१७ १८ | १ + ५ + ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ ऽ ध म॒ ऽ प ऽ ध नि सां ऽ ऽ ध प म ऽ ऽ म सा रि ऽ सा सा रि नि॒ सा
· · मो · · रे · रा · · · · जा · · · · आ · · · ज ग · ये ·
११ १३ १७ १८

म० लो | ऽ म म प ऽ ऽ प प सां ऽ ऽ सां नि ध प म म प ऽ म म प म म ऽ
· · · · · · · · · · · वि · · · · · · · दे · · · ·
१ + ५ + ९ ११ १३

रि सा सा || म॒ प ध प म रि सा | म
· · श || द र स · कै · से | पा
१५ १७ १८ १

अन्तरा

प म॒ प ध प म ऽ प प | सां सां सां रिं सां ध म॒ प ऽ सा सां मं ऽ मं रिं रिं
आ व · न · की · मो हे | झां की ला · · गी · · · म ग · · जो · व
१७१८ १ + ५ +

सां म॒ प ध नि सां रिं ऽ सां ध ध नि॒ ऽ ध प सा म ऽ ग प म॒ ध प ध नि सां
तो, अ · · · · · · खि यां · · · मो री था · · · क · न · ला · ·
९ ११ १३ +

ऽ ध प म ऽ ||| म॒ प ध प म ऽ सा रि सा | म
· गी · · · ||| द · र · स · कै · से | पा
१७ १८ १

ख्याल राग केदार ताल तिलवाड़ा

स्थाई—जोगी रावला हरम विलम रही, नित सांझ भई,
अब मन भूल बैठ कैसो।

अन्तरा—हां उरझे मन कौन सुरझे, प्यारे न्यारे दुःख खोलो,
सैयां खटक सों॥

स्थाई

सा रि सा, म प म, प ध प, सां रिं सां, प ध म॒ प ध प म म॒ रि सा नि॒ सा |
जो · , · · , · · , · · , · · · · ; गी · · · · · · |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

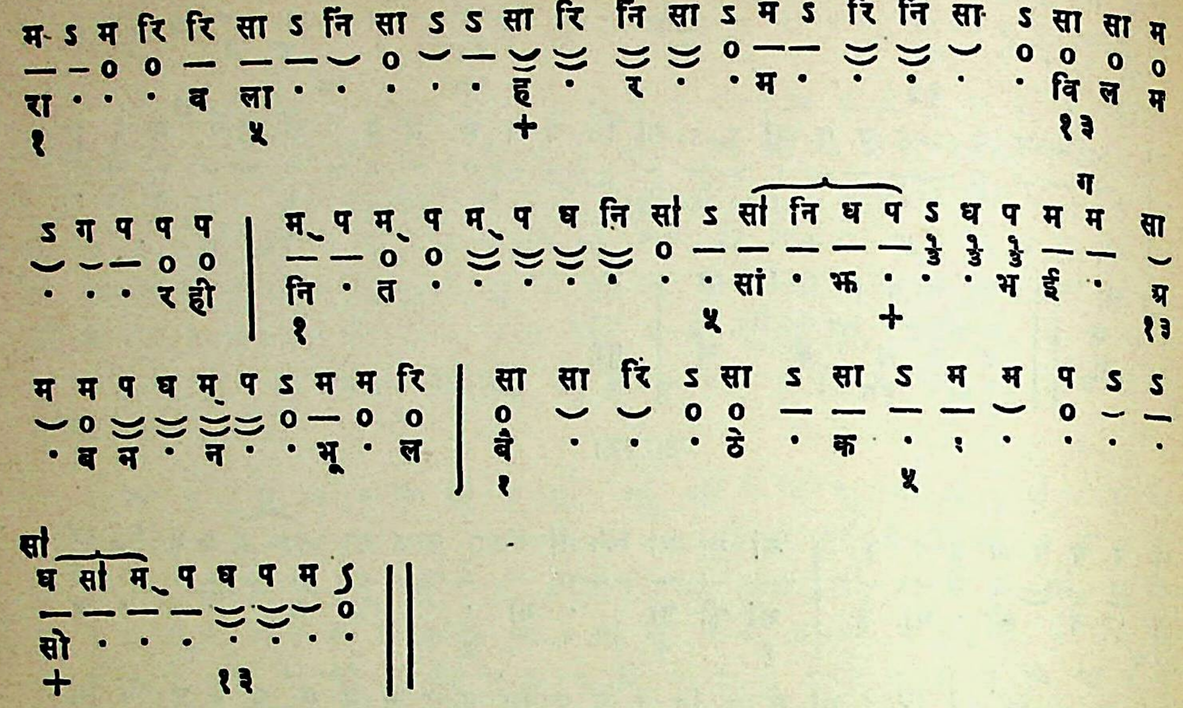

अन्तरा

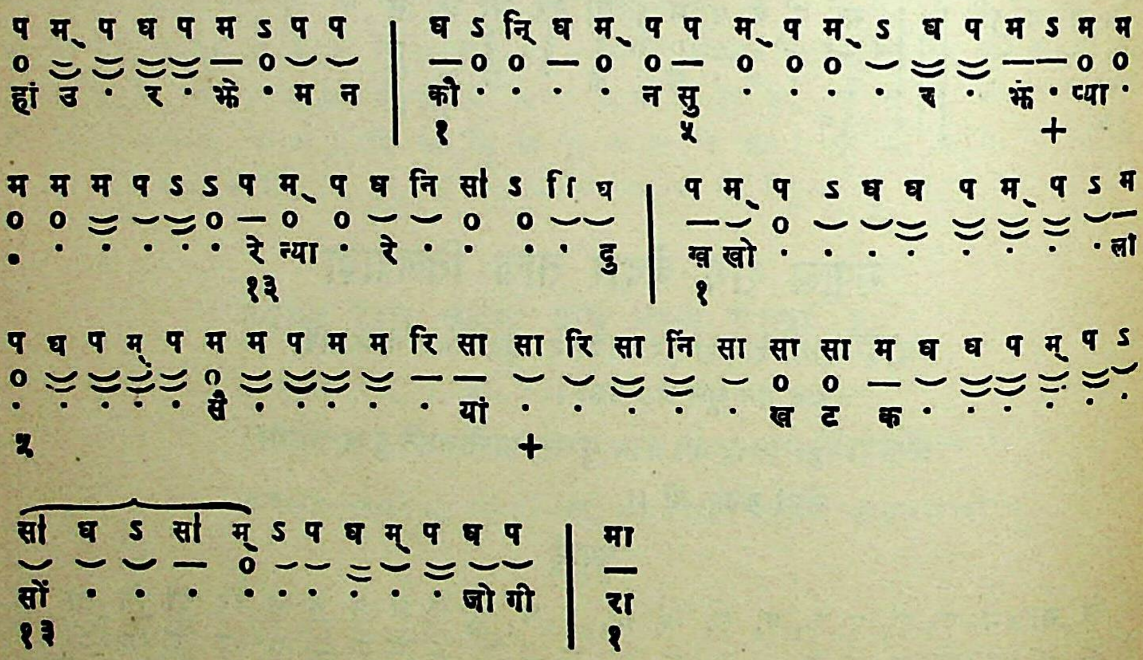

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार झपताल

स्थाई–कंचन सो पाईये नहीं तोल, मन दे राम लिया है मोल,
अब मोहि राम अपना कर जान्या, सहज सुभाये,
मेरा मन मान्या ॥

अन्तरा–ब्रह्मा कथ कथ अन्त न पाया, राम भक्ति बैठे घर आया ॥

स्थाई

सा रि सा म प म प ध प | म म म प ऽ म् प म् ऽ प ध प म ऽ रि सा सा
हे हे हे हे हे हे हे हे | ~ — ० ० — ० ० ० ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ०
कं · ; च · ; न · ; | सो पा ई ये · न हीं तो · · · · · · ल · म
| १ ३ + ८

सा | म म प ध प नि ध ऽ प ध प प म् म ऽ म म म | प प ध ऽ प प
० | ~ ० ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० — ० ० ० ० | — ० ० ० ० ०
न | दे रा · · म लि या · है · · · · मो · ल अ ब | मो हि रा · म अ
| १ ३ + ८ | १ ३

प सां ध ध म प ध नि् ध प म म म म म | प ऽ प प ध प सां रिं सां ध प
० — ० ० हे हे हे हे हे हे — ० ० ० ० | — ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० —
प ना क र जा · · · · · न्या स ह ज सु | भा · ये मे · , · · - रा ;
+ ८ | १ ३

म् प म् ऽ प ध प म रि ||
० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ||
म न मा · · · · · न्या ||
+ ८ ||

अन्तरा

प | प सां ऽ ऽ सां सां सां सां सां नि ध प म् प म प सां रिं सां मं | रिं सां
— | ⌣ ० ⌣ — ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ० — — — | ० ⌣
ब्र | ह्मा · · · क थ क थ अं · · · त न पा · · · या रा | म भ
| १ ३ + ८ | १

नि ध प प ध म् प सां रिं सां प ध म् प सां ध प म रि |||
⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० |||
· · क्ति बै · · · · · ठे घ · र · आ · · या · |||
३ + ८ |||

राग केदार तीनताल

स्थाई–कान्ह नित नये उराहना लावे,
दूध दहो घर काहु की कमी नहीं नाहक धूम मचावे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—तनक दही के कारण मोहन माखन चोर कहावे,
सूर श्याम की यशुमति मैया बारम्बार सिखावे ।।

स्थाई

ध प म रि सा रि | सा सा सा सा म प ऽ प म् म् प प | म् प प ध नि् ध
० ० ० ० ० ० | — ० ० ० — ० ० ० — ० ० — | ० ० ० ‿ ‿ ०
का · न्हा नि त न | ये उ रा ह ना ला · वे दू ध द ही | घ र का हु · ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३

प म् प म म म म प प | प ध प सां रिं सां नि ध प म् प ध प म
० ० ० — ० ० — ० ० | ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿‿
की · क मो न हीं ना ह क | धू · · · · म · म · चा · · · ·
+ ७ | १ ३ +

म रि सा ||
‿ ‿ ‿ ||
· वे · ||

अन्तरा

म म प प सां | सां सां सां सां सां नि रिं सां सां नि ध ऽ ध ध सां | सां सां प
० ० ० ० — | — — ० ० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ० ‿ ० ० — | ० ० ‿
त न क द ही | के का र ण मो · · ह न मा · · ख न चो | र क हा
७ | १ ३ + ७ | १

ध म् प सां रिं ऽ सां ध प सां सां मं रिं | सां ध ध सां रिं सां नि ध प म् प
‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ० ० — — ० — ० | — ० ० ० ० ० ० ० ० —
· · · · · · वे · · सू र श्या म | की य शु म ति मै · या · बा रं
३ + ७ | १ ३ + ७

ध नि् | ध प ग् प म नि सां नि ध प म रि सा ||
० ० | ० ० ‿ ‿ ‿, ‿ ‿ ‿, ० ० ० ० ० ||
बा · | र सि खा · · · · · · वै · · ||
| १ ३ + ||

राग केदार तीनताल

स्थाई—नजरिया लागी आज पिया की, सुध बुध सब सुख चैन गयो री ।
अन्तरा—इक हिय मन्दर उज्ज्वल मूरत, शुभ रंग बास बसत ज्यों फुलवन,
बरनी न जा जिया विवश भयो री ।।

स्थाई

सा म म प म् प | ध नि् ध म् प ऽ म् प म ध प म म रि सा | सा रि सा
० ० ० ० ‿ ‿ | ० ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ‿ ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿
न ज रि या · · | ला · गी · · · आ · · · ज पि या की · | सु · ध
७ | १ ३ + | ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां म ऽ म ऽ ग | प प म॒ ध प म॒ प ध नि सां ध प म॒ प म॒ प ध प म ||
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ | ० ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ०
· बु · ध · · | स ब · सु ख चै · · · · · न ग यो · · · · · · री
| १ ३ +

अन्तरा

प प सां सां | सां सां सां ध ध सां नि रिं सां नि सां नि सां ध प सां सां मं मं |
० ० ० ० | — ० ० ० ० ◡ ◡ ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ०
इ क हि य | मं दि र उ · ज्व · ल मू · , · · र त शु भ रं ग
७ | १ ३ + ७

रिं सां सां ध ध नि ऽ सां नि सां नि ध नि॒ ध प म सा सा म म | प ध प म॒
— ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ◡ ◡ ० ० ० | ० ◡ ◡ ◡
बा स ब स त ज्यों · · · · · फु ल ब न ब · र नी न | जा · · ·
१ ३ + ७ | १

प म॒ प ध नि॒ ध प म॒ प म॒ प ध प म |||
◡ ० ० ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ०
· हि या वि व श भ यो · · · · · री
३ +

राग केदार तीनताल

स्थाई—ज्यों ज्यों बूंद परे जीय लरजे, छतियां मोरी थर थर करे ।।

अन्तरा—चहुं ओर बादल घन छाये, प्यारा घर नहीं डर मोहे आवे,
प्यारा आवे गले हु लगावे, छतियां मोरी थर थर करे ।।।

स्थाई

म॒ प ध नि सां ध प | म रि सा सा निं रि सा सा सा म ऽ ग प प |
— — ◡ ◡ ० ० ० | — ० ० ◡ ◡ ० — ० ० ० ◡ ◡ — —
ज्यों ज्यों बूं · · द प | रे जी या ल · र जे छ ति यां · · मो री
+ ७ | १ ३ + ७

म॒ प ध नि सां नि ध प म॒ प ध प म ||
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ —
थ · र · · · थ · र · क · रे
१ ३

अन्तरा

प प सां ऽ सां सां | सां सां सां सां सां रिं सां ध ध सां सां सां सां | सां रिं सां
० — ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० — — — ० ० ० ० | ० ० ०
च हुं ओ · र बा | द ल घ न छा · ये प्या रा घ र न हीं | ड र मो
+ ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां ध प म् प ध नि सां ध प | म म रि सा नि रि सा सा मा म ऽ ग प प |
० — — — — ‿ ‿ ० ० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ‿ ‿ —
हे आ वे प्या रा आ · · वे · | ग ले हु ल गा · वे छ ति यां · · मो री
३ + ७ | १ ३ + ७

प म् प ध नि सां नि ध प म ध प म ||
० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ —
थ र · · · · अ · र · के · · रे
१ ३

राग केदार द्रुत एकताल

स्थाई–तुम सुघर चतुर बैयां पकरत हो, बलमा, वे तो नवेली नार,
का जाने इतनी सार, गंवार ।।

अन्तरा–तुम तो महाज्ञानी अत प्रवीन, सब विधि जानत हो पैछानत हो,
वे तो अपने घर के लाड़ लड़ात, लाड़ली को लियो मना,
कर प्यार, सरस गरवा लगाये ।।।

स्थाई

सा सा | सा प प प म म रि सा सा सा | म म ग प म् प ध प म ऽ म् प |
० ० | ० ० ० ० ० ० — — ० ० | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — — ० ०
तु म | सु घ र च तु र बै यां प क | र त · हो ब · ल · मा · वे तो
६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

ध नि् ध प ऽ प म् प ध प म म म म | प म् ध प म ऽ रि सा सा निं
० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० | ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ‿
न व कि ना · र का · · · जा ने इ त | नी · · · सा · र गं वा
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ +

रि सा ||
० ०
· र
५

अन्तरा

म म ग प प सां ऽ सां ऽ सां सां सां | सां सां ऽ सां ध नि सां रिं सां सां सां |
० ‿ ‿ — ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ०
तु म · तो म हा · ज्ञा · नी अ त | प्र वी · न स ब वि धि जा न त
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

ध म् प ध नि् ध प प प प | म म म प प ध म म म प ऽ म | प प प सां
— ० ० ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ०
हो पै · छा · न त हो वे तो | अ प ने घ र के ला ड़ ल ड़ा · त | ला ड़ ली को
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ सां सां रिं सां सां रिं | सां नि ध म् प ध प म म प ध म प ऽ | म म
० ० ० ० —, ० ० | ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ — | ० ०
· लि यो म ना, क र | प्या · र स र स · ग र वा · · · · | ल गा
३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १

प ध म् प ऽ म रि ऽ सा |||
‿ ‿ ‿ — ० ० ० ०
ये · · · · ल गा · ये
+ ३ + ५

राग केदार तीनताल

स्थाई—बिन गोपाल वैरन भई कुंजे,
तब बेल ताल गत अत शीतल, अब भई विषम ज्वाल की पु ंजे ।।

अन्तरा—वृथा बहत यमुना खग बोलत, वृथा कमल फूलत अली गु ंजे ।
सूर दास प्रभु को मग जोवत, अखियां भई अरुण ज्यों गु ंजे ।

स्थाई

ध
म् प ध प म रि सा सा | ऽ म म प प ध प म् प म म प प | म् प ध नि
‿ ‿ ‿ — — ० ० | ० ० ० ० ० — ० ० ० — ० — ० | ० ० ‿ ‿
बि · न · गो पा ल वै | · र न भ ई कु ं जै त ब वे ल ता ल | ग त अ ·
+ ७ | १ ३ + ७ | १

ध प म प ध प म म सां रिं सां नि ध प प सां | ऽ ध प म रि सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० — ० ० —
त · शी · · · त ल अ ब भ ई वि ष म ज्वा | · ल की पु ं · जै
३ + ७ | १ ३

अन्तरा

प प सां सां सां सां सां | सां सां सां सां रिं सां सां सां सां ध ध प प | म् प ध
० — ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० — | ० ० ‿
वृ था ब ह त य मु | ना ख ग बो · ल त वृ था क म ल फू | ल त अ
+ ७ | १ ३ + ७ | १

नि ध प म् प ध प म सा सा म ऽ म प प | सां ध प म् प ध प म म सां रिं
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — — ० ० ० ० ० ० | — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ०
· ली · गु ं · · · जै सू र दा · स प्र भु | को म ग जो · · · व त अ खि
३ + ७ | १ ३ +

सां ध प प | ध प सां नि ध प म रि सा |||
— ० — ० | ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ०
या भ ई अ | रु ण ज्यों · · · गु ं · जै
७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार ताल फिरोदस्त (१४ मात्रा)

ताली १, ३, ५, ७, ९, ११, खाली १३

स्थाई—अब कूक कूक बोले, कोयलिया सघन बन,
अमरैया की डारि तरे, नाच करत मोरवा किलोल ॥

अन्तरा—बादर की गरज उठी चहुं, चपला की चमक दमक,
गोरी को रूप देख सखी, उज्वल रंग चांदनी लजाई ॥।

स्थाई

ध
सा सा म ऽ म प ऽ प ध नि सां ध प म ऽ म | प ऽ म ध प म ऽ म म रि
— — —— —— —— ० ० — — ० ० —— | — ० ० —— —— — ——
अ ब कू · क कू · क कू · · क बो · · ले | को · · य लि या · स घ न
१ ३ ५ ७ ९ ११ + | १ ३ ५ ७ ९

ध
सा ऽ रि सा सा | म म रि ऽ सा सा म ऽ प ऽ प ध ऽ प म ऽ | सां ऽ सां सां ध प
——— — — | —— —— —— — —— —‿ ० ‿ ——— | ——————
ब · न ब न | अ म र · य न की · डा · रि · · त रे · | ना · च क र त
११ + | १ ३ ५ ७ ९ ११ + | १ ३ ५

सां नि ध प म ऽ रि सा रि सा ||
० ० ० ० —— —— — — —
मो · र · वा · कि लो · ल
७ ९ ११ +

अन्तरा

म ऽ प प म ऽ प प सां सां सां रिं सां सां | मं मं रिं ऽ सां ऽ ऽ ऽ सां नि
—— — —— —— — — -- —— — | —— — — — — — — —
बा · द र की · ग र ज उ ठी · च हुं | च प ला · की · · · च म
१ ३ ५ ७ ९ ११ + | १ ३ ५ ७ ९

ध
ध प म‿प | ध नि‿ध प म‿प ध ऽ प म ऽ म प प | मं ऽ रिं रिं सां सां
—— —— | — — — — — — —— —— —— — | —— — — — —
क द म क | गो · री · को · रू · प दे · ख स खी | उ · ज्व ल रं ग
११ + | १ ३ ५ ७ ९ ११ + | १ ३ ५

सां नि ध प म‿प ध प म म रि सा |||
— — ० ० — — ० ० ० ० ० ०
चां · द · नी · ल · जा · ई ·
७ ९ ११ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव

ऋषभ, धैवत, कोमल, अन्य स्वर शुद्ध, ऋषभ, धवत अंश स्वर और मध्यम पर न्यास इस की गम्भीरता का प्रतीक है। प्रचलित तथा पुराने ध्रुपदों ख्यालों में प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। कि मध्य षड़ज से तार षड़ज तक सरल जाते समय ऋषभ का त्याग देखा जाता है और पंचम का प्रयोग भी कम है, जो कि औडव आरोह, नि सा ग म ध् नि सां, की ही पुष्टी करता है। और गम्भीर आलाप चारी में पंचम का आरोह में अल्पत्व ही रहता है। अवरोह मींड युक्त लेते समय म ऽ ग रि् ऽ में गन्धार कण रूप में प्रयोग होता है। स्पष्ट गन्धार तो लगता ही है। शुद्ध अथवा कोमल निषाद को अल्प प्रमाण में छू कर धैवत को आन्दोलित करना, इस राग में यह क्रिया भी है। पंचम को अधिक बल नहीं देना चाहिये, अन्यथा रामकली की छाया जागृत हो उठती है, समय प्रातःकाल, गम्भीर, रौद्र प्रकृति। प्रचलित भैरव में मध्यम को अंशत्व प्राप्त नहीं, जो कि ग्रन्थों में उल्लिखित है। (इस राग में ऋषभ धैवत खूब आन्दोलित करना अनिवार्य है।)

भैरव के अनेक प्रकार तथा और रागों से मिश्रत प्रकार, कोमल भैरव, अहीर भैरव, आनन्द भैरव, हिजाज भैरव, प्रभात भैरव, बंगाल भैरव, शिवमत भैरव, सौराष्ट्र भैरव, पीताम्बर भैरव, मंगल भैरव, कबीरी भैरव इत्यादि भैरव बहार, बसन्त भैरव, शुद्ध भैरव, नट भैरव, केदार भैरव, कौशी भैरव बैरागी भैरव और भैरव भटियार इत्यादि, अगले भागों में क्रमश दिये जाएंगे।

आरोह : नि सा ग म ध् नि सां

अवरोह : सां नि ध्, प म ग (म)रि् सा

मुख्यांग : ग म (नि)ध्, प म, ग म ग रि् ऽ सा

आलाप राग भैरव

सा (ग)रि (ग)रि् सा (निं)धं् (निं)धं् निं सा (ग)रि् सा रि् रि् सा निं सा (निं)धं् ऽ निं सा ऽ (ग)रि् रि्,

सा निं सा निं धं् ऽ ऽ गं मं निं धं् ऽ ऽ सा निं सा ग म ऽ ग रि् ऽ ऽ सा निं सा

ऽ रि् रि् सा निं | सा म ग रि् ऽ सा निं धं् ऽ निं सा ग रि् ऽ सा निं सा ऽ,

निं सा ग म ग रि् ऽ ग म प म ग रि् ऽ ऽ सा, निं सा ग म नि ध् ऽ ऽ, ग

म नि ध ऽ ऽ, ध् ध् प् स प् स ग म ग रि् ऽ ऽ सा निं सा ऽ, निं सा ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ध् नि सां ऽ ऽ नि सां रिं् रिं् सां नि सां नि ध् ऽ ऽ सां नि सां ऽ नि ध् ऽ प

ग म नि ध् ऽ प म ग म ऽ ग म प प ग म ग रि् ऽ ऽ सा |

म नि ध् ऽ सां नि सां ऽ नि ध् ऽ नि सां रिं् ऽ सां गं मं गं रिं् ऽ सां नि सां

ऽ | नि सां गं मं ऽ पं मं गं रिं् ऽ ऽ सां गं रिं् मं गं रिं् ऽ सां नि सां ऽ

ग रि् म ग रि् ऽ सा नि़ सा ऽ नि़ सा ग म नि ध् ऽ सां नि ध् ऽ प म ग म

ऽ प म ग रि् ऽ सा नि़ सा ऽ |

तान राग भैरव

नि़ सा ग म, ध् ध् प म, ग म प प, म ग रि् सा। सा ग रि् म, ग प म ध्, प नि ध् प, म ग रि् ग, म ध् ध् प, म ग रि् सा । रि् सा नि़ सा, ग रि् सा रि्, म ग रि् ग, प म ग म, म ध् ध् प, म ग रि् सा। रि् रि् सा, म म ग रि् ग, म ध् ध् प, म ग रि् सा । नि़ सा ग म, ध् नि सां नि, ध् प म ग, रि् सा नि़ सा। नि़ सा नि़, ग म ग, रि् ग रि्, सा रि् सा, म प म, ग म म, ध् नि, सां नि ध् प म ग रि् सा, रि् रि् सा नि़ सा, ध् ध् प म प, रिं् रिं् सां नि सां, ध् ध् प म प, ग म ध् नि सां नि ध् प म ग रि् सा। नि़ सा ग म, ध् नि सां रिं्, सां ऽ ऽ नि, ध् प ग म, ध् ध् प प, म ग रि् सा। नि़ सा ग ग रि् सा, ग म ध् ध् प म, ध् नि रिं् रिं् सां नि, सां रिं् मं मं गं रिं्, सां नि ध् प म ग रि् सा, सा रि् सा, रि् ग रि्, ग म, रि् ग म प म ग रि् सा, रि् ग रि्, ग म ग, म प, ग म प ध् प म ग रि्, ग म ग, म प म, प ध्, म प ध् नि ध् प म म, म प म, प ध् प, ध् नि, प ध् नि सां नि ध् प म, प ध् प, ध् नि ध्, नि सां, ध् नि सां रिं् सां नि ध् प, ध् नि ध्, नि सां नि, सां रिं्, नि सां गं मं, मं गं रिं् सां। मं गं रिं् सां, गं रिं् सां नि, गं रिं् सां नि, रिं् सां नि ध्, रिं् सां नि ध्, सां नि ध् प, सां नि ध् प, नि ध् प म, नि ध् प म, ध् प म ग, ध् प म ग, प म ग रि्, प म ग रि्, म ग रि् सा, रि् रि् रि्, म म म, ध् ध् ध्, रिं् रिं् रिं्, रिं् रिं् सां नि ध् प म ग रि् सा नि़ सा ।

राग भैरव ताल धमार

स्थाई—होत प्रभात सखी आये, खेलन फाग संग ग्वाल ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—भर पिचकारी केसर, रंग सब डारत, आई ब्रिज नारी,
मिल फाग मचायो ॥

स्थाई

प म नि म प म प म म म ग सा नि
ग म प ग म | ध॒ ऽ ऽ प ऽ म प ग म म ग रि ग प | म ऽ प म ध ऽ
— — — ० ० | — — — — — — — — — — — — — — | — — ० ० — —
हो · त प्र · | भा · · त · स खी आ · ये खे · ल न | फा · ग · सं ग
११ | १ + ६ + ११ | १ +

सां रिं नि
नि सां ध॒ ऽ प ||
— — — — —
ग · ग्वा · ल ||
६ +

अन्तरा

नि नि सां नि नि सां नि नि मं पं
म म ऽ ध॒ ध॒ नि सां सां ऽ ऽ रिं॒ ऽ सां सां | ध॒ ऽ ऽ नि ऽ सां सां सां गं मं
— — — — — — — — — — — — — — | — — — — — — — — — —
भ र · पि च · का री · · के · स र | रं · · ग · स ब डा · ·
१ + ६ + ११ | १ + ६ +

मं नि सां नि म प म निं नि
रिं॒ रिं॒ सां सां | नि ऽ सां ध॒ ऽ प म प ग म रि॒ ऽ सा सा | सा ग म ध॒ ऽ
— — — — | — — — — — — — — — — — — — — | — — — — —
त · त · | आ · ई ब्रि · ज · ना · · री · मि ल | फा · · ग ·
११ | १ + ६ + ११ | १ +

म
प ग म रि॒ ऽ सा |||
० ० — — — —
म · · चा · यो |||
६ +

ख्याल राग भैरव ताल झुमरा

स्थाई—तोरी बारी फूल रही, वरन वरन के फुलवा, हौं बल बल
जाऊं तोरे साजन ॥

अन्तरा—एक तो कली, दूजे जोबन माती, और सांई को सुहाती,
जाको तू रखवाला ॥

स्थाई

ग म प म ग रि॒ ऽ ऽ सा सा | ग रि॒ ऽ ऽ सा ध॒ ध॒ सा नि सा ऽ नि धं॒ ऽ
तो · · · ० | ० —— ०
· री · · · बा री | फू · · · ल र · · · · · ही · ·
| १ ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग ग
ऽ सा नि ध ऽ नि सा रि रि रि सा नि सा ऽ नि सा रि रि सा नि सा ऽ
· · व · · र न व र न के · · · फु ल वा · · · ·
+ ११

नि नि
नि ध ऽ नि ध ऽ प प ग म ध ध नि सां ऽ सां नि ध ऽ नि ध ऽ प म प ऽ
· · · · · · · · हों · · ब ल ब · · ल जा · · · · · ऊं · ·
१ ४ +

म प ग म ग रि ऽ सा मा || सा रि नि सां सां रिं सां नि ध प म ग रि सा
ओ है है है · · · · · ·
तो रे · · सा · · ज न || तो · · · · रि · · · · बा · री ·
११

अन्तरा

नि नि
म म ध ऽ नि | सां ध ध ध नि सां रिं ऽ रिं रिं सां नि सां ऽ नि ध ऽ प
ए क तो · क | ली दू जे जो · ब न · मा · · · · · ती · · ·
१ ४ +

म प ऽ ग म ध सां नि ध ऽ प म प म ग रि ऽ सा | नि सा ग म प ग म
औ · · र सा ईं · को · · · सु हा · · · · ती | जा · को · · तू ·
११ १ ४

नि ध ऽ ऽ ध नि सां रिं नि सां ऽ नि ध ऽ प ग ऽ म ग रि ऽ सा ||| म प
ही · · · र · ख · वा · · · · · · · · · · ला · · · ||| तो ·
+ ११

ग म ऽ रि सा || ग रि ऽ ऽ
सी · · बा री || फू · · ·
१

राग भैरव द्रुत एकताल

स्थाई—जागो ब्रिज राज कुंवर, नंद के दुलारे ।।

अन्तरा—जमुना में गेंद डार, ग्वाल बाल हारे, काली बुभुःकार देत
श्याम हीं एक कारे ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म ऽ ग रि॒ सा सा रि॒ सा सा निं सा | सा ग रि॒ ग म प ग म रि॒ ग म
० ⌣ ⌣ — ० ० — ० ० ० ० | — ⌣ ⌣ ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ०
जा · · गो ब्रि ज रा ज कुं व र | नं द · के · दु ला · · रे :
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

म प ऽ ||
⌣ ० ⌣
· · ·
६

अन्तरा

ग ग म ध॒ नि सां नि सांऽ सां | नि सां रिं॒ऽ सां नि सां रिं॒ सा ध॒ ध॒ प म |
० ० — — ० ० ० ०० ० | — ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० |
ज मु ना में गें · द डा · र | ग्वा ल बा · ल हा · · · रे · · · |
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ |

प ध॒ नि सां रिं॒ सां नि ध॒ ध॒ नि ध॒ ध॒ प | म ध॒ प ध॒ म प ग म रि॒ ग
० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ०
का · लि · · बु भुः का · र दे · त | शा · म ही ए क का · · रे
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

म म प ऽ |||
० ⌣ ० ⌣
· · · ·
६

राग भैरव द्रुत एकताल

स्थाई—आ मन्दिर मोरे सैयां, वारि जाऊं रस घोल गैंयां, मोरे सैयां ॥

अन्तरा—कमली फिरेन्दी तेरी बान्दी, अरज मान मोरे गुसैंयां ॥

स्थाई

नि
सा ग
ध॒ ऽ प ग म ग म प म रि॒ सा | धं॒ निं सा ऽ रि॒ सा सा ग म प म | ग
— ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — | — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ⌣
आ · मं दि र मो · रे · स यां | वा रि जा · ऊं र स घो · · ल | गैं
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १

रि॒ ऽ सा ऽ सां ऽ सां रिं॒ सां सां रिं॒ सां नि ध॒ प || म ध॒ ऽ प ग म
० ⌣ — ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ || ० ० ० ० ० ०
· · यां : मो · रे सैं · · यां · · · · || आ · · मं दि र
+ ३ + ५ ६ || १ + ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग ग म म ध ध ध॒ नि सां रिं॒ रिं॒ गं रिं॒ ऽ ऽ सां | रिं॒ गं मं गं रिं सां ध॒
o o o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ o o | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
क म ली फि रें दी ते · · · री बां · · · दी | अ · र · ज : मा
१ + ३ + ५ ६ | १ +

नि ध॒ प ग म रि॒ ग रि॒ ग म ग प म ग रि॒ ऽ सा ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o
· · · न · मो · · रे · · गु · सैं · · यां
३ + ५ ६

राग भैरव द्रुत एकताल

स्थाई—राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई,
राम नाम सुमरन बिन बूढ़त अधिकाई।

अन्तरा—वनिता सुत देह गेह, सम्पत्ति सुखदाई,
इन में कछु नाहिं तेरो, काल अवधि आई।

स्थाई

ग म नि ध॒ प प ग म प म ग रि॒ सा | सा रि॒ ग म प ग म प ध॒ नि ध॒
o o o o o o o o o ‿ ‿ o o | — o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ o o
रा · म सु म र रा · म सु · म र | रा म सु म र भा · · · · ई
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

प म | ग म नि ध॒ ऽ ध॒ सां सां नि॒ ध॒ ध॒ सां सां | रिं॒ सां सां नि ध॒ ध॒ नि ध॒
o o | — o ‿ ‿ o o o o ‿ ‿ o o o | — o o o o ‿ ‿ ‿
· · | रा म ना · . म सु म र · न बि न | बू ढ त अ धि का · ·
६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३ +

सां रिं॒ सां नि ध॒ प म ग रि॒ ||
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
· · · ई · · · · ·
५ ६

अन्तरा

ग ग म नि ध॒ सां सां सां ऽ सां | ध॒ नि नि सां सां ध॒ नि सां रिं॒ ऽ सां नि ध॒ ऽ |
o o — o o — o o o o | — o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ o o ‿ o ‿
व नि ता सु त · दे ह गे · ह | सं प ति सु ख दा · · · · ई · ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

सां रिं॒ गं रिं॒ सां नि सां रिं॒ सां नि ध॒ प | ग म नि ध॒ ध॒ ग म ध॒ नि सां
o o — o o ‿ ‿ o o o o o o | — o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
इ न में क छु ना · · हिं ते · रो | का ल अ व धि आ ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिं_ गं रिं_ सां नि ध_ प म ग रि_ सा निं सा |||
१/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६ १/६
· ई · · · · · · · · · · ·
ई
५ ६

राग भैरव तीनताल

स्थाई—मेरो मन हरी जू हठ न तजै, निसि दिन नाथ देहु लिख,
बहु विधि करत सुभाव निजै।

अन्तरा—जो युवति अनुभवति प्रसव श्रति, दारुण दुःख उपज,
है अनुकूल बिसारि सूल सठ, पुनि खल पति हिय जै॥

स्थाई

ध_ नि सां नि सां ध_ प ग म | ध_ ग म प ग म रि_ सा धं_ धं_ धं_ धं_ सा स
‿ ‿ o o o o o o o | — o o o ‿ ‿ o o o o o o — o
मे · · रो · म न ह रि | जू ह ठ न त · जै · नि सि दि न ना थ
\+ ७ | १ ३ + ७

ग म | प म ग म रि_ रि_ सा सा निं सा ग म ध_ ध_ रिं_ | सां नि ध_ प
‿ ‿ | o o o o o o o o o o o — o o | o o o o
दे · | · हु लि ख ब हु वि धि क र त सु भा व नि | जै · ·
| १ ३ + ७ | १

ग म ध_ ||
o o — ||
· · · ||
३ ||

अन्तरा

ग म प ध_ नि नि | सां सां सां नि ध_ ध_ सां सां श्र_ ध_ ध_ नि नि सां सां |
— o o — o o | o o o o o o o o — o o o o o o |
जो यु व ति अ नु | भ व ति प्र स व श्र ति दा रु ण दु ख उ प |
\+ ७ | १ ३ + ७ |

रिं_ रिं_ ऽ सां नि ध_ ऽ प ध_ रिं_ रिं_ रिं_ सां रिं_ | नि सां नि ध_ ऽ नि ध_ प म ग प
‿ o ‿ — ‿ o ‿ — — o o — o o | — o ‿ ‿ o o o o o o o
जै · · · · · · · है अ नु कू ल वि | सा रि सू · ल स ठ पु नि ख
१ ३ + ७ | १ ३ +

म नि ध_ रिं_ सां | ध_ नि सां नि ध_ प म ग रि_ |||
o o o o o | ‿ ‿ o o o o o o o |||
ल प ति हि य | जै · · · · · · · · |||
७ | १ ३ |||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव तीनताल

स्थाई—प्यारे मैका लागली अखि मोरी, अबहू नेंक पलक झपक,
मिस सारी जगी, जगाई तूने, अब न जगावो ।

अन्तरा—सोवन दे मोहे आनन्द भुवन, गरे लागोंगी तोरे
छतियां सरण आव, तू जिन जावो, अब न जगावो ।।

स्थाई

```
              ध                                          निं निं नि
' ग म म रि॒ सा नि सा सा रि॒ रि॒ सा सा | धं॒ धं धं॒ सा ऽ सा नि सा
o o o o — — — o o o o o o | o o o o o o o o
· प्या · रे मै का ला ग ली अ खि मो री | अ ब हू ने · क प ल
१ ३ + ७ | १ ३

सा रि॒ रि॒ सा ग म प प | ध॒ सां नि ध॒ ध॒ प प ग म प ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ प म
o o o o o o o o | o — o o o o o o o o o — ‿ ‿ ‿
क झ प क नि स सा री | ज गी ज गा ई तु ने अ ब न ज गा वो · · ·
+ ७ | १ ३ + ७

प || ' ग म प म
o || o o o ‿ ‿
· || · प्या · रे '
  || १
```

अन्तरा

```
' म म म प ध॒ ध॒ ध॒ सां नि सां सां सां सां सां | ध॒ ध॒ ध॒ सां ऽ सां नि सां ध॒
o o o o — o o o o o o o o o o | o o o o o o o o —
· सो व न दे मो हे आ नं द भु व न ग रे | ला गों गी तो · रे छ ति यां
१ ३ + ७ | १ ३ +

नि सां ध॒ प ध॒ | सां नि ध॒ ध॒ प ग म प ध॒ प ध॒ ध॒ प म प |||
o o o — o | — o o — — o o o o — ‿ ‿ ‿ ‿ o.
स र न आ व | तू जि न जा वो अ व न ज गा वो · · · ·
७ | १ ३ + ७

' म ग रि॒ ऽ प म ऽ ग रि॒ ऽ सा
o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ —
· प्या · · · रे · · मै · · का
१ ३
```

भैरव तीन ताल

स्थाई—जाग जाग जगा जगा मैका, लंगर तुरंगवा,
सोवन न देवे ,घरि पल छिन हे मा ।

अन्तरा—नींद की माती अखियां मोरी, कछु न सुहावे,
मेहरबान तुम, राखो गले लगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

नि़ म ग
म प ग ऽ म प ग म | ध॒ ऽ प म ग रि॒ ग ऽ म प म ग रि॒ रि॒ सा |
– ० ०० ० ० ‿ ‿ | — — — — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० — |
जाग आ · ग ज गा ज · | गा · मैं का लं ग र · · तु · · रं · ग वा |
\+ ७ | १ ३ + ७ |

नि सा ग म प प म म ध॒ ध॒ नि सां नि ध॒ सां ऽ | सां नि ध॒ प नि ध॒ प म ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० — | ० ० ० ० ० ० ० ० ||
सो व न ना दे वे घ रि प ल छि न हे · · · | मा · · · · · · · ||
१ ३ + ७ | १ ३ ||

अन्तरा

नि नि नि नि नि
म म म ध॒ नि | सां सां सां सां रिं॒ ऽ सां ऽ सां ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ नि सां | सां
० ० ० ० — — | ० ० — ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० — — | ०
· नीं द की मा ती | अ खि यां · · · मो · री, क छु न सु हा वे | मे
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

रिं॒ नि सां ऽ नि ध॒ ऽ प म म नि ध॒ ऽ प म प ऽ ध॒ | रिं॒ रिं॒ सां रिं॒ सां नि
० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿ ० ‿ — ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ०
ह र · · बा · · न तु म रा · · खो ग ले · ल | गा · · · · ·
३ + ७ | १

सां नि ध॒ नि ध॒ प, ध॒ प म प म ग, म ग रि॒ ग रि॒ सा |||
० ० ० ० ० ०, ० ० ० ० ० ०, ० ० ० ० ० ० |||
· · · · · · · · · · · · · · · · · · |||
३

राग मालकौंस (मालवकौशिक)

ऋषभ, पंचम, वर्ज्य, औडव औडव जाति का राग जिस में ग ध नि कोमल हैं। मध्यम इसका अंश स्वर है। मध्य रात्रि में गायन योग्य, शान्त गम्भीर प्रकृति का प्रमाण देता है। इस राग से प्रायः सर्व साधारण भी परिचित हैं। और आनन्दित होते हैं। इस को राग रागिनी पद्धति में मुख्य छः रागों में स्थान प्राप्त है। इस की पांच अथवा छः रागिनियां भी मानी हैं। और अधिक करके मींड से गाया जाने वाला राग मालकौंस है। इसी के स्वर शुद्ध कर देने से भिन्न षड़ज राग व्यक्त होगा, और भिन्न षड़ज में शुद्ध के बदल में तीव्र मध्यम लगाने से हिन्डोल राग व्यक्त होगा। इन दोनों में भी अंश स्वर बदल जाने से, स्वर संगती अथवा चलन बदलने से और राग बन जाते हैं। चन्द्र कौंस, मधुर कौंस, गुण कौंस, कौंस के और प्रकार भी हैं।

जोग कौंस, देवी कौंस, भीम कौंस, ऋषभ कौंस, सम्पूर्ण कौंस (सम्पूर्ण मालकौंस)।

मेल पद्धति में इस को भैरवी मेल से माना है। म सा वादि संवादि।

आरोह—नि़ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां

अवरोह—सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा

मुख्यांग—ग॒ म ग॒ सा, नि़॒ सा ध़॒ नि़॒ सा, म।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप राग मालकौंस

सा नि॒ सा ऽ नि॒ ध॒ ऽ नि॒ ध॒ ऽ नि॒ सा ऽ ऽ नि॒ ध॒ ऽ सा नि॒ ऽ सा ऽ नि॒
~, o o —, ‿ o ‿‿ o ‿ ‿ o ‿—, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿o‿

ग॒ ऽ सा म ग॒ सा | नि॒ ध॒ ऽ नि॒ सा म ग॒ म म ग ऽ म ग ऽ म नि॒ सा नि॒
o ‿‿‿ ‿ o | ‿ ‿ ‿ o o ‿‿—, ‿o‿‿o‿~, o o o

गा ग॒ सा म ग॒ म ग॒ सा | सा नि॒ ग॒ सा नि॒ ध॒ ऽ नि॒ ध॒ म ग॒ म ध॒ म
o o o, ~, — o o — | o o, o o‿ o ‿ — ~ ~, o o —;

म ध॒ नि॒ ध॒ ध॒ नि॒ सा नि॒ नि॒ सा ग॒ सा ध॒ नि॒ सा ग॒ म ग॒ म ग॒ सा |
o o — —, o o — —, o o — —, o o o o ~ o o — — |

नि॒ सा ग॒ म ध॒ म म ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ म ध॒ म सा ग॒ म ग॒ नि॒ सा नि॒
o o o o — —, o o —, — —, o o — —, o o — —, o o o,

ग॒ सा म ग॒ ध॒ म नि॒ ध॒ म ग॒ ग॒ म सा ग॒ म ग॒ सा | नि॒ सा ग॒ म ध॒
o o o o o o o — —; o o —, o o o o — | o o o o o

नि॒ सां नि॒ सां ऽ ऽ म ध॒ नि॒ सां नि॒ सां ऽ ऽ नि॒ ध॒ ऽ ऽ म ग॒ म नि॒ ध॒
o — ‿ o ‿—, o o o o ‿ o ‿—, ‿ o ‿o o, o o o o

म सा नि॒ ग॒ सा म ग॒ ध॒ म नि॒ ध॒ सां नि॒ सां ऽ नि॒ ध॒ म ग॒ सा | ग॒ म म ध॒
~, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ o o o o | o o

नि॒ सां
ध॒ नि॒ सां ऽ नि॒ सां म ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां नि॒ सां ऽ नि॒ सां ग॒ म ध॒ म
o o o ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿,

म ध॒ नि॒ ध॒ ध॒ नि॒ सां नि॒ सां ऽ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां गं॒ सां म ध॒ नि॒ सां
‿ ‿ ‿ ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿

नि॒ ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ सा ग॒ म ध॒ म नि॒ सा ग॒ म ग॒ सा सां नि॒ ध॒ म
—, ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ o o, o o o

ग॒ सा | म ग॒ ग॒ म नि॒ ध॒ म ग॒ म ध॒ नि॒ सां मं गं॒ मं गं॒ सां गं॒ मं
o o | ~, o o —, o o —, ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ —, —, ‿ ‿

गं॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ सा सां सा | ग॒ ग॒ सा नि॒ सा ऽ
‿ o o o o, ‿ ‿ ‿ ‿ o o o o — — | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿,

म म ग॒ सा ग॒ ऽ ध॒ ध॒ म ग॒ म ऽ नि॒ ध॒ ऽ ग॒ म नि॒ ध॒ ग॒ म ग॒ ध॒
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿, ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿, o o o o o —, ‿ ‿ ‿

म नि॒ ध॒ ऽ म ग॒ म ध॒ म ग॒ सा ग॒ म ग॒ सा | नि॒ सा नि॒ सा ग॒ सा ग॒
‿ ‿ o o o, ‿ ‿ ‿ ‿ —, ‿ ‿ ‿ ‿ — | ‿ ‿ ‿, ‿ ‿

म सा ग॒ म ध॒ ग॒ ऽ म नि॒ ऽ ग॒ ऽ सा नि॒ ध॒ ऽ नि॒ सा म ऽ ग॒ म ध॒ नि॒
‿, ‿ ‿ ‿ ‿, o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿, ‿ o ‿, ‿ ‿ o —, ‿ ‿ ‿,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म नि_ध_ ग_ध_म सा म ग_ नि_ग_सा सां ऽ नि_ध_म म ग_ग_म ध_नि_,

सां ऽ नि_, सां ऽ ध_, सां ऽ म, सां ऽ ग_, सां ऽ सा, म ग_ध_म नि_ध_सां

नि_सां ऽ सा, ग_सा म ग_ध_ म नि_ध_ सां नि_ सां ऽ ऽ सा, सा नि_ग_

सा म ग_ध_ म नि_ध_सां नि_ सां ऽ नि_ध_म ग_सा | नि_ग_सा, सा म ग_,

ग_ध_म, म नि_ध_, ध_सां नि_, नि_गं_सां, सां मं गं_, मं ऽ गं सां, गं_सां ऽ सां,

नि_ गं_ऽ सां, नि_ सां नि_ऽ, ध सां ऽ नि_, ध नि_ध_ऽ, म नि_ऽ ध_ध_म ऽ, म ग_ ध_ऽ म_ग म,

सा ग_ऽ, सा म ऽ ग_ ग_सा ऽ, म ग_ध_म नि_ध_सां नि_सां मं गं_मं, मं गं ऽ मं

म सां गं_मं गं_सां ग_ऽ म सा ग_ म ग_सा सा नि_नि_ग_सा ऽ ग_सा सा म ग_ऽ,

म ग_ग_ध_म ऽ, ध_म म नि_ध_ऽ, नि_ध_ध_सां नि_ऽ, सां नि_नि_गं_सां ऽ,

गं_सां सां मं गं_गं_, गं_सां सां सां नि_नि_, नि_ध_ध_ध_म म, म ग_ग_

ग_सा सा |

ताने राग मालकौंस

नि॒ सा ग_म, ध_नि॒ ध_म, ग_सा नि॒ सा। नि_सा ग_, सा ग_म, ग_म ध_नि सां नि_ध_म ग_सा। नि_सा ग_म ध_नि_सां गं_सां नि_ध_म, ग_म ग_सा । ग_म ग_सा नि_सा, ध_नि_ सां नि_ध_म, ग_सा नि_सा । नि_सा नि_, सा ग_सा, ग_म ग_, म ध_म, ध_नि_ध_, नि_सां नि_, ध_म ग_सा। नि_सा नि_, ग_म ग_, सा ग_सा, म ध_म, ग_म ग_, ध_नि_ध_, म ध_म, नि_सां नि_, ध_नि_ध_; सां गं_सां, नि_सां नि_, गं_मं गं_; ध_नि_ध_, सां गं_सां, म ध_म, नि_सां नि_, ग_म ग_, ध_नि_ध_, सा ग_सा, म ध_म,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग_ग_ग_, म म म, ध_ध_ध_, नि_नि_नि_, गं_गं सां नि_, ध_म ग_सा। नि_सा ग_सा, सा ग_म ग_, ग_म ध_म, म ध_नि_ध_, ध_नि_सां नि_, नि_सां गं_सां, सां गं_मं गं_, सां गं_सां नि_, नि_सां नि_ध_, ध_नि_ध_म, म ध_म ग_, ग_म ग_सा, नि़_सा ग_म ग_सा, ग_म ध_नि_ध_म, ध_नि_सां गं_सां नि_, नि_ध_मध_, ध_म ध_म, ग_म ग_सा नि़_सा। नि़_ग_ग_सा, सा म म ग_, ग_ध_ध_म, म नि_नि_ध_, ध_सां सां नि_, नि_गं_गं_सां, सां मं मं गं_, गं_सां सां नि_, नि_ध_ध_म, म ग_ग_सा, नि़_सा ग_म, ध_नि_सां नि_ध_म ग_सा। सा म ग_, ग_ध_म, म नि_ध_, ध_सां नि_, नि_गं_सां, सां मं गं_, गं_सां, सां नि_, नि_ध_, ध_म, म ग_, ग_सा, नि़_सा। सा म ग_म, ग_ध_म ध_, म नि_ध_नि_, ध_सां नि_सां, नि_गं_सां गं_, सां मं गं_मं, सां गं_नि_सां, ध_नि_म ध_, ग_म सा ग_, नि़_सा ऽ म ग_म सा ग_, नि़_सा ऽ ध_म ध_ग_म, सा ग_ऽ नि_ध_नि_म ध_, ग_म ऽ सां नि_सां ध_नि_, म ध_ऽ गं_सां गं नि_सां, ध_नि_ऽ मं गं_मं सां गं_, नि_सां ऽ नि_, मं गं_सां गं_

डे डे डे, डे

सां नि_ सां नि_ध_ नि_ध_म ध_म ग_म ग_सा म ग_ध_म, नि_ध_सां नि_सां नि_

डे डे, डे डे डे, डे डे डे, डे डे डे, डे डे डे,

ध_नि_ध_म ग_सा। सा ग_सा, सा ग_सा, ग_म ग_ ग_म ग_, म ध_म, म ध_म, ध_नि_ध_, ध_नि_ध_, नि_सां नि_, नि_सां नि_, सां गं_सां, गं_मं गं_, नि_सां नि_, सां गं_सां, ध_नि_ध_, नि_सां नि_, म ध_म, ध_नि_ध_, ग_म ग_, म ध_म, सा ग_सा, ग_म ग_, सा म, ग_ध_, म नि_, ध_सां, नि_गं_, सां मं गं_सां, नि_ध_म ग_, सा ग_नि़_सा। सा नि़_नि़_सा, ग_सा सा ग_, म ग_ग_म, ध_म म ध_, नि_ध_ध_नि_, सां नि_नि_सां, गं_सां सां गं_, सां मं मं गं_, सां गं_गं_सां, नि_सां सां नि_, ध_नि_नि_ध_, म ध_ध_म, ग_म म ग_, सा ग_ग_सा।

सा म ग_म ग_सा ग_सा, ग_ध_म ध_म ग_म ग_, म नि_ध_नि_ध_म ध_म, ध_सां नि_सां नि_ध_नि_ध_, नि_गं_सां गं_सां नि_सां नि_, सां मं गं_मं गं_सां गं_सां, नि_गं_सां गं_सां नि_सां नि_, ध_सां नि_सां नि_ध_नि_ध_; म नि_ध_नि_ध_म ध_म, ग_ध_म ध_म ग_म ग_, सा म ग_म ग_सा ग_सा, नि़_सा ग_म, ध_नि_सां गं_मं गं_सां नि_ ध_म ग_सा।

राग मालकौंस ख्याल ताल तिलवाड़ा

स्थाई—हो गये श्याम दूज के चन्दा,

मधुबन जाय भये मधुबनिया, हम पर डारो प्रेम को फन्दा ॥

अन्तरा—मीरा के प्रभु गिरधर नागर, अब तो नेह परयो कछु मन्दा ॥

स्थाई

म ग_ सा म

सा नि़_सा ग_ | म ऽ म ग_सा म ग_म म ध_ ऽ ध_म ध_ नि_ध_ म ग_ सा

० ० ० ० | ~~ ~ ~ ‿ ⌣ ⌣ ० ० ० — ⌣ ‿ ⌣ ० ० ० ० ०

हो ऽ ग ये | श्या ऽ म दू ज ऽ ऽ ऽ के ऽ ऽ चं ऽ ऽ ऽ दा ऽ

१ ५ + १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग सा ऽ सा निं धं निं ऽ | सा ऽ सा ऽ म ग सा नि नि ध नि सां नि
म धु · ब · न · · | जा · ये · भ ये · म धु व · · ·
| १ ५ +

नि सां नि धं म ग ग म ध नि | सां ध सां नि सां सां म ध नि सां ध सां नि
· नि या · · ह म प र | डा · · · · रो प्रे · · · · · ·
१३ | १ ५

सां नि ध म ध नि ध म ग सा || सा निं सा म ग म ग सा निं धं
· म को फं · · दा · · · || हो · · · · · · · ग ·
+ १३

नि | सा म ऽ ऽ म ग ऽ म ग ऽ सा ग म सा ग म ऽ ऽ म ग ऽ म ग ऽ
ये | शा · · · · · · · · · म · · · · · · · दू · · · · ·
| १ ५

अन्तरा

सां सां ध नि | सां ऽ नि सां नि सां ध नि ध नि सां ध म ग नि सां नि ध नि |
मी रा के प्र | भु · गि र ध र ना · · · · ग र · अ ब · · · |
| १ ५ + १३

सां ऽ नि गं सां नि ध म ग सा ग म ध नि सां ध सां नि सां ऽ गं सां ध नि
तो · ने · · · · · · ह प · · · · रयो · · · · क छु मं ·
१ ५ +

ध म ग सा ||| निं सा निं सां नि सां नि ध ध म म ग ग सा निं सा |
दा · · · ||| हो · , · · · · , ग , · · , ये · · · |
१३

ख्याल मालकौंस ताल धमार

(धमार का ख्याल अंग का ठेका इसी पुस्तक में दिया है)

स्थाई–बीन बजाई सरस्वती सुरस, गावत सुमधुर मालकंस ।।

अन्तरा–अलंकार उपज, अरु तान, छेरत अलाप धुरन, मुरन,
नव रस ताल काल प्रमाण, अचल रुप को वरनत यश ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

निं॒ सा ऽ सा म ग॒ म नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ | सां गं॒ नि॒ सां ऽ ऽ सां नि॒ ध॒ ऽ
बी · ·, न · ·, · · ·, · · ब | जा · · · · · ई स ·
११ | १ +

म नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ ऽ म म ऽ ग॒ ग॒ सा सा सा म ग म म नि॒ ध॒ | नि॒
र स्व · · ती · सु · · र · · स . गा · · · व त · · | सु
६ + ११ | १

सां ऽ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ गं॒ सां ऽ गं॒ गं॒ नि॒ ऽ सां ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ ऽ ध॒ नि॒ सां नि॒
म · · · · · धु · · · र · · · मा · · · · · ल · ·
+ ६

ध॒ नि॒ ध॒ सां ऽ नि॒ ध॒ म ग॒ सा ||
· · · कं · · स · · ·
+

अन्तरा

ध॒
प॒ प॒ म म | नि॒ ध॒ ऽ नि॒ सां नि॒ ऽ सां सां गं॒ सां नि॒ ध॒ ऽ नि॒ ध॒ ऽ म नि॒
अ लं · का | · · · र उ · · प ज अ रु ता · · · · · न है
११ | १ ६ + ११

सां सां नि॒ ध॒ नि॒ ऽ सां सां | सां गं॒ नि॒ सां मं गं॒ सां नि॒ ध॒ ऽ नि॒ सां गं॒ नि॒ सां
· · · · , · र त | आ : · · ला · प धु · · र न · ·
| १ + ६

नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म गं॒ नि॒ ऽ गं॒ सां ऽ सां मं ऽ मं | सां गं॒ ऽ सां गं॒ नि॒ सां
मु · · र न न · · ब · · र · · स | ता · · · ल ·
+ ११ | १

ऽ नि॒ ध॒ ऽ म नि॒ ध॒ ऽ नि॒ ध॒ म म म ग॒ ऽ म ग॒ ऽ म ग॒ | सा सा सां नि॒
· का · · · ल · · प्र मा · ण, अ · · च · · ल रु | · प की ·
+ ६ + ११ | १

धं॒ निं॒ सा ऽ ग॒ सा निं॒ सा ग॒ म ग॒ सा ग॒ म ऽ ध॒ म ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ध॒
· · · · व · · · · र · · · · · न · · · · त · ·
+ ६ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि ऽ सां नि ध नि सां नि ध म ग सा ||| म ग म ' नि ध नि |
· · य · · · · श · : · · ||| बी : · · न · ब |
११

राग मालकौंस झपताल

स्थाई—सखी शाम सुन्दर आज, बन्सिया बजाये सखी,
धुन बंसी सुन सुन, तन मन बिसराये ॥

अन्तरा—यमुना को रुकत वार, तरुवन की झुकत डार,
धेनु मुख घास डार, धुन में मन लाये ॥

स्थाई

नि ध ऽ नि | नि सां ऽ ऽ नि सां ऽ नि सां गं सां नि ध ऽ म नि ध ऽ नि
स · · खी | शा · · · म ; · · · · सु द · · · र · ·
| १ २ +

ध म ग सा म ग म | ध नि सां ऽ नि सां ऽ नि सां गं सां नि ध ऽ म नि
आ · · ज स · खी | शा · · , म · · · · · सु द · · · र
८ | १ ३ +

ध ऽ नि ध म ग | ग ग ग म ध ग म सा ऽ ऽ सा ऽ सा सा | निं धं ऽ
· · · आ · ज | बं सि या · ब जा · · · · ये · स खी | धु · ·
८ | १ ३ + ८ | १

निं सा म म म म ध म ग | ग म ध नि ध म ग सा निं सा निं ग सा
न ब · सी सु न सु न त | न म न · बि · स · रा · · · ·
२ + ८ | १ ३ +

म ग ध म सां सां || सां ऽ नि ध म ग सा | सां ऽ
· · · · · ये || स · · खी · · · | शा ·
८ || | १

अन्तरा

ग ग म नि ध ऽ नि नि सां नि सां सां | सां गं नि नि गं सां सां नि ध
य मु ना को · · · रु क त वा र | त · रु व · न की झु ·
१ २ + ८ | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि_ ध_ नि_ ध_ म | नि_ ध_ नि_ सां गं_ गं_ सां गं_ मं गं_ सां गं_ नि_ सां सां |
० ० — — — | ० ० — — — — ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० — — |
क · त डा र | ध · · नु मु ख धा · · स · डा · · र |
८ | १ ३ + ८ |

म सां ऽ नि_ ध_ ध_ म म ग_ ग_ सा नि॑_ सा नि_ ग_ सा म ग_ ध_ म सां सां
⌣ ०⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ० ०
धु · · न · में · म · न · ला · · , · · · , · · · , · ये
१ ३ + ८

नि_ ध_ नि_ | सां
⌣ ⌣ ० | —
स · खी | शा
| १

राग मालकौंस झपताल

स्थाई—पांडे जी मोहे राम नाम लिख देह,
गंगा जल तजि, पियत कूप जल, अमृत छाँड विष देह।

अन्तरा—और पढ़न सो कहा काज है, वृथा भास क्यौं देह,
युगल दास प्रभु के चरणन में, बार बार शिर देह।।।

स्थाई

सा ग_ म ध_ नि_ ध_ नि_ | सां ऽ सां गं_ नि_ सां ध_ ऽ म नि_ ऽ नि_ | ध_ नि_
० ० ० ० ० ⌣ ⌣ | — — — ⌣ ⌣ ० — — — — — — | — —
पां · · · डे · · | जी · मो हे · · रा · म ना · म | लि ख
८ | १ ३ + ८ | १

नि_ ध_ म ग सा सा सा नि॑_ सा | ध॑_ नि॑_ सा सा सा म ऽ म म म ग_ म नि
— — — — — — — ० ० | ० ० — — — — ० ० ० ० — ० ०
दे · · · ह ग गा ज ल | त जि पि य त कू · प ज ल अ मृ त
३ + ८ | १ ३ + ८

ध_ | ऽ ग_ ग_ म ध_ नि_ गं_ नि_ सां ध_ नि_ म ग_ म सा नि॑_ सा ग_ म ध_ नि_
— | — — ० ० ० ० ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६
छाँ | · ड वि ष दे · , · · , · · · , · · · , · · · , · · ,
| १ ३ +

ध_ म ग_ || सा नि_ ग_ सा म ग_ ध_ म नि_ ध_ सां नि_ | सां गं_ नि_ सां ऽ
६ ६ ६ || ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —
· · ह || पां · · · डे · · · · · · · | जी · · · ·
|| ८ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ | सां ऽ सां सां ऽ ध॒ म ध॒ नि॒ सां सां सां नि॒ सां ऽ
औ र प ढ़ न · | सो · क हा · · · का · · ज है वृ था ·
८ | १ ३ + ८

नि॒ सां गं॒ ऽ सां ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ ग॒ म ग॒ ऽ | सां सां सां ध॒ म ध॒ नि॒ ध॒
भा · · · स क्यों दे · ह यु ग ल दा · | स प्र भु के च र ण न
१ ३ + ८ | १ ३

म ग॒ सां सां नि॒ सां गं॒ सां | नि॒ ध॒ म ध॒ सां नि॒ ध म ग॒ सा |||
में ' बा र बा · · र | शि र दे · · · · · · ह
+ ८ | १ ३ +

राग मालकौंस (चतुरंग) तीनताल

स्थाई—साध सुरन चतुरंग मिल गावो,
ज्ञान ध्यान सुध बुध मति गति सों, तब सांचे गुणियन को सुनावो ।।

अन्तरा—१. यललि यललि यल लोमं यल लों तन, औद न तनन तन
देरे न तदारे दानो ।।।

अन्तरा—२. एक प्रकार कर एक रंगीला, नाद भेद स्वर ताल परन गत
का ये भेद श्रीमान ही जाने, सा ग॒ म ध॒ ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां
धे धे धि धि किट तिरकिट तिरकिट तक ता धुम्, ता ता धिं
ना ता ता धिं ना, कड़ान्न गिध्दा, किडनक धा ।।।

स्थाई

सा ऽ म ग॒ ध॒ म ग॒ सा सा नि॒ ग॒ सा नि॒ ध॒ नि॒ | सा सा सा म ग॒ सा ग॒ ग॒ म ग॒ सा
सा · · · · · ध सु र · न · च · तु | रं ग मि ' ल गा · · · वो ·
+ ० | १ ३

ग॒ ग॒ म ध॒ ऽ म म (नि)ध॒ नि॒ | सां सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ म ऽ ग॒ ग॒ म
ज्ञा न ध्या · · · न सु ध | बु ध म · ति ग ति सों · · त ब सां
+ ० | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि
ध नि सां गं सां | नि ध नि ध म म म ग म ग सा ||
० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ||
ऽ चे ऽ गु णि | य ऽ न को ऽ सु ना ऽ ऽ वो ऽ ||
७ | १ ३ ||

अन्तरा १

गं
ग ग ग ग म म नि ध नि | सां सां सां नि सां सां नि नि नि ध नि नि
० ० ० ० ० ० ० | — ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ०
य ल लि य ल लि य ऽ ल | लोम् य ल लौम् त न औ द न त न न
+ ७ | १ ३ + ७

सां सां | ध नि सां नि ध नि ध म ||| सा नि ग सा म ग म ग सा सा नि सा
० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ||| ०
त न | दे रे न त दा रे दा नी ||| सा ऽ ऽ ऽ ध ऽ ऽ सु ऽ र ऽ न
| १ ३ ||| + ७

अन्तरा २

नि
ग ग म ऽ म ध नि | सां सां सां गं नि सां नि नि सां ऽ सां सां सां | ध नि
— ० ० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० — — ० ० ० ० ० ० | ० ०
एक प्र का ऽ र क र | ए क रं गी ऽ ला ना द भे ऽ द स्व र | ता ऽ
+ ७ | १ ३ + ७ | १

सां नि ध नि ध म ग म ग सा नि ग सा नि ध ऽ नि | सा म ग म म सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | — ० ० — — —
ल प र न ग त का ऽ ये भे ऽ द ऽ श्री ऽ ऽ ऽ | मा न ही जा ने „
३ + ७ | १ ३ +

ग म ध | ध नि सां ध नि सां सां सां नि नि नि नि | ध ध ध ध नि
— — — | ० ० — ० ० — — — ० ० ० ० |
„ „ „ | „ „ „ „ „ „ धे धे धि धि कि ट | ति र कि ट ति
७ | १ ३ + ७ | १

नि नि नि ध नि ध म सां सां सां सां गं गं सां सां | नि ध ध नि नि ध ध
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ०
र कि ट तक् ता धु म् ता ता धि ना ता ता धि ना | क ड़ा न्न गि द्धा कि ड
३ + ७ | १ ३

नि नि ध म ||| ग म ध नि सां ध म ग सा नि ध ऽ नि | सा सा
० ० ||| ० ० ० ० ० ० | ० ०
न क धा ऽ ||| सा ऽ ऽ ऽ ऽ ध सु र न च ऽ ऽ तु | रं ग
||| + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालकौंस तीनताल

स्थाई—उलट पग कैसे दीनो नन्द,
छांडे कहां उभय सुत मोहन, धृग जीवन मति मन्द ॥

अन्तरा—कै तुम धन जोबन मद माते, कै तुम छूटे बन्द,
सुफलक सुत वैरी भयो मोको, लै गयो आनन्द कन्द ॥।

स्थाई

सा ग सा नि़ सा ग म नि़ ध म | ध नि़ सां ध म ध नि़ ध म नि़ ध सां नि़

o o o o o o | o o o o o o — o o

उ : ल · ट प ग कै · से | दी · · नो · · नं · द छां डे क हां

\+ ७ | १ ३ + ७

सां नि़ ध म ध | नि़ ध नि़ ध सां नि़ ध म ग सा धं नि़ सा ग म ग सा धं

o o | o o o o o o o o o o o o

· · · उ भ | य सु त मो · · · · ह न धृ ग जी · · व न म

| १ ३ + ७

सां नि़ | ग सा म ग ध म नि़ ध सां नि़ ध म ||

| o o o o ||

ति · | मं · · · · · · · · · · द ||

| १ ३ ||

अन्तरा

म नि़ ध नि़ सां नि़ ध म | ध म नि़ ध नि़ सां ध नि़ ध नि़ सां | नि़ ऽ ध

— o o — | o o o o — — — o o — — | — — —

कै तु म ध · न · जो | ब न म द मा ते कै तु म छू टे | ब · ·

\+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

सां नि़ ध म ध ध ध ध म ध म ग सा | धं नि़ सा ग म नि़ ध म ग ग

— o o o o — | o o o o o o o o — o

· · · द सु फ ल क सु · त · वै | री · भ यो · मो को · लै ग

\+ ७ | १ ३ +

म ध नि़ सां नि़ सां | सां ध सां नि़ ध म नि़ ध म ग ध म ग सा |||

o — | o o |||

यो · · · आ न | द कं · · : · · · · · · · · द |||

७ | १ ३ |||

राग मालकौंस तीनताल

स्थाई—चले गये दिल के दामन गीर,
जब सुधि आई प्यारे तेरे दरस की, उठत कलेजे पीर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा–नटवर वेष नयन रत नारे, सुन्दर शाम शरीर,
आप न आये द्वारिका छाये, खारी नदी के तीर ।।।

स्थाई

सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ सा | धं॒ निं॒ सा म ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ सां सां ध॒ नि॒ ध॒
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ⌣ ऽ ऽ ऽ ⌣ ऽ ऽ ऽ ऽ —
च ले · ग ये दिल् · के | दा · म न · · गी · र · ज ब सु धि आ
\+ ७ | १ ३ + ७

म | ग॒ म नि॒ ध॒ म ग॒ म ग॒ सा धं॒ निं॒ सा सां सां | ऽ ध॒ ऽ म ध॒ नि॒
— | — ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ — ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
ई | व्या रे ते रे द र स की · उ ठ त क ले | · जे · पी · ·
| १ ३ + ७ | १ ३

ध॒ म || सां नि॒ गं॒ सां नि॒ सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ध॒ म ग॒ सा नि॒ | धं॒ निं॒
ऽ ऽ || ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ऽ ऽ
र · || च · ले · · ग · · ये · · दिल् · · के · | दा ·
|| + ७ | १

अन्तरा

ग॒ म ध॒ नि॒ सां सां गं॒ | सां नि॒ सां ध॒ म ध॒ नि॒ सां नि॒ नि॒ नि॒ ध॒ नि॒ सां नि॒
ऽ ऽ ऽ ऽ — ऽ ऽ | ⌣ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ — — ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
न ट व र वे ष न | य · न र त ना · रे सुं द र शा · म श
\+ ७ | १ ३ + ७

ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ म नि॒ ध॒ म सां | नि॒ गं॒ सां ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ म ग॒ ग॒ सा
— — — — ऽ ऽ — ऽ ऽ | ऽ ⌣ ⌣ — ऽ ऽ — — — ऽ ऽ —
री · · र आ प न जा ये दा | · र · का छा · ये खा री न दी के
१ ३ + ७ | १ ३ + ७

सां नि॒ ध॒ म ||| सां नि॒ सां नि॒ ध॒ ऽ नि॒ ध॒ म ग॒ सा |
— — — — ||| ⌣ ⌣ ऽ ⌣ ⌣ ⌣ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ |
री · · र ||| च · ले · · · ग ये दिल् · के |
१ ३ ||| + ७ |

राग मालकौंस तीनताल

स्थाई–प्रभु जी तू मेरे प्राण अधार, नमस्कार डंडौत वन्दना,
अनेक बार जाऊं बारे ।।

अन्तरा–उठत बैठत सोवत जागत, एहो मन तुझ ही चेता रे,
सुख दुःख इस मन की बिरथा, तुझ ही आगे सारे ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म
मग_म ग_सा नि_ध_ऽनि_ सा ग_ | म ध_नि_सां नि_ध_नि_ ध_म ग_सा ग_ग
0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
प्र · भु जी · तू · · · मे रे | प्रा · · · ण · अ धा · र · न म
+ ७ | १ ३ +

मग_ ऽसा मग_ | म म नि_ऽध_ म सां ध_ नि_ध_ म म ग_सा | सा ग_म
0 0 0 0 0 0 | — 0 0 0 0 — 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0
स्का · र डं · | डौ त बं · द ना अ ने क बा · र जा ऊं | वा · ·
७ | १ ३ + ७ | १

ग_मध_ मध_नि_ ध_म ||
0 0 0 0 ||
· · · · · · रे · ||
३

अन्तरा

मग_ मनि_ ऽध_ म | नि_ नि_ध_ नि_सां सां सां नि_नि_ नि_ध_ नि_सां
0 0 0 0 0 0 — | 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
उ ठ त बैं · ठ त | सो व त जा · ग त ए हो म न तु झ
+ ७ | १ ३ + ७

सां नि_ | ध_नि_ध_ नि_सां नि_ ध_नि_ध_ म मग_ मग_म ग_ सा सा | मग_ म
0 0 | 0 0 0 — 0 0 0 — 0 0 | 0 0 —
ही · | चै · · ता · · · · · रे सु ख दुः · · ख इ स | म न की
| १ ३ + ७ | १

नि_ध_नि_ध_ म सां सां सां ध_ नि_ ध_म | नि_ध_ सां नि_ सां ध_नि_ ध_म ||
— 0 0 — 0 0 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 ||
वि · र · था तु झ ही आ · गे · | सा · · · · · · रे · ||
३ + ७ | १ ३

राग मालकौंस तीनताल

स्थाई—बिनती सुनो मोरी तुम शाम बोलो, बोलो काहे मौन भये ।

अन्तरा—चलो सांवरे कुंज गलिन में रास रचाय सखिन मिल सगरी ।।।

स्थाई

ग_मध_नि_ सां ध_नि_ | नि_सां ऽ ऽनि_ध_ नि_ध_ मग_ सा ग_मग_ सा म ग_म
0 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
बि न ती · · सु · | नो · · · मो · · री तु म शा · · · म बो · लो
७ | १ ३ + ७

ध_मग_म | ध_ नि_सां ध_नि_ सां गं_ऽ सां सां गं_ सां गं_सां नि_ध_म ग_सा ऽ ||
| — 0 0 ||
वो · · · | लो का · हे · मौ · · न भ · ये ||
| १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग॒ म ध॒ नि॒ सां नि॒ | सां ऽ गं॒ सां गं॒ सां गं॒ मं गं॒ सां ध॒ नि॒ सां मं गं॒ | सां
० ० ‿ ० ० | —— ० ० ‿‿ ० ० ० ० ० ० | —
च लो सँ · · व | रे · कु ज ग लि · न · में रा · स · र | चा
७ | १ ३ + ७ | १

सां गं॒ गं॒ सां गं॒ सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ म ग॒ सा निं॒ सा |||
० ‿‿ ‿‿‿ ‿‿‿ ‿‿‿ ‿
य स · खि · न · मि · ल · स · ग · री ·
३ +

राग मालकौंस द्रुत एकताल

स्थाई–आये आये मोरे धाम, आज जानकी राम,
संग लक्षमण भ्रात, अवध पुर सुहाई॥

अन्तरा–लंका जीत किये राम, अंगद, सुग्रीव, बाली,
हनुमान भक्ति पाई॥

स्थाई

सां सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ ऽ म ध॒ ऽ म ग॒ सा | ग॒ सा निं॒ धं॒ ऽ निं॒ सा म
— ० ‿ ० ० ‿० ‿‿ ‿० ० ० | — ० ‿ ० ० ० ०
आ ये आ · · ये मो · · रे · · धा · म | आ ज जा · · न की ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ +

ऽ ग॒ म म | ग॒ म नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ध॒ ग॒ म नि॒ ध॒ ऽ म | ध॒ ग॒ म सां ध॒ नि॒
० ० ० ० | — ० ‿ ‿ ‿० . ० ० ० ‿ ० ० | ० ० ० ० ० ०
· रा · म | सं ग ल · · · क्ष म ण · भ्रा · · त | अ व ध पु र सु
५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १ + ३

गं॒ नि॒ सां सां गं॒ गं॒ सां नि॒ नि॒ ध॒ म म ग॒ सा सा ||
‿ ‿ ० है है है है है है है है है है है है
हा · · ई · · · · · · · · · · ·
+ ५ ६

अन्तरा

ग॒ म नि॒ ध॒ म सां नि॒ सां ध॒ नि॒ सां | नि॒ ध॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ध॒ नि॒ ध॒
— ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
लं का जी · त कि यों · रा · म | अं · ग द सु · ग्री · व बा
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५

ऽ म | ग॒ ग॒ म ध॒ नि॒ सां ऽ सां सां गं॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा |||
० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ‿‿ ‿ ‿‿‿
· ली | ह नु मा · न भ · क्ति पा · · · ई · · ·
६ | १ + ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आसावरी

यह गांधार, धैवत, निषाद कोमल वाली, आरोह में गांधार निषाद वर्ज्य, अवरोह सम्पूर्ण अपने भावों को नम्रता पूर्वक निवेदन करने की प्रकृति जिसकी है। अपने कोमल शृंगार द्वारा सब के मन को मोह लेने वाली आसावरी को, रागिनी माना गया है। अपने स्वरूप को स्थिर और प्रगट करने के लिये जिस ने धैवत और गांधार का अंशत्व ग्रहण किया, ऐसी दिन के दूसरे पहर में गाय जाने वाली रागिणी, अपने गांधार धैवत को बार बार आन्दोलित किये बिना वास्तविक रूप धारण नहीं करती। परन्तु दरबारी राग में यही स्वर होते हुए भी उस के गांधार धैवत को बार बार आन्दोलन इस से भिन्न रीत्य किया जाता है। उस का आरोह अवरोह इत्यादि राग स्वरुप बनानें की रुप रेखा इस से अलग ही है समय भी उसका रात का माना जाता है :

कोमल ऋषभ आसावरी में साधारण चलन यही समझ कर भी, उस का विस्तार इस से पृथक ढंग से किया जाता है। आसावरी के आरोह में तान क्रिया के समय म प नि॒ सां लेने की प्रथा चल पड़ी है। वैसे तो सीधे से निषाद न ले कर म प ध॒, सां, नि॒ सां ऽ इस प्रकार ही चलना उचित होगा। और आलाप करते समय रि म प ध॒ म प ग॒ ऽ, रि सा, इस ढंग से अवरोह में पग करते समय मध्यम स्वर छू कर ग॒, ऐसा लेते हैं, परन्तु तानों में सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रि सा इस ढंग से सरलता के लिये मध्यम का सीधा प्रयोग करते हैं।

आरोह :—सा रि म प ध॒ सां।

अवरोह :—सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रि सा।

मुख्यांग—म प सां ध॒ (नि॒), प, अथवा म प ध॒ म प ग॒ (सा ग॒), रि सा

आलाप राग आसावरी

सा रि निं॒ ऽ निं॒ धं॒ ऽ पं सा | रि रि सा निं॒ सा रि धं॒ (निं॒) सा | सा रि निं॒ रि

सा रि निं॒ धं ऽ ऽ पं निं॒ धं॒ ऽ ऽ मं पं निं॒ धं॒ ऽ ऽ पं निं॒ धं॒ निं॒ धं॒ ऽ ऽ सा |

सा ऽ सा रि ऽ निं॒ सा ऽ निं॒ धं॒ ऽ ऽ सा | रि सा ऽ म रि ऽ प म ऽ प म ग॒

ऽ ऽ सा रि ऽ ऽ ग॒ सा ऽ ऽ ऽ म रि ऽ ऽ म प ऽ ध॒ ग॒ ऽ म रि म प म प

ध॒ म प म ग॒ ऽ ऽ सा रि ऽ ग॒ सा ऽ | सा म रि ऽ म प नि॒ ध॒ ऽ ऽ प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारिमप ध॒ग॒ऽ रिसामरि पमपध॒ ग॒ऽ रिम पध॒ऽग॒रिम पनि॒

ध॒ऽप मपध॒प ध॒नि॒ध॒ प मपध॒मप ग॒ सारिऽ ग॒साऽ | सारि

मप नि॒ध॒ऽऽ ऽप मपसां नि॒ध॒ऽऽ परिम पसांसां नि॒ध॒ऽऽ प

मपध॒म पध॒ ग॒ऽ रिमपग॒ऽ सारिऽ ग॒साऽ | साऽमरिऽ पमऽ

ध॒पऽ नि॒ध॒ऽऽ सांनि॒सांऽ सारिसामरिपमध॒पनि॒ध॒सां नि॒सांऽ सा

रिमप ध॒मपध॒ रिंसां रिंगं॒रिंसांरिंनि॒रिंसां गं॒ सांरिंऽ गं॒सांऽ रिंसां

सांनि॒रिंसां नि॒ध॒ऽऽप मपध॒म पग॒ऽ सारि पग॒ऽ सारिऽ ग॒

साऽ | मपऽ नि॒ध॒ऽ सां नि॒सांऽ रिंरिंसांनि॒ सांरिं नि॒ध॒ऽ प ध॒

गं॒ऽरिंसां रिंनि॒ ध॒प मप.सांसांऽ नि॒ध॒ऽ प मरिऽपमऽ ध॒पऽ

ध॒ ग॒ऽसारिऽ ग॒साऽ | सारिमप ध॒मपध॒ रिंसां ध॒मऽध॒पऽ सां

रिमपध॒ सां रिमपध॒गं॒ग॒ रिमपध॒ग॒ सारिऽ सा |

तान राग आसावरी

सारिमग॒रिसा। रिमपध॒मपध॒पमग॒रिसा। सारिमपध॒मपनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिमरि,रिमपम, मपध॒पमग॒रिसा। रिसामरि, पमध॒प, नि॒नि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिमपध॒मपध॒सांनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिरि, रिमम, मपप, पध॒ध॒, सांनि॒ध॒पमग॒रिसा। मग॒रिसा, रिमपध॒सांनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारि, साम, रिप, मध॒पनि॒, ध॒पमग॒रिसा। सारिमपध॒मपध॒रिंरिंसांनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिमपध॒पमग॒रिसा। रिमपध॒ सांरिंगं॒रिंसांनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिमपध॒मपध॒सांरिंगं॒रिंसांनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिसा, रिमरि, मपम, पध॒प, सांनि॒ध॒पमग॒रिसा। रिमरि, मपम, पध॒प, सांरिंसां, सांरिंगं॒रिंसांनि॒ध॒पमग॒रिसा। रिसामरि, पमध॒प, नि॒ध॒सांनि॒, रिंसांगं॒रिं, सांनि॒ध॒पमग॒रिसा। सारिमग॒रिसा, रिमपमग॒रि, मपनि॒ध॒पम, पध॒सांनि॒ध॒प, सांरिंमंगं॒रिंसां, गं॒रिंसांनि॒ध॒पमग॒रिसा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ख्याल आसावरी वि० झुमरा ताल

स्थाई—नेवरिया झांजरी आन परी मंजधार।

अन्तरा—न कोई पीर मिले, न कोउ संग, न साथी नाम लिये कर पार ।।।

स्थाई

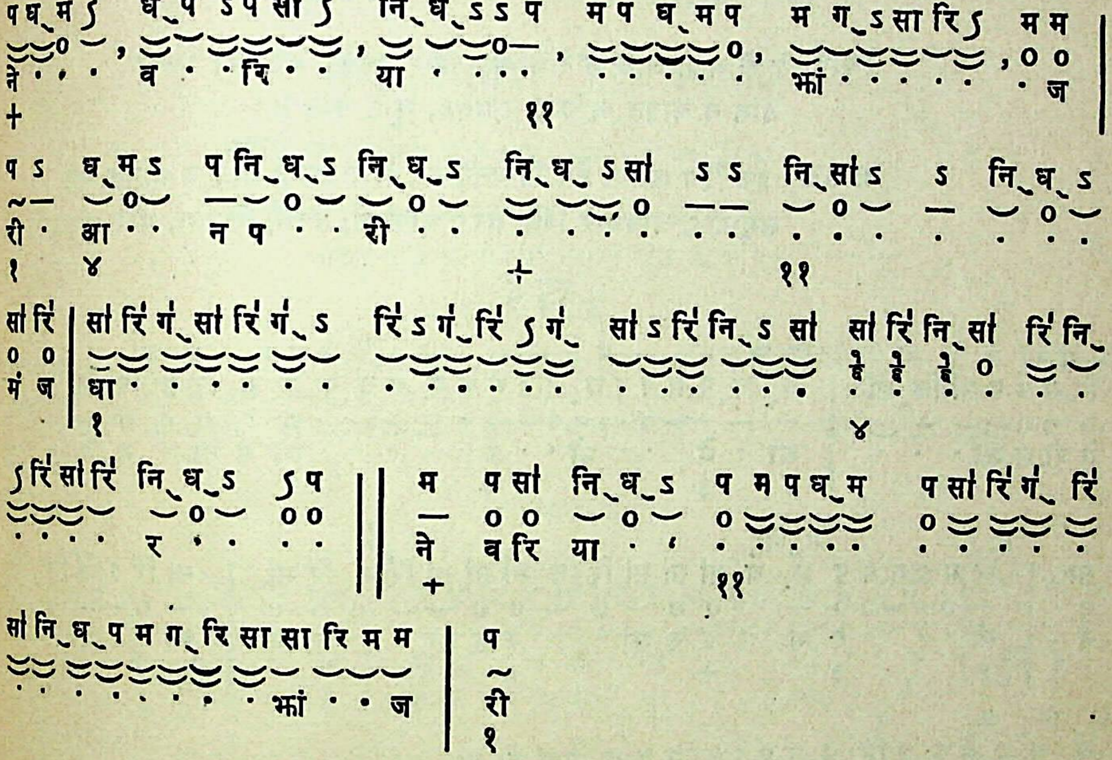

अन्तरा

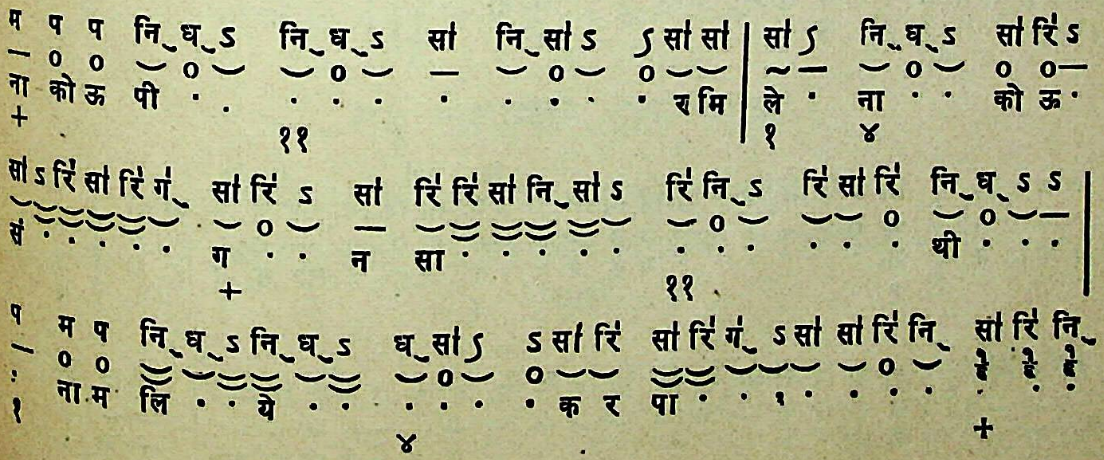

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि_ध_ऽनि_ध_ऽ प म प सां नि_ध_प ऽ म प ध_म प म ग_ऽ सा रि म म
० ० ० ० ० ०
· र · · · · · · · ने . ब रि या · · · · · · · · झां · · · · · ज
११

राग आसावरी झपताल बिलम्बित

स्थाई–ये री सखी आये मोरे आंगना, नयनन नींद भरे, भर झांकत,
बात न आवत, बतियां बनावत, झूटि झूटि ॥

अन्तरा–इक ढिग जागत रैन बिहानी, उत हिय इक हूं बात न आनत, को
समुझाई, अनियारे पिय, दरस पाव को, तरसे, जियवा, मोरे सुंदरवा ॥।

स्थाई

म प ध_ नि_नि_ प म म सा
रि म प प सां नि_सां | ध_ध_प म प ऽ ध_म ऽ म प म ध ध_प ग_ग_रि सा रि म ग_रि
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ये री स खी · · · | आ · ये · · मो · · रे · · · · · आं ग ना · न य · न
१ ३ + ८

म नि_नि_ मं
सां | रि म ऽ म प प ध_ध_सां सां सां रिं नि_सां सां सां रिं गं_रिं सां | सां रिं ऽ रिं नि_नि_
० | — ० ० ० — — ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ०
न | नीं · · · द भ रे भ र झां · · क त बा · · त न | आ · · व · त
१ ३ + ८ १

नि_नि_ध_ प
ध_ध_प म ध_प नि_ध_प प ऽ ध_म प ध_प ग_रि सा ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ||
ब ति यां ब ना · · व त झू · · टी · · · झू टी · ||
३ + ८

अन्तरा

नि सां नि_नि_
म म प सां | नि ध_ऽ नि_ध_ऽ सां सां सां नि_ध_ऽ धं सां रिं नि_सां ध_ध_सां सां | रिं रिं
० ० ० ० | ० ० — ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० | ० ०
इ क ढि ग | जा · · · · · · · ग त रै · · न बि हा · नी उ त हि य | इ क
१ ३ + १

मं मं
सां सां रिं गं_रिं सां सां रिं सां नि_सां नि_सां रिं नि_सां नि_ध_ऽ प गं_रिं सां | रिं नि_सां ऽ म
— ० ० ० ० ० ० ० — ० ० | — ० ०
हूं बा · · त न आ · · · · · · · · · · · न · · त को स मु | झा ई · · अ
३ + ८ १ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध॒ प नि॒
म प नि॒ ध॒ ऽ ध॒ प म म प प म प म प ध॒ प ग॒ | सा रि रि सा सा गं॒ गं॒ रिं सां रिं नि॒ सां रिं
० — ⌣ ० ⌣ ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
नि या रे · · पि या द र स पा · · व · · · को | त र से जि य र वा · मो · रे सुं
+ ८ | १ ३ +

नि॒ ध॒ ध॒ ध॒ प ध॒ म
⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣
द · · र वा · ·
८ |||

राग आसावरी द्रुत एकताल

स्थाई—फूली फूली डार डार, बागन में क्यारी ॥

अन्तरा—फुलवन के गजरवा, बीन्हन को धाई,
आई सब मालनियां, चुनत फूल बारी ॥।

स्थाई

सां नि॒ सां ध॒ म प ग॒ ग॒ रि ऽ सा | सा रि म प ध॒ सां रिं गं॒ रिं सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रि सा
० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० | ० ० ० ० — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
फू · ली फू · ली डा र डा · र | बा · ग न में क्या · · · री · · · : · · ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

अन्तरा

म म प प ध॒ ' सां सां नि॒ सां | रिं सां रिं गं॒ रिं सां नि॒ सां रिं सां नि॒ ध॒ ऽ प | मं गं॒ रिं गं॒
० ० ० ० — ० ० ० ० — | — ⌣ ⌣ ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ — | — ⌣ ⌣
फु ल व न के · ग ज र वा | बी न्ह · न को · धा · · · ई · · · | आ ई ·
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६ | १ +

नि॒
रिं सां सां सां रिं ऽ नि॒ ध॒ प | ग॒ रि म प ऽ ध॒ रिं मं गं॒ रिं सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रि सा |||
० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· स ब मा · · ल नि यां | च न त फु · ल बा · · · री · · · · · · ·
३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

राग आसावरी ताल रूपक

स्थाई—सैयां तेरे बाग गेन्दवा फूले, फूले चंपा अंबुवा मौले ॥

अन्तरा—कोयल बोले कूक सुनावे, विरहन को आन सतावे, आओ गरवा लाग ॥।

स्थाई

रि म प सां | नि॒ ध॒ ऽ ध॒ प ध॒ म म प ध॒ म प | ग॒ रि सा धं॒ ऽ सा ऽ | रि ऽ सा रि म प
— — — | — — — ० ० — ० ० ⌣ ⌣ ० | — — — — — — | — — — — — —
सै यां तो रे | बा · ग गें · · द · वा · · | फू · ले फू · ले · | चं · पा अं बु वा
४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि़	ध़ रिं रिं सां नि़ नि़ ध़ प म ग़ रि सा	‖
—	‿‿‿ ‿ ‿ ‿ ‿‿‿‿‿	
·	मौ · · ले · · · · · · · ·	
	+	

अन्तरा

म म प ध़ ध़ ऽ	सां सां सां रिं नि़ सां ऽ	ध़ ध़ सां सां रिं ऽ	सां रिं गं़ रिं सां रिं नि़ ध़ प
———~——	—— —— — ——	—— —— — ——	‿‿ ० — —— ——
को य ल बो ले ·	कू क सु ना · वे ·	वि र ह न को ·	आ · · न स ता · वे
+ ४ ६	+ ४ ६	+ ४ ६	+ ४ ६
रिं नि़ सां ध़ म प ध़ म प	ग़ रि सा ‖		
— — ———० ० ० ०	———		
आ · वो ग र · वा · ·	ला · ग		
+ ४ ६	+		

राग आसावरी तीनताल

स्थाई–भुवन ते निकसे नंद कुमार, पंच रंगी चीरा शिर सोहे,
चितवन पै बलिहारी ॥

अन्तरा–कानों में मोतियन का चौकड़ा, गल फूलन को हार,
नारायण जे आप हि सुन्दर, तिन को कहां शिंगार ॥

स्थाई

प ग़ ग़ रि सा रि ग़ रि	सा रि म प ध़ म प ग़ रि रि ऽ म प प	म प म प नि़ ध़ प म प
० ० ० — ‿‿‿‿	— ० ० ० ० ‿‿० ० ० ० ०— —	— ० ० ० ० — — ० ०
भु व न ते नि · क ·	से नं · द कु मा · · र पं च रं गी	ची रा शि र सो है चित
७	१ ३ + ७	१ ३ +
ध़ ध़ सां	ऽ नि़ ध़ म प ध़ म प ग़ रि ‖	
० ० —	० ० ० ‿‿‿‿० — ०	
व न प	· ब लि हा · · · · · रि	
७	१ ३ +	

अन्तरा

म प ध़ ध़ ध़	सां सां सां सां ऽ सां सां ऽ ध़ ध़ सां सां रिं सां रिं गं़	ऽ सां रिं ऽ सां नि़ ध़ म
० — ० ०	० ० ० ०—० ० ० ० ० ० ० ० ‿‿ ०	— ० ० — — — ‿
का नो म मो ति	य न का चौ · क ड़ा · ग ल फू ल न को : ·	· हा · · र ना रा य
७	१ ३ + ७	१ ३ + ७
प नि़ ध़	म प सां रिं नि़ नि़ ध़ प प सां रिं सां रिं गं़ रिं सां रिं	ऽ नि़ ध़ म प ग़ रि ‖
‿० —	० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ‿‿	— ० ० ० ० — ०
· ण जे	आ · · · प हि सुं द र ति न को · · क हा ·	· शिं गा · · · र
	१ ३ + ७	१ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग आसावरी तीनताल

स्थाई—मोरे कान भनकवा घरिलो री माई, जब आवेंगे,
लाल ही आप ही, मोरे मन्दिरवा ।।

अन्तरा—जब आवेंगे या दरवाजवा, तन मन धन नौछावर करि हो,
सदा रंगीले हो मद्यसार रतन झनकवा ।।।

स्थाई

म प | नि ध ध ध प म प ऽ म प ध म प ग सा रि ऽ सा | सां सां सां ऽ नि ध ऽ म प ऽ ऽ |
० ० | — ० ० ० ० ० — ० — | — ० — ० — |
मो रे | का न भ न क वा · · प · रि · लो · · · · | री मा · · · · · · ई · · · |
| १ ३ + ७ | १ ३ + ७ |

म ग ग ग म ग म ग रि म ग ऽ रि सा ऽ रि म प म प ऽ | नि ध ऽ ध ध ध ध म प नि ध ध प
० ० — — — ० ० — ० | ० ० ० ० ० ० ० ०
ज ब आ वें गे ला · · · ल · · ही आ प ही · · | मी · · रे मं दि र वा · · · · ·
१ ३ + ७ | १ ३ +

म प ऽ म म रि म प म प ||
० ० ० ||
· · · · · · · मो · रे ||
७

अन्तरा

म म म प नि ध सां सां सां सां सां सां | नि ध ध ध ध सां सां सां ऽ रिं सां रिं गं रिं सां नि रिं सां ऽ नि
० ० — — — ० ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ज ब आ वें गे या द र वा ज वा | त न म न ध न नौ · · छा · · व र क रि · · हो
१ ३ + ७ | १ ३ + ७

ध ऽ | ध गं ऽ रिं सां रिं नि रिं सां नि ध ऽ ऽ ध म प सां | नि ध ध ध ध ध प म प नि ध ध
० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ०
· · | स दा · रं · गी ले · · हो · · · म द्य सा | र त न झ न क वा · · · ·
| १ ३ + ७ | १ ३ +

प म प ऽ म रि म म प |||
० ० ० ० ० ० |||
· · · · · · · · मो रे |||
७

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराना राग आसावरी तीनताल

स्थाई—ना दिर दिर दानी ता दानी दीम् तन नन देर ना तन देरे ना,
तन दिर ना दानी, उद न दीं तनन नि तों तों त तन देर ना ॥

अन्तरा-ना दिर दिर दिर तुं दिर दिर दिर दिर दिर तना देरे ना
ना दिर दिर दिर तुं दिर दिर दिर दिर दिर तन दिरे ना,
ताना देरे ना तना देरे ना तना देरे ना ।।।

स्थाई

सा सां सां नि॒ नि॒ सां नि॒ ध॒ म प | नि॒ ध॒ प म ग॒ रि सा रि म प ऽ म म | प नि॒ ध॒ प ध॒
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ० ‿ ‿ — — ० ० | ० ० — — ०
ना दि र दि र दा नी ता दा नी | दीम् त न न न दे · · र ना · त न | दे रे ना · त
\+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

प म प ग॒ रि सा | सा सा सा सा रि म म म प ध॒ ध॒ ऽ सां ऽ सां सां रिं | सां रिं गं॒ रिं सां नि॒ ध॒
० ० ० — — — | ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿ ० ० ० ० ०
न दि र ना दा नी | अ द न दी · म् त न न नि तों · तों · त त न | दे · · र · ना ·
\+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

प म ||
० ० ||
· · ||

अन्तरा

नि नि नि
म म म म म म म म प प प धे॒ ध॒ धे॒ ध॒ | धे॒ ध॒ ध॒ ध॒ सां सां सां सां सां ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ ध॒
० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
ना दि र दि र दि र तुं दि र दि र दि र | दि र दि र त न दे रे ना ना दि र दि र दि र
\+ ७ | १ ३ +

रिं न
सां सां सां सां सां रिं रिं | गं॒ गं॒ गं॒ गं॒ रिं सां नि॒ सां धे॒ पं मं गं॒ ऽ रिं सां | सां रिं मं गं॒ गं॒ रिं रिं
० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० — — ‿ ० ‿ — — | ० ० ० ० ० ० ०
तुं दि र दि र दि र | दि र दि र त न दि र ना ता ना · · दे रे | ना · ता ; ना · दे
७ | १ ३ + ७ | १ ३

सां सां नि॒ नि॒ सां रिं नि॒ सां ऽ | नि॒ ध॒ प ध॒ म
० ० ० ० ० — ‿ ० ‿ | — — — ० ०
· रे · ना · ता ना · · | दे रे ना · ·
\+ ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जौनपुरी (जीवन पुरी)

गांधार, धैवत, निषाद, कोमल, बाको सब शुद्ध स्वरों युक्त, यह राग जिसके आरोह में गांधार वर्ज्य तथा अवरोह सम्पूर्ण होने से, षाडव सम्पूर्ण जाती का राग है। वास्तव में आसावरी में और इस में अन्तर नहीं, क्योंकि, स्वर, रस, अंशस्वर, (वादी संवादी) गायन समय इत्यादि सब एक जैसे हैं, केवल अन्तर यह कि म प ध_नि_सां, आरोह लेते हैं वैसे तो अनेकों बार म प ध_सां भी चलते ही हैं जब कि निषाद छोड़ देते हैं। आसावरी में म प ध_सां के बदल में सुभीते के लिये म प नि_सां यह तान चलने की प्रथा प्रत्यक्ष है। हालांकि आसावरी के आरोह में निषाद वर्ज्य है। तो अगर आसावरी के आरोह में निषाद, प्रयुक्त होने लगा, तब निषाद युक्त आरोह लेने से जौनपुरी को स्थान कहां। और अगर बार बार म प ध_नि_सां यूं चले तो अडाना राग टेढ़ी दृष्टि से झांकता हुआ प्रतीत होता है। तब वहां आसावरी के जैसे म प ध_सां लेते हैं।

खैर, तो प्रचार में यह राग मान्यता प्राप्त किये हुआ है। उसका प्रचिलित स्वरूप उपस्थित है। धैवत गांधार इस के अंश स्वर, आसावरी अंग का राग है। कोई पंचम, षडज को भी वादि संवादि कहते हैं। शृंगार रस, समय दिन का दूसरा पहर।

मुख्यांग :—म, प ध_नि_सां प, म प, ग_, रि म प,

आरोह :—सा रि ग_रि ग_सा, रि म प, म प ध_नि_सां

अवरोह :—सां नि_ध_प, म प ध_म, प, रि म प, ग_रि सा

आलाप जौनपुरी

सा रि म प ग_ग_रि सा | रि म प ग_ग_रि ग_ऽ रि सा | सा नि_सा रि म रि म प म प ध_
~— —~o o ~— | o o~, o o o o ——— | —, o o, o o, o o—, ⌣⌣⌣

म प ग_ग_रि रि सा | सा रि म प नि_ध_प रि म प ध_म ऽ प ध_नि_ध_प नि_नि_ध_
⌣⌣⌣ —, —, — | o o o o — —~, o o ~, ⌣o⌣⌣⌣ o, ——, ⌣⌣⌣

प म प रि म प म प ऽ म प ध_प ग_ग_रि सां | ग_ग_रि सा रि म रि म प म प म प ऽ
⌣⌣⌣⌣⌣—⌣o⌣, ⌣⌣⌣— ——— | o o o o, o o o, o o o, —, ⌣o⌣,

में प नि_ध_ प म म रि सा रि म प नि_नि_ध_प म प सां ध_ प ध_म ऽ प ध_नि_
—, —, —, —, ~, ⌣⌣⌣⌣⌣—, ⌣⌣ ⌣⌣⌣ o ~, ~, ⌣o⌣, ⌣⌣

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि_ ध_ ऽ प सां नि_ ऽ ऽ सां नि_ सां ऽ ऽ नि_ ध_ ऽ नि_ ध_ ऽ प ध_ म प रि म प म ग_ ऽ

म ग_ ऽ रि ऽ ग_ सा | म म प ध_ नि_ सां ऽ नि_ सां ऽ नि_ ध_ ऽ सां सां रिं ऽ नि_ ध_ प ध_ म प सां

रिं नि_ ध_ म प ध_ नि_ सां ग_ रि ग_ रि म प रि म प ध_ प ग_ ऽ रि सा | म प ध_ नि_ सां नि_ ध_

ऽ प सां सां रिं ऽ रिं गं_ रिं सां रिं नि_ सां रिं मं पं गं ऽ रि म प ग_ ऽ सा सा रि म प ध_ म प

रि म प ध_ नि_ सां ऽ नि_ ध_ ऽ नि_ ध_ ऽ प प गं_ रिं गं_ सां रिं नि_ सां रिं नि_ सां नि_ ध_ ऽ प

म प ध_ नि_ सां ग_ ग_ रि सा |

नोट : – इस के आलाप तान थोड़े दे कर छोड़ रहा हूं क्योंकि आसावरी में दिये गये, आलाप तान भी बीच बीच में लिये जाते हैं।

तान राग जौनपुरी

सा रि म प ध_ नि_ ध_ प, ध_ नि_ सां नि ध_ प, सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा नि_ सा। सा रि म रि, रि म प म, म प ध_ प, प ध_ नि_ ध_, ध_ नि_ सां नि_ सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा। म ग_ रि सा, प म रि म, ध_ प म प, नि_ ध_ प ध_, सां नि_ ध_ नि_, सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा। सा नि_ रि सा म रि प म ध_ प नि_ ध_ सां नि_ रिं सां रिं रिं सां नि_ ध प म ग_ रि सा नि_ सा। सा नि_ नि_; रि सा सा, म रि रि, प म म, ध_ प प, नि_ ध_ ध_, सां नि_ नि_ रिं सां सां, रिं रिं सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा नि_ सां, सा रि म प रि, रि म प ध_ म, म प ध_ नि_ प, प ध_ नि_ सां ध_, ध_ नि_ सां रिं नि_, नि_ सां रिं गं_, सां, रिं मं पं मं गं_ रिं सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा नि_ सा, रि नि_ सा, रि नि_ सा, ग_ रि ग_ ग_ रि सा, रि म प, रि म प, रि म प ध_ म प ध_ नि_ ध_ प म ग_ रि सा, ध_ म प, ध_ म प, ध_ म प ध_ नि_ सां ध_ नि_ सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा, नि_ ध_ प, नि_ ध_ प, नि_ ध_ म प ध_ नि_ सां नि_, रिं नि_ सां, रिं नि_ सां, ध_ नि_ सां रिं गं_ रिं सां नि_ ध_ प म ग_ रि सा। सा रि, रि म, म प, प ध_, ध_ नि_, नि_ सां, सा रिं, रिं मं, मं गं_, गं_ रिं, रिं सां, सां नि_, नि_ ध_, ध_ प, प म, म ग_, ग_ रि, रि सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जौनपुरी ताल झूमरा विलम्बित

स्थाई—ये बाजे झनन झनन बाजे, पाऽलिया मोरी, राज दुलारी,
डोल्रे आंगनवा मा।

अन्तरा—मान मतंग मतवारो ही डोल्रे, नयना मिलाजे अतही छत्र छाड़े मा।

स्थाई

ग_ग_रि सा रि ऽ 'सां ऽ सा | सां सा ध_ प ध_ म ऽ म ऽ प म प ध_ ध_ प म प रि म प ग_ ऽ सा
ये · · · · · · · बा · जे | झ न · न झ · · न · · न · बा · · · · · · · · · जे · पा
| १ ४ + ११

रि म रि | प म ध_ ध_ प म प ऽ रि सा सा सा रि म म रि म प म प प नि_ ध_ ऽ प ध_ म ऽ प
ः य लि | या · · · · · · · मो · रि रा · ज · · · · दु ला री डो · · ल्रे · · · ·
| १ ४ + ११

नि_ नि_ प म प म | रि म प म प प प रि म रि म प म प नि_ ध_ ऽ नि_ सां ऽ रिं नि_ सां नि_
आं · · · · · | · · · · · ग न वा ' · · · · · · · · · · · · · · मा
| १ ४ +

ध_ ऽ प ध_ म ऽ म प ध_ म प म ग_ ऽ सा रि ऽ ऽ म प ध_ नि_ सां | नि_ ध_ ऽ नि_ ध_ ऽ प
· · · · · · · · · · · · बा · · · · · · जे · · · · | झ · · न · · न
११ | १

अन्तरा

म प नि_ ध_ ऽ ध_ सां नि_ | सां ऽ ध_ ध_ सां सां नि_ - रिं रिं सां ऽ गं_ गं_ ऽ रिं रिं ऽ सां नि_ सां ऽ
मा न म · · तं · · | ग · म त वा · · · · · · · · · · · · रो · · हीं · · ·
| १ ४ +

सां नि_ सां नि_ सां रिं सां नि_ नि_ ऽ सां ध_ प म प | रि म रि म प म प प म प सां गं_ रि सा ग_
डो · · · · · · ल रे · · · · · न य | ना · · · · मि ला जे अ त ही · छ बि छां
११ | १ ४ +

ग_ रि सा रि ऽ प प म रि म ऽ ध_ ध_ प म प ऽ सां ग_ ऽ रि सा रि म रि म प म प ध_ नि_ सां
· · · · · · · · · · · · · · · · · ये · · मा ' ये · · · · · · वा · · ·
११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नि_सां ऽ | नि_ध_ऽ नि_ध_ऽ
जे · · | झ · · न · ·
| १

राग जौनपुरी तीनताल

स्थाई—छों छननन छों छननन बिछुवा बाजे, मोरो मा, या ते मैं जानूं, पी को अगम भईला ।

अन्तरा—चार दिनां ते अगम भईलवा, मेरे जिया को सब दुःख गईला ।।।

स्थाई

नि
प सां सां सां सां सां नि_सां रिं रिं नि_ध_प ध_म प | म प ध_प ग_रि प ग_ग_रि सा रि ऽ सा
छों · छ न न न छों · · छ न न न बि छु वा | बा · · · जे · मो री · · · · · मा
१ ३ + ० | १ ३ +

म म प नि नि सां नि
सा रि रि म | म प ध_ध_प नि_सां रिं गं_रिं सां सां रिं नि_नि_रिं सां सां रिं नि_सां ध_प ||
या · ते · | मैं · जा · नू पी · · · को · अ · ग म · भ ई · · · ला ·
| १ ३ + ०

अन्तरा

सां
ऽ म प प प नि_ध_नि_सां ध_नि_नि_सां ऽ सां नि_रिं सां रिं नि_सां नि_ | ऽ प रिं रिं सां रिं मं गं_
· चा र दि ना · · ते · · · अ ग म · भ ई ल वा · · · · | · मे रे जि या · · ·
१ ३ + ० | १ ३

नि
ऽ रिं सां सां रिं नि_नि_रिं सां सां रिं नि_सां ध_प |||
· को · स · ब दु · ख ग ई · · ला ·
+ ०

राग जौनपुरी तीनताल (मध्यलय)

स्थाई—कौन रिझावन जायरी, अलबेली नार चलि लपक झपकसों नेवरकी झनकार करे तूं ।

अन्तरा—बाट घाट सब रोकत टोकत, जिन घर आवे जाऊं चुनरिया पेहेर प्यारि तूं ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म म निं
' नि_ध_प प ध_म | म म प ध_प ग_रि सा रि ग_ग_रि ऽ रि सा सा | धं_धं_धं_सा सा सा सा
० ० ० ० — ० ० | — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० —
· कौ न रि झा व न | जा य · · · री अ ल बे · ली ना · र च लि | ल प क झ प क सों
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

म रिं रिं नि_ ध_ म
रि म म प ध_म | प ध_नि_सां नि_सां धं_प ध_ म प नि_ध_प प ध_म ||
— ० ० — ० ० | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ||
ने व र की झ न | का · · · र क रे · तूं · को · न रि झा व न ||
+ ७ | १ ३ + ७ ||

अन्तरा

प नि_ नि_ सां रिं
म प धं_ऽ ध_म प धं_नि_नि_रिं नि_सां सां सां | ध_गं_रिं गं_रिं सां नि_ध_प ध_म प ध_नि_सां |
— ० ० ० ० ० ० — ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० | ० ० ० ० — — — ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ |
बा ट घा · ट स ब रो क त टो · · क त | जि न घ र आ वे जा ऊं चु न रि या · · · |
+ ३ + ७ | १ ३ + ७ |

नि_नि_ म प
ध_ध_प प ऽ प ध_म |||
० ० ० ० ० ० ० ० |||
पे हे र प्या · रि तूं · |||
१ ३ |||

राग जौनपुरी तीनताल

स्थाई—चतुरंग रस सन गाइये, ले जाइये। सुर ताल पर, आलाप कर सुनाइये ॥

अन्तरा—ना दिर धिति लान त दीम् दीम् तननन, नितारे नितारे ता दीम्,
सा सा सारिम रिमप मपध पधनि धीनसां उर्फ मैं गोंये की फर्दा
तर्क यों सौदा कीनौं, वादे चु फर्दा शबे फेरी जरा दुनिया कुनं ॥

स्थाई

प नि_ध_प ध_म प ध_म प | म ग_ऽ सा रि ऽ म प म ग_ऽ म ग_ऽ रि सा | रि ग_ऽ रि
० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ - — ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ — — | ० ० ० ०
च तु रं ग र स स · न · | गा · · · · · इ ये ले · · जा · · इ ये | सु र · ता
+ ७ | १ ३ + ७ | १

ऽ रि सा सा रि म म प प सां | नि_सां रिं नि_ध_प ध_म ||
० ० ० ० ० — ० ० ० — | ⌣ ⌣ ० — ० ० ० ० ||
· ल प र आ ला प क र सु | ना · · इ ये · · · ||
३ + ७ | १ ३ ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नि नि प नि सां नि नि
म म म प प नि ध ऽ ध ध सां सां रिं नि सां सां | ध ध ध सां सां रिं मं गं ऽ ऽ रिं सां
o ‿ ‿ o o ‿ o ‿ o o — — o o o o | o — o o — o ‿ o ‿ — —
ना दि र धि ति ला · ' न त दीम् दीम् त न न न | नि ता रे नि ता रे ता · · · दीं म
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ |

सा सा सा रि म रि म प म प ध | प ध नि ध नि सां ऽ म ऽ म प नि ध ऽ ऽ ध | सां ऽ
— — o o — o o — o o — | o o — o o — o o ‿ ‿ o ‿ o ‿ o o | - o
" " " " " " " " " " " | " " " " " " · उ · · फं मैं · · · गो | यों ·
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ | १

सां रिं नि सां सां ऽ ध ऽ ध ध सां ऽ रिं | सां रिं गं ऽ रिं नि ध ऽ प नि ऽ ध ऽ प ध म | प
o ‿ ‿ o — — o ‿ ‿ o o o o | ‿ ‿ o o o ‿ o ‿ — — o o o o o o | ‿
की · फ · दीं · त · · कं मो · सौ | दा · · · की नौ · · · वा · दे · चु फर् · | दा
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

ध नि सां ऽ नि सां ऽ मं गं ऽ रिं सां रिं नि ऽ सां | रिं नि सां नि ध प म |||
‿ ‿ ‿ o o — — ‿ o ‿ o o o o o o | o — o o o o o
· · · · श वे · फे · · रो · ज रा · दु | नी या कु नं · · ·
३ + ७ | १ ३

राग जौनपुरी ख्याल आडा चौताल

स्थाई—भोर भई अजहुं नहीं आये, पीयरवा मोरे ।।

अन्तरा—बाट तकत थांकी मोरी अंखी, किन सोतन भरमाये,
मोरे सैयां रंग बरसे अब, उज्वल रंग पीयरवा मोरे ।।।

स्थाई

रिं म
ध म ऽ प ध नि सां नि सां ऽ नि सां ध प ध म प ध प ग रि सा | रि सा ऽ रि म प ध प
— — — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ o o — — — ‿ ‿ ‿ ‿ ~ — — | ~ — — ~ — — ~ ~
भो · · र · · · · · · भ · ई · अ ज · · · हूं न हीं | आ ये · पी य र वा
१ ३ + ७ + ११ + | १ ३ + ७ +११

म प ध नि सां नि ध प म ग रि सा ||
मो · · · · · रे · · · · · ||
+

अन्तरा

सां रिं रिं रिं रिं
म ऽ प प ध नि सां ऽ सां रिं ऽ नि सां सां | ध गं रिं गं सां रिं नि सा नि ऽ सां नि सां ऽ नि
— — — — — — — — — — — — — | — — — — — — — — o o ‿ o ‿
बा · ट त क त थां · की मो · री अ खी | कि न सो · त न भ र मा · · · · ·
१ ३ + ७ + ११ + | १ ३ + ७ + ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांरिं सांनि॒ ध॒ प | प ध॒ निं॒ नि॒ ध॒ निं॒ सां सां रिं निं॒ रिं सां रिं नि॒ ध॒ ऽ प पं | ग॒ रि म प
. . . ये . . . | मो . . रे सैं . . यां रं ग ब . र से . . अ ब | उ ज्व ल रं
+ | १ ३ + ७ + ११ + | १ ३

ऽ म प ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ सां सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रि सा रि म प ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां नि॒
. ग पी . . य . र वा . . . . मो . रे .
+ ७ + ११ +

ध॒ प म ग॒ रि सा |||

राग पटदीप

साधारणतया भीमपलासी राग में शुद्ध निषाद का प्रयोग करने से पटदीप का स्वरूप व्यक्त होने लगता है। अधिकांश हो ही जाता है। भीमपलासी में कोमल निषाद है, तो पटदीप में शुद्ध निषाद। इस के गांधार को मध्यम का, तथा ऋषभ को षड़ज का कण लगाना अनिमार्य है (जैसा कि भीमपलासी में भी) अन्यथा पीलू राग व्यक्त होने की सम्भावना होती है? जाति इसकी औडव सम्पूर्ण होने पर भी आरोह करते समय धैवत का प्रयोग (जो इस राग में विशेष क्रिया मानी जाती है) वक्र रूप धारण करके फिर निषाद और तार षड़ज पर पहुंचने की प्रथा है।

आरोह अवरोह निं सा ग॒ म प नि, ऽ ध नि सां ऽ नि ध प, ध मं ऽ प म ग॒ ऽ मं ग॒ सा रि ऽ सा

आरम्भिक ग्रह स्वर निषाद, न्यास भी, और अंश भी। चाहे कोई लोग पंचम या मध्यम षड़ज को वादी संवादी मानते हैं। और इसकी गणना शुद्ध रागों में नहीं है, क्योंकि भैरव काफी रागों में वर्णित शुद्ध राग का लक्षण, जोकि पूर्वांग, उत्तरांग में, सम भाव से होना चाहे, उस का इस में अभाव है परन्तु भीमपलासी में, परिपूर्ण प्रमाण उस का मिलता है।

गायन समय दिन का तीसरा पहर, इस से पूर्व भीम पलासी गा सकते हैं। तब पटमंजरी पटदीप, इस के पश्चात, मुलतानी और बाद में मधुवन्ती, सरस्वती, अम्बिका इत्यादि गाते हैं।

आलाप राग पटदीप

रि म सा रि नि रि
सा रि निं ऽ सा ग॒ सा रि ऽ सा | निं सा धं पं निं सा म ग॒ ऽ सा रि ऽ सा | रि सा ऽ रि निं सा धं

निं सा धं पं म ग॒ ऽ ऽ सा रि ऽ सा | धं मं ऽ ध पं ऽ निं रि निं ऽ रि सा ऽ म ग॒ ऽ म ग॒ ऽ सा रि ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा | रि रि सा निं सा ऽ निं ध पं धं धं पं मं पं नि ऽ ऽ धं निं सा निं सा ऽ म ग ऽ सा रि ऽ सा |

रि नि ऽ रि सा ऽ म ग ऽ प म ऽ ध प ऽ ध म ऽ ऽ ध प ऽ नि ध प ध प म प म ग म ग

रि सा रि निं ऽ रि सा ऽ म ग ऽ सा रि ऽ सा | रि निं ऽ रि सा ऽ म ग ऽ प म ऽ प म प ऽ ऽ म

ग ऽ प म ऽ प नि ऽ ऽ नि ध ऽ प म प ऽ रि रि सा निं सा म ग ऽ ध ध प म प नि ध प म

प ऽ सा म ग ऽ ग प म ऽ म ध प ऽ ऽ नि ध प प ध म म ध प नि ध प म ध प म

ग ऽ म ग रि सा रि निं ऽ सा म ग ऽ सा रि ऽ सा | निं सा ग म प नि ऽ नि निं सा म ग सा

ग प म ग म ध प म प नि ऽ ध प म प ऽ म ध प ऽ म ग ऽ म ग रि सा पं निं सा म ग

ऽ सा म ग ऽ सा रि ऽ सा | नि सा ग म प नि ऽ ध नि सां ऽ नि सां ध म ऽ ध प ऽ नि ध नि

सां ऽ नि सां ध म ध प नि ध नि सां ऽ नि ध प ऽ म प नि ध प ध प म प ग म ग रि सा

नि पं निं सा म ग सा रि ऽ सा | सा निं रि सा रि सा म ग म ग प म प म ध प ध म ध

प नि ऽ सां ध नि सां ऽ नि सां रिं नि ऽ सां मं गं ऽ सां रिं ऽ सां रिं नि सां ध नि सां नि ध प म

ध प ऽ म ग ऽ म प नि निं सा म ग म ग सा रि ऽ सा रि नि सा पं नि सा ग सा रि ऽ सा |

तान राग पटदीप

निं सा ग म प ध म प नि नि ध प म ग रि सा, रि निं रि सा म ग प म नि नि ध प म ग रि सा सा रि सा, सा रि सा निं सा, ग म प, ग म प, ग म, प प म ग रि सा निं सा, निं सा ग म प नि नि, ध नि नि ध प म ग रि सा, नि सा ग म प नि ध नि सां नि ध प म ग रि सा, नि सा ग म प नि सां रिं सां नि ध प म ग रि सा, म ग रि सा निं सा ग म प प नि सां गं रिं सां नि सां, रिं रिं सां नि ध प म ग रि सा, निं सा ग सा सा ग म ग, ग म प म, म प ग म प नि ध नि सां नि ध प म ग रि सा, सा रि सा, ग म ग, म प म, प ध प, ग म ग, म प म, प ध प, नि सां नि, म प म, प ध प, नि सां नि, सा रिं सां, प नि ध, नि सां नि, सां रिं सां, गं मं गं, रिं गं रिं, सां रिं सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म प, नि नि ध प म ग रि सा, सा निं रि सा म ग प म ध प सां नि रिं सां मं गं, मं गं गं रिं रिं सां, गं रिं रिं सां सां नि, रिं सां सां नि नि ध, नि ध ध प प म, ध प प म म ग, म ग ग रि रि सा, ग ग ग, म म म, प प प, नि नि नि, रिं रिं सां नि ध प म ग रि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा, रि सा सा, रि सा सा, रि सा, म ग॒ म ग॒ रि सा रि सा, प म म, प म म, ध प, नि नि ध प म ग॒ रि सा, निं सा निं म ग॒ रि सा, म प म प ध प म, प नि ध नि सां ध प, नि सां नि मं गं॒ रिं सां, मं गं॒ रिं सां, गं॒ रिं सां नि, सां नि ध प म ग॒ रि सा, निं सा ग॒ म प नि सां गं॒ मं पं, ध प म ग॒ रि सा नि नि ध प म प, मं मं गं रिं सां नि ध प म ग॒ रि सा, निं सा म ग॒ प म, ध प म, ध प म, ध प नि नि ध प म प, ग॒ म प नि सां, प नि सां, प नि, सां गं॒ गं॒ रिं सां नि ध प म प ग॒ म प नि ध नि सां नि ध प म ग॒ रि सा।

राग पटदीप ताल झूमरा [ख्याल]

आरोह–निं सा ग॒ म प नि ध नि सां अवरोह—नि ध प म प ग॒ म ग॒ सा रि ऽ सा

स्थाई–जा जा रे भंवरा दूर दूर तेरो सो अग रंग है
उन को जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥

अन्तरा–जब लग तरुन फूल महकत हैं तब लग रहत हजूर जूर।
सूर श्याम हरि मतलब मधुकर, लेत कली रस घूर घूर ॥

स्थाई

ध म प ऽ ग॒ म | प नि ऽ ऽ ऽ ध नि सां निनि सां रिं सां नि ध ऽ प ऽ म प ध प म ग॒ ऽ रि सा नि
जा · · · जा · | रे · · · · · · · भं व · · · रा · · · · दू · · · र · · दू र ते
| १ ४ + ११

रि निं | सा ऽ सा ग॒ ऽ रि सा सा रि सा निं सा सा निं सा निं सा | निं धं ऽ पं निं निं सा निं सा ऽ म
रो | सो · अं · · · ग रं · · · · · ग है · उ न | को · · · जि न मे रो · · चि
| १ ४ + ११ | १ ४ +

ग॒ रि सा ग॒ म प ध प म प नि नि ध प ग॒ रि सा ||
· त · कि · यो · · · चू · · र · चू र · ||
११

अन्तरा

म प ध प ग॒ म | प नि ऽ ऽ ध नि सां सां नि नि नि नि ऽ निसांसां ऽ नि नि | सां गं रिं सांसां रिं सां रिं
ज · ब · ल ग | त रु न फू · ल म ह क त · हैं · · · त ब | ल · · · ग र · · ·
| १ ४ + ११ | १ ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ सां नि सां सां नि नि सां नि ध ऽ प ध म प म म | प नि ध नि सां नि ध प ध म प म ग रि सा रिं
· · · · त हु जु · र · · · जू · र सू र | श्या · · · · · · म ह रि म त · ल व म
+ ११ | १ ४

नि सां नि ध प म प नि नि नि ऽ ध नि सां ध म प |||
घु क र ले त क लि र स घू · र · घू · र
+ ११

ख्याल राग पटदीप ताल झूमरा

स्थाई—मधुबन शाम फाग मचावत, खेलन रंग संग सखी आई।

अन्तरा—अबीर गुलाल मुख पर मारत, शुभ रंग केसर रंग पिचकारी भर लाई।।।

स्थाई

प म ध प म ग म | प नि ऽ ऽ सां ध नि सां ध नि सां निं ध प म ग ऽ म ग ऽ म ग सा रि ऽ
म धु · · ब · न | शा · · · · · · · · · · · म · फा · · · · · ग म चा · ·
| १ ४

सा सा रि निं सा ग म ध प ध म ध प नि ध प रिं नि सां गं सां रिं नि सां ध ||
व त खे · · ल न रं · ग सं · · ग · स · खी आ · · · · ई
+ ११

अन्तरा

प म ग म प नि | सां ऽ सां प नि सां सां गं ऽ सां रिं ऽ ऽ सां सां सां म गं रिं सां | सां रिं ऽ नि
अबी · · र गु | ला · ल मु ख प र · · मा · · · र त शु भ · रं ग | के · · स
| १ ४ + ११ | १

नि सां ध नि सां नि ध प ध म प ऽ ध प म ग ऽ म ग सा रि ऽ सा ग म प नि सां मं गं ऽ रिं सां
र · रं · · · · · · ग · · पि · च · · का · · · · री भ · · · · · · · र ·
४ + ११

गं रिं रिं सां नि नि ध प म ग रि सा नि सा ||| प म ध प म ग म
ला · · आ · · · ई · · · · · · ||| म धु · · ब · न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटदीप झपताल

स्थाई—नाद को भेद गुणी जाने, तब जाने सुर ताल को भेद जब ॥

अन्तरा—रागांग, क्रियांग, भाषांग, अरु उपांग, भव, भाव रस ताल,
गुरु मुख सौं पावे, तब जाने सुर ताल को भेद जब ॥।

स्थाई

म प ध नि म सा रि म म सा म
ग‿म प नि ध नि सां ध प ग‿रि सा | सा रि नि ऽ सा ग‿म ग‿रि सा ग‿म | प ऽ ध म ऽ ध प
ना · द · को · · भे · द गु णी | जा · · · ने त ब जा · ने सु र | ता · ल · · को ·
१ ३ + ८ | १ २ + ८ | १ ३

ध ध
ऽ नि रिं सां ऽ मं गं‿ऽ सां रिं सां सां नि सां ध प || म ऽ प नि ध नि सां
· · भे · · · · · · · द · · ज · · ब · || ना · द · को · ·
+ ८ || १ ३

अन्तरा

सा ध रिं रिं मं
नि ऽ ध नि सां नि ध ऽ ऽ ध प ऽ म ग‿ऽ म प नि सां | नि ऽ सां गं‿रिं सां सां रिं नि प नि सां ध
रा · गां · · · · · · ग क्रि · · या · · · अं · ग | भा · षां · ग · अ · रु उ · · पां
१ ३ + ८ | १ ३ + ८

नि सां नि ध ऽ प ऽ ध म प ऽ | प ध प म ध प ऽ नि ध प म ग‿ म ग‿ऽ सा रि ऽ ऽ सा |
· · · · · · · · · ग · · | भ व · · भा · · · व · र · स · · ता · · · ल |
| १ ३ + ८ |

रि ध म प ध
नि सा प ग‿म नि नि ऽ ध नि सां नि ध प रिं सां रिं सां नि | ध प म ग‿रि सा नि सा ग‿म
गु रु मु ख · सौं · · · · · · · · · पा · · · · | वे · · · · · · · · · ·
१ ३ + ८ | १ ३

ध प ||| ग‿म ग‿सा रि ऽ सा म ग‿ऽ म | प ऽ ध म ऽ
· · ||| त ब जा · · · ने सु · · र | ता · ल · · को भेद जब
+ ८ | १ ३

राग पटदीप मध्यलय झपताल

स्थाई—दूर खेलन जिन जाहू ललन मोरे हाऊ आये ॥

अन्तरा—तब हंस बोले कान्ह मैया इन को कहो पठाये है ॥।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म प प सां प नि सा म प प
ध प ग_म | नि ध प नि ध नि सां ध नि सां ध प ग_म ग_रि | सा ग_म ध प नि ध नि रिं सा
० ०० ० | — — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — ० ० — — | — — — — ० ⌣ ⌣ ०
दू · र · | खे ल न जि न · · · · · जा · हू · ल ल | न मो रे हा ऊ आ · · · रे
| १ ३ + ८ | १ ३ +

नि
ध प || ध नि सां नि ध प म ग_रि सा निं सा | प नि ऽ सां ध ऽ प
० ० || है है है है है है है है है है है है | ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ —
८ || दू · · · · · · र · · · · | खे · · ल · · न
| १ ३

अन्तरा

म सां
ग_म प नि | नि ध प प नि ऽ सां गं_रिं सां प नि नि सां गं_ | रिं सां ऽ रिं नि ऽ सां ध ऽ प प
० ० ० ० | — — — ० ० — ० ० — — ० ० ⌣ ⌣ ० | — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —
त ब हं स | बो · ले का · · न्ह · मै या इ न को · · | क हो · · · · · · · ·
| १ ३ + ८ | १ ३

प प
म म प नि ऽ ध ध नि सां नि ध म प ऽ || ग_म प नि सां रिं सां नि ध प ग_म | प नि ऽ
० ० — ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ० ⌣ || है है है है है है है है है है है है | ⌣ ० ⌣
प ठा · ये · · · · · · है · · · || दू · · · · · र · · · · · | खे · ·
+ ८ | १

राग पटदीप तीनताल

स्थाई–बता दे सखी कौन गली गये शाम,
रैन दिवस मोहि तलफत बीती बिसर गये धनधाम।

अन्तरा–गोकुल ढूंढ वृंदा वन ढूंढ्यो, मथुरा में हो गई शाम ॥।

स्थाई

म नि ध म सा रि
ध प ग_म प नि ध | नि सां ध नि सां ध प ध प ऽ म ध प ग_ऽ रि सा | निं सा म ग_रि सा
⌣ ⌣ ० ० ० ० ० | — — ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० — ० | — ० ० ० ⌣
ब · ता · दे · स | खी · को · · न · ग ली · · ग · ये · शा म | रै न दि व स
० | १ ३ + ० | १ ३

ध
रि सा ग_म प नि ध नि ध नि सां नि ध प | रिं सां नि गं_रिं सां नि ध प म ||
० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ||
मो हि त र प त · बी · · · · ती · | बि स र ग ये ध न धा · म ||
+ ० | १ ३ + ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म प | सां रिं नि | रिं नि
ग म प नि ध नि | सां ऽ सां प नि सां गं रिं सां नि सां रिं सा ध प | प नि नि ध नि सां नि ध प
0 0 0 ⌣ ⌣ — | — 0 0 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — | 0 0 — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — —
गो · कु ल · ढू | · · ढ वृं · दा · व न ढू · · · ऽयो · | म थु रा · · · · में ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

सा
म प ध प ग रि | सा रिं सां नि सां नि ध प म ||
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — — | — 0 ⌣ ⌣ 0 0 0 0 — ||
हो · · · · ग | ई शा · · · · · · म ||
७ | १ ३ + ||

राग पटदीप तीनताल

स्थाई—कल नाहीं आये तुम रे बिना मोसे ।।

अन्तरा—देखन की आशा हिय में लगी अब लौं तिहारे दरसन पाये ।

स्थाई

म ध प म ग ऽ म | ध प ऽ नि ऽ ऽ सां ध नि रिं सां नि ध ऽ म प ऽ प ध म म प ऽ नि |
⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 0 | ⌣ 0 ⌣ — 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 0 |
क · ल ना · · ही | आ · · · · · · · · · · ये · · · · · तु · म रे · · बि |
७ | १ ३ + ७ |

ध नि ध प ध प म ग ऽ सा ग म ग सा रि ऽ सा ||
⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 ||
ना : · · · · · · · · मो · · से · · · · ||
१ ३ + ||

अन्तरा

मं सां
ग म प नि नि | सां ऽ नि सां गं रिं सां ऽ प नि सां गं | रिं गं रिं सां रिं सां नि सां नि ध नि सां
0 0 0 0 0 | — — 0 0 — 0 0 0 0 0 — 0 | 0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
दे · ख · न | की · आ · · शा · · हि य में ल | गी · · · · · · · · · · ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३

नि ध म प ऽ म ग ऽ ग सा रि ऽ ऽ सा | म ग ऽ म प नि ध नि ऽ ध नि सां रिं सां नि ध ऽ
⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ 0 ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 | ⌣ 0 ⌣ 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
· है · · · अ · · ब लौं · · · ति | हा · · रे · द र · · स · न · · पा · ·
+ ७ | १ ३ +

म प ऽ |||
⌣ ⌣ 0 |||
ये · · |||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटदीप द्रुत एकताल

स्थाई–छांडो छांडो गैल मोरी, नंद के ललैया ।।

अन्तरा–भरन जाऊं कैसे जल, बाट रोके नंद लाल,
लपक झपक करत रार, ले बलैंयां दैया ।।।

स्थाई

सा

ध नि सां नि ध प म प ध प म ग_सा ग_म ग_रि सा रिं ऽ सा | रि निं ऽ सा म ग_म प नि ध
‿‿‿ ‿‿‿‿‿‿‿‿ ‿‿‿‿ ‿‿ o o o | ‿ o ‿ o o o o o o‿
छां · · · डो · छां · · · डो · गै · · · ल · मो · रि | नं · · द के · ल ल · या
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५

नि सां नि ध प म प ||
‿‿ ‿‿ ‿‿‿
· · · · · · ·
६

अन्तरा

प ग_म प नि नि सां नि सां सां | नि सां गं_ऽ रिं सां रिं सां नि सां नि ध प | ग_म प नि ध प ग_
oo oo o ∩ —— o o | — o o o ∩ o ‿‿ o ‿ ‿ oo | o oo o ooo
भ र न जा · ऊं कै से ज ल | बा ट रो · के नं द · ला · · ल · | ल प क झ प क क
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ +

ग_म ग_रि सा | प गं_म प नि नि सां ध नि सां नि ध प म ग_रि सा निं सा |||
o oooo | o o o o o ‿ ‿‿ ‿‿‿‿‿ ‿‿ ‿ ‿‿
र त रा · र | ले · ब लैं · यां · दै · · · या · · · · · · ·
५ ६ | १ ३ + ५ ६

तराना राग पटदीप तीनताल

स्थाई–तन देरे ना देरे ना तना, तना, तना ना दिर दिर दानी तदानी
तुं तुं तुं तुं तन देरे तन देरे।

अन्तरा–ना दिर दिर तुं दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तुं दिर दिर
दानी धिर किट धा धिर किट धा कत्ती ना कडां ता धा ता धा
ता धा, धा ।।।

स्थाई

ग_म प नि ध नि सां नि ध प ग_म | प नि ध ऽ प म प नि नि ध ध नि सां नि ध प | म प नि
o ooo ‿‿‿ ‿ o o o o | — o ooo — o ‿‿‿‿ o o o o o | — o o
त न दे रे ना · दे · रे ना · त | ना त ना · त ना ना दि र दि र दा नी त दा निं | तुं तुं ·
+ ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प ग_ग_ग_ग_रि रि सा सा ||
—— ० ० ० ० ० ० ० ०
तुं तुं त न दे रे त न दे रे
३ + ७

अन्तरा

नि सा सा सा सा ग_रि रि सा सा ग_ग_म म प प प प ग_ग_म प प नि नि ध प | नि नि सां
० ० ० ० ०
ना दि र दि र तुं दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र तुं दि र दि र दा नी | धि र कि
१ ३ + ७ १

सां ध म म प ध नि नि सां गं_रिं सां नि ध प प ग_ | ऽ म ग_रि सा सां |||
० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० | ० ० ० —
ट धा धि र कि ट धा क त्ति ना कडां ता · धा · ता धा | · ता · धा · धा
३ + ७ १ ३

राग भिन्न षड़ज

इस राग की उपमा क्या कहूं, जो स्वयं शुद्ध स्वरों का होने से, शान्त और गम्भीरता का पुंज है। मानो गायक और श्रोता दोनों को ही अत्यधिक शान्त और गम्भीर बना लेता है। यह पांच स्वरों का औडव जाति का राग है, जिस में ऋषभ और पंचम को एकदम वर्ज्य रखा जाता है। इसी कारण शायद तरलता, तीक्ष्णता और उतावलापन भी इस से दूर ही रहते हैं, मन को एकाग्र करता है, और तल्लीनता का द्योतक है। मध्यम, षड़ज इस में अंश स्वर हैं। प्रचार में वादी संवादी कहने लगे हैं। कौशिक ध्वनि में गांधार, निषाद अथवा गांधार, धैवत को अंशत्व दे कर अलग मानते हैं। तो भी मधुर ध्वनि आदि तो स्वयं भिन्न षड़ज ही हैं। रात्रि के दूसरे पहर के अन्त में गाने से एक दम छा जाने वाला ऐसा राग भिन्न षड़ज है। मालकौंस में गांधार, धैवत, निषाद कोमल हैं। तो भिन्न षड़ज में तीनों स्वर शुद्ध हैं, दोनों रागों में ऋषभ, पंचम वर्ज्य होने पर भी। दोनों के चलन में भेद रहता ही है। आखिर दोनों अलग २ राग जो ठहरे। सरल स्वभाव, कपट रहित, ऐसा स्वच्छ राग, भिन्न षड़ज है।

आरोह :—सा ग म ध नि सां।
अवरोह :—सां नि ध म ग सा।
मुख्यांग :—धं निं सा म, ग, म ध, म, ग, सा।

आलाप राग भिन्न षड़ज

सा ऽ सा ग सा ऽ ऽ धं निं सा म ऽ ऽ ग म ऽ सा ग म सा धं निं सा ग म ग सा ऽ ऽ सा निं
~~—, ० ०—~, ० ० ० ० —~, ० ० —, ० ० ० . ० ० ० ० ० ~—०—~, ० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म म
ध नि सा म ऽ ग म ग सा नि धं सा नि सा सा म ऽ ग म ऽ ग ग सा ग म ऽ ग म ऽ
० ० ० ०— ० ०—~, ० ० ० ०—⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣, ० ० ~ ० ० ~, ⌣ ० ⌣,

ग सा म ग सा ग म ग म ऽ ध म ग म ऽ ध नि सा ग म ग म ध ऽ म ग म ध म
० ० ० ० ० ० ~ ⌣ ० ⌣, — — ⌣ ० ⌣, ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०, ० ०—, ०

ध नि ध ऽ म ग म ध नि सां ऽ नि सां ऽ सां ध ऽ ध ग ऽ म म ध नि सां ध
०— ⌣ ० ०, ० ० ० ० — —, ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

नि सां नि ध ऽ म नि ध नि ध म ध नि सां ध म ग म ऽ ग सा | ग म ध नि सां नि सां
⌣ ० ⌣ ० ⌣ ⌣, ० ० ० ० –, ⌣ ⌣ ० ० ० ⌣ ० ⌣ — ~ | ० ० ० ० — ⌣ ०

नि ध नि सां म ध नि
ऽ ध नि सां गं सां नि सां ऽ ध नि नि सा सां गं गं मं गं सां ऽ ध नि सां मं गं सां ग म म ध ध
⌣, ० ० ० ० ~, ⌣ ० ⌣ ० ०, ० ०, ० ० ० —० — ~, ० ० ० ० — — ० ०, ० ०, ०

सां
नि नि सां सां मं गं सां नि सां ऽ ध नि सां गं मं ऽ गं मं सां गं मं गं मं ऽ सां गं मं गं मं सां सां
०, ० ०, ० ० — — ⌣ ० ⌣, ० ० ० ० — —, ० ० ० ० — ⌣ ० ⌣, ० ० ० ० — — ⌣

ध ऽ नि म ऽ ध ग ऽ म सा ऽ ग म ध नि सां ध म ग सा ऽ | धं नि सा नि नि सा ग
० ⌣ — ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ~ ० ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ० ० ० ० — | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣

सा सा ग म ग म ऽ ग म ऽ ऽ म ध ग ऽ म सां सा ग सा म ग ग म ग ध म म म
⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, — —, ⌣ ० ⌣ — ⌣ ⌣ ० ० ० ~, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —,

ध म नि ध ध नि ध सां नि ध नि म ध ग म सा ग म ध नि सां ध
⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣, —

सां ध ऽ सां म ऽ सां ग ऽ सां सां ऽ धं नि सा म ऽ ग म ऽ ग म सा ऽ ऽ नि सा ऽ नि सा ग म
⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ —, ⌣ ० ⌣ ~ ⌣ ० ⌣ — ⌣ ० ⌣ | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

ध नि म ध नि ध ऽ म ग म ऽ ऽ म ध नि सां ध ग म मं गं मं गं सां नि सां ऽ ध नि सां
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ~, ⌣ ० ⌣ — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० — ० ० — ०, — ~ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣

ध नि सां ऽ ध ग म सा ग म ग सा धं नि सा म ग सा ग म ध नि सां ध म ग सा |
⌣ ⌣ ० ⌣, ० — ०, ० ० — — —, ० ० ० ० — —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० — |

तान राग भिन्न षड्ज

सा सा ग म ध ध म ग सा नि धं नि सा ग म ग, म म ग सा ग म ग सा । ग ग सा नि धं नि सा ग म म ग सा ग म ग सा । सा नि धं नि सा नि, ग सा नि सा ग सा, म ग सा ग म ग, म म ग सा नि सा । नि सा ग म ध ध म ग सा ग म ग म म ग सा । ग सा नि सा ग, म ग सा ग म, ध म ग म ध ध म ग सा म, ग म ग सा । ग ग सा, म म ग, ध म, ध ध म ग, म म ग सा । नि सा ग म ध नि ध म म ध म ग, ग म ग सा । नि सा ग म ध नि म ध नि नि ध म ग म ग सा, ग सा, म ग, ध म, नि ध, सां नि ध म, नि नि ध म ग म ग सा, म ध म, ग म ग, सा ग सा, धं नि सा, नि नि ध म ग म ग सा । ध नि ध नि, म ध म ध, ग म ग म, सा ग नि सा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निं सा ग म ध नि सां नि ध नि ध म ध म ग सा । सा ग, सा म, ग म, ग ध, म ध म नि ध म ग सा । ध नि सां, म ध नि, ग म ध, सा ग म, ध नि सां नि ध म ग म, ध ध म ग, म म ग सा। म म ग सा, ध ध म ग, नि नि ध म, सां सां सां नि, ध म ग म, ध ध म ग, म म ग सा । सा ग सा, सा ग सा, ग म ग, ग म ग, म ध म, म ध म, ध नि ध, ध नि ध, म ध म, म ध म, ग म सां नि ध म ग म ग सा । ग म ध नि सां ध नि सां ध नि म ध नि सां ध नि सां सां ध नि ध म ग म ग सा । निं सा सा, सा ग ग,ग म म, म ध ध, ध नि नि,नि सां सां, सां गं गं, गं मं मं, मं गं, गं सां, सां नि, नि ध, ध म, म ग, ग सा निं सा । सा सा सा, ग ग ग, म म म, ध ध ध, सां सां गं गं सां नि ध म ग म ग सा । म म म, ध ध ध, सां सां सां, मं मं मं, गं मं गं सां, सां गं सां नि, ध नि ध म,ग म ग सा । सा म ऽ म ग म ग सा, म सां ऽ सां ध नि ध म, सां मं ऽ मं, गं मं गं सां, मं गं गं, गं सां सां, सां नि नि, नि ध ध, ध म म, म ग ग, ग सा सा धं निं सा ।

भिन्न षड्ज वि० एकताल

स्थाई-कहत विचार, ब्रह्म ज्ञान सों, मिटत अंधकार ॥

अन्तरा-भ्रम भय नाशत जब, प्रगटत साकार ॥

स्थाई

ग ग ग

म ग म सा निं धं ऽ | सा म ऽ म म ध म म ध ध म ग म ऽ म ध ग ऽ सा ग म ध ध म म ध

क ह · त बि · · | चा · · र ब्र · ह्म ज्ञा · · न सों · · · · · · मि ट त · · · अं ·

११ | १ + ५ +

सा सा

नि सां ऽ ऽ नि ध ऽ म ग ग सा || सा सा ग म ध नि सां ध म ग सा | सा म म

· · · · ध · · का · · र || क · · · · · · ह · त वि | चा · र

९ || ११ | १

अन्तरा

म म ध नि ध सां सां ध

ग म ध नि | सां ऽ सां सां ध सां ध नि ऽ नि ध ऽ म ध नि म ध ध म ध नि सां ऽ सां मं गं सां ध

भ्र म भ य | ना · श त ज ब प्र · · ग · · ट त · सा · · · · · · · · का · · ·

११ | १ + ५ + ९

म ग सा सा || ग म ग ध नि ध म ध म ग म ग सा निं धं निं | सा म ऽ

· · · र || क · · ह · · · · · · · · · त · वि · | चा · ·

|| ११ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख्याल राग भिन्न षड्ज बिलम्बित ताल तिलवाड़ा

स्थाई- सुधर बलमा, मितवा अजहूं नहीं आए ।।

अन्तरा-रैनिया बीती जाए, तारा गण सब हंसत करत बतियां,
मोरे मितवा अजहूं नहीं आए ।।।

स्थाई

सा निं | सां धसा | सां सां सां सा
म ग सा धं निं | सां सां ऽ ऽ ध ग म ऽ म ध म म म ध म म ध नि सां ऽ ऽ ध ध ग म सा ध सा
सु ध र ब ल | मा · · · · · · · मी · · त · · वा · · · · · अ ज हूं · ना · ही
| १ ५ +

ध
निं सा ऽ सा ग ऽ ग म ऽ म ध ऽ ध नि ऽ सां ध ऽ म ग सा || म ध ध म ग म म ग सा निं सा
आ · · · · · · · · · · · · · ये · · · · · || सु · · · ध · · · र · ·
१३

निं धं निं |
· ब ल |

अन्तरा

सां ध
म ध म म ध नि सां ध नि मं | सां नि सां नि सां ध सां मं ऽ ध ग सा ग म ऽ ऽ सां ध नि ध नि ध
रै · नि यां · · · · · बी | ती जा · · · · · ये · · · · · · · · · · ता रा · · ·
| १ ५

गं सां
ऽ ध नि ध सां ऽ सां मं गं ऽ मं गं सां ध नि ध | सां नि सां ध ऽ नि ध ध ग ऽ म सा धं निं सा ग
· ग ण स ब · ह स त · क र त ब ति · | यां · · · · · · · · · · · मो · · रे ·
१३ | १ ५

सां सां सां सा
म म ध म म ध म म ध नि सां ऽ ऽ ध ध ग म सा धं सा निं सा ऽ सा ग ऽ ग म ऽ म ध ऽ
· मी · · त · · · · · · · · अ ज हूं · ना · हो आ · · · · · · · · · ·
+

ध नि ऽ सां ध ऽ म ग सा |
· · · ये · · · · · |
१३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग भिन्नषड्ज तीनताल

स्थाई–मैं तो जागि ली जागि ली, जागि ली तुमरे दरस पावने ।

अन्तरा–सांझ विहानी रैन विहानी, सोवत भ्रान जगानी, जागि ली, तुम्हरे दरस पावने ।

स्थाई

सां सा सा निं ध सा ग

म ध म सां नि | ध ऽ म ऽ ग म ऽ सा धं निं सा धं निं | सा म ग म ध नि सां ध ग म सा ||

० ० ० — ० | — ० ० ० ० — ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ०

मैं तो · जा गि | ली · जा · गि ली · जा · गि ली तु म | रे द र स पा · · व ने · ·

७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

अन्तरा

ध सां नि सां मं मं सां नि ध

ग म म ध नि | सां ध नि सां मं गं सां म ध नि सां ध ध | म ऽ म ग म सां म ध नि सां ध ग

— ० ० ० ० | — ० ० ० ० — — ० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ०

सां झ वि हा · | नी रै · न वि हा नी सो · व त भ्रा · | न · ज गा · नी जा · · · ग ली

७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

निं ध म म

म धं निं | सा म ग म म ध नि सां ध ग ग सा |||

— ० ० | ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ०

· तु म्ह | रे द र स पा · · · व ने · ·

७ | १ ३ +

राग भिन्नषड्ज द्रुत एकताल

स्थाई–चांदनी चकोर जैसी, सिन्धु मिलन धाई,
शीतल गंभीर आली प्रेम पीयु पाई ।।

अन्तरा–पूर्ण चन्द्र होय मिलन, जिया पिया हुलसाई,
देखि सखी देखि चहूं, उज्ज्वल रंग छाई ।।।

स्थाई

सां

ग सा नि सा धं निं सा म ऽ म | ग म ध नि ध नि ध म | ग म म ध सां ध म ऽ म | ग

— ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० — — — | — ० ० — — ० ० ० ० | —

चां द नी · च को · र जैं · सी | सिं धु मि ल न धा ई · | शी त ल गं भी र ग्रा · ली | प्रे

३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १

ध नि ध सां नि ध म ग सा ||

० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पि यु · पा · ई · · ·

३ + ५ ६

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म ग म ऽ ध सां सां नि सां सां | सां नि ध नि सां मं गं सां नि ध म | ध म नि ध ऽ सां ध ग
— ० ००० — ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० | — ० ० ० ० — ० ०
पू ण च · द्र हो य मि ल न | जि या पि या हु ल सा ई · · · | दे खि स खी · दे खि च
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५

म | गं सा धं नि सा सा सां ऽ नि ध नि ध म ग म ग सा |||
— | ० ० ० ० ० ० ० ‿‿‿‿‿‿‿‿‿‿
हूं. | उ · ज्व ल रं ग छा · · ई · · · · · · ·
६ | १ ३ + ५ ६

तराना राग भिन्नषड्ज झपताल

स्थाई–ताना देर ना ताना देरे ना, तद्रेदानी तारे दानी,
दानी दानी तारे दानी, ताना दीम् तादारे दानी ।।

अन्तरा–ताना तुं द्रे द्रे तारे दानी, तोम् तोम् ता ना ना तोम् ता,
कत्ती धिर किट तक धिर किट धिर धिर किट,
नगिन तकिट धान् धा तकिट धान् धा तकिट धान् धा ।।।

स्थाई

सा सा म म ग सा सा धं निं सा | ग म ध ऽ नि ध म ग म म | म ध ग ऽ म नि ध म ऽ म |
— ——— ——— ——— — | ———— —— —— | — ——— ———— |
ता ना दे रे ना ता ना दे रे ना | त द्रे दा · नी ता रे दा नी | दा नी दा · नी ता रे दा · नी |
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १ ३ + ८

ग सा ग म सा ग म ध नि सां नि ध म ||
—— —————— ० ० ० ० ० ०
ता ना दी म् त दा रे दा · · · नी ·
१ ३ + ८

अन्तरा

ग म म ध नि सां सां सां ऽ सां | ध नि सां मं गं सां सां सां ध ऽ म | म ध नि ध नि नि सां सां
——— —— ——— | ——— —— ० ० —— | —— ० ० ० ० ० ०
त न तुं द्रे द्रे ता रे दा · नी | तो म् तो म् ता न न तो · म् ता | क त्ति धि र कि ट त क
१ ३ + ८ | १ ३ + ८ | १ ३

गं गं सां सां ध ध म ग म म | सां मं गं सां नि सां ध ऽ ध म म ग म ग ऽ ग सा म म म
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ — ३ ३ ३ ३ ३ ३ — ३ ३ ३
धि र क्कि ट धि र धि र कि ट | न गि न त कि ट धा · न धा त कि ट धा · न ध त किट
+ ८ | १ ३ + ८

ध ऽ ध सां |||
३ ३ ३ —
धा · न धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हन्सध्वनि

मध्यम-धैवत वर्ज्य होने से इस की जाति औडव-औडव कहलाती है। यह कर्नाटक पद्धति का राग है। ऋषभ इस का अंश स्वर है। यह कुछ कठिन रागों में से नहीं है और गाने में सरल है। केवल कुछ वर्षों से हिन्दुस्तानी पद्धति में प्रविष्ट हुआ है इस लिये इस का प्रचार भूपाली आदि रागों की तरह नहीं है, परन्तु सरल अवश्य है। (जो राग कम प्रचलित हैं या अप्रचलित हैं, उन सब को कठिन अथवा सरल समझ लेना यह उचित नहीं है)। कुछ चंचल स्वभाव का यह राग अपना झुकाव प्रायः तार सप्तक की ओर ही अधिक रखता है। रात के प्रथम प्रहर के अन्त में भूपाली आदि रागों के पश्चात ही इस का गायन समय माना जाता है। मेल पद्धति वाले इस को बिलावल थाट से कहते हैं।

आरोह :— सा रि ग प नि सां।

अवरोह :—सां नि प ग रि, सा नि रि ऽ सा।

मुख्य अंग :—ग प ग रि सा नि रि।

आलाप राग हन्सध्वनि

सा नि रि ऽ सा ग प ग रि सा नि रि सा नि पं रि सा नि रि सा प ग रि सा नि रि ऽ सा नि रि

सा रि ग प नि प ग प नि ऽ प ग रि सा रि सा रि सा नि पं नि रि ऽ ग रि सा नि रि प ग

प ऽ नि प नि ऽ प ग ऽ रि सा रि ऽ ग रि सा नि रि सा पं नि पं सा नि रि सा ग प ग रि सा

रि ग प नि ऽ प नि सां नि प ग रि सा नि रि ऽ ऽ सा ग प नि सां रिं सां नि प ग प ग रि सा

नि रि सा | सा रि ग प नि सां ऽ सां नि प नि रिं गं रिं सां गं रिं सां प सां नि रिं नि प ग प

नि प सां नि रिं प नि सां नि प ग रि सा रि ग प ग रि सा नि रि ऽ सा | ग प नि प सां ऽ नि

प प ग रि सा नि रि सा सा प ग प नि प सां नि प नि रिं सां नि पं नि रि सा |

तान राग हन्सध्वनि

सा रि ग रि ग प ग रि सा नि रि सा, ग रि सा नि, रि रि सा नि पं नि सा नि, सा रि नि सा, रि ग सा रि ग प रि ग प प ग रि सा नि रि सा, सा रि रि, ग प प, ग रि, सा रि सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निं पं निं रि सा ग रि सा, प ग रि ग प, नि नि प ग, प ग रि सा, सा रि ग प नि नि प ग, नि नि प ग प ग रि सा। सा निं, रि सा, ग रि, प ग, प नि, प ग, प ग रि सा। सा रि ग प नि नि प नि सां नि प ग प ग रि सा, ग ग रि सा, नि नि प ग, सां नि प ग, प ग रि सा। सा रि ग प नि सां रिं रिं सां नि प ग रि सा निं सा सा ग रि ग, रि प ग प, ग नि प नि, प सां नि सां, रिं रिं सां नि प ग रि सा। ग रि सा निं, प ग रि सा, नि प ग रि, सां नि प ग, रिं सां नि प, गं रिं सां नि, रिं सां नि प, सां नि प ग रि सा निं सा। सा नि नि, रि सा सा, ग रि रि, प ग ग, नि प प, सां नि नि, रिं सां सां, गं रिं रिं, सां नि नि, नि प प, प ग ग, ग रि रि, रि सा सा, निं सा सा रि सा। सा रि ग प नि सां गं रिं सां नि प ग रिं सा निं सा।

ग ग रि सा, ग प नि सां, गं रिं सां नि प ग रि सा। सा सा सा, ग ग ग, प प प, नि नि नि, रिं रिं सां नि प ग रि सा, ग ग ग, प प प, नि नि नि, सां सां सां, गं रिं सां नि प नि रिं रिं सां नि प ग रि सा निं सा। सा रि सा, ग प ग, प नि प, नि सां नि, गं रिं सां नि प ग रि सा। सा रि ग प नि सां, गं रिं सां नि प ग, रिं सां नि प ग रि, सां नि प ग रि सा।

ख्याल हन्सध्वनी ताल झूमरा

स्थाई–सब सुख पायो, तुम्हरे करम सों दाता।

अन्तरा–रमत रमैया नयनन देखो, अन्तर ध्यान सोंपावे ज्ञाता॥

स्थाई

प ग प प सां नि प ग प ग रि सा | रि ऽ ग ग रि रि सा सा रि सा निं निं पं ऽ पं पं निं सा ग

स ॰ ॰ ब ॰ ॰ सु ॰ ॰ ख ॰ ॰ | पा ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ यो ॰ ॰ ॰ ॰ तु ॰ म ॰ ॰

१ ४ ०

रि सा नि रि रि सा सा ग रि सा प ग प नि सां ऽ नि प रिं सां नि प ग ऽ प प नि सां रिं सां नि

॰ ॰ रे ॰ ॰ ॰ क ॰ ॰ र ॰ ॰ म सों ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ दा ॰ ॰ ॰ ता ॰

० ११

गं रिं सां नि प ग रि सा रि ||

अन्तरा

प ग प सां ऽ सां | सां ऽ प प नि सां रिं गं गं रिं सां रिं सां सां नि प नि प प ग रि सा रि ऽ

र ॰ म त ॰ र | मै ॰ या ॰ ॰ ॰ ॰ न ॰ य ॰ न न ॰ ॰ ॰ ॰ दे ॰ ॰ ॰ खो ॰

१ ४ ० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सासा रि ग ग रि सा निं रि सा निं प निं रि ऽ सा ग रि ग प ग प नि प सां नि प निरिं रिं सां नि प
म्रं · · · ह · · र ध्या · : · न · सौं पा · · · · · · · वे · · · · · · · ·
+ ११

प ग रि सा रि ||
· · · · · · ||

हन्सध्वनि तीनताल

स्थाई—रैन विहानी सजनी, अजहू न आए पियरवा ।।

अन्तरा—तरफ तरफ दोऊ बीते प्रहरा, निंदिया न लागत, विरहा सतावे ।।।

स्थाई

ग प ग ग रि सा निं | रि ऽ निं प नि प ग रि सा रि सा निं रि सा | ग रि म रि ग प नि रिं नि
रै · न · · वि · | हा · नी · स ज नी · · · अ ज हू ना | आ · · ये पी · · · य
७ | १ ३ + ७ | १ ३

प ग रि सा रि ||
र वा · · · ||
+

अन्तरा

प ग प प ग प नि | प रिं सां गं रिं सां नि रिं नि गं रिं नि प ग रि सा | रि रि सा ग प नि प
त र फ त र फ बी | ते दो ऊ प्र · ह · रा निं दि या न ला · · · | ग त वि र हा स ता
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

नि सां नि प ग रि सा रि ||
· · · वे · · · · ||
+

हन्सध्वनि द्रुत एकताल

स्थाई—मन्द मन्द पवन चलत, शीतल पुरवाई,
गगन मंडल पूर्ण चन्द्र, देखत हियरा लुभाई ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—उज्ज्वल रंग चांदनो सी, पीय की सुरतियां, नयनन को लाज लागे, चितवन हर्षाई ।।।

स्थाई

प ग ग ऽ रि सा नि रि रि सा प | पं नि रि सा प ग नि प ग रि सा रि | सा सा प प ग रि सा नि
— 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ — | 0 0 0 0 0 0 0 0
मं द मं · द प व न च ल त | शी · त ल पु र वा · ई · · · | ग ग न मं ड ल · पू ·
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ +

रि सा ऽ सा | सा ग प नि प सा नि प ग प ग रि सा रि ||
0 0 0 0 | — 0 0 0 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ||
र्णं चं · द्र | दे ख त हि य रा · लु भा · · · ई · ||
५ ६ | १ ३ + ५ ६ ||

अन्तरा

प ग प नि नि सां नि सां नि रिं सां | सां सां गं पं पं गं गं रिं सां रिं | सां गं रिं सां नि प सां ऽ
— 0 0 0 0 — 0 ⌣ ⌣ 0 0 | 0 0 — 0 0 — 0 ⌣ ⌣ — | 0 0 0 0 0 0 0 0
उ ज्व ल रं ग चां द नी · · सी | पि य की सु र ती या · · · | न य न न को · ला ·
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ +

नि प ग प | गं रिं सां नि रिं सां नि प गं रिं सां नि प ग रि सा |||
0 0 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ |||
ज ला · गे | चि त व न ह र षा · ई · · · · · · · |||
५ ६ | १ ३ + ५ ६ |||

राग हन्सध्वनि झपताल

स्थाई—सुमिर मन रे निश-दिन घट घट छिपत समायो ।।

अन्तरा—चपल गति सों मनुवा रे, सिद्ध न होत हरि को नाम ।

स्थाई

ग प
प ग रि सा नि पं | पं रि ऽ ऽ सा ऽ नि रि ऽ ग रि ग रि सा नि रि ग प नि | प सां ऽ नि रिं नि प
0 0 ⌣ ⌣ 0 0 | ⌣ ⌣ 0 — 0 ⌣ ⌣ — — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 — — | ~ 0 ⌣ ⌣ — —
सु मि र · म न | रे · · · नि · · श · दि · · · · · न घ ट घ | ट छि · · प त स
१ ३ + ८ | १ ३ +

ग ऽ पं रि ||
0 ⌣ ⌣ 0 ||
मा · यो · ||
८ ||

अन्तरा

प ग प नि प नि नि प सां नि | रिं गं रिं सां नि रिं प रिं सां नि प ग रिं सा नि रि पं रि ऽ |||
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ | ~ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ · |||
च प ल ग ति सों म नु वा · | रे सि · द्ध · न हो · त · ह रि को ना · · म · |||
| १ ३ + ८ |||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराना हन्सध्वनि रुद्र ताल द्रुतलय

भात्रा ११ ताली १, २, ४, ५, ६, ८, ९; १० खाली ३, ७, ११ पर

स्थाई—ताना देरे ना तारे दानी, दीम् तनन तदारे दानी,
नादिर दिर दानो तुं दिर दिर दानी, तादारे दानी, तारे दानी ॥

अन्तरा—यारे मी यली यला, यल लोम् यल लोम् यल ले, तान दिर दिर तान
दिर दिर ना ।॥

स्थाई

ग प ग रि सा रि ऽ रि सा निं रि | सा निं पं पं निं रि रि सा ग रि रि | ग प प ग ग प ऽ

——— ——— —— —— — — | ——— —— ——— —— — — | — ० ० ० ०——

ता ना दे रे ना ता · रे दा · नी | दी म् त न न त दा रे दा · नी | ना दि र दि र दा ·

१ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + | १ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + | १ २ + ४ ५

प नि नि नि प प ग प | गं रिं सां नि प प ग रि सा रि रि ॥

—— ० ० ० ०— — | —— — ———— — —— ॥

नी तुं दि र दि र दा नी | ता दा रे दा · नी ता रे दा · नी ॥

६ + ८ ९ १० + | १ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + ॥

अन्तरा

ग ऽ प सां ऽ सां सां ऽ रिं सां ऽ | सां नि प नि रिं सां गं रि सां नि प | सां ऽ रिं सां सां नि नि

——— ———— —— —— | ——— — —— ——— —— | —— — ० ० ० ०

या · रे मी · य ली · य ला · | य ल लो म् य ल लो म् य ल ले | ता · न दि र दि र

१ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + | १ २ + ४ ५ ६ + ८ ९ १० + | १ २ + ४ ५

प ग रि रि रि सा सा रि |||

——— ० ० ० ० — |||

ता · न दि र दि र ना |||

६ + ८ ९ १० + |||

राग पीलू

प्रचार में सात शुद्ध, पांच विकृत सभी स्वर इस में लगा कर गाया जा रहा है, जब कि श्री तानसेन के समय में दोनों ऋषभ दोनों गांधार, धैवत कोमल अन्य शुद्ध स्वरों से प्रचलित था। धारे धीरे कोमल ऋषभ इस में से लोप हो गया, उनके स्थान पर कोमल निषाद तथा शुद्ध धैवत का प्रयोग होने लगा। इस राग अथवा गायकों की मनोवृत्ति ने यहां तक साहस किया, कि आज शुद्ध तथा विकृत सभी स्वर इस में लगते दिखाई देते हैं ऐसा मिश्र सा राग पीलू अपना विशेष आरोह अवरोह धारण न करते हुए तथा किसी विशेष नियम में न रहते हुए भी, ऐसे विशेष समयों पर नियम से ही सब स्वरों को अपनाता है कि इस का मिश्र स्वरूप होते हुए भी, पीलू नाम अथवा पीलू संज्ञा को प्राप्त है। स्वरों का विशिष्ट ढंग से प्रयोग करने से ही श्रवण प्रिय होता है और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शृंगार, सिमरण तथा भक्ति रस का द्योतक यह राग है। कभी कभी तो गायकों द्वारा राग कीर्वाणी इसी का नाम सुना जाता है परन्तु प्रचलित राग कीर्वाणी इस से अलग ही है।

इसके आलापों द्वारा सब स्वरों के प्रयोग की रीति समझी जा सकती है। इस की संकीर्णता ही पीलू कहला रही है। ऐसी आभा वाला पीलू आलापों से समझ लेना उचित है। संक्षेप में आरोह अवरोह निं सा ग म प ध्‌ प, म, ग्‌ रि म, ग्‌, रि सा, निं धं पं, मं पं निं, सा ।।

वैसे तो आज कल की भैरवी में भी शुद्ध विकृत बारह ही स्वरों का प्रयोग हो रहा है तो भी दोनों राग अलग २ जाने पहचाने जाते हैं।

यह ठुमरी अंग गायन के लिये उपयुक्त राग है। और ख्याल अंग गायन के पश्चात प्रायः इस राग को दोपहर के बाद से आधी रात तक गाते ही हैं। यूं तो सर्व कालिक हो हो चुका है। इस के गायन के समय तान पूरे का प्रथम तार मन्द्र पंचम पर न मिला कर मन्द्र शुद्ध मध्यम पर मिलाते हैं। यही प्रथम तार षड़ज मान कर गायन आरम्भ करते हैं। बाकी तीनों तार, क्रमशः मध्य षड़ज का जोड़ा और मन्द्र का षड़ज जो थे। वह तीनों तार पंचम बन जायेंगे। यह संकीर्ण राग होने से। जहां जहां अलग अलग रागों के स्वर इस में समाविष्ट किये जाते हैं। वहां वहां ग्रह अंश भी इस के बदलते रहना स्वभाविक बात है। ग्रह स्वर प्रायः मन्द्र निषाद ही अधिक कर के रहता है।

आश्चर्य की बात है कि इस राग में इस के अपने स्वरूप के अतिरिक्त, काफी, सैंधुरा, खमाज, झिंझोटी, पहाड़ी, यमन, गौरी, गारा इत्यादि अनेक रागों का मिश्रत रूप होते हुए, थाट पद्धति वाले इस के गले में थाट क्यों बांधते हैं।

आलाप राग पीलू

निं सा ग्‌ ऽ रि सा निं सा | निं सा ग म प ग्‌ ऽ रि म ग्‌ रि सा निं सा | सा ग ग म रि म ऽ ग्‌
o o o ⌣ ⌣ o o ~ | o o o o — — o o o o o o — | o o o o o o o o

ऽ रि सा निं सा | निं सा ग म प ध्‌ प ऽ गं म प धं प ग्‌ ऽ रि म ग्‌ ऽ रि सा रि ग्‌ रि सा निं ऽ
o o o o — | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —, o o o o o — o o o — o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣

सा | ग म प ध नि् ध प ग म नि् ऽ प ग्‌ रि म ग्‌ सा रि ग्‌ रि सा निं ऽ सा रि्‌ सा निं धं्‌ पं
— | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — o o o o o ⌣ ⌣ — o o — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o —, o o o o — —

मं पं निं सा | पं धं पं धं्‌ निं ऽ सा सा ग मं प ऽ ध्‌ प म्‌ प ग्‌ रि ऽ म ग्‌ ऽ रि म ग्‌ रि सा
o o — — | o o — o — o —, ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — o o o o o o — o — o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣

निं ऽ सा |
o ⌣ — |

इधर उधर की तानों का प्रयोग ही थोड़ा करते हैं। विशेष कर ताने न लेना उचित है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू—ठुमरी (पंजाबी तीनताल)

स्थाई—गयो री माधो पिया विदेस गयो ॥

अन्तरा—लिख लिख पतियां भेजूं सैयां को, योगन भेस लियो ॥।

स्थाई

सा
सा रि ग़ ऽ ग ग़ रि म ग़ रि सा सा नि ऽ सा ग ग म ग रि सा सा | धं सा ऽ ऽ ऽ सा रि ग़ ऽ
० ⌣ ⌣ ~ — ~ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० | ⌣ ⌣ ० ~ — ० ⌣ ⌣ ~
ग यो · री मा धो · · · · · · · · पि या वि · दे स ग | यो · ग यो · ·
५ + १३ | १ ५

सा
ग़ ग़ ऽ सा रि ग प म ग रि म ग सा प म़ म ग रि सा | धं सा ऽ ऽ ऽ ||
— — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ⌣ ⌣ ० ~ — ||
री मा · धो · · · · · · · · · पि या वि दे स ग | यो ||
+ १३ | १ ||

अन्तरा

नि सा ग म प ध प ऽ ऽ म ग सा ग म ध प | ऽ ग म रि म प नि ध़ प ग़ सा प ऽ म ग म प
० ० ० ० ० ० —— ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — | — ~ ~ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० — ० ⌣ ⌣ ⌣
लि ख लि ख प ति या · · · · · · · | भे जूं सैं · यां · · को · यो · · · · ·
+ १३ | १ ५ +

ध सां नि ध प ध प प म प ऽ म प | ध ग प म ग प म ग ग || गयो री माधो
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० — ० ⌣ ⌣ — ⌣ ⌣ | ० ० ० ० ⌣ ⌣ ⌣ — ||
· · · · · : ग न भे · · · | · स · लियो · · · · ||
१३ | १ ||

राग पीलू तीनताल

स्थाई—मन की मन ही मांहि रही न हरि भजे,
न तीरथ से वे चोटी का लग ही ॥

अन्तरा—दारा मीत पूत रथ संपति धन जन पूर्ण मही।
और सकल मिथ्या यह जानो भजना राम सही ॥।

स्थाई

ग ग ग ऽ रि सा सा | नि ऽ प म ग म ग रि सा ऽ सा धं सा ग ग ग | ऽ ग सा रि ग म म
० ० ० ⌣ ⌣ ० ० | — ० ० — ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ०
म न की · म न | ही · मा ही र · ही · न · ह रि भ जे | न ती · · · र
७ | १ ३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म म ऽ ग रि रि ऽ सा ग म प प | प प रि म प ध् ऽ प ग ||
थ से · · वे · · चो टी · · का | ल ग ही · · · · · · ||
+ ७ | १ ३ + ||

अन्तरा

सा ग प | प प प प प रि म ध प प नि नि नि नि ध् | प म ऽ रि म प ध प ऽ ग ग ग ग ग |
दा रा मी | त पू त र थ स · · प ति ध न ज न पू | र्ण · · · · म ही · औ र स क ल |
७ | १ ३ + ७ | १ ३ + ७ |

ग सा रि ग म म म ग रि ऽ सा प प प प | प प रि म प ध् ऽ प ग ||
मि थ्या · · · य हू जा · · नो भ ज ना रा | म स ही · · · · · · ||
१ ३ + ७ | १ ३ + ||

राग पीलू तीनताल

स्थाई—प्रीतम जान लेहू मन माहिं, अपने सुख से सब जग बांध्यो,
कोऊ काहु को नाहीं ।।

अन्तरा—सुख में आये सभी मिल बैठत, रहत चहुं दिशि घेरे,
विपत परे सब ही संग छोड़त, कोऊ न आवत नेरे ।।।

स्थाई

ध़ म़ प़ नि़ सा सा रि ग म ग रि म ग ग रि ग | रि सा सा नि़ नि़ नि़ सा ऽ नि़ सा ध़ प़ | नि़ नि़
प्री · · त म जा · · · न · ले · हू म न | मा · · हीं अ प ने · सु ख से · | स ब
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

सा ग रि सा सा नि़ सा ग ध प म ग रि | ग म ग रि सा नि़ ||
ज ग बां · · ध्यो को ऊ का हू · को · | ना · · · हीं · ||
३ + ७ | १ ||

अन्तरा

नि़ सा ग म प प प म प ध ध प | म प ध प म ग ग ग ग ग म ग म ग म ग म | प ग सा
सु ख में · आ ए स भी · · मि ल | बै · · · ठ त र ह त च हूं दि श घे · · · | · रे ·
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प प प प म ग रि ग रि ग म | ग म ग रि सा सा ग ग ग रि ग रि सा प म ध | प सा ||
० ००० — ०० ‿ ० ‿ ० ० | ‿‿‿‿ ० ० — ० ० ० ० ० — ० ० | — — ||
वि प त प रे स ब ही · · सं घ | छो · · · ऽ त को ऊ न आ · व त ने · · | रे · ||
३ + ७ | १ ३ + ७ | १ ||

राग पीलू तीनताल

स्थाई–बिलग जिन मानो उधो प्यारे,
यह मथुरा काजर की कोठो जे आवै ते कारे।

अन्तरा–कारे भंवर सुफलक सुत कारे,
कारे रत्न पवारे यहां ज्ञान की कौन चलावे, सूर श्याम गुण न्यारे।

स्थाई

ग ग ग रि सा नि सा | सा सा ग ऽ सा ग म प म प म ग सा नि नि ध ध प | नि सा सा सा ग
० ० ० ‿ ‿ ० ० | — ० ० ० ‿‿‿‿ ‿‿‿ ० ० ० ० ० ० — | — ० ० ‿ ०
बि ल ग जि · न मा | नो उ धो · · · · · प्या · · रे · य ह म थु रा | का ज र की ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३

ऽ ग म ग रि रि सा सा सा रि ग सा रि ग | सा ग म प ऽ म प म ऽ म रि म ग रि सा ||
‿ ‿‿‿‿ ० ० — ० ० ० ० ० — | ‿‿‿ ० ‿‿ ० ‿‿ ० ० ‿‿ ० ||
· को · · · · ठी जे आ · · · वे · | ते · · · · का · · · · · · रे · · ||
+ ७ | १ ३ + ||

अन्तरा

सा ग म प प | प म प प प म प म प ध प म ग म प नि ध नि ऽ ध | प प रि म रि प म
— ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ‿‿‿‿ ० ‿‿‿‿‿ ० ‿ — | ० ० ‿‿‿‿
का रे · भं व | र सु फ ल क सु त का · · · रे का · · · · रे · र | त्न प वा · · · ·
७ | १ ३ + ७ | १ ३

ध प प ग रि सा ग ग रि सा ग ऽ रि ग प | म ग ऽ सा रि ग म ग म ग म प म ग सा ग म
० ‿ ० ० ० ० ० ० ‿‿ ० ‿‿‿ ० | ‿ ० ‿‿ ‿‿‿ ० ० ‿‿‿‿ ० ० — ०
· · · रे · · य हां · · ज्ञा · · न | की · · कौ · · · न च ला · · · वे · सू र
+ ७ | १ ३ + ७

ग म ध ध | प प ग म प ध नि ध ध प ग सा |||
‿‿ ० ० | ० ० ‿ ‿‿‿ ० ० ० ० ० |||
श्या ऽ · म | गु ण न्या · · · · · · · · रे · |||
| १ ३ + |||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू तीनताल

स्थाई—रघुवर तुमको मेरी लाज, सदा सदा मैं शरण तिहारी,
तुम बड़े गरीब निवाज ।

अन्तरा—१. पतित उधारण बिरुद तिहारो, श्रवणन सुनी अवाज ।
२. हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ।
३. अघ खंडन दुख भंजन जनके, यही तिहारो काज ।
४. तुलसीदास पर कृपा करिये, भक्तिदान देहु आज ।

स्थाई

नि सा ग॒ ग॒ म ग रि सा ग ग ग रि सा सा ऽ नि | सा ऽ सा नि सा ग॒ ग॒ म ग रि सा रि म प
0 0 0 ⌣ ⌣ 0 0 0 — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 | — 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣
र घु व र · · · · तुम को : मे · : · री | ला · ज र घु व र · · · · तु म :
३ + ७ | १ ३ +

ध प म ग॒ ग॒ ऽ रि सा | सा ऽ सा नि सा ग॒ ग॒ म ग॒ रि सा रि म ध प प म ग॒ ग॒ सा | सा ऽ
⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ | — 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 | — 0
· को मे · · · · री | ला · ज र घु व र · · · · तु म · को · मे · · री | ला ·
७ | १ ३ + ७ | १

सा नि सा ग॒ ग॒ म ग॒ रि सा रि म ध प म ग॒ ग॒ ऽ सा | मा ऽ सा नि सा ग॒ ग॒ म ग॒ रि सा
0 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 | — 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0
ज र घु व र · · · · तु म॒ · को मे · · · री | ला · ज र घु व र · · · ·
३ + | १ ३ +

ग॒ ऽ रि म॒ ग॒ म॒ ग रि सा | प म॒ ग ध ऽ प ध नि ध प प ऽ प ग॒ रि सा सा ऽ सा | सा ऽ
0 ⌣ ⌣ 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 | — ⌣ ⌣ 0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 — 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 | — 0
तुम · · को मे · · · री | तुम॒ को · तुम॒ · को तुम · को · · · तुम॒ को मे · · · री | ला ·
७ | १ ३ + ७ | १

सा धं॒ पं धं॒ नि ऽ सा रि म प ध प | ग॒ ऽ रि नि प ऽ प म प ऽ म प प प रि म प ध ऽ
0 0 0 0 0 — — 0 0 ⌣ ⌣ 0 | 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 — ⌣ ⌣ 0 0 — 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0
ज स दा सा दा · में श र ण · ति | हा · री · · · तुम ब ड़ · ग री ब न वा · · · ·
३ + ७ | १ ३ + ७

ऽ प ध प म प म ग म ग रि ग सा प ग॒ रि सा सा ऽ सा | ग॒ सा सा || नि सा ग॒ रि सा
— ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 — — 0 ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 | 0 — 0 || 0 0 0 ⌣ ⌣
· · · · · · · · · · · · : · ज तुम॒ को मे · · · री | ला · ज || र घु व र · ·
१ ३ + ७ | १ || ३

अन्तरा

नि सा ग म प रि म ध प | रि म प प ग॒ रि सा सा ऽ प प प प म प ऽ | प म प ध प ग
0 0 0 0 0 ⌣ ⌣ 0 0 | 0 0 0 0 — ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 0 0 0 0 0 — | 0 ⌣ ⌣ 0 0 0
प ति त उ धा · · र ण | वि रु द ति हा रो · · · श्र व ण न सु नी · | अ वा · · ·
+ ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प म ग सा || | प ग रि सा सा ऽ सा | ग सा सा
०—० ० || | — ० ‿ ‿ ० ० | ० — ०
· ज · · || | तुम् को मे · · · री | ला · ज
+ || | ७ | १

तराना राग भूपाली त्रिताल

स्थाई—तदानी दानी तोम् तननन देरेना, तन नितन देरेना, उदानी दानी तदानी, तोम् तननन देरेना ॥

अन्तरा—उदतन उदतन नितन नितन तनोम् तोम्तनन तदीम् दोम्तनन तदीम् दीम्तनन देरेना तनना देरे देरे तन देरे देरे तनन नादिर दिर दिर तुंदिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर धिं तिरि किट तक, नग धे, ता कड़ान् धा किड़धान् धा कतिना कड़ान् धातधा ॥

स्थाई

’ प ग रि सा रि | ग ग ग ग ग प ग रि ऽ ग रि | ग ध प प ग रि सा ग ग ग प प ध प
० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० — ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ०
· त दा नी दा नी | तों त न न न दे रे ना · त न | नि त त न दे रे ना उ दा नी दा नी त दा
७ | १ ३ + ७ | १ ३ + ७

ध | सां सां सां ध ध प ग रि ||
० | — ० ० ० ० — ० ० ||
नी | तों त न न न दे रे ना ||
| १ ३ + ||

अन्तरा

ग ग ग ग प प सां ध सां सां सां सां सां सां सां सां | सां रिं सां रिं गं रिं सां ध ध रिं सां सां | ध प
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० — — ० ० ० ० — — ० ० ० | ० —
उ द त न उ द त न नि त त न नि त त न | त नों तोम् त न न त दीम् दीम् त न न | त दीम्
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ | १

ग ऽ ध प प ग रि सा सा सा | सा ग रि ग ग प प सां ध सां सां सां सां सां सां | सा गं गं रिं रिं रिं
० ० ० ० ० — — ० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ० ० न | ० ‿ ‿ ‿ ‿
दीं · त न न दे रे ना त न | ना दे रे दे रे त न दे रे दे रे त न न न | ना दि र दि र दि
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

रिं सां रिं रिं सां सां सां सां ध ध ध ध प प प प ग ग रि रि सा सा सा सा | प ग ग ग ग ग ग
‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
र तुं दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र | धि ति रि कि त ट क
३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प प प सां सां सां सां गं रिं गं | रिं सां सां ध ऽ प ऽ ग रि |||
‿ ‿ ० — — -- ‿ ‿ ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० —
न ग ध ता क्ड़ां धा कि ड़ धा न् धा | क ति ना क्ड़ां · धा · त धा
३ + ७ | १ ३ +

तराना राग कल्याण तीनताल

स्थाई—तानोम् तनन दिर ना तादारे दानी, ना दिर दिर दानो तादानी तुं दिर दिर तादारे दानी, ओदानी दानो तादानी दिर दिर दिर तादारे दानी ॥

अन्तरा—दिर दिर दीम् तननन, दारे दीम् तननन, तानन दिर दिर ता ना ना, देर न ता दारे दानी, ओदानी दानी तादानी दिर दिर दिर तादारे दानी ॥

स्थाई

नि ध प म॒ प ग म॒ | प ऽ प प म॒ ग रि नि रि रि ग ग रि ग म॒ प ध | प म॒ म॒ ग ग रि
० — ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ०
ता नोम् ता न न दे रे | ना · ता दा रे दा नी ना दि र दि र दा नी ता दा नी | तुं दि र दि र ता
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

ग रि सा सा नि रि ग रि ग म॒ ध नि | म॒ ध ध नि नि ध प म॒ ग म॒ ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ०
दा रे दा नी ओ दा नी दा नी त दा नी | तुं दि र दि र ता दा रे दा नी
३ + ७ | १ ३

अन्तरा

ग ग ग ग म॒ ध सां सां सां सां | नि रिं गं रिं सां नि ध प गं रिं सां नि नि ध ध प नि ध | प म॒ ग
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० | ० ० ०
दि र दि र दीं म् त न न न | दा रे दी म् ता न न न त न न दि र दि र ता न न | दे रे ना
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

रि ग रि सा सा नि रि ग रि ग म॒ ध नि | रिं रिं सां सां नि नि ध प म॒ ग म॒ |||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ०
ता दा रे दा नी ओ दा नी दा नी ता दा नी | दि र दि र दि र ता दा रे दा नी
३ + ७ | १ ३

तराना राग बागेश्वरी त्रिताल

स्थाई-तनन देरेना तदानी दीम् तादीम् तन देरेना देरेना तदीम् दीम् दीम् ।

अन्तरा—देरेना देरेना दीम् नितान देरेना, तानोम् देरेना तदारे दानी तन तदानी तद्रे दानी, धीं धीं तुक धेता धी दी धिकिट तक थुंकतात कत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोधि कत गिधि गिता तक्‌ कड़ धान्‌ दिग गदीगन धा तक्‌ कड़धान्‌
दिग गदीगन धा तक्‌ कड़धान्‌ दिग गदीगन धा ।।।

स्थाई

	सां	
' रिं सां नि॒ ध प ध	नि॒ ऽ ध नि॒ ध सां नि॒ ध म ऽ ग॒ म	ग॒ रि सा ऽ धं निं॒ सा म म म म
० ० ० ० ० ‿ ‿	— ० ० ० ० ० ० — — — ० ०	० ० — — ० ० ० ० ० ० ०
· त न न दे रे ·	ना · त दा · · नी दीम्‌ · · ता ·	दीं · म्‌ · त न ना दे रे न दे
७	१ ३ + ७	१ ३ + ७

ग॒ म	ध नि॒ ऽ ध सां ऽ ध नि॒ ऽ ध ‖	रिं सां नि॒ ध प ध	नि॒ ऽ नि॒ नि॒ ध सां निं॒ ध म
० —	० ० ० ० — ० ० ० ० ० ‖	० ० ० ‿ ‿ ०	— ० ० ० ० ० ० — ०
रे ना	त दीं · म दी · त दी · म्‌ ‖	त न न द · रे	ना · त दा · · नि दी म्‌
	१ ३ +	७	१ ३ +

अन्तरा

ग॒ ग॒ ग॒ म म म ध नि॒	सां सां सां रिं नि॒ सां नि॒ सां सां सां मं गं॒	रिं सां नि॒ ध प ध नि॒ नि॒
० ० ० ० ० ० ० ०	० — ० ० ० — — — ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ० ०
दे रे ना दे रे ना दीम्‌ ·	नि ता न दे रे ना ता नोम्‌ दे रे ना ·	त दा रे दा · नी त न
+ ७	१ ३ + ७	१ ३

ध ग॒ म ग॒ रि सा सा	ग॒ ग॒ म म म ध ध ध ध ध ध म म ध ध ध ध ध ध ध ध ध ध ध
० — ० ० ० ० ०	० ० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
त दा रे त द्रे दा नी	धीं धीं तृ क धि ता धीं ध दी कि ट त क थुं कं ता त क त गी दी क त ग
+ ७	१ ३ + ७

ध	नि॒ ध नि॒ नि॒ सां ऽ सां सां सां सां सां सां सां मं गं॒ रिं रिं रिं सां सां सां	सां सां रिं रिं सां
‿	— — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ‿ ० ‿ ० ‿ ‿	‿ ‿ ० ० ‿
दि	गीं ता तक्‌ कड्‌ धा न्‌ दि ग ग दो गि न धा तक्‌ कड़ धा न दिग्‌ ग दो	गि न धा तक्‌ कड़
	१ ३ + ७	१

सां	
सां ऽ नि॒ ध ध ध प ध नि॒	‖
‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ —	‖
धा · न दिग्‌ ग दी गि न धा	‖
३ +	‖

तराना राग भैरवी तीनताल

स्थाई–दिर दिर तनन तन दीम्‌ तना, दीम्‌ तोम्‌ तान देरेना तान देरेना
दीम्‌ तों नादिर दिर दानी तारे तदरे दानी ।।

अन्तरा–तन ना दिर्‌ दिर्‌ तुं दिर्‌ दिर्‌ तन दीम्‌, तारे दानी, तन तुं दिर्‌
तदरे दानी, दीम्‌ तोम्‌ तन दिरना, तदिरना तदिरना दींम्‌ तोंम्‌
तारे तदारे दानी ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

म
प प प प प नि_ध_प म प ग_ऽ रि_ | सा ऽ ऽ प प प प नि_ध_प म प ग_ऽ रि_ | सा ग_म
दि र दि र त · न न त न दीम् · त | ना · · दि र दि र त न न त न दीम् · त | ना दीम्_तोम्
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

म
नि_ध_नि_ध_नि_सां ऽ ग_ऽ म | ग_म ध्_ग_म म ध_ध_म म ध_नि_रिं_सां | नि_ध_प म
ता · न दे रे ना · ता ·, न | दे रे ना दीं तों ना दि र दि र दा नी ता · | रे त दा रे
+ ७ | १ ३ + ७ | १

ग_म || प प प प नि_ध_प म प ग_ऽ रि_ | सा ' म प ग_ ' रि_सा ' म प ग_ऽ रि_ | सा
दा नी || दि र दि र त न न त न दी म_त | ना · त न दी म_त ना · त न दीम् · त | ना
३ || + | १ ३ + ७ | १

अन्तरा

म
प प प प प प प प ध_प प म म ग_म | ध_ऽ ऽ सां ऽ गं_रिं_सां नि_ध_नि_ | ध_प प ग_ग_
त न ना दि र दि र तुं दि र दि र त न | दीम् · · ता · रे दा नी · त न | तुं दि र त दा
+ ७ | २ ३ + ७ | १

ग
म रि_ऽ सा नि_सा सा म ग_रि_ | सा सा सा सा ग_ग_ग_ग_म ध_नि_रिं_सां | नि_ध_प म
रे दा · नी दी तोंम्_त न दे रे | ना त दि र ना त दि र ना दीं म_तोंम्_ता · | रे त द रे
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

म
ग_म ||| प प नि_ध_प म प ग_ऽ रि_ | सा ऽ ' ग_ऽ रि_सा ऽ ' ग_ऽ रि_ | सा
दा नी ||| दिर्_दिर्_त न न त न दीम् · न | ना · · दीम् · त ना · · दीम् · त | ना
३ ||| + ७ | १ ३ + ७ | १

तराना राग हमीर तीनताल

स्थाई—उदतन नननन दिर दिर ता नोंम्_, देरेना तनन देर्ना द्रेतान तदरे दानी;
नादिर तनन द्रे द्रे द्रे द्रे द्रे तुं द्रे दानी ॥

अन्तरा—धित्ती लीत्ती लाने नादिर दिर दीं म्_तोंम्_तनन नितनन तदरे तदरे
दानी, उदानी दानी तदानी तननन धित्ता किडनग तिरिकिट धुम_
किडनग तिरिकिट तक धा ॥।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

नि
सा म ग प म‿ध प प ग ग म म | ध ऽ सां ऽ रिं नि सां मं मं रिं सां ऽ ध सां नि ध | ऽ प ग म प
० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ | — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ | ० ० ० ० ०
उ द त न न न न न दि र दि र | ता नोम् · दे रे ना त न न दे · र्ना द्रे ता · | · न त द रे
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

रि सा सा सा सा ग म रि ग ग म | ध प ग म म रि सा ||
— ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ‿ ‿ ० ० ||
दा नी ना दि र त न न द्रे द्रे द्रे | द्रे द्रे तुं दि र दा नी ||
+ ७ | १ ३ ||

अन्तरा

नि
म‿प म‿ध ध प प ग ग म म ध सां ऽ रिं सां सां | रिं गं मं पं पं गं गं मं रिं सां नि सां प रिं
० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
धि त्ती लि त्ती ला ने ना दि र दि र दीं तों · त न न | नि त त न त द रे त द रे दा नी उ दा
१ ३ + ७ | १ ३ + ७

नि सां | ध प म‿ प ग म रि सा सा म ग ग प प म‿ म‿ध ध प म‿म‿ | प प ग ग म म
० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ | ‿ ‿ ‿ ‿
नी दा | नी त दा नी त न न न धि ता कि ड न क ति रि कि ट धुम् कि ड | न ग ति र कि ट
| १ ३ + ७ | १

रि रि सा || सा म ग प म‿ध म‿प ग ग म म | ध ऽ प ग ग म म ध प ग ग म म ध ऽ प
‿ ‿ — || ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ | — ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ०
त क धा || उ द त न न न न न दि र दि र | ता · न दि र दि र ता न दि र दि र ता · न
३ || + ७ | १ ३ + ७

ग ग म म | ध ऽ
‿ ‿ ‿ ‿ | — ०
दि र दि र | ता ·
| १

तराना राग बिहाग तीनताल

स्थाई—नादिर‿दिर‿दानी तदानी तोंम‿ तननन तोंम‿ तोंम‿ तननन तन
देरेना देरेना दींम‿ तदींम‿तान देरे तदारे तद्रे दानी, नादिर‿दिर‿
दानी तदानी तुंदिर‿दिर‿दिर‿दिर‿दिर‿दानी ।।

अन्तरा—नादिर‿दिर‿दिर‿धिति लाने दींम‿तननन दींम‿दींम‿तननन नन
तदारे तद्रे दानी तक‿धिड़ान‿धिड़नग तक‿धिरिकिट तक‿धिड़ांतक
धा तक‿धिड़ांतक‿धा तक‿धिड़ांतक‿धा तदरे दानी ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

सा म म ग ग म प प नि नि | सां ऽ नि नि नि ध म् प प ऽ म् ग म ग ग ग म | ग म प
० ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿
ना दि र दि र दा नी त दा नी | तोम् · त न न तों · म् तों म् त न न न त न | दे · रे
+ ७ | १ ३ + ७ | १

ध ग म ग रि सा ग रि नि सा पं ऽ नि सा सा | सा ग म ग रि नि सा प नि नि सां सां रिं सां नि
‿ ० ० ० ० — ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० | ० — ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ०
· ना द रे ना दीम् त दी · म् ता · न दे रे | त दा रे त द्रे दा नी ना दि र दि र दा नी त
३ + ७ | १ ३ + ७

ध म् प | ग म म प प प म म ग ग रि रि नि सा ||
‿ ‿ ० | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ||
दा · नी | तुं दि र दि र दि र दि र दि र दा नी ||
| १ ३ ||

अन्तरा

ग म म ग ग म म प प नि नि | सां सां सां सां सां गं गं मं गं रिं सां नि ध म् प | ध ग म
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० | — ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० | ० — ०
ना दि र् दि र् दि र् धि ति ला ने | दीं म् त न न न दीं म् दी म् त न न न न · न | त दा रे
+ ७ | १ ३ + ७ | १

ग रि सा सा सां गं ऽ गं मं मं गं गं रिं रिं सां सां सां सां | सां सां गं ऽ रिं सां प प प प ऽ सां
० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | ० ‿ ‿ ० ० — ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०
त द्रे दा नी तक् ड़ां · न् धि ड़ न म त क धि र कि ट | तक् धि ड़ा · तक् धा त क धि ड़ां · तक्
३ + ७ | १ ३ +

नि प प प प ऽ ध ध | ग ऽ म ग रि नि सा |||
— ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ | — ० ० ० ० ० ० |||
धा त क धि ड़ां · त क् | धा · त द रे दा नी |||
७ | १ ३ |||

तराना राग भैरव त्रिताल

स्थाई—दानी तोंतन नितनित देर्ना तार दानी नादिर दिर दानी तुंदिर दिर
दानी तन तुंदिर तदरे दानी ॥

अन्तरा—नादिर दिर दानी तुंदिर दिर दानी तन तुंदिर, धेतेलान धेतेलान
तन तुंदिर तदरे दानी ॥।

स्थाई

ग ग म ध् ध् प म प ग म | ध् ध् प म प ऽ प म ग म प प म म रि ऽ ऽ रि सा | धं धं
० ० — ० ० ० ० ‿ ‿ ० | ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ — ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० — — | ० ‿
दा नी तों त न नि त नि · त | दे · · · · · र् ना ता · र् दा · · · · · नी | ना दि
+ ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धं_नि नि सा ऽ सा म ग मं प प ध_ प ध_ रिं_ सां नि नि | ध_ध_ नि ध_ ऽ प ||
⌣⌣ ⌣ ० ० ० ० ⌣⌣⌣⌣ — ० ० ० ० ० ⌣⌣ | ० ० ० ० ० ० ||
र दि र दा · नी तुं दि र दि र दा नी त न तुं दि र | त द रे दा · नी ||
३ + ७ | १ ३ ||

अन्तरा

नि नि
म म म म म ध_ ऽ ध_ सां सां सां सां सां सां ऽ सां ध_ ध_ नि सां सां | सां गं रिं_ ऽ सां ऽ नि ध_ नि
० ⌣⌣⌣⌣ ० ० ० ० ⌣⌣ ⌣⌣ ० ० ० ० ० ० ⌣⌣ | ० ⌣ ० ० ० ० ० ० ०
ना दि र दि र दा · नी तुं दि र दि र दा · नी त न तुं दि र | धे ते · · ला · न धे ते
१ ३ + ७ | १ ३

ऽ नि ध_ ऽ प ध_ रिं_ सां सां सां | ध_ ध_ नि ध_ ऽ प |||
० ⌣⌣ ० ० ० ० ० ⌣⌣ | ० ० ० ० ० ० |||
· ला · · म त न तुं दि र | त द रे दा · नी |||
+ ७ | १ ३ |||

तराना राग खमाज मत्तताल

(मात्रा ९ ताली १, ३, ४, ६, ७, ८ खाली २, ५, ९)

स्थाई—दानी दानी ओदानी दीम_ तनन तन देरे ना। तन देरे न तन देरे न तादारे दानी तोम_॥

अन्तरा—दिर दिर दानी तोम_, दिर दिर दानी तोम_, ताना देरे ना, ताना देरे ना, किड़ नग तिरिकिट, तक धिर किट तक, धाति धा तधा, धाती धा तधा, धाती धा तधा॥

स्थाई

रिं
ध नि_ प ध नि सां नि_ ध प ध म ध प ध म ग म रि ग | प नि नि नि नि सां प ध सां नि_ ध
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ⌣⌣ ० ० ⌣⌣⌣⌣ | — ० ० ० ० — ० ० ० ० ०
दा नी दा नी ओ दा नी दी म_ त न न · त न दे · रे · | ना त न दे रे ना त न दे रे न
+ ३ ४ + ६ ७ ८ + | १ + ३ ४ + ६ ७

प म ग रि सा | ग म रि ग ||
० ० ० ० ० | ⌣⌣⌣ ||
त दा रे दा नी | तो · · म_ ||
८ + | १ ||

अन्तरा

ग ग म म ध नि सां प प ध ध सां रिं गं सां नि सां नि सां रिं सां नि_ ध | म प नि_ ध म प
⌣⌣⌣ ० ० — ⌣⌣⌣⌣ ० ० ० ० ० ० ० ⌣⌣ ⌣ ० ० | ० ० ० ० — —
दि र दि र दा नी तोंम_ दि र दि र दा नी तों म_ त न दे · रे · ना · | त न दे रे ना ·
१ + ३ ४ + ६ ७ ८ + | १ + ३ ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि नि नि नि सां सां सां सां नि रिं रिं नि नि सां सां प नि | ध म ग ऽ गं मं गं ऽ नि सां ऽ प
⌣⌣ ⌣⌣ ⌣⌣ ⌣⌣ 0 ⌣⌣ ⌣⌣ ⌣⌣ 0 0 | — 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
कि ड़ न ग ति रि कि ट तक धि र कि ट त क धा ती | धा त धा · धा ति धा · त धा · धा
+ ६ ७ ८ + | १ + ३ ४ + ६ ७

नि ध म ग ||| ऽ सा ग म प ध नि सां ध सां नि ध प नि ध म ध प ध ग म रि ग | प
0 — 0 0 ||| 0 0 0 0 0 0 0 0 ⌣⌣ ⌣⌣ 0 0 0 0 ⌣⌣ 0 ⌣⌣ ⌣⌣ | —
ति धा त धा ||| · धा दा नी दा नी ओ दा नी · दी · म त न न त · ना द · ने · | ना
८ ||| १ + ३ ४ + ६ ७ ८ + | १

तराना राग भीमपलासी त्रिताल

स्थाई—तन तुंद्रना तनना तारे तदारे दानी तादा रे दानी तादानो ।।

अन्तरा—दिर दिर तन दिर दिर तन तदरे तदरे दानी, तन तदारे दानी नितारे दानी तारे दानी तदारे तदारे दानी ।।।

स्थाई

नि सा ग म | प ऽ प प म ग म प | म ग रि सा म ग रि सा सा रि सा रि || नि सा ग म |
0 0 0 0 | ~ — 0 0 ~ — 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 || 0 0 0 0 |
त न तुं द्रे | ना · त न ना ता रे त | दा रे दा नी त दा रे दा नी त दा नी || त न तुं द्रे |
७ | १ २ + ७ | १ ३ + || ७ |

अन्तरा

प प प प प प म म र प ग म प प नि नि सां सां सां सां | नि सां मं गं रिं सां रिं नि सां नि
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 0 — 0 0 0 0 — 0
दि र दि र त न दि र दि र त न त दा रे त दा रे दा नी | त न त दा रे दा नी नि ता रे
१ ३ + ७ | १ ३ +

ध प नि | ध प म प म ग प म ग रि सा |||
0 0 — | 0 — 0 0 0 0 0 0 0 0 0 |||
दा नी ता | रे दा नी त दा रे त दा रे दा नी |||
७ | १ ३ + |||

तराना राग मालकौंस तीनताल

स्थाई—तों तननन नन नन तकधारे तारेदानी तदानी नाद्रे तुंद्रे तदारे दानी ।।

अन्तरा—यारे मो यली यलाय लाल लाले तन देरेना तनदेरेना तदानी धाकिट तक धुमकिट तक धंता कड़ां धा कड़ां धा कड़ां धा ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

सां सां ध् म ग् सा सा सा सा | सा म म म म म म ध् म ग् ग् ग् म ध | सां ऽ नि् सां ऽ ध्
—० ० ० ० ० ० ० ० | ० — ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
तों त न न त न दे र न | तक् धा रे ता रे दा नी त दा नी ना द्रे तुं द्रे | ता · · दा ·
+ ७ | १ ३ + ७ | १

नि् ऽ म ध् म ध ग् म || सां गं् नि् सां ध् म ग् सा सा सा | सा म म नि् ध म ग्
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० || — ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० | ० — ० ० ० ० ०
रे · · दा · · · नी || तोम् ता · न न न न दे र ना | तक् धा रे ता रे दा नी
२ || + ७ | १ ३

अन्तरा

सा सां सां ध् नि् ध् म म | सां सां सां नि् नि् सां सां मं गं् सां सां सां ध् नि् | ध् म म सा सा
— — — ० ० ० — ० | — ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० | ० — ० ० ‿
या रे मो य ली य ला य | ला ला ले त न दे रे ना त न दे रे ना · | त दा नी धा कि
३ + ७ | १ ३ + ७ | १ ३

सा सा सा म म म म म म म म सां सां ध् | ऽ ध् नि् सां ||| सां सां सां सां ध् म ग् सा सा सा
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० — ० ० | ० ० — — ||| ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ट त क धु म क्वि ट त क धे त्ता क्ड़ां धा क्ड़ां | · धा क्ड़ां धा ||| तो म् त न न त न दे र न
+ ७ | १ ३ ||| + ७

तराना राग केदार त्रिताल

स्थाई—नादिर दिर दानो तदानी तों तनना तद।रे दानी तोम् तन तुंद्रे दाना ॥

अन्तरा—उदनीत तन देरे तनों तानरे तदरे दानी दीम् देर्ना देर्ना दोम् तदारे तारे दानी ॥।

स्थाई

सा   सां
सा रि रि सा सा सा म म प प | सां ऽ ऽ ध ध प म् प प ध प म म | म ध प म म रि सा
० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० | — — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ० ०
ना दि र दि र दा नी त दा नी | तोम् · · त न ना · · त दा रे दा नी | तोम् त न तुं द्रे दा नी
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

अन्तरा

सा
म म प ऽ म् ध ध प म म प सां सां ऽ पं पं | मं मं रिं सां ऽ रिं सां प प सां ऽ रिं सां | म म
० ० ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० — ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० — — ० ० ० ० — | ० —
उ द नि · · त त न दे रे त नोम् ता · न रे | त द रे दा · नी दीम् दे र्ना दे · र्ना दीम् | त दा
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प म म रि सा |||
० ० ० ० ०
रे ता रे दा नी
३

तराना राग देस त्रिताल

स्थाई—तनत तन देरेना तानत तन देरेना नादिर दिर दानी तदानी दीं तन देरेना तन देरेना दानी उदनित तन तदरे दानी दीम् तदेर्ना ॥

अन्तरा—नादिर दिर दिर तुंदिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर नि सां रिं मं गं रिं नि सां रिं सां नि ध प म ग रि धि तिरिकिट धीकिट कत धींतरान धाधी कत तिट धा धा धीं तिरिकिट कत धितरान धा धी कत तिट धा धा धीं तिरिकिट धीकिट कत धींतरान धाधी कत तिट धा ॥।

स्थाई

ग सा रि म प | नि सां नि ऽ सां नि सां रिं सां रिं नि ध म ग रि | रि नि नि ध ध नि प ध म
० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० — | ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ०
· त न न त न | दे रे ना · · ता · · न त त न दे रे ना | ना दि र दि र दा नी त दा
७ | १ ३ + ७ | १ ३

प सां नि नि ध प म ग रि | प म ग रि ग निं सा पं निं सा रि ग सा रि म | प नि म प नि
० ‿ ‿ ० ० ० ० ० — | ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ‿
नी दीं · म् त न दे रे ना | त न दे रे ना दा नी उ द नि त त न त द | रे दा · नी दीं
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

सां रिं रिं नि ध प म ऽ ग रि ग सा रि || इत्यादि
‿ ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ०
· म् त दे रे ना · · · · त न न
+ ७

अन्तरा

म म म म म म म प प प नि नि नि नि | सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां
० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
ना दि र दि र दि र तुं दि र दि र दि र | दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि र दि
+ ७ | १ ३

सां नि सां रिं मं गं रिं नि सां | रिं सां नि ध प म ग रि प रिं रिं रिं रिं रिं रिं रिं रिं रिं रिं रिं रिं
‿ ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ‿
र ” ” ” ” ” ” ” ” | ” ” ” ” ” ” ” ” धीं तिरी कि ट धि कि ट क त धीं त रा
+ ७ | १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ रिं रिं रिं | रिं रिं रिं रिं गं नि नि नि नि नि नि नि नि नि नि नि नि सां ऽ सां सां नि सां सां
‿ ‿ ‿ ‿ | o ‿ ‿ o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿
· न धा धीं | क्त्_ति र धा धा धि ती री कि ट धो कि ट क त धि त रा · न धा धी क्त्_ती
१ ३ + ७

सां सां रिं | नि_नि_नि_नि_नि_नि_नि_ध प प सां नि_ध प ध म ग रि |||
‿ o o | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o ‿ ‿ o ‿ ‿ o
ट धा धा | धिं ति रि कि ट धि कि ट क त धिं तरान्_धा धी क्त्_ति ट धा
१ ३ +

तराना राग तिलंग द्रुत एकताल

स्थाई–तदिया नारे, तदिया नारे, दिया नारे, दिया नारे तोम्_, तन नन नन दिया नारे ॥

अन्तरा–तोम्_तन दीम्_तोम्_ननन तदारे दानी, रे दानी, ता दारे, दानी,
तोम्_तननन, तोम्_तननन ॥।

स्थाई

ग सा ग म प ग म प नि_प | नि_प ग म ऽ नि_प नि सां गं सां | सां रिं सां नि_प म नि_प ग म ऽ
o o o o — o o o o — | o o o o o o o — o o | o o o o o o o o o o —
त दि या ना रे त दि या ना रे | दि या ना रे · दि या ना रे तो म_ | त न न न न न दि या ना रे ·
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६

अन्तरा

प ग म प नि_प नि नि सां सां | रिं सां नि_प गं सां गं मं गं गं सां सां | रिं सां नि_प म
— o o — o o o o o o | o o o o o o o o o o o o | — o o o o
तोम्_त न दीम्_तोम्_त न न त | दा रे दा नी रे दा नी त दा रे दा नी | तोम्_त न न न
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३

नि_प म ग म |||
— o o o o
तोम्_त न न न
+ ५ ६

तराना राग अल्हैया बिलावल ब्रह्मताल मात्रा १४

(ताली १, ३, ४, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, खाली २, ५, ९, १४)

स्थाई–तोम्_तननन तदारे तद्रे दानी, रे दानी तदानी, तद्रे दानी दानी ॥

अन्तरा–ना द्र द्रे दानी, तुं द्र द्रे दानी, तन तुद्रे तदारे दानी दानी दानी,
यली यज्ञ लोम्_, यली यला यलाले, तन देर ना ता दारे दानी ॥।

स्थाई

सां ध नि_ध प ध ग म रि ग रि ग नि सा ग रि ग प ध ऽ नि सां रिं सां नि ध प ||
— o o o o o o o o o o ‿ ‿ o o o o o — o o o o o o o o
तोम्_त न न न त द्रा · रे त द्रे दा · नी रे दा नी त.दा · नी त द्रे दा नी दा नी
१ + ३ ४ + ६ ७ ८ + १० ११ १२ १३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

मं गं
प प प नि ध नि सां सां सां सां ऽ सां गं रिं गं पं मं गं रिं नि सां सां ध नि॒ ध प ग म रि | ग रि ग
० ००० ० ० ० ० ० ० ० ००० ००००० ० ० ० ० ० ० ०‿‿० | ० ००
ना द्रे द्रे दा · नी तुं द्रे द्रे दा · नी त न तुं द्रे त दा रे दा · नी दा · नी दा · · नी | य ली य
१ + ३ ४ + ६ ७ ८ + १० ११ १२ १३ + | १ +

प ध नि॒ ध नि॒ ध प ध ग ऽ म रि सा प म ग रि ग नि सा सा ग रि ग प ध नि ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿‿ ० ० ‿‿ ० ० ० ०
ल लो म॒ · · य लि य ला · य ला ले त न दे रे ना · · त दा · रे दा · नी
३ ४ + ६ ७ ८ + १० ११ १२ १३ +

तराना राग काफ़ी तीनताल

स्थाई—तोम॒ तन नन नन नादिर दिर तानोम॒ तन नन नित तन देरे ना
ता दारे दानी रे दानी दानी तदानी तन तुंदिर तारे दानी ॥

अन्तरा—नक घेता धिरिकिट धीना, तक धुम किट तक तारे दानी यली यल
लोम॒, यली यल लोम॒ यल लोम॒, धिरिकिट तक तान्न धाता धा,
धा ता धा, धा ता धा ।।।

स्थाई

रि म नि॒ प ग॒ रि ऽ ग॒ रि ग॒ सा सा रि रि | प प ध ध ध ध नि॒ ध प प म प नि॒ प | ग॒ ग॒
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿‿ ‿‿ | — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ०
तो म॒ त न न न · त न न दि र दि र | ता नो म॒ त न न न नि त त न दे रे ना ता | दा रे
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

रि सा रि ग॒ म प सा रि ग॒ म सा नि॒ सा रि रि | ग॒ ग॒ म प ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ‿‿ | ० ० ० ०
दा नी रे दा नी दा नी त दा नी त न तुं दि र | ता रे दा नी
३ + ७ | १

अन्तरा

म म प ध ध नि॒ नि॒ सां सां | रिं गं॒ गं॒ रिं रिं सां सां नि॒ ध प प प रिं रिं रिं रिं सां नि॒ |
० — ० ‿‿ ‿ ० ० | ० ‿‿ ‿‿ ‿ ० ० ००० ० ० ० — ० ०
नक घे ता धि र कि ट धी ना | तक धु म॒ कि ट त क ता रे दा नी य लि य ल लो म॒ य लि
+ ७ | १ ३ + ७

ध ध ध म नि॒ प ग॒ रि रि रि ग॒ ग॒ सा रि प प | ध ध नि॒ नि॒ प ध सां ऽ सां नि॒ ध नि॒ प
० ०० ० ० ० — — ‿‿ ‿‿ ‿ — ० | ‿‿ ‿‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ०
य ल लो म॒ य ल लो म॒ धि रि कि ट त क ता न्न | धि रि कि ट त क ता · न्न धा ता धा ·
१ ३ + ७ | १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प ध म नि॒ प	ग रि
० ० ० ० ० ०	——
धा ता धा · धा ता	धा ·
७	१

तराना राग शंकरा द्रुत एकताल

स्थाई—तन नन नन दिर दिर, तोम॒ तोम॒ तोम॒ तान, तनन तनन तन तद्रे दानी, दीम॒ तोम॒ तान देरे, तदारे दानी तन तद्रे दानी धा तोम॒ ॥

अन्तरा—अत तन अत तन नित तन, नि तन तोम॒ तनन तन नन, धिड़न्न किटतक नग धिरकिट तक, तक धुम किटतक धा, तक धुम किटतक धा, तक धुम किटतक धा तोम॒ ॥

स्थाई

प ग प प नि ध सां सां सां सां	नि ऽ प ऽ ग ऽ सा ऽ सा	सा पं सा सा ग ग प प ग ग सा
० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿	— ० ० — — ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
त न न न न न दि र दि र	तोम॒ · तोम॒ · तोम॒ · ता · न	त · न न त न न त न त द्रे दा
३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६

सा	प ग प नि ऽ ध सां नि रिं सां नि	सां गं रिं सां नि ध प ग प रि ग रि सा सा	सा प ग ऽ
०	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० —	० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ‿ ‿ ० ० ०	— ‿ ० ‿
नी	दी · म॒ तो · म॒ ता · न दे रे	त दा रे दा · नी · त न त · द्रे दा नी	धा तो म॒ ·
	१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६	१

अन्तरा

प प प प ग प नि ध सां सां सां सां	गं गं पं रिं गं ऽ रिं सां सां नि ध रिं सां	पं गं पं गं गं सां
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ०	‿ ० ‿ ‿ ‿ ‿
अ त त न अ त त न नि त त न	नि त न तों म॒ · त न न त न न न	धिड़ · न्न कि ट त
१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६	१

सां नि ध सां सां नि नि प प ग ग प प नि नि ध सां	नि प प ध प प प ग ग प प प ग ग
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿	— ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ — ‿ ‿ ‿ ‿
क न ग धि र कि ट त क त क धु म कि ट त क	धा त क धु म कि ट त क धा त क धु म
३ + ५ ६	१ ३ + ५

रि रि सा सा	सा प ग
‿ ‿ ‿ ‿	— ० ०
कि ट त क	धा तो म॒
६	१

राग शंकरा द्रुत एकताल (पाढान्तर)

यह गान पृष्ट १२१ पर भी छपा है। परन्तु यहां इस की भिन्न स्वर लिपि दी है।

स्थाई—झूलना झुलावोरो आई रुत सावन की। कारी कारी बदरी छाई,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बरसन को धाई प्यारी ।।

अन्तरा—देखो मेहर बान कर, ध्यान ये सगरो समां, ब्रिज की नारी आई सारी • झूलने को बारी बारी । देखो सखी सब आवन की ।।।

स्थाई

रि

सां सां नि ध नि प ग प नि ध सां नि	प ग प प ग ऽ प ग ग सा	सा सा प ग प प प प ध
— 0 0 0 0 ⌣⌣ 0 0 ⌣⌣—	— — 0 0 0 ⌣⌣ 0 0	— 0 ⌣⌣ 0 0 0 0 0
झू ल ना · झु ला · · वो · · री	आ ई रु त सा · · व न की	का री का · री ब द री
१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५

प ऽ प	नि ध सां नि रिं सां सां रिं सां नि ध प ग प ग रि सा	‖
0 00	0 0 ⌣⌣ 0 — ⌣ ⌣⌣ ⌣⌣⌣⌣⌣⌣⌣ 0	‖
छा · ई	ब र स · न को धा · · · ई · प्या · · री	‖
६	१ ३ + ५ ६	‖

अन्तरा

सां रिं

प ग प सां सां सां सां ऽ सां सां सां	सां सां सां गं गं पं गं सां सां	प प नि ध सां ऽ नि प ग प ध
0 0 — 0 0 0 0 0 0 ⌣⌣	0 — 0 — 0 0 — 0 0	0 0 ⌣⌣ 0 0 0 0 0 0 0
दे · खो मे ह र बा · न क र	के ध्या न ये स ग रो स मे	ब्रि ज की · ना री आ · ई सा
१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५

ग प	नि नि ध सां रिं नि सां नि ध नि प ऽ प	नि सां गं रिं सां नि ध प ऽ ऽ प ग प ग रि नि सा
0 0	— 0 0 ⌣⌣ ⌣⌣ 0 0 0 0 0 0	0 0 0 0 0 0 ⌣⌣⌣⌣⌣⌣⌣⌣ 0 0
· री	झू ल न को · · · बा · री बा · री	दे · खो · छ बि आ · · · · व · न · की ·
६	१ ३ + ५ ६	१ ३ + ५ ६

तराना राग तिलक कामोद (साढ तीनताल)

(मात्रा ८½ ताली १, ३, ७ पर खाली ५ पर)

स्थाई—धृतन तदारे दानी तोम्‌ तन नन नन, तदारे दानी, तन तदारे दानी दानी ॥

अन्तरा—ना दिर दानी तुं दिर दानी. तदारे दानी दानी, यली यल लोम्‌ यल लोम्‌ यल लोम्‌ तन ।।।

स्थाई

सां सां प प ध म ग सा सा पं ऽ नि सा रि ग सा सा	ग रि प ग ग सा म रि म प सां प ध म ग ग सा
0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
धृ त न त दा रे दा · नी तोम् · त न न न न न	त दा रे दा · नी त न त दा रे दा नी दा · नी
१ ३ + ७	१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

म म म प प नि नि नि सां सां प नि सां रिं मं गं सां ऽ सां | प ध म ग सां प प ध म ग रि ग सा
० ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ०
ना दि र दा नी तुं दि र दा नी त दा रे दा · नी दा · नी | य ली य ला लो म य ल लो म य ल लो
१ ३ + ७ | १ ३ + ७

निं धं निं |||
० ० ०
म त न

ध्रुपद राग तिलककामोद सूलताल

स्थाई—गुण की चरचा करे, अवगुण को छांडे, तब पावे आद नाद सकल भेद ॥

अन्तरा—ब्रह्म को भूल भ्रम में, भटकत रैन दिना, सुध बुद्ध मूल भूला, श्रुति स्वर ताल भेद ॥

स्थाई

ग ग सा ऽ रि म प ध म ग | ग सा रि प म ग सा रि ग सा निं | निं पं निं ऽ सा ऽ रि म प सां |
गु ण की · च र चा · क रे | अ व · गु ण को · छां · डे · | त ब पा · वे · आ · · द |
१ + ५ ७ + | १ + ५ ७ + | १ + ५ ७ + |

प ध म ग ग सा रि म ग सा ||
ना · · द स क ल भे · द
१ + ५ ७ +

अन्तरा

म म प ऽ नि ऽ नि सां सां सां | प नि सां रिं गं सां रिं गं सां ऽ | सां रिं सां सां प ध म ग सा ऽ |
ब्र ह्म को · भू · ल भ्र म में | भ ट क त र · न दि ना · | सु ध बु द्ध मू · ल भू ला · |
१ + ५ ७ + | १ + ५ ७ + | १ + ५ ७ + |

रि म प सां सां प ध म ग सा |||
श्रु ति स्व र ता · ल भे · द
१ + ५ ७ +

तराना राग जौनपुरी तीनताल

स्थाई—तारे दानो तन तुंद्रे तदारे तदानी, तोम् तों तन नन नन रेदानी दानी ॥

अन्तरा—नित नारे तानोम‿ तन देरना. तन देरना तन देरना, तदारे दानी,
दिर दिर दानी दिर दिर दानी, दिर दिर दानी तन दिर दिर तारे
दानी तारे तदारे दानी ।।।

स्थाई

प ध‿म प सां | नि‿ऽ ध‿प ध‿म प रि म प ग‿ रि | सा ऽ धं‿सा नि‿सा सा सा सा रि म प |
० ० ० ० ० | — — ० ० ० ० ० ० ० ० — — | — — — ० ० ० ० ० ० ० — |
ता · रे दा नी | नी · त न तु द्रे त दा रे त दा नी | तो म‿ तों त न न न न न रे दा नी |
७ | १ ३ + ७ | १ ३ + ७ |

प ध‿म प ध‿नि‿सां ग‿ऽ रि सा ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ता · रे दा · नी · दा · नी ·
१ ३ +

अन्तरा

म प ध‿ऽ नि‿ | सां ऽ नि‿सां ऽ सां नि‿सां रिं नि‿ध‿प ध‿म प | नि‿ध‿प ध‿म प ग‿ऽ रि ग
० ० ० ० ० | ०‿‿ — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० — — ० ०
नि त ना · रे | ता · · नो म‿त न दे र ना · त न दे र | ना · त न दे र ना · त दा
७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

रि रि नि‿सा | रि रि रि रि सा सा प प म म प प नि‿नि‿ध‿ध‿ प ध‿ म प ध‿ध‿ नि‿नि |
० ० ० ० | ‿‿‿‿ ० ० ‿‿‿‿‿ ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿‿ ‿‿ |
रे दा · नी | दि र दि र दा नी दि र दि र दि र दि र दि र दा नी त न दि र दि र |
७ | १ ३ + ७ |

सां नि‿रिं सां गं‿रिं नि‿ध‿प ग‿ रि |||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ता रे दा नी ता रे त दा रे दा नी
१ ३ +

तराना राग दुर्गा त्रिताल

स्थाई—तन देरेना देरेना देरे देरे तदानी तद्रेदानी तन उदतन तदानी
नाद्रेदानो दीं तदानी ।।
अन्तरा—उदतन देरेना देरेना दीं तन देरेना तद्रेदानी तन तदानी दीं दानी ।।।

स्थाई

प म प ध ध प म रि सा सा | म रि प प प ध ध प म म म म.म रि म | रि सा रि धं ऽ सा सा सा रि
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | — — — ० ० — ‿‿ ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ०
त न दे रे ना दे रे दे रे त | दा · नी त द्रे दा नी · · त न उ द | त न त दा · नी ना द्रे दा
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प ध प ध सां | ऽ रिं ऽ ध ऽ म ||
— ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ||
· नी · · दीं · | · त · दा · नी ||
७ | १ ३ ||

अन्तरा

म म प ध सां सां सां ध सां रिं मं रिं रिं सां | मं मं रिं सां सां सां रिं सां ध ध म ऽ रि मं | मं रिं रि प ||
० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० — | ० ० — ० ० ० ० — ‿ ‿ ० ० ० — | — — — ||
उ द त न दे रे ना दी · त न दे रे ना | त द्रे दा नी त न त दा नी · दीं · · दा | · नी · ||
१ ३ + ७ | १ ३ + ७ | १ ३ ||

राग दुर्गा द्रुत एकताल

स्थाई—बन बोले बन बोले, बोली आज कोयलिया आली, आ सखी झूला झूलें ।।

अन्तरा—रस माधुरी माधुरी, चहुं दिशि छावत छावत, बन्सी बजावत सांवरो, कारी कारी कारी ।।।

स्थाई

म रि प ऽ प ध म प ध ऽ ध सां ध | सां रिं सां ध सां ध प ध प म प म रि म रि सा रि सा धं
० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ०
ब न बो · ले ब न · बो · ले बो ली | आ · · ज · · को · · य · · लि · · या · · आ
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५

सा सा | रिं म ध प ध ध सां रिं सां ध म रि धं सा ऽ ||
० ० | ० ० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ‿ ० ‿ ||
· ली | आ · · स खी झू · · · ला झू · ले · · ||
६ | १ ३ + ५ ६ ||

अन्तरा

म म ध प ध सां ऽ ध सां ध प म म | सां ध सां रिं मं रिं सां ध प म म | ध ऽ म ऽ रि प प प ध
० ० — ‿ ‿ ० — ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० | ० ० ० ० — ० ० — ‿ ‿ ० | ० ‿ ‿ ० ० — ० ० —
र स मा धु री · · मा · · · धु री | च हूं दि सि छा व त छा व · त | बं · सी · ब जा व त का
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५

म रि | ऽ सा धं सा सा रि म ध प ध प म रि सा ||
० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ||
न्ह सां | · व रो · का रि का रि का · · · रि · ||
६ | १ ३ + ५ ६ ||

राग दुर्गा तीनताल

स्थाई—परदेसवा सैयां ना जैयो, मन हरवा तुमरे लागूं गरवा ।।

अन्तरा—तुम बिन मोहे कल न परे आली, खान पान सैका, कछु न भावे पीयरवा ।।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थाई

सा म
प ध म ऽ रि | प ऽ म रि ऽ म प ध म प ध प म म ऽ रि सा सा ऽ | सा धं ऽ सा ऽ धं सा रि
0 0 0 0 0 | — — 0 0 0 0 | 0 0 0 0
प र दे · वा | वा · · · · सै · · · यां · · ना · · · जं · · | यो · · · · म न ह
७ | १ ३ + ७ | १ ३ +

प ध
म प सां ध ऽ सां ध | सां रिं सां सां ध म म म प म म रि सा रि धं ऽ सा || सां ध प म म रि | प ऽ
0 0 — 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 || 0 0 0 0 | — 0
र वा · · · तुम् | रे · · · ला · गू · · · ग र वा · · · || प र दे · · स | वा ·
७ | १ ३ + || ७ | १

अन्तरा

प सां
म म ध ऽ ध सां ऽ ऽ ध | सां ऽ सां ध सां ऽ रिं सां रिं सां ध सां रिं सां ध सां ध प म | म प ध
0 0 0 0 0 — — — — | — 0 0 0 0 0 0 0 0 — |
तु म बि ' न मो · · · | हे · क ल ना · प रे · · आ · · · ली · · · · | खा · ·
३ + ७ | १ ३ + ७ | १

सां ध प म ऽ म रि सा सा म रि ऽ प ऽ प प म प ध ऽ सां रिं | सां ध सां ध रिं रिं सां रिं मं मं
0 0 0 0 0 0 0 0 |
· न पा · · न मै · · का · · · · क छु · ना · · भा · | · वे : · पी · य · र ·
३ + ७ | १ ३

म
रिं सां ध प सां ध रिं सां ध प म रि ||| ध सां ध प म ध प म रि सा | रि प ऽ
||| | 0
वा · · · · · · · · · · · · ||| प · र · दे · · · स · | वा · ·
+ ||| ७ | १

तराना राग पीलू तीनताल

(दो ऋषभ दो गांधार)

स्थाई—द्रे ताऽन्न तन द्रें द्रे तन नन नन द्रें द्रे, तन नन नन नन नितान तन द्र द्र
नितन दीम् तनन तोम् तन नन नन ॥

अन्तरा—दिर दिर दिर दिर तन नन दीम् तन नन नन, तन नन नित तन
तोम् तन नन नन ॥।

स्थाई

ग रि ऽ म ग रि सा निं | धं धं पं धं निं निं सा सा सा रि सा निं धं धं पं पं | निं निं सा ग रि
0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 0 — 0 0 0
द्रे ता ·न्न त न द्रे द्रे | त न न न न न द्रे द्रे त न न न न न न न | नि ता न त न
+ ७ | १ ३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निं सा ग ग ग ग ऽ म ग म | प ध_प म ग_रि सा निं ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ||
द्र द्रे नि त न दा म्_त न न | तो म्_त न न न न न ||
\+ ७ | १ ३ ||

अन्तरा

निं निं म्या सा ग ग म म प प प प | ग म ध_प म ग_रि सा ग ग ग ग ग म ग म | प ध_प म
⌣⌣ ⌣ ⌣⌣⌣⌣⌣ ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ०
दि र दि र दि र दि र त न न न | दी म_त न न न न न त न न न नि त त न | तो म_त न
\+ ७ | १ ३ + ७ | १

ग_रि सा निं |||
० ० ० ० |||
न न न न |||
३ |||

राग पहाड़ी

पहाड़ों पर वासी लोग इस को अति सुन्दर ढंग से गाते हैं। उन लोगों के गीत अपनें ही नियमों से ओत प्रोत कर गाये जाते हैं। परन्तु संगीतकारों के द्वारा जब यह राग गाया जाता है, तब इस में सातों स्वर शुद्ध तथा कभी कभी दोनों गांधार या दोनों मध्यम भी लगा कर गाते हैं और थोड़ा उत्तरांग की ओर बढने को उत्सक रहते हैं जबकि पहाड के लोग पूर्वांग और मन्द्र स्वरों में गांधार तक नीचे गाते हैं। संगीतकार भी मन्द्र स्वरों को प्रधानता अवश्य देते हैं और तान पूरे के प्रथम को जो प्रायः मन्द्र पंचम में मिलता है। उसे मन्द्र मध्यम में मिला कर उसी को षड़ज मान कर गाते हैं। इसी कारण यह राग मध्यम ग्रामी कहा जाता है। इस का गांधार अंश न्यास है। इस में ध्रुपद, ख्याल नहीं गाये जाते। इस का रस शृंगार वियोग और भक्ति है।

साधारण आरोह, अवरोह, सा ऽ नि धं पं ऽ धं सा रि ग म म प मं ग रि ग म ग रि
० ⌣⌣ ० ०— ⌣⌣⌣⌣——, ० ०—, ० ०~, ० ०

सा धं पं ऽ धं सा ऽ |
— ० ० ० ० ० ० |

राग मिश्र पहाड़ी ताल कहरवा

स्थाई—शाम का सदेशा ऊधो पाती ले के आयो रे ॥

अन्तरा—पाति तो उठाय लीनी, छाति सो लगाय लीनी,
घूंघट की ओट देके, ऊधव समुझायो रे ॥

२. बसती उजाड़ दीनी, उजड़ी बसाय लीनी,
कुबजा पटरानी कीन्ही, मोहि न सुहायो रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

३. सूर श्याम जू के आगे, ऐसी आप कहियो,
ऊधो जीवत खसम, किन भस्म रमायो रे ।।।

स्थाई

ग म रि ऽ सा	सा सा धं सा ग	ग ग ग नि ऽ ध	प ध ऽ प म॒ ग म ग रि	सा रि ऽ
— o o o o	— — — o o	— — o o o o	o o — o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣	⌣ (⌣
शा म का · सं	दे शा ऊ धो ·	· पा ती ले · के	आ · · यो · रे · · ·	· · ·
+	१ +	१ +	१ +	१

अन्तरा

ग प ग ऽ ग	प ऽ प प प	ऽ ग प ध ऽ ध	नि ऽ ध प ध प ध	ऽ ग प ध ध प
— o o o o	— o o — —	— — o o o o	— o o o o o o	— — o o o o
पा ति तो · ऊ	ठा · य ली नी	· छा ति सो · ल	गा · य ली · नी ·	· घूं घ ट की ·
+	१ +	१ +	१ +	१ +

ध नि ऽ ध प ध प ध	ग ग ग ग ध ध	प म॒ ग म ग रि सा रि ऽ	सा
o o o o o o o o	— — o o o o	— — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o ⌣	—
ओ · · ट दे · के ·	· ऊ ध व स मु	भ्का · यो · · · रे · ·	·
१ +	१ +	१ +	१

राग मिश्र पहाड़ी तीनताल अथवा कहरवा

स्थाई—हम से नाहीं बोल बोले कान्हा, रूठि बो कान्हा ।।

अन्तरा—गोप सखा सब, विकल भये, बिनती करत हम ग्वाल बाला ।।।

स्थाई

ग ध प म॒ ग म ग रि सा	सा सा ऽ धं सा रि ग म ग रि ग सा रि ' 'ग रि ग	प ऽ ऽ प
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o	— — — ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o o o	— — — ⌣
ह म॒ से · ना · · · ही	बो ले · का · · · न्हा · · · · · · रू ठि	बो · · का
७	१ ३ + ७	१ ३

ध प म॒ ग म ग रि सा रि
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
: · · हे · · · · ·
+

अन्तरा

ग रि ग प	ध प ऽ ग प नि ध प ध प ग म ग रि सा म म म म म म	म म ऽ म ऽ ध प ध
o o o —	o o o ⌣ o o ⌣ o ⌣ o ⌣ o o o o	o o o o o o ⌣
गो प स खा	स ब · वि क ल भ ये · · · · · · · · बि न ती क र त	ह म · ग्वा · ल बा ·
७	१ ३ + ७	१ ३

प म प म ग म ग रि ग रि सा रि ऽ	ग ध प म॒
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣	⌣ ⌣ ⌣
· ला · · · · · · · · · · ·	ह म॒ से ·
+	७

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi